THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

ACHARANGA SUTRA.

(TEXT WITH GUJRATI TRANSLATION)

BY

PROFESSOR RAVJIBHAI DEVRAJ.

Cutch—Koday.

And

JAIN SCHOLARS.

Morvi—Kathiawar.

Second Edition *1000 copies*

RAJKOT.

THE RAJKOT PRINTING PRESS

1906.

(All rights reserved.)

आचाराङ्ग सूत्र.

(मूळ सहित भाषान्तर)

प्रयोजक अने प्रवर्तक.

प्रोफेसर रवजीभाइ देवराज.

कच्छ—कोडाय.

तथा

जैन स्कॉलर्स.

मोरबी—काठियावाड.

द्वितियावृत्ति—प्रत १०००.

राजकोट

धी राजकोट प्रिन्टिंग प्रेसमां

मेहता मोहनलाल दामोदरे छाप्युं.

संवत् १९६२.   सने १९०६.

अर्पण.

आचार शास्त्रं सुविनिश्चितं यथा जगाद वीरो जगते हिताय यः
तथैव किंचिद् गदतःसएव मे पुनातु धीमान् विनयार्पिता गिरः

[टीकाकार.]

जे वीर जे रीते आ चोकसाइ भरेलुं आचार शास्त्र जगत्–जनोना
रुबरु तेमना कल्याण माटे बोल्या छे, तेज महा बुद्धिमान वीर
तेज रीते कंइक बोलवा चहाता सेवकनी विनयपूर्वक तेमनी
प्रत्ये अर्पण करवामां आवती वाणीने पवित्र करो.

आ प्रमाणे.

आचारांग सूत्रना टीकाकार शीळाचार्य घणा
सादा पण हृदय भेदक शब्दोमां पोतानी तमाम कृतिने
श्रीमान् वीर प्रभु प्रत्ये अर्पण करीने तेमनो साधुता मागी छे,
अने ते व्याजवीज छे, कारण के जे उतम चीज आपणने जेना
पासेथी मळेली होय ते उत्तम चीज पाछी तेनेज अर्पण करवामां आवे तो
तेथी आपणे जाणे ऋण मुक्त थता होइए तेम आपणुं अंतःकरण कंइक अपूर्व
शांति मेळवीने प्रफुल्लित थाय छे.
माटे

अमे पण एज उत्तम पद्धति स्वीकारीने

तेमनीज वाणीने गुर्जर भाषामां अनुवादित करवानो अमारो आ
अल्प प्रयास विनय नम्र थइने तेज महात्मा श्रमण भगवान् श्री महावीर प्रभु
प्रत्ये अर्पण करीये छीये.

(तथास्तु)

भावना.

—:※:—

जगत्मां रहेला तमाम जीवो सुख पामो, तेमना तमाम दुःख दरद दूर थाओ, अने तेओमां सत्य ज्ञाननो प्रकाश थाओ, ए अमारी पेहेली भावना छे. १

धर्म शास्त्र अने सायन्स [सिद्ध पदार्थ विज्ञान शास्त्र] नो ज्यां परस्पर विरोध पडतो होय, तेवा स्थळे धर्म शास्त्रोमां वपरायली गुप्त [सांकेतिक] भाषा लक्षमां लइ तेना शम्यक् अर्थ करवा माटे खरेखरा बुद्धिमान् महा पुरुषो आ भूमंडळपर अवतरो, तेओ आंधळी श्रद्धाए न दोरातां खरुं सत्य शोधीने सत्यनेज कायम राखवा दरेक धर्मशास्त्रनी गुप्त वाणीना ते ते देशकाळने अनुसरता घटित अर्थ बतावीने जनमंडळमां व्यापी रहेला मिथ्यात्व [जुठ अने व्हेम] नुं उच्छेदन करो,—ए अमारी बीजी भावनाछे. २

धर्म विरोध दूर थाओ. सघळा धर्मोमां दयानो महिमा द्रढ मूळ थाओ, सघळा धर्मोमां सत्यनां मूळ शोधाओ, अने ए रीते सघळा धर्मो दया अने सत्यना मजबूत पायापर स्थापित थइ धर्मैक्यता कायम थाओ—ए अमारी त्रीजी भावना छे. ३

जूदा जूदा धर्मानुयायिओमां अरसपरस देखातो धर्म द्वेष दूर थाओ, भ्रातृ भाव स्थापित थाओ, सलाह संप कायम रहो, अने दुर्गुणो दूर थइ सद्गुणोनो संचार थाओ—ए अमारी चोथी भावना छे. ४

दुनियाभरमां आलस्यनो नाश थाओ, उद्यमनी वृद्धि थाओ, विद्यानो विकाश थाओ, सत्यनो प्रकाश थाओ, अने ए रीते धर्मनो जय थाओ—ए अमारी पांचमी भावना छे. ५

भविष्यनी प्रजा आपणा करतां आगळ वधो, आपणा करतां वधु ज्ञान मेळवो, आपणा करतां वधु शोधन करो, किं बहुना, आपणा करतां बळ-बुद्धि, विद्या—कळा, विज्ञान—वैभव, सुख संपत्ति, रंग—रुप, होंस—हिम्मत वगेरे तमाम रुडी बाबतोमां आगळ आगळ वधीने आपणां करतां वधु आयुष्य भोगवो,अने आपणां मूकेलां अधुरां कामो परिपूर्ण करो

तथा आपणे स्वप्ने पण नहि जोयेली अजब शोधो करीने
जगद्-विख्यात थाओ ए अमारी छट्टी अथवा छेल्ली
भावना छे. ६

वीर! वीर! वीर!

प्रस्तावना.

(द्वितियावृत्ति.)

कोइ किमती पुस्तकनी नवी आवृति प्रसिद्ध थाय ए एम बतावी आपेछे के ते पुस्तक लोकोमां प्रिय थइ पडयुंछे, चोतरफ ते उत्साहथी वंचायछे अने चोतरफथी तेनी सारी मांगणी थायछे. आज काल संख्या बंध नानां मोटां पुस्तको प्रसिद्ध थयां करेछे अने लागवगथी के अर्पण पत्रिकाना मानथी लोको तेनी नकलो खरीद पण करेछे. आवा जमानामां आवा अमूल्य पुस्तको प्रचार करवामां ओछी मुश्केली नडती नथी.

आ सूत्रनी प्रथमावृत्ति प्रसिद्ध थया पछी तुरतमांज तेनी नकलोनो उठाव थइ गयो हतो अने चोतरफथी उपरा उपरी मांगणी चालु रही हती प्रथमावृत्तिना टाइप नाना होवाथी तेमज भाषान्तर गुजराती अक्षरमां छपायेल होवाथी, घणा लोको तेनो लाभ लइ शकता नही. माळवा, मेवाड, मारवाड, दक्षिण, मध्य हिंदुस्तान, पंजाब अने सर्व देशोना लोको तेनो लाभ लइ शके माटे मूल पाठ मोटा अक्षर अने भाषान्तर पण मोटा नागरी अक्षरमां प्रसिद्ध करेलछे.

जैन धर्मनुं खरूं जीवन सर्वज्ञ प्रणीत सूत्रोछे. जैन धर्मनुं मंडाण पवित्र सूत्रो परजछे. जैन धर्मनी इमारत सूत्रोरुपी पाया उपरज रचायेली छे. जैन धर्मनां नीतिमय फरमानो उंडा रहस्यो अने सुक्ष्म तत्वज्ञानो जाणवानां मुख्य साधन पवित्र सूत्रो परजछे. जैन तरीकेनुं जीवन गाळवा माटे सूत्रोए किमती कायदाओछे. जे महाप्रभुना एक अक्षर मात्रथी अनेक अमूल्य शिक्षाओना प्रवाह छूटेछे, तेवी शीलामणोना भंडाररुप अने संग्रहरुप सूत्रोजछे. तेना दरेके दरेक वाक्य, दरेके दरेक शब्द, अने दरेके दरेक अक्षर ज्ञानामृतथी भरपूरछे.

विस्मरण शक्तिनुं साम्राज्य स्थपाता, भिन्न भिन्न मगजवाळा समर्थ विद्वानोए एकत्र मळी जे पवित्र वाणीनुं गुंथन करेलछे, ते आपणी प्रजामां छूटे हाथे वंचावानी जरुरछे. सूत्रोनी भाषा आपणामांनां घणाने अप्रचलीत

होवाथी, तेनो जोइये तेवो लाभ लेवातो नथी अने अमूल्य शीखामणोना भंडारथी अज्ञान रहेवुं पडेछे. आ माटे आ पवित्र सूत्रोनां शुद्ध भाषान्तर आपणीज भाषामां करवाना जरुरीयात विषे श्री श्वेतांबर कोन्फरन्स अने विद्वान् श्रावको ठराव करीनेज बेसी न रहेतां, तेनो अमल तुरतमां थयेलो जोवा इच्छेछे. पण सूत्रोना भाषान्तरथी श्रावक वर्ग माहितगार थाय ए केटलाकने भयरुप लागेलुं होवाथी; तेवां भाषान्तरो प्रसिद्ध थतां अटकाववा कोशेश थयेलीछे, छतां हालनो जमानो आवी अविचारी अडचणो तरफ अलक्ष करवानी जरूरीयात स्वीकारेछे. आ पुस्तक तेवा प्रयासनुं एक प्रतिफळछे. महा महेनते अने मोटा खर्चे आवा भाषान्तरो प्रसिद्ध करवानुं साहस, सुज्ञ श्रावकोनी साह्यतानी आशाएज अमे उठाव्युं छे अने लोको तेनी कदर करशेज.

प्रथमावृत्तिमां रही गयेली भूलो आ आवृतिमां सुधारवामां आवीछे. शंकीत सूत्रोना अर्थ विद्वान् मुनीराजनी सलाह मुजब विस्तारथी समजाववामां आव्याछे अने बाळावबोधकारना आशय मुजबनी टीकाओ तेमज स्पष्टिकरण माटे फूटनोट वीगेरे दाखल करवा खास काळजी राखी पुस्तकने बनी शके एटलुं उपयोगी अने आकर्षणीय बनाववा विद्वानोनी सलाह मुजब बनतो प्रयास कर्योछे.

जोके आ पुस्तकने शुद्ध बनाववा बनतो श्रम कर्योछे. तोपण ज्ञानावर्णीय कर्मना प्राबल्यथी ते निर्दोष होवुं असंभवीतछे. आशाछे के सुज्ञ वांचको तेमां रहेली भूलो माटे दरगुजर करी करवा योग्य सुधारा वधारा अमने सुचवशे तो उपकृत थइशुं.

प्रसिद्ध कर्ता.

प्रस्तावना.

काळनी गहन गति छे, पूर्वे एक समय एवो पण हतो के जे वखते पुस्तक–पानानी जरा पण जरुर न पडती, स्मरण शक्तिनुंज साम्राज्य हतुं, एक वखत श्रवण करेलुं "पुनः पुनः" याद लावनारां मनुष्यो विशेष हतां. आवा सुवर्ण-युगने विषे ज्ञानी पुरुषो विद्यमान हता, जे उच्च स्थिति संपादन करवाथी सर्वत्र दिग्विजय मेळवता इतिहासनी तवारीख उपरथी जणाय छे के एवा समयमां जैन मार्ग सर्वोत्तमताने शिखरे बिराजतो हतो. जेम दिवसने विषे सूर्यना, अने रात्रिने विषे चंद्रना तेजथी, सर्वत्र प्रकाश थइ रहेछे तेम चरम-छेल्ला तीर्थंकर श्री महावीर प्रभुनी हैयातीं वखते अज्ञानरुपी अंधकार दूर थइ सर्वत्र ज्ञानरुपी प्रकाश छवराइ गयो हतो. ते भगवंतना निर्वाण पछी धीमे धीमे मनुष्योनी स्मरण शक्ति घटती गइ, ते एटले सुधी के पूर्वनुं ज्ञान जाळवी राखवा माटे पुस्तको लखाववानी जरुर पडी. आनुं परिणाम ए थयुं के पुस्तको लखावाथी मनुष्यो बेदरकार बनता गया अने तेओए स्मरण शक्तिने ते बाबतमां श्रम आपवो बंध कर्यो जे वखते पुस्तको लखायां ते वखत श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुना निर्वाण पछीना केटला एक सैका पछीनो हतो.

आ प्रमाणे स्मरण शक्तिनी न्यूनता-अने दिनप्रतिदिन हानी थती जोइ ते वखतना पुरूषो, जेना आपणे घणाज आभारी छीए, तेओए जे कांइ जोयेलुं, सांभळेलुं, अनुभवेलुं हतुं ते बधुं पोतानी ज्ञान शक्ति अने स्मरण शक्ति अनुसार लखाववुं शरु कर्युं. (ते पुरूषोनुं ज्ञान आजना जमाना करतां घणुंज चढीआतुं हतुं). हालनी पेठे कागळो वीगेरे ऊपर नाहि, पण ताडपत्रोपर ते सूत्रो लखायां हतां. ते उपकारी पुरूषोने एवी भीति लागी के जो आ प्रमाणे स्मरण शक्ति घटती जशे तो ज्ञाननो लय थवानो समय नजदीक आवशे. श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना निर्वाण पछी ९८०–९९३ वर्ष एटले इस्वीसन ४५४–४६७नी सालना अरसामां आवे अणीने समये श्रीवल्लभीपुर नगरने विषे श्रमण भगवंत श्री देवर्द्धि-

गणिनी देखरेख नीचे जैन संप्रदायना विद्वान् आचार्योए एकठा मळी जैन आगमो लखी लेवानो निश्चय कर्यो. मोटा मोटा श्रीमंतो ते समये जैन धर्मानुरागी होवाथी जैन आचार्यो पोतानी धारणामां फतेह पाम्या अने पुष्कळ श्रम लइ पुस्तको लखी तेनी जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा शेहेरोना जैन भंडारोमां दाखल करावी.

आ सूत्रो निष्पक्षपाती विद्वानोनी कसायेली कलमथी लखायेलांछे एम पुरवार करवाने एटलुंज बस थशे के आ सूत्रो विद्वान् पुरुषोना मंडळे एकठां मळीने एकत्र अभिप्रायथी लखावेलांछे जेथी कोइ पण मतमतांतर के कदाग्रहनो पक्ष तेमां होय ते धारवुं भूल भरेलुंछे. वळी आ सूत्रो लखवामां कोइ पण जातनी विषमता यातो (पाछळनी प्रजामां देखाती) स्वार्थपरायण दृष्टि होवानुं कशुं पण कारण नहोतुं. जेथी आ सूत्रो निष्पक्षपात शैलीथी लखायांछे एम कबुल कर्या विना चालतुं नथी कारण के ते सर्व विद्वान आचार्योना मगजमां जे हकीकत खरेखरी याद आवी अने सर्वमान्य थइ तेज सूत्रोमां गुंथाइ हती.

ज्ञानीना वाक्यो संक्षिप्तज होय छे-तेनां टुंक शब्दोमां घणो भावार्थ समायेलो होय छे. आपणां आगमो वांचतां आवां वाक्यो स्थळे स्थळे नजरे पडेछे. जेथी वांचक वर्ग पोतानी स्थूल बुद्धिने लइने रहस्य समजी न शके तो तेमां मूळ लेखकोने कशो दोष देवानो नथी. आ वातनी सत्यताने खात्री एटला उपरथीज थशे के जैन आगमो लखाया पछी केटला एक विद्वानोए ते उपर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका वीगेरे करेलांछे ते एवा हेतुथी के आजना दुर्लभ बोधी जीवने ते वाक्यो समजवां सुगम पडे.

मूळ जैन आगमो ८४ हता तेमांथी भयंकर दुष्काळो तथा राज्य विप्लवोना समयमां, केटलांक, गाम, नगर, शेहेरो वीगेरे उज्जड थइ नाश पाम्यां ते साथे आपणां घणां सूत्रो पण लय पाम्यां. तो पण सुभाग्ये हालमां तेमांना ३२ थी ४५ आगमो विद्यमान रह्यांछे.

अर्वाचीन समयमां मागधी-प्राकृत अने संस्कृतनो अभ्यास घटतो गयो अने तेथी सूत्रोनी शैली समजनाराओनी खोट पडवा लागी. जो के मुद्रणकळानी सहायथी सगवडता वधती गइछे परंतु दुर्भाग्ये ते वांची

समजवानो लाभ लेनाराओनी खामीछे. सूत्रोनी शैली अने तेमां रहेला दिव्य रहस्य समजवा माटे प्राकृत अने संस्कृत ज्ञाननी मुख्य जरूरछे परंतु तेटलुं ज्ञान धरावनारा सुभाग्ये हाल एक हजार जैनमांथी एकाद मात्र मळे. आवी दयामणी स्थितिने लइने जैन फिलोसोफीनुं उत्तम ज्ञान घटतुं गयुं अने हजु पण घटतुं जाय तेमां आश्चर्य थवा जेवुं नथी. आवा बारीक समये सुभाग्ये माजी प्रॉफेसर मॅक्षमुलरना शिष्यो मि. हरमन जेकोबी, डॉक्टर हॉर्नेल, मि. ओल्डनबर्ग, मि. वेबर डॉ. ल्युमॅन विगेरे पाश्चिमात्य विद्वानो–जर्मन ओरीएन्टल स्कॉलरोए जैन फिलोसोफीनुं महत्व समजवा माटे प्रथम करी केटलाक आगमोना भाषान्तर अंग्रेजी भाषामां प्रसिद्ध कर्यां, जे जोतां तेओनी विद्वता एक अवाजे कबुल राख्या विना चालतुं नथी. अर्वाचीन जमानाने जैन फिलोसोफी समजवानो मुख्य आधार आ विदेशी विद्वानोना भाषान्तर उपरज छे, कारण के संस्कृत तेमज प्राकृत भाषामां निपुणता धरावनाराओनी संख्या जुज मात्र–नजीवी सरखीछे. प्रचलित–देशी भाषानां सारां भाषान्तरना तेमज संस्कृत ज्ञानना अभावे पुर्वोक्त पुस्तको वांचवा, हालना केळवाएलो वर्ग दोराय अने ते उपरथी जैन फिलोसोफी माटे मत बांधवा प्रेराय ए कोइ पण रीते अनुचित नथी. हवे प्रश्न ए थायछे के ए जर्मन विद्वानोए जे पुस्तको प्रसिद्ध कर्यांछे अने तेमां जे विचारो दर्शाव्याछे ते जैन आगमो अनुसार यथातथ्यछे के नहि ? आ हवे तपासवानुछे.

इस्वीसन १८८४ नी सालमां ज्यारे मि. जेकोबीए आचारांग तथा कल्पसूत्रना भाषांतरो प्रसिद्ध कर्यां, ते वखत जैन फिलोसोफी माटे तेमज जैन धर्मनी प्राचीनता माटेना तेना तथा बीजा विद्वानोना जे विचारो हता ते विचारो दश वर्ष पछी एटले इस्वीसन १८९५ नी सालमां ज्यारे श्री सूत्रकृतांग तथा उत्तराध्ययन सूत्रोना इंग्रेजी भाषांतर प्रसिद्ध करवामां आव्या ते वखते घणाज बदलाएला जोवामां आवेछे प्रथम ओरीयेन्टल स्कॉलरो-ते विद्वानोनो एवो अभिप्रायहतो के जैन ए बौद्धनी एक शाखाछे, अने बौद्धना मूळतत्त्वोनुं अनुकरण जैनोए करेलुं छे. हालना केळवणी खातामां जे इतिहासो चालेछे तेमां आज भावार्थनुं शिक्षण अपातुं होवाथी आपणा जैन बाळकोने पण तेवी श्रद्धा थाय ए,

संभवितछे. ते बाबत मि. जेकोबीए आचारांग सूत्रनी प्रस्तावनामां प्रथम लंबाणथी विवेचन करेलुं छे. आ विवेचन तेना पोताना बीजा पुस्तकनी प्रस्तावनाना प्रथम वाक्यथीज बदलायेलुं आपणी नजरे पडेछे के—

Ten years have elapsed since the first part of my translation of Jaina Sutras appeared. During that decennium many and very important additions to our knowledge of Jainisum and its history have been made by a small number of excellent scholars

जैन सूत्रोनां मारां भाषान्तरना प्रथम भाग बहार पडयाने आजे दस वर्ष थयाछे. जे अरसामां जैन फिलोसोफी तेमज इतिहास संबंधी थोडाएक विद्वान् स्कोलरोनी सहायताथी अमारा ज्ञानमां घणो अगत्यनो वधारो थयो छे.

अने जैननी प्राचीनता संबंधे पण तेज विद्वान तेज प्रस्तावनामां लखे छे के,—

It is now admitted by all that Nataputta (Gnatriputra), who is commonly called Mahavira or Vardhmana, was a contemporary of Budha; and that the Niganthas (Nirgranthas) now better known under the name of Jains or Arhatas, already exhisted as an important sect at the time when the Buddhist church was being founded

श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुने नामे ओळखावा ज्ञातपुत्र–वर्धमान स्वामी जे वखते बुद्ध विचरता ते वखतेज तेना (contemporary) प्रतिस्पर्धी तरीके विद्यमान हता अने जे वखते बौद्धधर्म हजी स्थापातो हतो ते वखते अर्हनना नामे ओळखाता निर्ग्रंथो एक अगत्यना प्रसिद्ध–पंथ तरीके क्यारनाए स्थापित थयेल मार्गमां विचरता हता एम हवे सर्व कोइ कबुल करेछे.

जैन धर्मनी प्राचीनता जैन पुस्तको उपरथीज तेमने साबीत थइ नथी परंतु बौद्ध विगेरे बीजा धर्मना पुस्तको उपरथी पण जैन धर्मनी प्राचीनतानी साबीती माटे ते विद्वान् कहेछे के—

I therefore look on this blunder of the Budhists as a proof for the correctness of the Jain tradition, that fol-

lowers of Parsva actually existed at the time of Mahavira Before following up this line of inquiry I have to call attention to another significant blunder of the Budhists: they call Nataputta an Aggivesana i e Agnivaisyayana; according to the Jainas However he was a Kasyapa, and we may credit them in such particulars about their own Tirthankara

But Sudharman his chief disciple, who in the Sutras is made the expounder of his creed. was an Agnivaisyayana, and as he played a prominent part in the propagations of the Jain religion, the disciple may often have been confounded by outsiders with the master, so that the Gotra of the former was erroneously assigned to the latter Thus by a double blunder the Budhists attach the existance of Mahavira's predecessor Parsva and of his chief disciple Sudharman.

श्रमण भगवंत श्रीमहावीरना वखतमां श्री पार्श्वनाथजीना अनुयायी संतानिया चोकसपणे विचरता, ए जैनना इतिहासनी खरी साबीती होवाथी बुद्धिष्टलोकोनी आ-गंभीर-भूल (जैन ए बुद्धनी शाखाछे) नी मने खात्री थाय छे. आ बाबतनी तपासनो निर्णय करतां पहेलां बुद्धीष्ट लोकोनी बीजी देखीती-गंभीर मोटी भूल माटे वांचनारनुं ध्यान खेंचवानी जरुर पडे छे के, तेओ-बौद्ध लोको ज्ञातपुत्र श्रीमहावीरने अग्नि वैश्यायन गोत्री कहे छे ज्यारे जैनो तेने काश्यप गोत्री कहेछे अने पोताना तीर्थंकरा प्रत्ये जैनोना आ मतने माटे अमे तेने व्याजबी-खरा मानीये छीए. परन्तु श्रीमहावीरना मुख्य शिष्य श्री सुधर्मास्वामी जे अग्नि वैश्यायन गोत्री हता अने जेणे सूत्रोनां तत्वनो प्रकाश करेलो छे अने जैन मार्गना प्रचार प्रयत्नमां जेणे मुख्य भाग लीधोछे, तेथी गुरु शिष्यनां गोत्रना अरसपरस बीजाओए गुंचवाडा करेलाछे तेथी करी श्री महावीर जे काश्यप गोत्री हता तेने अग्नि वैश्यायन गोत्री ठराव्या. बुधीष्ट लोकोनी आ बेवडी मोटी भुल छे के:-

१ श्रमण भगवंत महावीरस्वामी विचरता ते वखत त्रेवीशमा प्रभु श्री पार्श्वनाथजीना अनुयायी-संतानीओ न हता ते अने.

२ श्रीमहावीरस्वामी काश्यप गोत्री हता तेमने अग्निवैश्यायन गोत्री ठराव्या. (एटले के पार्श्वनाथ प्रभुना संतानीआ विचरता (जे जैननुं प्राचीनपणुं साबीत करेछे) अने श्रीमहावीरस्वामी अग्निवैश्यायन गोत्री नहि पण काश्यप गोत्री हता अग्निवैश्यायन गोत्री तो तेमना शिष्य सुधर्मास्वामी हता.

आ सिवाय जैननी प्राचीनता संबंधे खास एक जुदुज पुस्तक नामे (Mahavira and his predecessors) "महावीर अने तेना अग्रगामि" ए नामनुं मि. जेकोबीए प्रसिद्ध करेलुंछे; जेमां जैन मार्गनी प्राचीनता संबंध पुरावा सहीत आबेहुब वर्णन करेलुंछे ते सिवाय मि. लुइराइस, डोकटर फयुर, मि. क्लाट, अने डोकटर बुलर जेवा विद्वानोए पण जैन-फिलोसोफीने मांटे घहुज उत्तम अभिप्राय दर्शावेल छे मात्र तेओ आवी वाणीथीज अटक्या नथी परंतु कर्तव्यमां आगळ वधी जैन-पुस्तकोना भाषान्तर प्रसिद्ध करता जायछे सूत्रोनी भाषा तेओने विदेशी होवा छतां अथाग श्रम लइ तेनुं रहस्य समजवा माटे तेओ जे मथन करे छे ते आ देशना जैनोने शरममां नाखेछे अने जागृत थवाने आढकतरी रीते फटको मारे छे.

डोकटर होरनले उपासकदशांग सूत्रनुं जे भाषांतर प्रसिद्ध कर्युंछे अने तेमां जे धोरण अंगिकार कर्युंछे तेने दरेक भाषांतरकर्त्ताए आजना जमाना माटे अनुसरवुं ए उत्तमछे. जैन सूत्रोना भाषांतर करतां पाश्चिमात्य विद्वानो व्याकरणना दोषो उपर खास ध्यान आपता जणायछे. आम थवाथी मूळ आशय छुटमां समजावामां कोइ प्रसंगे कदाच तेओ पछात रहेला जोवामां आवतो तेथी तेमनी विद्वता संबंधे कशी न्युनता मानवानी नथी कारण के अर्वाचीन समयमां जैनना सूत्रोनी जे हस्तलिखित प्रतोछे तेमां लेखकना हस्त दोषथी अथवा तो परंपराथी कांइक न्युनाधिक लखाणथी, शब्दोनी विभक्ति आघीपाछी थइ जवाना दोषोलागवा संभवछे अने तेथी भाषांतरमां वखते फेर पडी जवा संभवछे. द्रष्टांत तरीके डॉक्टर होर्नल पोताना उपासकदशांग सूत्रना भाषांतरमां छत्रीसमे पाने तेमज बे जगोए ते वाक्य आवेछे ते जगोए "अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडीबंधं करेह" ए, वाक्यनुं भाषांतर एवी रीते करेछे के May it so please

O! beloved of the Devas do not deny me, आ भाषांतर साधारण जैन वांचक वर्गने पण अमान्य थइ पडे; जो के डोक्टर हॉर्नल पोताना पुस्तकनी पाछळनी Criticle notes—पूरवणीमां, आ वाक्यना खरा अर्थ संबंधे संशयमां पडी जुदा जुदा जर्मन विद्वानोना अभिप्रायो तथा व्याकरणना पुरावाओ टांकेछे. डोक्टर ल्युमेन एज वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे करेछे केः— Well then beloved of the Devas do not cause any obstruction आ वाक्यनो शुं खरो अर्थ होवो घटेछे तेना निर्णयपर आववा माटे नीचेनी हकीकत प्रासंगिक गणासे "जे वखते श्री गौतमस्वामी वाणिज्य गाम नामना नगरमां उच्च नीच ने मध्यम कुळने विषे गोचरी करवा माटे उत्सुक थया ते वखते तेणे उपला शब्दोमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीर पासे अरज करीछे. एम अंग्रेजी भाषांतरनो भावार्थछे पण खरी रीते तो ते शब्दो श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना उत्तररुपेछे केः—'जेम तमने सुख उपजे तेम करो विलंब करताना' वळी डोकटर हॉर्नल ते पछीना ७८ माज वाक्यमां कबुल करेछे के श्री गौतम गणधर उपरना शब्दो सांभळीने वाणिज्य गाम नगरमां गौचरी विगेरे कार्यने माटे प्रवर्त्याछे. आ उपरथी वांचक वर्ग कबुल करशे के, डोकटर हॉर्नलनी ते वाक्यने प्रश्नरुपे गणवामां (जे वाजवी रीते उत्तररुपज छे) विभक्तिना दोषने लीधे भूल थइ जणायछे, आवीज रीते मी. जेकोबीने पण पोताना आचारांग सूत्रमां आपणी भाषा तेने विदेशी होवाथी विपरीत अर्थ थएलो छे. आपणा सूत्रामां वनस्पति विगेरेना जे जे जुदा जुदा खास नामो आवेछे ते खास नामो विषेनी तेओनी ओछी माहेतीथी भाषांतरमां देखीता विपरीत अर्थ थवा पामे ए स्वाभाविकछे, जो के अमे आ तेनी विद्वत्तानी खामी बतावता नथी पण आपणी भाषाना शब्दोनो तेओनो ओछो अनुभवज आनुं कारणभूतछे.

आ रीते आ आचारांग सूत्रना इंग्रेजी भाषांतरमां केटलीक जगोए तेवा विपरीत अर्थ थवा पाम्या होय तो ते पण उपरनाज कारणोने लइनेज गणाय. आपणो जैन संप्रदाय आवा खास शब्दोना अर्थ अंग्रेज विद्वानोने जणाववा कोशीश करे तो तेओ पोताना भाषांतरोमां सुधारो करे अने जैन फिलॉसॉफिने तेओ वधारे देदीप्यमान करे. जैन धर्मनी नवळी

स्थिति आववानुं खास कारण मतभिन्नताछे. जैन वर्गना जुदा जुदा सम्प्रदायवाळाओ पोतानी सत्यता साबीत करवाना प्रवाहमां तणाइ जइ जुदा जुदा शब्दोना अर्थ पोतानी मरजी मुजब करेछे, जेथी तेनी खरी खुबी अद्रश्य थायछे. जैन धर्मने उंच्च स्थितिए लाववा एकत्र थइ ज्ञाननी वृद्धि करवानी वात तो एक वाजुए रही, पण आम शब्दार्थ फेरवी मांहे मांहे क्लेश करी विवाद उपजावी जैनना कानुनोथी विपरीत वर्ती जैन नामने कलंकित करेछे. अर्वाचीन समयमां आवी स्थितिमां केळवायलो वर्ग कया फांटाना पुस्तको वांचवा तेना गुंचवाडामां पडेछे अने छेवटे स्वधर्म नो त्याग करी परधर्म अंगीकार करेछे. आवी कढंगी स्थिति मत भिन्नताथी दिन परदिन वृद्धि पामेछे अने परिणामे दुनियापर दिग्विजय मेळवेल जैन धर्मनी पडतीमां वृद्धि करेछे. परंतु तेमां सुभाग्ये हालना विदेशी विद्वानोए–ओरीएन्टल स्कोलरोए–जैन फिलोसोफी प्रकाशमां लाववाने जे स्तुत्य प्रयास मांडयोछे ते जैन धर्मनी पुनःप्रतिष्ठा प्राप्त करवानी आशा ना किरणरुपछे. कारण के तेओनां भाषांतर कोइपण रीते पक्षपाती तेमज मतभिन्नताना पोषणरुप नथी. परंतु जो स्वदेशी विद्वानोए आवी रीते भाषांतर कर्या होत तो नक्की तेओ शब्दार्थ करवामां पोताना खास संप्रदाय तरफ दोराया होत.

ज्ञानीनो मार्ग स्याद्वादछे तेथी तेमां मतभिन्नता होवी असंभवितछे तेमज ते मार्गने आचरनारा खरा विद्वानोए पण तेवा कदाग्रहथी कंटाळी जंगलमां जइ आत्म साधन करेलुंछे एवुं जैन तवारीख उपरथी साबीत थइ शकेछे. आनंदघनजी जेवा महात्माए "षटदरिशण जिन अंग भणीजे." विगेरे शब्दोमां श्री नमीश्वर भगवाननी स्तुति करतां ज्ञानीना स्यादवाद मार्गनेज अक्षरशः कबुल करेलछे.

श्वेतांबरी (देरावासी–स्थानकवासी) अने दिगंबरी सर्व मतवाळाए एकत्र थवुं जोइए. ज्ञानीना वाक्योना विपरित अर्थ करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म बंधायछे, तेथी मतभिन्नता दूर करी सर्व एकत्र बनो अने स्वधर्मनी थती पायमालीनो उद्धार करो अने पुर्वे जेम ते सर्वोत्तम गणातो तेवीज रीते पुनः सर्वोत्तम गणाय तेवो एकत्र थइने प्रयास करो. एकज मावाप ना जुदा जुदा पुत्रो कुसंपी थाय तो ते कुळनो क्षय नजीकछे एम समजीने

आपणा स्याद्वाद मार्गमां भविष्यना श्रेय माटे सर्वेए एकत्र थवुं आवश्यकछे.

'बेनी लडाइमां त्रीजो फावी जाय' ए न्याये आपणा जुदा जुदा संप्रदायवाळाओ लडेछे तेथी त्रीजा फावी जायछे. वस्तीपत्रकना आंकडाओ उपरथी जणायछे के ख्रिस्ती धर्ममां भळेलाओनी संख्या जेटली दश वर्ष पहेलां हती ते करतां हाल बहुज वधी गइछे. आवी रीते छेल्ला सैकामां नीकळेला नवा संप्रदायोनी संख्यामां घणा माणसो भळता जायछे अने जैनधर्मिओ घटता जायछे.

देशनी प्रचलीत भाषामां आपणां सूत्रोना भाषांतर हजु सुधी प्रसिद्ध न थवानां घणां कारणोछे. आपणां लोकोमां पूरतुं उत्तेजन नथी. भंडारवाळाओ पुस्तको पडतर राखी तेमां सडावेछे ने उधइने खवरावेछे, पण उपयोग माटे कोइने आपता नथी, तेमज आम करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म बंधायछे तेनुं लेश पण भान तेमने रहेतुं नथी. ने सबळ कारण तो एछे के तेवा विद्वानोनी आपणामां बहु खामीछे. ज्ञाननुं कोइ पण रीते बहु मानपणुं नथी. पुस्तक सडी जाय—बगडी जाय ते भले पण ज्ञाननो प्रचार करवो ते आंधळी श्रद्धावाळा Orthodox जैन जेनुं संप्रदायमां विशेष प्राबल्यछे तेमने पसंद नथी, आवा रुढ विचारो स्थळे स्थळे मफत लाभ आपतां पुस्तकालयो स्थपाय तोज दूर थइ शके तेवो संभवछे ने तेथी केळवायला वर्गने बहुज लाभ थवा संभवछे. आवा उच्च आशयवाळुं मफत लाभ आपतुं एक पुस्तकालय मोरबीमां बे वर्ष थयां स्थापवामां आव्युंछे, जेनो लाभ घणा लोको छूटथी लेछे, आवां पुस्तकालयो जुदे जुदे स्थळे स्थपाय अने तेथी युवानवर्गने वांचवाना साधनो मळे तो जैन मार्गनी उन्नतिनी आशा राखी शकाय.

जे धोरण अंग्रेज विद्वानोए अंगीकार करेलुंछे ते निष्पक्षपात धोरण अनुसार आ भाषांतर करेलुंछे. अने तेमां कोइ पण जातनां मत मतांतरमां न तणातां स्याद्वाद आशय अंगीकार करेलोछे. जो के आवा भाषांतरो समर्थ विद्वानोनी फसाएली कलमथी भूषित थयां होय तो ते वधारे सारां थाय परंतु अमोए अमारी अल्प शक्ति अने अल्पानुभव वडे जेम बने तेम निष्पक्षपात अने शुद्ध भाषांतर करवा प्रयास करेलो छे.

आ भाषांतर तैयार करतां जो के पूर्ण काळजी राखवामां आवी छे, छतां पण-पूर्वे बांधेलों ज्ञानावरणीय कर्मना उदयथी, कोइ पण दोष रहेलो द्रष्टिगोचर थाय तो ते माटे बीजी आवृत्तिमां सुधारो थवा सूचना करवा सुज्ञ वांचकवर्गने सविनय सप्रेम विज्ञप्ति छे. आवां भाषांतरोथी आचार विचारमां नीची गति लेतां जैनो पोतानी भूलो समजता थशे एम अमने खात्री छे.

कोइ पण पुस्तकनुं भाषान्तर करती वखते तेने लगती ऐतिहासिक विनानो विचार करवो जोइए. आपणां सूत्रोने ज्ञानीओए रचेलां छे. तेओ आप्त पुरुषो होवाथी, कार्यपरत्वे अधिकारी हता, तेथी हालना भाषान्तरना वांचकोने तेओनां ऐतिहासिक वृत्तांतो जाणवानी आवश्यकता छे. पण जेओ जैन कहेवाय छे तेओ मांहेना भाग्येज कोइ आ महात्माओनां वृत्तांतथी अज्ञान हशे. तेमज आ भाषान्तरना छेवटना भागमां पण श्रमण भगवंत श्रीमहावीर तीर्थंकरनुं ऐतिहासिक वृत्तांत आवी जतुं होवाथी अत्रे जुदुं आपवा प्रयास करेलो नथी. ते ज्ञानी पुरुषोनां ज्ञान,दर्शन, चारित्रनुं आवेहुब वर्णन करवुं ते पोतानी अक्कलनी कसोटी कराववानी साथ मूर्ख बनवा जेवुं छे. आवा ज्ञानसंपन्न महात्माओनां रचेलां सूत्रो उपर पूर्वे थयेला विद्वान आचार्योए निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका वीगेरे करीने तेनो संपूर्ण आशय समजाववा मथन करेलुं छे तेमां पण ठेकाणे ठेकाणे " तत्वं केवलिगम्यं " एवा शब्दो द्रष्टिगोचर थाय छे; जे शब्दो कांइ ओछा अर्थसूचक नथी.

आपणे आपणी परंपराए सांभळेलुं छे के ज्ञानीना ज्ञाननो अनंतमो भाग गणधर महाराज समजी शके तेनो पण बहु थोडो भाग आचार्यजी समजी शके वीगेरे. आ उपरथी वांचकवर्गने खात्री थशे के सूत्रोनां भाषान्तर करी तेनुं रहस्य समजाववुं ए ओछुं मुश्केल काम नथी सूत्रोमां ठाम ठाम केटलाएक एवा शब्दो आवे छे के तेना शब्दार्थ अने भावार्थ तरफ विचार करतां बंध बेसतो आशय मळी शकतो नथी. तेमां वनस्पति वीगेरेनां केटलांएक एवां नामो आवेछे के आजना जमानाना विद्वानो—डॉकटरो, रसायणीओ अने बॉटेनिस्टो पण भाग्येज जाणता होय; केटलाएक एवा शब्दो आवेछे के अमोने जे मुश्केली पडीछे तेनो ख्याल मात्र विद्वान् वर्गज करी शकशे.

जैनोमां जे जुदा जुदा संप्रदाय पडेलछे तेनुं कारण पण पूर्वोक्त शब्दोना मनगमता जुदा जुदा अर्थ करवातुंछे आवे प्रसंगे तमाम संप्रदायने; अनुकूळ, तेमज सूत्र शैली अनुसार अर्थ गोठववो तेमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव अने विद्वान् वर्गना अभिप्रायोनो आश्रय लेवो पडयोछे.

जे वखते सूत्रो लखायां अने हाल जे वखते आपणे ते वांचीए छीए तेमां संख्याबंध वर्षोनो आंतरोछे, जे दरम्यान जमानो विद्या, कळा, कौशल्य, अने हुन्नरमां बहु आगळ वधेलोछे अने वर्तमान विदेशी विद्वानोनी दर्शनीक शक्ति आगळ सूत्रज्ञानने विषे पण पूर्ण माहीती धरावनार पुरुषोनी पुरती खोटछे, तेनुं कारण आपणा रुढ विचारोने वळगी रहेवानी आपणी टेवछे. एक कहेवतछे के. "Be a Roman in Rome" एटले के देश काळने मान आपीने वर्तवाथी स्वधर्म तेमज व्यवहार पक्षमां सुगमता रहेछे.

आ सूत्रना भाषांतर संबंधे "मुंबइ समाचार" मां जे कडवी टीकाओ चर्चापत्र तरीके प्रसिद्ध थयेली छे अने जेमां मात्र आंधळी श्रद्धापर दोराइ निष्पक्षपात द्रष्टिथी दूर रही, लखाण करवामां आव्युंछे, ते अमारी समज बहार हतु एम कोइए धारवानुं नथी, अमे पोते पण कबुल करीए छीए के पवित्र सूत्रानां भाषान्तर करवां अने तेमनुं रहस्य बहार लाववुं ए बहुज मुश्केल अने महाभारत काम छे. परन्तु हालना द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावने अनुसरी, केळवाएलो वर्ग जेना पर भविष्यनी प्रजा अने स्वधर्मना उदयनो आधार छे तेओ, आवां मूळ सूत्रो भंडारोमां सडतां पडेलां होवाथी, समजवाने, भाषाना अजाणपणाने लीधे, प्रयत्न करता नथी, ते अटकाववानी खातर "Something is betterthan nothing" ए न्यायने अनुसारे अमोए आ भाषान्तर एक विद्वान साधु मुनिराजनी काळजी भरी देखरेख नीचे तैयार करेलुं छे. जो के ज्ञानावरणीय कर्मनी बाहुल्यताने लइने अमो निर्दोष होवानो दावो करी शकता नथी छतां अमोए सर्व संप्रदायवाळाओने अनुकूळ पडे तेम सादी अने सरळ भाषामां भाषान्तर करवा यथाशक्ति प्रयत्न करलो छे—ज्यारे सघळी कोमो धर्म ज्ञानमां ऊंडी उतरती जइ पोत पोतानी भाषामां पोतानां धर्म पुस्तको प्रसिद्ध करे छे त्यारे जैन सूत्रो के जे मागधी भाषामां लखायेलां

छे, ते भाषा देशना कोइ पण भागमां प्रचलित नहीं होवाथी, ते वांचवा अने समजवा हालनो केटलो जैन वर्ग श्रम ले छे तेना आंकडा अमो बहार लावीए तो पोताना पग परज कुहाडो मारवा जेवुं थाय.

आ सूत्रनुं भाषान्तर बहुज संभाळथी करवामां आव्युं छे अने वळी वधारे खुशी थवा जेवुं एछे के जैन संप्रदाय मांहेनां एक करतां वधारे पक्षवाळाओए साथे मळीने आ भाषान्तर तैयार करेलुं होवाथी ते निष्पक्षपात थाय तेमां नवाइ जेवुं नथी अने तेथी सर्वेने ते रुचीकर थवा संभव छे.

आ भाषान्तर अमोए लांबो वखत थयां तैयार करेलुं परंतु द्रव्य, क्षेत्र, काळ अनेभावनांसारा संजोग वच्चे आ महान् पवित्र पुस्तक प्रसिद्ध थाय एवी अमारी इच्छा हती. छेल्लां त्रण चार वर्षथी आपणा आर्य देशने अनावृष्टि अने दुष्टकाळथी बहु पीडावुं पडे छे तेथी अमो सारा वखतनी राह जोता हता छतां केटलाक सुज्ञ मित्रोना आग्रहथी आवा संजोगो वच्चे पण आ पुस्तक प्रसिद्ध करवुं पड्युं छे आ पुस्तकनो व्होळो फेलावो थइ सदुपयोग थाय एवुं अमे इच्छीए छीए.

आ भाषान्तर करवामां जे विद्वान साधु मुनिराजजीए अमोने निष्पक्षपात अने निःस्वार्थ सहायता आपली छे अने जे पोतानुं नाम प्रसिद्धिमां लाववा खुशी नथी तेनो अमो अमारा जीगरथी उपकार मानीए छीए.

आ भाषान्तर करतां भूलथी, दृष्टिदोषथी, हस्तदोषथी के विचार दोषथी जे कांइ मूळ सूत्रकारना अभिप्रायथी विपरीत थयुं होय तेने माटे श्री अरिहंत, सिद्ध, केवळी, तथा श्री चतुर्विध संघनी साक्षीए अमे अंतः करण पूर्वक माफी मागीए छीए.

अशाड पूर्णिमा.

प्रो. रवजीभाइ देवराज.
अने
जैन स्कोलर्स—मोरबी.

विज्ञापना.

अथवा

(वांचनारने भलामण--)

वांचनार! हुं आजे तमारा हस्तकमळमां आवुं छुं, मने यत्न पूर्वक वांचजो, मारां कहेलां तत्त्वने हृदयमां धारण करजो, हुं जे जे वात कहुं छुं ते ते विवेकथी विचारजो; एम करशो तो तमे ज्ञान, ध्यान, नीति, विवेक, सद्गुण, अने आत्मशान्ति पामी शकशो.

तमो जाणता हशो के केटलाक अज्ञान मनुष्यो नहि वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने पोतानो वखत खोइ दे छे अने अवळे रस्ते चडी जाय छे, आ लोकमां अपकीर्ति पामे छे तेमज परलोकमां नीची गतीए जाय छे.

तमे जे पुस्तको भण्या छो अने हजु भणो छो ते पुस्तको मात्र संसारनां छे; परन्तु आ पुस्तक तो आ भव अने परभव बन्नेमां तमारुं हित करशे. भगवाननां कहेलां वचनोनो एमां उपदेश करेलोछे.

तमे कोइ प्रकारे आ पुस्तकनी आशातना करशो नहि! तेने फाडशो नहि. डाघ पाडशो नहि, के बीजी कोइ पण रीते बगाडशो नहि. विवेकथी सघळुं काम लेजो, विचक्षण पुरुषोए कहेलुं छे के--विवेक त्यांज धर्म छे.

तमने एक ए पण भलामण छे के जेओने वांचता नहि आवडतुं होय अने तेनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेने वांची संभळावबुं.

तमे जे वातनी गम पामो नहि ते डाह्या पुरुष पासेथी समजी लेजो, समजवामां आळस के मनमां शंका करशो नहि, तमारा आत्मानुं आथी हित थाय तमने ज्ञान, शान्ति, आनंद मळे, तमो परोपकारी, दयाळु, क्षमावान विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ एवी शुभ याचना अर्हत भगवान् कने करी आ पाठ पूर्ण करुं छुं.

"मोक्ष माळा."

अनुक्रमाणिका.

श्रुतस्कंध पहेलो.

पृष्ठ

अध्ययन पहेलुं. (शस्त्र परिज्ञा)

पहेलो उद्देशः—आत्मपदार्थ विचार तथा कर्मबंधहेतु विचार. १

बीजो उद्देशः—पृथ्वीकायनी हिंसानो परिहार ४

(दुःखना अनुभव माटे अंधबधिरनुं दृष्टांत कलम १५)

त्रीजो उद्देशः—अप्कायनी हिंसानो परिहार. ८

चोथो उद्देशः—अग्निकायनी हिंसानो परिहार. ११

पांचमो उद्देशः—वनस्पतिकायनी हिंसानो परिहार. १४

(शरीरना साधर्म्यथी वनस्पतिमां जीव स्थापवानी युक्ति-कलम ४४)

छट्ठो उद्देशः—त्रस जीवोनी हिंसानो परिहार.

(त्रस जीवोनी हिंसाना हेतुओ-कलम ४४)

सातमो उद्देशः—वायु कायनी हिंसानो परिहार. २१

अध्ययन बीजुं. (लोक विजय)

पहेलो उद्देशः—मात पिता वगेरे लोकने जीती संयम पाळवो. २५

बीजो उ०—अरति टाळी संयममां द्रढ रहेवुं. २८

त्रीजो उ०—मानने टाळवुं तथा भोगमां रक्त न थवुं. ३१

चोथो उ०—भोगोथी रोगो थाय छे. ३४

पांचमो उद्देशः—विषय भोग त्यागीने लोक निश्राए आहारादिक लइने विचरवुं. ३७

छट्ठो उद्देशः—संयमार्थे लोकने अनुसरतां छतां तेनी ममता न करवी. ४२

अध्ययन त्रीजुं. (शीतोष्णीय.)

पहेलो उद्देशः—परमार्थे सूतेलो कोण? ४७

बीजो उद्देशः—पापनां फळ तथा हितोपदेश. ५०

त्रीजो उद्देशः—पाप न करवां अने परीषह सहेवा एटलाथी कंइ साधु नथी थवातुं. ५३

चोथो उद्देशः—कषाय छांडवा. ५६

अध्ययन चोथुं. (सम्यक्त्व)

पहेलो उद्देशः—सत्यवाद. ५९

वीजो उद्देशः—परमतनुं विचार पूर्वक खंडन. ६१

त्रीजो उद्देशः—तपोनुष्ठान. ६४

चोथो उद्देशः—संयममां संस्थित रहेवुं. ६६

अध्ययन पांचमुं. (लोकसार)

पेहेलो उ०—प्राणिनी हिंसा करनार, विषयो माटे आरंभमां प्रवर्त्तनार तथा विषयोमां जे आसक्त होय तेने मुनि न गणवो. ६९

वीजो उ०—जे हिंसादिक पापोथी निवर्त्यो होय तेज मुनि गणाय. ७२

त्रीजो उ० जे मुनि होय ते कशो परिग्रह न राखे तथा काम भोगनी इच्छा पण न करे ७५

चोथो उ०—अजाण अगीतार्थ अने सूत्रार्थमां निश्चय विनाना मुनिने एकला फरवामां घणा दोष थाय छे. ७९

पांचमो उ०—मुनिए सदाचारथी वर्त्तवुं तथा तेना माटे जळाशयनो दृष्टांत. ८२

छठो उ०—उन्मार्गमां न जवुं तथा राग द्वेष तजवा. ८५

अध्ययन छट्ठुं. (धूत)

पेहेलो उ०—स्वजन संबंधीओ छोडीने धर्ममां परायण थवुं. ८९

वीजो उ०—कर्मोने आत्माथी दूर करवा. ९४

त्रीजो उ०—मुनिए अल्प उपकरण राखवा अने शरीरने जेम बने तेम कसता रहेवुं. ९७

चोथो उ०—मुनिए सुख लंपट नहि थवुं. ९९

पांचमो उ०—मुनिए संकटोथी नहि डरवुं तथा कोइ प्रशंसा के सत्कार करे तेथी खुशी न थवुं. १०२

(उपदेशवा योग्य आठ वावनो कलम ३८५)

अध्ययन सातमुं. (महा परिज्ञा)

सात उ०—विच्छिन्न थया छे. १०७

अध्ययन आठमुं. (विमोक्ष)

पेहेलो उ०—कुशीळ परित्याग. १०८

(लोक ध्रुव छे के अध्रुव ? कलम ३९६)

बीजो उ०—अकल्पनाय परित्याग. ११२

त्रीजो उ० खोटी शंकानुं निवारण-(परीषहोथी न डरवुं.) ११५

चोथो उ०—मुनिए कारण योगे वेहानसादि बाळ मरण पण करवा. ११७

पांचमो उ०—मुनिए मांदा थतां भक्त परिज्ञाए मरण करवुं. १२०

छट्ठो उ०—धैर्य युक्त मुनिए इंगित मरण करवुं. १२३

सातमो उ०—पादपोपगमन मरण. १२६

आठमो उ०—काळ पर्यायथी त्रणे मरणनी विधि. १२९

अध्ययन नवमुं. (उपधान श्रुत.)

पहेलो उ०—महावीर स्वामिनो विहार. १३५

बीजो उ०—महावीर स्वामिनी वसति. १४१

त्रीजो उ०—वीर प्रभुए केवां परीषह सह्यां. १४५

चोथो उ०—वीर प्रभुनी तपश्चर्या. १४९

श्रुत स्कंध बीजो.

[पहेली चूलिका]

अध्ययन दशमुं. [पिंडैषणा.]

पेहेलो उ०—मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो. १५५

[ग्रहस्थना घरे प्रवेश करवानी विधि.] १५८

बीजो उ०—मुनिए अशुद्ध आहार न लेवो तथा जमणवारमां न जवुं. १६२

त्रीजो उ०—मुनिए जमणवारमां जवाथी थता गेर फायदा. १६७

चोथो उ०—मुनिए जमणवारमां न जवुं. १७२

पांचमो उ०—मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो. १७५

छट्ठो उ०—केवो आहार लेवो तथा केवो न लेवो तेना नियमो. १८१

सातमो उ०—केम अने केवो आहार लेवो तथा केम अने केवो न लेवो. १८६

[पाणीनो अधिकार.] १९०

आठमो उ०-पाणी, फळ, फूल, तथा परचुरण आहार लेवा न लेवाना नियमो. १९२

[कंद फळादिकनो अधिकार.] १९३

नवमो उ०—क्यो आहार लेवो अने क्यो न लेवो. १९९

दशमो उ०—मुनिए आहारपाणी लावतां शी रीते वर्त्तवुं. २०४

अगीयारमो उ०—मळेला आहार माटेनी वे शिक्षाओ तथा सात पिंडैपणाओ अने सात पाणेपणाओ. २०९

अध्ययन अग्यारमुं [शय्या]

पहेलो उ०—वसतिना विचित्र दोपोनुं वर्णन २१६

वीजो उ०—मुनिने गृहस्थ साथे वसतां थता दोपो तथा नव जातनी वसति. २२९

त्रीजो उ०—मुनिए कया स्थळे रहेवुं—कया स्थळे न रहेवुं २४३

[संस्तारकनी चार प्रतिज्ञाओ] २४९

अध्ययन वारमुं [ईर्या]

पहेलो उ०—विहारना नियमो. २४९

[मुनिए वहाणपर क्यारे चढवुं]

वीजो उ०—वहाणपर चडवा तथा पाणीमाथी पसार थवा विगेरे विधि. २५९

त्रीजो उ०—विहार करवानी विधि. २६७

अध्ययन तेरमुं. [भापा जात.]

पहेलो उ०- भापाना सोळ विभाग तथा चार प्रकारो. २७५

वीजो उ०—मुनिए केवी रीते वोलवुं? २८१

अध्ययन चौदमुं [वस्त्रैपणा.]

पहेलो उ०—मुनिए वस्त्रो केवां अने केम लेवां? २९०

वीजो उ०—वस्त्र संवंधी वधु आज्ञाओ. ३०२

अध्ययन पंदरमुं [पात्रैपणा.]

पहेलो उ०—पात्र केवां अने शी रीते लेवां? ३०७

वीजो उ० -पात्र विषे वधु आज्ञाओ. ३१३

अध्ययन सोलमुं. [अवग्रह प्रतिमा.]

पेहेलो उ०—रहेवानुं मकान केवुं पसंद करवुं? ३१७

वीजो उ०—रहेवानुं मकान पसंद करवानी रीत तथा ते बाबतनी सात प्रतिज्ञाओ. ३२३

बीजी चूलिका.

अध्ययन सतरमुं [स्थान]

पेहेलो उ०—उभा रहेवानी जग्या केवी पसंद करवी. ३३२

अध्ययन अढारमुं [निषीथिका]

पेहेलो उ०—अभ्यास करवा माटे जगा केवी पसंद करवी. ३३५

अध्ययन ओगणीसमुं. उच्चार प्रश्रवण.

पेहेलो उ०—स्थंडिल माटे केवी जग्या पसंद करवी? ३३७

अध्ययन वीशमुं. (शब्द)

पेहेलो उ०—मुनिए शब्दमां मोहित न थवुं. ३४६

अध्ययन एकवीशमुं. (रूप)

पेहेलो उ०—रूप जोइ मोहित न थवुं. ३५३

अध्ययन बावीशमुं. (पराक्रिया)

पेहेलो उ०—वीजानी क्रियामां मुनिए केम वर्त्तवुं? ३५५

अध्ययन त्रेवीशमुं. [अन्योन्य क्रिया.]

पेहेलो उ०—मुनिओए अरसपरस थती क्रियामां केम वर्त्तवुं? ३६१

त्रीजी चूलिका.

अध्ययन चोवीशमुं. [भावना.]

पेहेलो उ०—महावीर प्रभुनुं चरित्र तथा पांच महाव्रतोनी भावनाओ [भावनाओ.] ३६२

अध्ययन पचीशमुं. [विमुक्ति.]

पेहेलो उ०—हित शिक्षाना काव्यो. ३९८

(समाप्ति.)

आचाराङ्ग सूत्रम्.

प्रथमः श्रुतस्कन्धः

शस्त्रपरिज्ञानात्मकं प्रथम मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

सुयं मे आउसं, तेणं भगवया एवमक्खायं । (१)

श्रुत स्कंध[1] पेहेलो

अध्ययन[2] पेहेलुं.

शस्त्र परिज्ञा.[3]

अथवा

भाव शस्त्रोनी समज.

पेहेलो उद्देश.

(आत्मपदार्थ[4] विचार तथा कर्मबंध हेतु[5] विचार.)

(आत्मपदार्थ विचार.)

(सुधर्मस्वामी[6] जंबूने[7] कहेछे) हे दीर्घ आयुष्यवाळा जंबू, में ([8]श्रमण भगवान महावीर[9] पासेथी) सांभळेलुं छे; ते भगवान् आ प्रमाणे बोल्या हता.(१)

---

१ श्रुतस्कंध एटले सूत्रनो भाग. २ अध्ययन एटले अध्याय. ३ शस्त्र बे जातना छेः–द्रव्य शस्त्र अने भाव शस्त्र. द्रव्य शस्त्र तरवार विगेरे. भाव शस्त्र पापमां प्रवर्तता मन वचन अने शरीर. अहीं ए भाव शस्त्र लेवां, तेनी परिज्ञा एटले समज. परिज्ञा बे छे–ज्ञ परिज्ञा, अने प्रत्याख्यान परिज्ञा, ज्ञ परिज्ञा एटले ए क्रियाओ कर्म बंधनी हेतु छे एवुं बरोबर समजवुं. अने प्रत्याख्यान परिज्ञा एटले तेवुं समजीने तेओनो त्याग करवो. ४ जीव. ५ कर्म बांधवानां कारणो. ६ श्री महावीर प्रभुना पांचमा गणधर. ७ सुधर्म स्वामीना शिष्य. ८ परोपकारार्थ महाश्रम लेनार. ९ छेल्ला तीर्थंकर.

इह मेगेसिं णो सण्णा भवइ, तंजहा, पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि? अहे दिसाओ वा आगओ अहमंसि? अण्णयरीओ वा दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि?। एवमेगेसिं णो णायं भवइ, अत्थि मे आया उववाइए? णत्थि मे आया उववाइए? के अहमंसि? के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि ? (२)

से जं पुण जाणेज्जा सहसम्मइयाए, परवागरणेणं, अण्णेसिं अंतिए वा सोच्चा, तंजहा, पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि, जाव अण्णयरीओ दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि। एवमेगेसिं णायं भवइ, अत्थि मे आया उववाइए, जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा

आ जगतमां जेम केटलाक जीवोने (एवुं) ज्ञान नथी होतुं के हुं कइ दिशाथी (अत्रे) अवेलो छुं? पूर्वथी के दक्षिणथी? पश्चिमथी के उत्तरथी?ऊपरथी के नीचेथी? अथवा कोइ पण दिशाथी के विदिशाथी? तेज प्रमाणे केटलाक जीवोने एवु ज्ञान (पण) नथी होतुं के मारो आत्मा [१] पुनर्जन्म पामनारो छे के नहि? हुं (अगाउ) कोण हतो? अथवा अहिंथी चवीने [२] (जन्मांतरमां) हुं कोण थइश? (२)

हवे [जेओ "हुं कइ दिशाथी आव्यो छुं" एवुं नथी जाणता तेओमांनो] कोइ जीव, जातिस्मरण [३] विगेरे [४] ज्ञानथी, अथवा तीर्थंकरना आपेला उत्तरथी अथवा बीजा कोइना पासेथी सांभळीने जाणी शके के हुं अमुक दिशाथी अथवा विदिशाथी आव्यो छुं; तेज प्रमाणे केटलाएकने एवुं ज्ञान होय छे के, मारो आत्मा पुनर्जन्म पामनारो छे, जे आत्मा अमुक दिशा अथवा विदिशाथी आवेलो छे. अने जे अमुक दिशा अथवा विदिशा अथवा सर्वदिशाथी आवेलो छे ते हुं छुं.

१ जीव, २ मरीने. ३ जेनाथी गया जन्मनी वात याद आवे एवुं ज्ञान. ४ विगेरे शब्दथी अवधि, मन पर्यव अने केवल ज्ञान.

अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ जो आगओ अणुसंचरइ, सोहं । से आयावादी, लोगावादी, कम्मावादी, किरियावादी ।(३)

अकरिस्सं च हं, काराविस्सं च हं, करओयावि समणुन्ने भविस्सामि; एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति। (४)

अपरिण्णायकम्मा खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ साहेति, अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ, विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ । (५)

तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेइया। (६)

आवा ज्ञानवाळो जे पुरुष होय तेज (खरेखरो) आत्मवादी,[1] लोकवादी, कर्मवादी, अने क्रियावादी [जाणवो]. (३)

(कर्म बंध हेतु विचार).

में कीधुं, १ में कराव्युं, २ में बीजा करनारने रुडुं मान्युं, ३ हुं करुंछुं, ४ हुं करावुं छुं, ५ हुं बीजा करनारने रुडुं मानुंछुं, ६ हुं करीश, ७ हुं करावीश, ८ हुं बीजा करनारने रुडुं मानीश ९ (ए नव भेदोने मन वचन अने कायथी[2] गणीए तो सत्यावीश भेद थाय) (ए प्रमाणे) एटलाज (मात्र) आखा लोकमां कर्मसमारंभ एटले कर्म बांधवाना कारणभूत क्रियाओना भेदो जाणवाना छे. (४)

ए क्रियाओने नहि जाणनार पुरुषज आ दिशाओ तथा विदिशाओ अने सर्व दिशाओमां भम्या करे छे, अनेक योनिओमां[3] उपजे छे, अने अणगमता स्पर्श विगेरना दुःखो भोगवे छे. (५)

(आ प्रमाणे भगवाने आपेलुं भाषण बोलीने हवे पोते सुधर्म स्वामी जंबूने कहे छे)

ए क्रियाओ माटे भगवाने "परिज्ञा" (एटले शुद्ध समज) आपेली छे. (६)

---

१ वादी माननार—आत्मवादी आत्मा माननार २ शरीर ३ जातिओमां

इमस्सचेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए, जाइमरणमोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं। (७)

एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति। (८)

जस्सेते लोगंसि कम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी त्ति वेमि[1]। (९)

[द्वितीय उद्देश:]

अट्टे[2] लोए परिजुण्णे दुस्संबोहे अविजाणए; अस्सिं[3] लोए पव्वइए तत्थ तत्थ पुढो, पास, आतुरा परितावेंति। (१०)

---

[1] ब्रवीमि [2] आर्त्तः [3] अस्मिन्

(ए क्रियाओमां मागसो,) आ शरीरने वधु टकाववा माटे, कीर्त्ति मेळववा माटे, मान पामवा माटे, अने खान पान तथा धनादिकना माटे (प्रवर्ते छे.) (७)

(ए प्रमाणे) आखा लोकमां ऊपर बताव्या तेटलाज क्रियाना भेदो जाणवाना छे. (८)

(उपसंहार)

(समस्त वस्तुना जाणनार भगवान् केवळ ज्ञानथी साक्षात् जोइने कहे छे के) जेणे ए क्रियाना भेदो (ऊपरनी जणावेली बे परिज्ञाओथी) शुद्ध समजेला होय, तेज, कर्मोने समजीने तेना कारणोथी दूर रहेनार मुनि जाणवो.)

ए प्रमाणे (हे जंबू ए सघळुं हुं भगवान् पासेथी सांभळीने तने) कहुंछुं. (९)

बीजो उद्देश.

(पृथ्वीकायनी हिंसानो परिहार.)

आ जगत्मांना जीवो (विषय अने कषायथी) पीडायेला छे, वधी रीते हीन थएला छे, अने घणी मुशीबते समजी शके तेवा बनेला छे, (कारण के) तेओ अजाण छे; (अने एवाज होवाथी,) तेओ अधीरा थइने गरीब पृथ्वीकायना जूदा जूदा रूपमां ते पृथ्वीकायने संताप्या करे छे. (१०)

संति पाणा पुढो सिया । लज्जमाणा पुढो, पास[११]

अणगारा मो त्ति एगे[1] पवयमाणा; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणा अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ। [१२]

तत्थखलु भगवया परिण्णा पवेइआ। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण—माणण—पूयणाए, जाइमरणमोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं, से सयमेव पुढविसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं पुढविसत्थं समारंभावेइ, अण्णेवा पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणइ। तं से अहियाए, तं से अबोहिए।[१३]

से तं संबुज्झमाणे आयाणयिं[2] समुट्ठाए सुच्चा खलु भगवओ,

१ [बौद्धाः] २ [ज्ञान दर्शन चारित्र रूप] आदानीयं. ३ इत्यर्थे गृद्धः

पृथ्वीमां जूदा जूदा अनेक जीव छे. एथीज करीने, ज्ञानीओ तेनी हिंसा करतां शरमाय छे. (११)

केटलाएक [1] भिक्षुको कहे छे के "अमेज मात्र अणगार एटले जीवरक्षाने माटे घर छोडीने थयेला यतिओ छीए" पण ए तेमनो मात्र वक्रवादज छे कारणके तेओ आ पृथ्वीथी थता कामोमां पृथ्वीकायना जीवोने अनेक हथियारोवडे मारता रहे छे, तथा ते साथे वनस्पति विगेरे अनेक जीवोने पण मारे छे. (१२)

आ स्थळे भगवाने शुद्ध समज आपी छे के प्राणीओ, लांबुं जीववा माटे, कीर्त्ति मेळववा माटे, मान पामवा माटे, जन्म जरा तथा मरणथी छुटा थवा माटे, अने दुःख मटाडवा माटे, जाते पृथ्वीकायनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे-बीजाने करतां रुडुं माने छे; पण ए बधुं तेमने अहित करनार अने अज्ञान वधारनार (थवानुं) (१३)

समजु पुरुष ए पृथ्वीकायनी हिंसाने अहित करनारी जाणता थका साक्षात्

१ (बौद्धमतना.)

अणगाराणं अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए। इच्चत्थं[3] गढिए लोए; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ। [१४]

से बेमि—अप्पेगे अंध मब्भे,[1] अप्पेगे अंध मच्छे;[2]—अप्पेगे पाय मब्भे, अप्पेगे पाय मच्छे;—अप्पेगे गुंफ मब्भे, २® अप्पेगे जंघ मब्भे, २ अप्पगे जाणु मब्भे, २ अप्पेगे ऊरू मब्भे, [2]अप्पेगे कडि मब्भे, २ अप्पेगे णाभि मब्भे, २ अप्पेगे उयर मब्भे, २ अप्पेगे पास मब्भे, २ अप्पेगे पिट्ठि मब्भे, २ अप्पेगे उर मब्भे, २ अप्पेगे हियय मब्भे २ अप्पेगे थण मब्भे, २ अप्पेगे खंध मब्भे, २ अप्पेगे बाहु मब्भे २ अप्पेगे हत्थ मब्भे, २ अप्पेगे अंगुलि मब्भे, २ अप्पेगे णह मब्भे, २ अप्पेगे गीव मब्भे २ अप्पेगे हणुय मब्भे, २ अप्पेगे होट्ठ मब्भे,

[1]आभिंद्यात्[2] आच्छिंद्यात् ® द्विकचिह्नात् सर्वत्र अच्छे इत्यंत वर्तिपदमपि वाच्यम्

तीर्थंकर भगवान् अथवा तेमना साधुओ पासेथी पोताने आदरवा लायक (ज्ञान दर्शन अने चारित्र रुप) वस्तुओ सांभळी करीने तेमनो अंगीकार करे छे.(अने) तेवा पुरुपो एवुं समजे छे के आ (पृथ्वीकायना आरंभ) ते खरेखर कर्मबंधनो हेतु छे, मोहनो हेतु छे, मरणनो हेतु छे, अने नरकनो हेतु छे; एवुं छतां जे घणा लोको ए पृथ्वीकायना जीवोने तथा तेना आयना बीजा अनेक जीवोने अनेक प्रकारना शस्त्रोवडे मारता रहेछे, ते मात्र तेओ खावा पीवा तथा कीर्ति विगेरे मेळववामां मुंझाइ पडया छे. (१४)

(हे शिष्य, जो तमे मने पूछशो के ए पृथ्वीकायना जीवो देखता नथी, सूंघता नथी, सांभळता नथी अने चालता पण नथी माटे एमने मारतां ते शी पीडा थती हशे तो हुं एक दृष्टांतथी कहुं छुं के जेम कोइ एक जन्मथीज अंधबधिर पुरुष होय तेने) जूदा जूदा माणसो तेना पग, घूंटी, जंघा, घूंटण, साथळ, केड,

२ अप्पेगे जीह मब्भे, २ अप्पेगे तालु मब्भे, २ अप्पेगे गल मब्भे, २ अप्पेगे गंड मब्भे, २ अप्पेगे कन्न मब्भे, २ अप्पेगे णास मब्भे, २ अप्पेगे अच्छि मब्भे, २ अप्पेगे भमुह मब्भे, २ अप्पेगे णिडाल मब्भे, २ अप्पेगे सीस मब्भे; २ अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए। (१५)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति। एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। (१६)

तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं पुढविसत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहिं पुढविसत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णे पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा। जस्सेते पुढविकम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि। (१७)

नाभि, पेट, पांसळी, पूंठ, छाती, हैयुं, स्तन, खभा, बाहु, आंगळीओ, नख, गळुं, हडपची, होठ, जीभ, ताळु, लमणा, कान, नाक, आंख, भ्रमर, ललाट, अने माथुं विगेरे अवयवोमां भालानी अणीओ परोवे [त्यारे ते अंधबधिरने जे प्रमाणे वेदना थाय छे. तेज प्रमाणे एकेंद्रिय जीवोने पण मारतां वेदना थाय छे.]

(अथवा जेम एक माणसने कोइ एकदम घा मारी मूर्छित करे अने पछी मारी नाखे त्यारे तेने मूर्च्छा होवा छतां पण पीडा थायज छे ते प्रमाणे ए पृथ्वीकायना जीवोने पण मारतां वेदना थायज छे.) (१५)

ए पृथ्वीकायनी हिंसा करनार पुरुषने आरंभनुं ज्ञान अने त्याग नथी होता एटले आरंभ लाग्या करे छे, अने तेनी हिंसा वर्जनार पुरुषने आरंभनुं ज्ञान तथा त्याग होय छे एटले आरंभ लागी शक्तो नथी. (१६)

[माटे] बुद्धिमान् पुरुषे ए बधुं जाणीने जाते पृथ्वीकायनी हिंसा करवी नहि बीजा पासे कराववी नहि, अने तेना करनारने रुडुं मानवुं नहि. [एवी रीते] जे पृथ्वीकायनी हिंसाने अहित करनारी समजीने त्याग करे तेज मुनि जाणवो; एम हुं कहुंछुं. [१७]

अणेगरूवे पाणे विहिंसइ। [२३]

से बेमि, संति पाणा उदयनिस्सिया जीवा अणेगे। इह खलुभो अणगाराणं उदयं जीवा वियाहिया[१]। सत्थं चेत्थ अणुवीइ[२] पास। पुढो सत्थं पवेदितं। [२४]

अदुवा अदिन्नादाणं। [२५]

"कप्पति णे कप्पति णे पाउं, अदुवा विभूसाए,"[३] पुढोसत्थेहिं विउट्टंति[४] एत्थवि तेसिं णो णिकरणाए[५]। [२६]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति।

१ व्याख्याताः २ अनुविचिन्त्य ३ [इत्युक्त्वा इतिशेषः] ४ व्यावर्त्तयंति [व्यपरोपयंति] ५ निकरणाय [निश्चयाय] [आगम इतिशेषः]

ना जीवोने संहार करे छे. [२३]

एवे हुं कहुं छुं के पाणीना साथे तेमां बीजा अनेक प्राणिओ-जीवो रहेला छे. पण जैनआगममां तो, ए पाणी जाते पण सजीव छे, एम साधुओने जणावेलुं छे. [माटे साधुओए अचित्त पाणी वापरवुं, ते अचित्त पाणी स्वभावे पण थाय छे अने शस्त्रना संयोगे पण थाय छे, तेमां साधुओए शस्त्रना संयोगथी अचित्त थएलुं पाणी वापरवुं.] ते शस्त्रो अनेक प्रकारना कहेला छे. माटे ते पोते विचारी लेवां. [२४]

वळी सचित्त पाणी वापरतां अदत्तादाननो दोष पण लागे छे. [कारण के सचित एक परपरिगृहीत वस्तु छे अने ते तदंतर्गत[१] जीवोनी रजा न होवा छतां वापर्याथी अदत्तादान लागेज.] [२५]

केटलाक बोले छे के अमारे पीवा माटे अथवा स्नानशोभा माटे पाणी वापरवामां कशो दोष नथी, अने एम कही तेओ अनेक प्रकारे तेनी हिंसा करे छे. पण ए तेमनुं बोलवुं टकी शके तेवुं नथी. [कारण के तेओ पाणीने अजीव कहे छे ते असिद्ध वात छे] [२६]

ए पाणीनी हिंसा करनारने तेनाथी लागता आरंभोनी शुद्ध समज नथी

१ तेनी अंदर रहेला.

एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं उदयसत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं उदयसत्थं समारंभावेज्जा, उदयसत्थं समारंभंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा अस्सेते उदयसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि। (२७)

[चतुर्थ उद्देशः]

से बेमि, णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा। जे लोगं अब्भाइक्खति, से अत्ताणं अब्भाइक्खति; जे अत्ताणं अब्भाइक्खति, से लोगं अब्भाइक्खति। [२८]

होती. अने जेओ ए पाणीनी हिंसा नथी करता तेमने आरंभ बाबत शुद्ध समज छे तथा तेने कशो आरंभ लागतो नथी. एवुं जाणीने बुद्धिमान् पुरुषे जाते पाणीनी हिंसा न करवी. बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं पण नहि मानवुं. एवी रीते पाणी संबंधी आरंभोनी जेने माहिती होय तेज आरंभनुं स्वरूप जाणीने तेनो त्याग करनार मुनि जाणवो एम हुं कहुं छुं. [२७]

चोथो उद्देश.

[अग्निकायनी हिंसानो परिहार.]

हुं कहुंछुं के लोकनो एटले अग्निकायना जीवोनो अपलाप[1] न करवो अने पोताना आत्मानो पण अपलाप न करवो. जे लोकनो अपलाप करे छे ते पोताना आत्मानो अपलाप करे छे; अने जे पोताना आत्मानो अपलाप करे छे ते लोकनो अपलाप करे छे. [२८]

---

१ नोट कलम २०.

जे दीहलोग [1] सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने; जे असत्थस्स खेयन्ने, से दीहलोगसत्थस्स खेयन्ने। [२९]

वीरे हिं एयं अभिभूय दिट्ठं संजतेहिं सया जतेहिं सया अप्पमत्तेहिं। [३०]

जे पमत्ते गुणट्ठिए, [2] से हु दंडे पवुच्चति। तं परिण्णाय मेहावी, इयाणिं णो, जमहं पुव्वमकासी पमादेणं। (३१)

लज्जमाणा पुढो, पास, अणगारा मो त्ति एगे पवयमाणा; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारंभेणं अगणिसत्थं समारंभमाणे, अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति। (३२)

---

१ (दीर्घ लोकः खलु वनस्पति कायोज्ञेयः) २ (गुणाः अग्निगुणाः तेषुस्थितः)

जे पुरुष, दीर्घलोक अर्थात् वनस्पति तेने बाळवानुं शस्त्र जे अग्निकाय तेनुं स्वरुप जाणे छे ते संयमनुं स्वरुप जाणे छे. जे संयमनुं स्वरुप जाणे छे ते वनस्पतिना शस्त्ररुप अग्निकायनुं स्वरुप जाणे छे. (२९)

आ वातने संयत एटले प्राणातिपातादिक पापथी अलग रहेनार अने हमेशां निर्दोषपणे चारित्र पाळवामां यत्नवंत, अने अप्रमादी, एवा पराक्रमी पुरुषोए परीषहादिकोने हरावी केवळज्ञान पामी साक्षात् दीठी छे. (३०)

जे प्रमादी थइने अग्निसमारंभमां वर्त्या करतो होय ते जुलमगार कहेवाय छे. एवुं जाणीने बुद्धिमान् पुरुष विचारे छे के जे अगाउ अग्निसमारंभ कर्यो छे ते हवेथी नहि करुं. (३१)

केटलाक शरमाता थका बोले छे के अमे अणगार छीये, पण ए तेमनो फोगटनो बकवाद छे; जे माटे तेओ अनेक प्रकारे अग्निनी तथा ते साथे बीजा अनेक जीवोनी हिंसा कर्या करे छे. [३२]

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिया। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए, जाइ मरणमोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं, से सयमेव अगणिसत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा अगणि सत्थं समारंभमाणे समणुजाणाति। तं से अहियाए, तं से अबोहिए। [३३]

से तं संबुज्झमाणे आयाणियं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए। इच्चत्थं गढिए लोए; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणिकम्मसमारंभेणं अगणिसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति।" [३४]

से बेमि, संति पाणा, पुढविणिस्सिया, तणणिस्सिया, पत्तणिस्सिया, कट्ठणिस्सिया, गोमयणिस्सिया, कयबराणिस्सिया। संति संपातिमा पाणा आहच्च[1] संपयंति य। अगणिं च खलु पुट्ठा एगे संघाय मावज्जंति। जे

१ आहत्य [उपेत्य]

अहीं भगवाने स्पष्ट रीते आज्ञा करी छे के, तेओ आ जींदगानीनी कीर्त्ति, मान, अने खानपान माटे, जन्म जरामरणथी छूटवा माटे तथा दुःखो टाळवा माटे जाते अग्निनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे अने तेना करनारने रुडुं माने छे. पण ते तेमने आहित अने अज्ञान वधारनार थवानुं. [३३]

एवुं जाणीने सत् पुरुषो, भगवान अथवा तेमना साधुओ पासेथी आदरवा लायक वस्तुओ सांभळीने आदरे छे अने तेओ एवुं माने छे के अग्निकायनी हिंसा ते, खरेखर, कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, अने नर्कनी हेतु छे. पण अजाण लोको ए बाबत विषे घणा मुंझाइ पडया छे. जे माटे तेओ अनेक प्रकारे अग्निकायनी तथा ते साथेना बीजा जीवोनी हिंसा करता रहे छे. [३४]

जे माटे हुं बतावी आपुंछुं के जमीन, तणखला, पान, लाकडां, छाणा अने कचरो ए सर्वे साथे त्रस जीवो रहे छे. ते त्रस जीवो तथा बीजा ओचिंता अंदर आवी पडता संपातिम[1] त्रस जीवो ते बधा अग्नि समारंभ करतां अग्निना

[1] उडता नाना जीवो.

तत्थ संघाय मावज्जंति, ते तत्थ परियाविज्जंति, जे तत्थ परियाविज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति। [३५]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति। एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। [३६]

तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं अगणिसत्थं समारंभेज्जा, नेवन्नेहिं अगणिसत्थं समारंभाविज्जा, अगणिसत्थं समारंभंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा। जस्सेते अगणिकम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि। [३७]

पंचम उद्देश.

तं णो करिस्सामि मत्ता सतिमं, अभयं विदित्ता तं जे णो करए

अंदर आव्याथी तेमना शरीर संकोचावा मांडे छे, पछी तेओ मूर्च्छा पामी मरण पामे छे. [३५]

ए रीते अग्निना समारंभमां पाप रहेलुं छे. माटे ते जे न करे तेने ए पाप न लागे. [३६]

एवुं जाणीने बुद्धिमान् पुरुषे जाते अग्निनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं न मानवुं. आवी रीते जेने अग्निकाय बाबत शुद्ध माहिती होय तेज शुद्ध समजवान् मुनि जाणवो एम हुं कहुं छुं. [३७]

पांचमो उद्देश.

[वनस्पति कायनी हिंसानो परिहार.]

हे बुद्धिमान् शिष्य, जे पुरुष वनस्पतिने सजीव जाणीने मनमां विचा-

एसोवरए [१] एत्थोवरए [२] एस अणगारेत्ति पवुच्चति। [३८]

जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे। [३९]

उड्ढं अहं तिरियं पाईणं पासमाणे रूवाइं पासइ, सुणमाणे सद्दाई सुणइ, उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सद्देसुयावि एस लोगे वियाहिए। एत्थ अगुत्ते अणाणाए पुणो पुणो गुणासाते वंकसमायारे पमत्ते अगार मावसे। [४०]

लज्जमाणा पुढो, पास अणगारा मो त्ति एगे पवदमाणा; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति। (४१)

---

१ एष उपरत: [आरंभात् निवृत:] २ अत्र उपरत: [नान्यत्र]

रेछे के हुं दीक्षित थइने वनस्पतिनो आरंभ नहि करुं, अने ए रीते जे संयम स्वरुप जाणीने वनस्पतिनो आरंभ नथी करता एवा आरंभत्यागी जैन मतमां आसक्त होय तेज अणगार कहेवाय. (३८)

जे विषयो छे ते संसार छे अने जे संसार छे ते विषयो छे. (३९)

माणसो, उंचे नीचे अने आडी दिशाओमां जोतायका रुप देखे छे सांभळता थका शब्द सांभळेछे अने शब्द तथा रुपमां आसक्त थता रहे छे. विषयो एवा छे.[१] तेओमां जेजो मुनि थइने अगुप्त एटले विन परहेज-गार रहे छे ते भगवाननी आज्ञाथी बाहर वर्त्ते . तेओ वारंवार विषयोनुं आस्वादन करता थका असंयमने आचरनार थइने प्रमादी बनी घरवास मांडी ले छे. (४०)

केटलाक शरमाता थका बोलेछे के अमे अणगार छीए पण ते तेमनो फोगटनो बकवाद छे, कारणके तेओ अनेकप्रकारना शस्त्रोथी वनस्पतिकाय तथा तेना साथेना बीजा अनेक जीवोनी हिंसा करता रहेछे. (४१)

१(Jacobi) that is called the world भावार्थ—लोकने विषे विषयो एवा छे.

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाएजातीमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव वणस्सतिसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइसत्थं समारंभावेति, अण्णे वा वणस्सइसत्थं समारंभमाणे समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबोहिए। (४२)

से त्तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए। इच्चत्थं गढिए लोए; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अन्ने अणेगरूवे पाणे विहिंसति। (४३)

से बेमि,—इमंपि [1] जाइधम्मयं, एयंपि [2] जाइधम्मयं; इमंपि

---

१ इदं (मनुष्य शरीरं) २ एतत् (वनस्पति शरीरं)

अहिं भगवाने शुद्धरीते समजाव्युं छे के आ जींदगीनी कीर्त्ति, मान, तथा, खानपानने अर्थे, जन्म जरामरणथी छूटवामाटे, तथा दुःखो टाळवा माटे जीवो, जाते वनस्पतिनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने तेना करनारने रुडुं माने छे. पण ते तेमने अहित कर्त्ता तथा अज्ञान वधारनार थवानुं. (४२)

एवुं जाणीने केटलाएक सत्पुरूषो भगवान् अथवा तेमना साधुओ पासेथी स्वरुप सांभळीने आदरवा लायक वस्तु आदरे छे. तेवा पुरुषो एवुं समजे छे के वनस्पतिनी हिंसा ए खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, अने नरकनी हेतु छे. तेम छतां लोक, कीर्त्त्यादिकना अर्थे विचार शून्य बनेला छे, जे माटे आ वनस्पतिकायनो विविध शस्त्रोवडे समारंभ करता थका बीजा अनेक प्राणीओनी हिंसा करता रहे छे. (४३)

हुं (जेम सांभल्युं छे तेम) कहुंछुं के वनस्पति सजीव छे केमके जेम आ आपणुं शरीर पेदा थती चीज छे तेम ए वनस्पति पण पेदा थती चीज छे; जेम

वुड्ढिधम्मयं, एयंपि वुड्ढिधम्मयं; इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं; इमंपि छिन्नं मिलाति,[३] एयंपि छिन्नं मिलाति; इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं; इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं; इमंपि असासयं, एयंपि असासयं; इमंपि चओवचइयं; एयंपि चओवचइयं; इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं। (४४)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति। एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वणस्सइसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा जस्सेते

३ म्लाति [म्लानतांगच्छति]

शरीर वधे छे तेम ए पण वधे छे; जेम शरीरमां चित्त छे तेम वनस्पतिने पण चित्त छे; १ जेम शरीर कपायुं थकुं सूके छे तेम ए पण सूके छे; जेम शरीरने आहार खपे छे तेम एने पण आहार खपे छे; जेम शरीर अनित्य छे; तेम ए पण अनित्य छे; जेम शरीर अशाश्वत एटले प्रतिक्षण बदलतुं छे तेम ए पण तेवीज छे; जेम शरीर वधे घटे छे तेम ए पण वधे घटे छे; अने जेम शरीर अनेक विकार पामेछे तेम ए वनस्पति पण अनेक विकार पामी शके छे; माटे वनस्पति सजीव छे. (४४)

ए वनस्पतिनो समारंभ करतां थकां अनेक आरंभ लागेछे. जे तेनो समारंभ न करे तेने कशो आरंभ लागतो नथी. एवुं जाणीने बुद्धिमान पुरुषे जाते वनस्पतिनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न करावबी, अने तेना करनारने रुडुं नहि मा-

१ जे माटे धावडी—रीसामणी विगेरे झाडोनो स्वाप तथा प्रबोध करमाई प्रफुल्लित थवुं जोवामां आवेछे केटलाक झाडो पोतानी पाडोथी निधानने वींटी राखे छे. बकुलनुं झाड दारुना कोगळा छांटवाथी फळे छे. इत्यादि ए बाबतना घणा दृष्टांतो छे.

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाएजातीमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं से सयमेव वणस्सतिसत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइसत्थं समारंभावेति, अण्णे वा वणस्सइसत्थं समारंभमाणे समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबोहिए। (४२)

से त्तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए। इच्चत्थं गढिए लोए; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइकम्मसमारंभेणं वणस्सइसत्थं समारंभमाणे अन्ने अणेगरूवे पाणे विहिंसति। (४३)

से बेमि,—इमंपि [१] जाइधम्मयं, एयंपि [२] जाइधम्मयं; इमंपि

---

१ इदं (मनुष्य शरीरं) २ एतत् (वनस्पति शरीरं)

अहिं भगवाने शुद्धरीते समजाव्युं छे के आ जींदगीनी कीर्त्ति, मान, तथा, खानपानने अर्थे, जन्म जरामरणथी छूटवामाटे, तथा दुःखो टाळवा माटे जीवो, जाते वनस्पतिनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने तेना करनारने रुडुं माने छे. पण ते तेमने अहित कर्त्ता तथा अज्ञान वधारनार थवानुं. (४२)

एवुं जाणीने केटलाएक सत्पुरूषो भगवान् अथवा तेमना साधुओ पासेथी स्वरुप सांभळीने आदरवा लायक वस्तु आदरे छे. तेवा पुरुषो एवुं समजे छे के वनस्पतिनी हिंसा ए खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, अने नरकनी हेतु छे. तेम छतां लोक, कीर्त्त्यादिकना अर्थे विचार शून्य बनेला छे, जे माटे आ वनस्पतिकायनो विविध शस्त्रोवडे समारंभ करता थका बीजा अनेक प्राणीओनी हिंसा करता रहे छे. (४३)

हुं (जेम सांभळ्युं छे तेम) कहुंछुं के वनस्पति सजीव छे केमके जेम आ आपणुं शरीर पेदा थती चीज छे तेम ए वनस्पति पण पेदा थती चीज छे; जेम

वुड्ढिधम्मयं, एयंपि वुड्ढिधम्मयं; इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं; इमंपि छिन्नं मिलाति, [३] एयंपि छिन्नं मिलाति; इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं; इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं; इमंपि असासयं, एयंपि असासयं; इमंपि चओवचइयं; एयंपि चओवचइयं; इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं। (४४)

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति। एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वणस्सइसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा जस्सेते

३ म्लाति [म्लानतांगच्छति]

शरीर वधे छे तेम ए पण वधे छे; जेम शरीरमां चित्त छे तेम वनस्पतिने पण चित्त छे; १ जेम शरीर कपायुं थकुं सूके छे तेम ए पण सूके छे; जेम शरीरने आहार खपे छे तेम एने पण आहार खपे छे; जेम शरीर अनित्य छे; तेम ए पण अनित्य छे; जेम शरीर अशाश्वत एटले प्रतिक्षण बदलतुं छे तेम ए पण तेवीज छे; जेम शरीर वधे घटे छे तेम ए पण वधे घटे छे; अने जेम शरीर अनेक विकार पामेछे तेम ए वनस्पति पण अनेक विकार पामी शके छे; माटे वनस्पति सजीव छे. (४४)

ए वनस्पतिनो समारंभ करतां थकां अनेक आरंभ लागेछे. जे तेनो समारंभ न करे तेने कशो आरंभ लागतो नथी. एवुं जाणीने बुद्धिमान पुरुषे जाते वनस्पतिनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, अने तेना करनारने रुडुं नहि मा-

१ जे माटे धावडी—रीसामणी विगेरे झाडोनो स्वाप तथा प्रबोध करमावुं प्रफुल्लित थवुं जोवामां आवेछे केटलाक झाडो पोतानी पाडोथी निधानने वींटी राखे छे. बकुलनुं झाड दारुना कोगळा छांटवाथी फळे छे. इत्यादि ए चावतना घणा द्रष्टांतो छे.

से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए। इच्चत्थं गढिए लोए; जमिणं विरूवरूवेहिं तसकायसमारंभेण तसकायसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसंति। (५१)

से बेमि—अप्पेगे अच्चाए[१] हणंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति, अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणिताए वहंति, अप्पेगे हिययाए वहंति, एवं पित्ताए, वसाए, पिच्छाए, पुच्छाए वालाए, सिंगाए, विसाणाए, दंताए, दाढाए, नहाए, ण्हारुणीए, अट्ठीए, अट्ठिमिंजाए, अट्ठाए, अणट्ठाए, अप्पेगे हिंसिसु मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे

१ अर्चार्थे [शरीरार्थं]

एम जाणीने भगवान अथवा तेमना मुनिओ पासेथी तत्व सांभळीने आदरणीय वस्तुने ग्रहण करनारा पुरुषो एवुं जाणता रहे छे के ए त्रसकायनी हिंसा खरेखर कर्म बंधनी हेतु छे, मोहनी हेतु छे, मरणनी हेतु छे, तथा नरकनी हेतु छे, तेम छतां लोको विषयगृद्ध बनेला छे, जेथी तेओ विचित्र आरंभाथी त्रस जीवो तथा तेना संबंधे रहेल स्थावर जीवोनी हिंसा करता रहे छे. (५१)

(त्रस जीवोनी हिंसाना हेतुओ.)

केटलाएक लोको जानवरोना शरीरनो भोग आपवा माटे तेने मारे छे. केटलाएक तेना चामडा माटे मारे छे. केटलाएक तेना मांस माटे मारे छे. एम केटलाएक लोहीना माटे, केटलाएक हृदयना माटे, केटलाएक पित्त माटे, वसाओ[१] माटे, पींछां माटे, पूंछडी माटे, वाळ माटे, शींगडा माटे, दाढाओ माटे, नख माटे, नाडीओ माटे, हाडकां माटे, चरबी माटे, एम अनेक स्वार्थो माटे तेने मारे छे. केटलाएक निष्प्रयोजन मात्र गम्मत खातर जीव हिंसा करे छे. केटलाएक "आपणने एणे मार्युं हतुं" एवुं विचारीने तेने मारे छे. केटलाएक "आपणने ए मारे छे"

१शरीरना अंदरनी रगो जे रु पींजवाना मजबूत तांतणा तरीके वपराय छे तेमना माटे.

हिंसिस्संति मत्ति वा वहंति । [५२]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति । एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति । [५३]

तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं तसकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं तसकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, जस्से ते तसकायसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति से हु मुणी परिण्णाय कम्मे त्ति बेमि । [५४]

[सप्तम उद्देशः]

पहू एजस्स[२] दुगंछणाए[३] आयंकदंसी अहियं–ति नच्चा ।

---

२ [एजः कंपमानः सच्चवायुः] ३ [आसेवन परिहारे]

एम धारी तेने मारे छे अने केटलाएक "आपणने ए मारशे" एम विचारी तेने मारे छे. (५२)

ए त्रसकायनो समारंभ करता अनेक आरंभ लागे छे अने तेनुं रक्षण करता कशो आरंभ लागतो नथी. (५३)

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुषे जाते त्रस जीवोनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न कराववी, तथा करनारने अनुमति पण नहि आपवी. जेणे ए रीते त्रसकायनी हिंसा अहितकर्त्ता जाणी त्यक्त करी होय तेज मुनि जाणवो, एम हुं कहुंछुं. (५४)

सातमो उद्देश.

(वायुकायनी हिंसानो परिहार)

जे हिंसाने अहित करनारी जाणी, वायुकायनी हिंसाने दुःख देनारी जाणे

जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ; जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ । एयं तुल-मन्नेसि । इह संतिगया दविया [1] णावकंखंति जीविउं [2] । (५५)

लज्जमाणा पुढो, पास, "अणगारा मोत्ति" एगे पवयमाणा; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ । (५६)

तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया । इमस्सचेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए, जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउं, से सयमेव वाउसत्थं समारंभति, अन्नेहिं वाउसत्थं समारंभावेति, अन्ने वा वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणति; तं से अहियाए, तं से अबोहिए। [५७]

१ [द्रवः संयम स्तद्वंतः] २ [वायु कायोपमर्देन इति शेषः]

छे ते तेनी हिंसानो परिहार करी शके छे. जे आत्मनी अंदरनी वातने जाणे छे ते बाहेरनी वात (पण) जाणे छे, ने जे बाहेरनी वात जाणे छे ते अंदरनी वातने (पण) जाणे छे. ए वे वात सरखी रहेली छे एम समजवुं. माटे अहीं जे शांतिमां मग्न संयमि पुरुषो होय छे तेओ (वायुकायनी हिंसावडे) जीववाने नथी चाहता. (५५)

हिंसाथी शरमाता केटलाएक बोले छे के "अमे अणगार छीए," पण ते तेमनुं बोलवुं व्यर्थ छे केमके जुओ, तेओ विचित्र शस्त्रोथी वायुकाय तथा अन्य अनेक जीवोनी हिंसा करता रहे छे. [५६]

आ स्थळे भगवाने सरस रीते समजण आपेली छे के लोको आ क्षणिक जींदगीना, कीर्ति, मान, तथा उदर निर्वाहार्थे, जन्म मरणथी मुक्त थवा माटे, तथा दुःखने दूर करवा माटे जाते वायुकायनी हिंसा करे छे, बीजा पासे करावे छे, अने करनारने रुडुं माने छे. पण ए प्रवृत्ति तेने अंते अहितकर्त्ता तथा अज्ञान वधारनार थवानी. (५७)

से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए; इह मेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए। इच्चत्थं गढिए लाए; जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्मसमारंभेणं वाउसत्थं समारंभमाणे अन्ने अणेगरूवे पाणे विहिंसाति (५८)

से बेमि—संति संपाइमा पाणा आहच्च संपयंति य। फरिसं च खलु पुट्ठा एगे संघाय मावज्जंति। जे तत्थ संघाय मावज्जंति, ते तत्थ परियाविज्जंति, जे तत्थ परियाविज्जंति से तत्थ उद्दायंति। [५९]

एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति एत्थं सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति। [६०]

तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वाउसत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं वाउसत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ने वाउसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा। जस्सेते वाउसत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मेत्ति बेमि। [६१]

एम जाणीने जेओ भगवान् अथवा तेमना मुनिओ पासेथी तत्वज्ञान पामी आदरणीय वस्तु अंगीकार करे छे तेओ जाणता रहे छे के ए वायुकायनी हिंसा, कर्मबंध—मोह मरण—तथा नरकनी हेतु छे. एम छतां लोको विषयगृद्ध थइ ते वायुकायने विविध आरंभोथी जाते मारे छे, बीजा पासे मरावे छे, अने मारनारने अनुमति करे छे. [५८]

हुं कहुंछुं के ए वायुकायनी साथे पण संपातिम जीवो छे. तेओ एकठा थई वायुनी अंदर पडे छे. अने वायुनी हिंसा करतां ते पण पीडाय छे. [५९]

माटे वायुकायनी हिंसा करतां अनेक आरंभ लागे छे अने तेनी हिंसानो परिहार करतां कशो आरंभ लागतो नथी. [६०]

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुषे जाते वायुकायनी हिंसा न करवी, बीजा पासेथी न करावबी, अने करनारने रुडुं पण नहि मानवुं. ए रीते जेने वायुकाय संबंधी समारंभनी खरी समज होय तेज हिंसापरिहार करनार मुनि जाणवो. (६१)

एत्थंपि जाण उवादीयमाणा, जे आयारे न रमंति, आरंभमाणा विणयं वयंति, छंदोवणीया, अज्झोववण्णा. आरंभसत्ता पकरेंति संगं। (६२)

से वसुमं सव्वसमण्णागयपण्णाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावकम्मं णो अन्नेसि। (६३)

तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं छज्जीवणिकायसत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ने छज्जीवणिकायसत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा, । जस्सेते छज्जीवणिकाय सत्थसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मेत्ति बेमि। [६४]

उपसंहार.

जेओ आवा आचारमां नथी रमता, अने आरंभ करता थका पण "अमारे संयम छे" एम बोले छे, तथा स्वेच्छाचारी थइ आरंभमां तल्लीन थइ रहे छे तेओ आठे कर्म बांधे छे. (६२)

माटे संयमी पुरुषे सर्व रीते समजवान थइने न करवा लायक पाप कर्मने कदापि नहि इच्छवुं. (६२)

एम जाणीने बुद्धिमान् पुरुषे जाते छकायनी हिंसा न करवी, बीजा पासे न करावववी, अने तेना करनारने रुडा पण नहि मानवा. ए रीते जेने ए छकायना आरंभनी पूर्ण माहिती होय तेज आरंभत्यागी मुनि जाणवो. (६४)

लोकविजय नामकं द्वितीयमध्ययनम्

[प्रथम उद्देशः]

जे गुणे,[1] से मूलट्ठाणे[2]। जे मूलट्ठाणे, से गुणे। इति से गुणट्ठी महता परियावेणं वसे पमत्ते, तंजहा—माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुन्हा मे, सहि—सयण—संगंथ[3]—संथुया मे, विवित्तोवगरण—परियट्टण[4]—भोयणच्छायणं मे, इच्चत्थं गढिए लोए वसे पमत्ते। (६५)

१[गुणाः विषयाः] २ (मूलं संसारस्तस्य स्थानं कारणं) ३ (स्वजनस्यापि स्वजनः) ४ द्विगुणत्रिगुणी करणं परिवर्त्तनं

अध्ययन बीजुं.

लोकविजय.

पहेलो उद्देश.

(मातपिता वगेरे लोकने जीती संयम पाळवो.)

जे विषयो छे ते संसारना हेतु छे, अने जे संसारना हेतु छे ते विषयो छे. माटे विषयार्थी होय छे ते प्रमादी बनी बहु दुःख पामता रहे छे. ते ए रीते के,—मारी मा, मारो बाप, मारो भाइ, मारी बेन, मारी स्त्री, मारा पुत्रो, मारी पुत्री, मारा मित्र, मारा सगा, मारा संबंधि, मारा साधनो, मारी दोलत, मारुं खानपान, अने मारां वस्त्र एवी अनेक पंचातोमां फसी पडेला लोको मरणपर्यंत गाफल थइ आरंभ करता रहे छे. (६५)

अहोय राओ परियप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई, संजोगट्ठी, अट्ठालोभी आलुंपे, सहसाकारे, विणिविट्ठचित्ते एत्थ, सत्थे पुणो पुणो[1]। [६६]

अप्पं च खलु आउयं इह मेगेसिं माणवाणं; तंजहा सोयपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, चक्खुपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाणपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, रसणपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, फासपरिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, अभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए, तओ से एगया मूढभावं जणयाति। (६७)

जेहिं वा सद्धिं संवसति, तेविणं एगया णियगा पुव्विं परिव्वियंति। सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा। णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा। तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा। से ण हासाए, ण किड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए। (६८)

---

१ प्रवर्त्तत इतिशेषः

तथा तेना माटे रात दिवस चिंता करता थका, काळ अकाळनी कशी पण दरकार नहिं धरतां, कुटुंब परिवार तथा धनमां लुब्ध वनी, विषयमांज चित्त धरता थका निर्भयपणे लूंटफाट मचाववा मंडी पडे छे अने अनेक प्रकारे छकायनी हिंसा करता फरे छे. [६६]

मनुष्यनुं आयु घणुं टूंकुं छे. तेना दरम्यान जरा आवतां श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना अने स्पर्शेंद्रियनुं ज्ञान घटतुं जाय छे. वृद्धावस्था जोइने तें वखते ते प्राणी दिग्मूढ बनी जाय छे. [६७]

वळी जेनी साथे ते वसे छे तेज वृद्धावस्थामां तेनी निंदा करवा मांडे छे, अथवा ते पोते पोतानां कुटुंबिओने निंदवा मंडे छे. माटे हे जीव, ते कुटुंब तने बचाववनार के आश्रय आपवा समर्थ नथी. एम वृद्धावस्थामां हास्य, क्रीडा, मोजशोख अने शणगार ए सर्वने माटे पुरुष अयोग्य बने छे. [६८]

इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए [1] अंतरं [2] च खलु इमं संपेहाए धीरो मुहुत्तमपि णो पमायए। वओ अच्चेइ जोव्वणं च। [६९]

जीविए इह जे पमत्ता। से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपिता, उद्दवेता, उत्तासइत्ता, अकडं करिस्सामित्ति मन्नमाणे। (७०)

जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा पुव्विं पोसंति, सो वा ते णियगे पच्छा पोसेज्जा। णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा। तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा, सरणाए वा। [७१]

उवादियसेसेण [3] वा संणिहिसंणियओ कज्जति इह-मेगेसिं असंजताणं भोयणाए। तओ से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति। (७२)

जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा पुव्विं परिहरंति

१ (यथोक्तसंयमानुष्ठानाय) २ (अवसरं) ३ (उपभुक्तशेषेणेत्यर्थः)

एम जाणी बुद्धिमान् पुरुष आ अवसर पामीने संयम माटे तरत उज्माल थाय छे अने घडीभर पण प्रमाद करतो नथी. जे माटे वय अने यौवन धसाराबंध चाल्या जाय छे. (६९)

जेओ तेम नथी जाणता तेओ असंयमथी जीववामां गाफल थइ रहे छे अने तेओ सर्वथी अधिकता मेळववा माटे छकायने मारता, कापता, फोडता, लूंटता, झुंटता, प्राणरहित करता तथा त्रास आपता रहे छे. (७०)

(पण जो तेनुं नसीब मंद होय छे तो कशुं मळी शकतुं नथी) तेथी तेओ कुटुंबनुं पोषण करवाने बदले पोते कुटुंबथी पोषाय छे. अथवा (कदाच तेओने कंइ धन प्राप्ति थतां) तेओ कुटुंबनुं पोषण करे छे पण (अंते) तेओमांनो कोइ कोइने बचावी शकनार नथी. तेम ते पण तेमने बचावी शकनार नथी. (७१)

केटलाएक असंयतिओ बचेला आहारने बीजा दिवसे खावाना माटे राखी मेले छे. पण तेमना शरीरे तेथी कोइ वेळा अनेक रोगो उत्पन्न थाय छे. [७२]

अने त्यारे तेनां सगां स्नेही बधा लांबा थइ बेसे छे[1] कोइ पण बचावी

[1] नो त्याग करे छे. कलम ७१ नी छेली लीटी प्रमाणे समजी लेवुं.

सो वा ते णियगे पच्छा परिहेज्जा। णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा, तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा, सरणाए वा। (७३)

एवं जाणि-तु दुक्खं पत्तेयं सायं, अणभिक्कंतं च खलु वयं सपेहाए, खणं[1] जाणाहि पंडिए [७४]

जाव सोयपण्णाणा अपरिहीणा, जाव णेत्तपण्णाणा अपरिहीणा, जाव घाणपण्णाणा अपरिहीणा, जाव जीहपण्णाणा अपरिहीणा, जाव फासपण्णाणा अपरिहीणा, इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पन्नाणेहिं अपरिहीणेहिं आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जसित्ति बेमि। [७५]

[द्वितीय उद्देशः]

अरइं आउट्टे[2] से मेहावी; खणंसि मुक्के। [७६]

---

१ (अवसरं) २ आवर्त्तेत (निवर्त्तयेत्)

शकतो नथी. तेम हे असंयतिओ तमे पण तेमनाथी मोडा के वहेला लांबा थइ बेसनार छो, ने तेमने बचावी शकनार नथी. [७३]

ए रीते दरेक जीवना सुख दुःख जूदा जूदा सहेवाना जाणीने तथा हजु पोतानी वय कायम रहेली जाणीने हे पंडित आ अवसर ओळख. (७४)

ज्यां लगी श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना, तथा स्पर्शेंद्रियनी विज्ञान शक्ति मंद नथी पडी तेना दरम्यान तुं तारुं आत्मार्थ सिद्ध करी ले. [७५]

बीजो उद्देश.

[अरति टाळी संयममां दृढ रहेवुं]

बुद्धिमान् पुरुषे संयममां अरति थवी दूर करवी, एम कर्याथी घणाज अल्पकाले मुक्त थवाय छे. (७६)

अणाणाए पुट्ठावि एगे णियट्टंति मंदा मोहेण पाउडा[1] । [७७]

"अपरिग्गहा भविस्सामो" समुट्ठाए लद्धे कामे अभिगाहेंति, अणाणाऐ मुणिणो, पडिलेहंति, एत्थं मोहे पुणो पुणो सण्णा, णो, पाराए । (७८)

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा परिगामिणो लोभं अलोभेण दुगंछमाणे लद्धे कामे णाभिगाहइ, विणावि लोभं निक्खम्म एस अकम्मे जाणति पासति । पडिलेहाऐ णावकंखति, एस अणगारेत्ति वुच्चति । (७९)

अहोयराओ परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाइ, संजोगट्ठी, अट्ठालोभी आलुंपे, सहसाकारे, विणिविट्ठचित्ते एत्थ, सत्थे पुणो पुणो । (८०)

---

१ प्रावृताः

अज्ञानी मूढ जीवो परीसह के उपसर्ग आवतां आज्ञाथी बाहेर थइ संयमथी भ्रष्ट थता रहे छे. [७७]

" अमे अपरिग्रहीज छीए " एम बोली केटलाएक दीक्षित थया थका पण आज्ञाथी बाहेर थइ मुनिना वेषने लजवता थका मळता काम सेवता रहे छे तथा ते मेळववाना उपयोगमां मच्या रही वारंवार मोहमां बुड्या रहे छे तेओ नथी आ पार, के नथी पेले पार. १ [७८]

खरेखर तेज पुरुषो विमुक्त २ जाणवा जेओ संयमने सदा पाळता रहे छे. जे पुरुष निर्लोभ थइ लोभने धिकारी कहाडी मळता कामभोगने इच्छे नहि, अथवा जे मूळथीज लोभने निर्मूळ करी दीक्षित थाय ते कर्मरहित बनी सर्वज्ञ सर्वदर्शी थाय माटे एम विचारीने जे लोभने इच्छे नहि ते अणगार कहेवाय छे.(७९)

अज्ञानी जीवो रात दीवस दुःखी थता थका, काळ अकाळनी दरकार नहि धरतां, स्त्री अने धनना लोभी बनी वगर विचारे वारंवार अनेक आरंभ करता रहे छे. [८०]

---

१ एटले के नथी मुनी अने नथी गृहस्थ. २ त्यागी.

से आय[1] बले १, से णाइबले २, से सयणबले ३, से मित्तबले ४, से पेच्चबले ५, से देवबले ६, से रायबले ७, से चोरबले ८, से अतिहिबले ९, से किवणबले १०, से समणबले ११, इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं दंडसमायाणं संपेहाए भया कज्जति। पावमोक्खोत्ति मण्णमाणे। अदुवा आसंसाए। (८१)

तं परिन्नाय मेहावी, णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेव्वण्णं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, एएहिं कज्जेहिं दंडं समारभंतेवि अन्ने णो समणुजाणेज्जा। (८२)

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिए। जहेत्थ कुसले णोवलिप्पिज्जासित्ति बेमि। (८३)

१आत्मबलार्थं. २असकृत् (पुनः पुनः)

आत्मबळ,[१] जातिबळ, स्वजनबळ, मित्रबळ, भेत्यबळ,[२] देवबळ, राजबळ, चोरबळ.[३] अतिथिबळ, कृपणबळ,[४] तथा श्रमणबळनी प्राप्ति माटे अथवा पापक्षयना माटे अथवा आशंसाथी[५] लोको अनेक आरंभमां प्रवर्त्ते छे. (८१)

माटे बुद्धिमान् पुरुषे ए कामो माटे जाते पण हिंसा नहि करवी, बीजा पासे पण हिंसा नहि करावती, अने करनारने पण रुडुं नहि मानवुं. [८२]

ए मार्ग आर्योए (तीर्थंकरोए) बताव्यो छे. माटे चतुर पुरुषोए जेम पोताना आत्मा कर्मथी न लेपाय तेम वर्त्तवुं. [८३]

१ शरीर बळ. २ भवांतर जतां थतुं बळ. ३ चोरो मने मदद आपशे ते. ४ भिक्षुकनुं बळ मने थशे. ५ भवांतरमां ते वस्तु मळवानी इच्छाथी.

[तृतीय उद्देश:]

से असइं[1] उच्चगोए, असइं णीयागोए। णोहीणे णो अतिरित्ते, णो पीहए इतिसंखाए के गोयावादी, के माणावादी, कंसि वा एगे गिज्झे[2]। (८४)

तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुप्पे, भूएहिं जाण, पडिलेह सातं समिते एयाणुपस्सी[3] तंजहा—अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुंटत्तं, खुज्जत्तं[4], वडहत्तं, सामत्तं, सबलत्तं, सहपमाएणं अणेगरूवाओ जोणीओ संधाति, विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ। [८५]

से अबुज्झमाणे हतोवहते जाइमरणमणुपरियट्टमाणे। (८६)

१ असकृत् [पुनः पुनः] २ गृध्येत. ३ एतदनुदर्शी. ४ कुब्जत्वं.

त्रीजो उद्देश.

(मानने टाळवुं तथा भोगमां रक्त न थवुं)

जीव घणीवार ऊंच गोत्रमां[1] ऊपजेलो छे. अने घणीवार नीचगोत्रमां ऊपजेलो छे. एमां कशी न्यूनता के अधिकता नथी. माटे कोइ पण जातनो गर्व नहि करवो. आवुं समजतां कोण पोताना गोत्रनो गर्व करशे अथवा मान धरशे अथवा गृद्ध थशे ? [८४]

माटे बुद्धिमान् पुरुषे हर्ष के रोष नहि करवो. बधा जीवोने सुख प्रिय छे एम जाणी समितिवंत थइ विचारवुं. आ प्रमाणे जीव पोताना प्रमादथीज आंधळापणुं, बहेरापणुं, मुंगापणुं, टुंठापणुं, कुबडापणुं, वांकापणुं, काळापणुं, तथा कावरापणुं [विगेरे] पामे छे, अनेक योनियोमां जन्म धरे छे अने भयंकर दुःखो वेठे छे. [८५]

अजाण जीव रागथी ग्रस्त तथा अपयशवंत थयो थको जन्म मरणमां फसतो रहे छे. [८६]

१ ऊंच कुळमां.

जीवियं पुढो पियं इह मेगेसिं माणवाणं खेत्तवत्थुममाया माणाणं । [८७]

आरत्तं, विरत्तं, मणिकुंडलं, सहहिरण्णेण इत्थियाओ परिगिज्झ तत्थेव रत्ता । (८८)

" ण इत्थं तपो वा, दमो वा, णियमोवा, दिस्सति " संपुण्णं बाले जीविउकामे लालप्पमाणे मुढे विप्परियास—मुवेति । (८९)

इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुवचारिणो; जातीमरणं परिन्नाय चरे संकमणे दढे । (९०)

णत्थि कालस्सणागमो । (९१)

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया, दुक्खपडिकूला, अप्पियवहा, पियजीविणो, जीविउ कामा । (९२)

सव्वेसिं जीवियं पियं । [९३]

क्षेत्र तथा वस्तुमां ममत्वान् दरेक प्राणिने जीववुं घणुं प्रिय लागे छे. (८७)

[तेवा बाळजीवो] रंगबेरंगी वस्त्र, मणि, आभरण, हिरण्य, अने स्त्रीओ पामीने तेमांज आसक्त थइ रहे छे. (८८)

एवा संपूर्ण बाळ अने मूढ बनेला जीवो विपर्यास पामीने निर्भयपणे जीववा चहाता थका आ रीते बके छे के, " आ जगतमां यम के नियमकशा कामना नथी." [८९]

पण जे पुरुषो आचारवंत छे तेओ तेम जीववा नथी चहाता. तेओ तो जन्म मरण थतां जाणी संयम पाळवामां ज उज्माल रहे छे, [९०]

मोतनो कंइ भरोसो नथी. (९१)

बधा जीवो लांबी आवरदाने तथा सुखने चाहे छे, अने जीववा मागे छे मरण अने दुःख बधाने अप्रिय लागे छे. [९२]

जीववुं बधाने प्रिय लागे छे. (९३)

तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजिया णं, संसंचिया णं, तिधेण जावि तत्थ मत्ता भवइ अप्पा वा बहुगा वा, से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोयणाए [९४]

तओ से एगया विविहं परिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति। तंपि से एगया दायादा विभयंति, अदत्ताहारा वा से अवहरंति, रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से दज्झइ [९५]

इति से परस्सट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति। [९६]

मुणिणा हु एयं पवेइयं। [९७]

अणोहतरा[1] एते, णय ओहं तरित्तए। अतीरंगमा एते, णय ती

१ (ओघः कर्मरूपः प्रवाह स्तं न तरंतीत्यनोघतराः)

जीववुं प्रिय होवाथी जे लोको द्विपद तथा चतुष्पदने राखीने द्रव्य संचय करतां थका जे कंइ थोडुं के घणुं खावा पीवा माटे धन एकटुं करे छे तेमां मन वचन कायाथी गृद्ध थता रहे छे. [९४]

वखते तेमना पासे घणोज वधतो द्रव्य भंडोळ एकठो थइ जाय छे. पण अंते तेने भायातो वेहेंचे छे, अथवा चोरो चोरी जाय छे, या राजा लुंटी ले छे, या व्यापार विगेरेमां नाश थाय छे, या अग्निथी बळी जाय छे. (९५)

एम बीजाओना माटे ते अज्ञान प्राणीओ क्रूर कर्म करतां थका तेनां दुःख जाते भोगवतां विपर्यास[1] पामे छे [९६]

आ वधुं मुनिए (वीर प्रभुए) जणावेलुं छे. [९७]

परतीर्थिओ के पासत्थाओ[2] संसारनो प्रवाह तरी शकवाना नथी, तथा

१ सुख इच्छता थका दुःख पामे छे. २ नठारा आचारवाळा वेशधारिओ.

गमित्ताए। अपारंगमा एते, णय पारं गमित्ताए। [९८]

आयाणिज्जं च आयाय, तंमि ठाणे[1] ण चिट्ठइ, वितथं पप्पऽखे-यन्ने, तंमि ठाणंमि[2] चिट्ठइ। (९९)

उद्देसो[3] पासगस्स णत्थि। (१००)

बाले पुण णिहे[4] कामसमणुण्णे असमितदुक्खे दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टत्ति बेमि। १०१

चतुर्थ उद्देश:

ततो से एगया रोगसमुप्पाया समुप्पज्जंति। १०२

१ (संयम रुपे) २ [असंयमरुपे] ३ [आज्ञा] ४ स्निहः [रागी]

तेना तीर के पारने पामी शकवाना नथी. (९८)

जेओ संयम लइ पाछा संयममां नथी रही शकता ते अजाण जीवो असत्य उपदेश पामीने असंयममां रहे छे. [९९]

तत्व समजनारने कंइ कहेवुं जरुरनुं नथी. (कारण के ते समजु होवाथी पोते सीधे मार्गे चाल्यो जाय छे (१००)

पण जे बाळ होय छे ते विषयोमां रक्त बनी तेमने सेवन करतो थको दुःखो वधारीने दुःखोनाज चक्रमां रखडे छे. (१०१)

चोथो उद्देश.

[भोगोथी रोगो थाय छे.]

पछी[1] तेने कर्म उदय आवतां रोगो ऊत्पन्न थाय छे, (१०२)

१ कामभोगथी कर्मबंध, कर्मबंधथी मरण, मरणथी नरक, नरकथी गर्भ ने गर्भथी रोग थाय छे.

जेहिं वा सद्धिं संवसति, ते वा णं एगया णियगा पुव्विं परिवियंति। सो वा ते णियगे पच्छा परिविएज्जा। णालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा। तुमंपि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा। (१०३)

जाणि-तु दुक्खं पत्तेयं सायं। (१०४)

भोगामेव अणुसोयंति—इह मेगेसिं माणवाणं, तिविहेण, जावि से तत्थ मत्ता भवइ, अप्पा वा, बहुगावा, से तत्थ गढिए चिट्ठति! भोयणाए। (१०५)

ततो से एगया विप्परिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति। तंपि से एगया दायाया विभयंति, अदत्ताहारे वा से हरति, रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारदाहेण वा से डज्झति। (१०६)

इति से परस्स अट्ठाए कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति। (१०७)

एवे वखते तेना स्नेहिओ तेने अवगणे छे या ते तेओने अवगणे छे कारण के कोइ कोइने राखनार नथी. (१०३)

दुःख सुख सर्व जूदा जूदा भोगवे छे. (१०४)

आ जगतमां केटलाएक जीव[1] मरण लगी पण भोगनीज वांछा धरता रहे छे. तेवाओने जे कंइ थोडी के वगी धन प्राप्ति थाय छे ते खावा पीवा माटे तेमां मन वचन कायाथी गृद्ध थइ जाय छे. (१०५)

कदाच बहु धन मळे छे तो अंते ते धन भायातो वेंचे छे, या चोरो चोरी जाय छे. या राजाओ लूंटी ले छे या व्यापारमां नाश पामे छे, या अग्निथी बळी जाय छे. (१०६)

ए रीते ते अज्ञानी जीवो बीजाना माटे क्रूर कर्म करता थका तेना दुःखो जाते भोगवतां सुख इच्छतां दुःखमां पडे छे. [१०७]

१ जेमके ब्रह्मदत्त केमके ते मरणनी अणीपर तथा नरकमां पण "कुरुमती कुरुमती" ज पोकारतो.

आसं च छंदं च विगिंच धीरे। (१०८)

तुमं चेव तं शल्लमाहट्टु[१]। (१०९)

जे सिया, तेण णो सिया। (११०)

इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा मोहपाउडा। (१११)

थीलोभपव्वहिए ते भो वयंति "एयाइं आयतणाइं"। (११२)

से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरगतिरिक्खाए। (११३)

सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति। (११४)

उदाहु वीरे। अप्पमादो महामोहे। (११५)

[१] आहृत्य (स्वीकृत्य) (अशुभ मादत्से इतिशेषः)

हे धीर पुरुषो तमारे विषयनी आशा अने [१]लालचथी दूर रहेवुं. (१०८)

तमे जातेज ते आशारुप शल्य हृदयमां धरी हाथे करी दुःखी थाओ छो. [१०९]

पैसाथी भोगोपभोग मळे छे, तेम वखते नहि पण मळे. [११०]

पण मोहवंत प्राणिओ ए समजी शकता नथी. [१११]

स्त्रीओमां आसक्त थया थका तेओ बोलछे के "ए स्त्रीओज सुखनी स्थान छे." [११२]

पण खरुं जोतां तो तेओ दुःख, मोह, मरण, नरक, अने तिर्यंच गतिना हेतुभूत छे. [११३]

छतां हमेशां मूढ बनेला जीवो धर्म जाणी शकता नथी. [११४]

वीर प्रभुए मजबुताइथी कह्युंछे के स्त्रीनो विश्वास मुनिए नहि करवो. (११५)

१ परानुवृत्तिथी वांच्छा.

अलं कुसलस्स पमादेणं, संति—मरणं[1] सपेहाए, भिदुरधम्मं सपेहाए। (११६)

णालं पास। अलं तवेएहि। एयं, पास मुणी? महब्भयं। (११७)

णातिवाएज्ज कंचणं। (११८)

एस वीरे पसंसिए—जे ण णिविज्जाति आदाणाए[2]। (११९)

"ण मे देति" ण कुप्पेज्जा, थोवं लद्धुं ण खिंसए, पडिसेहिओ परिणमेज्जा[3], पडिलाभिओ परिणमेज्जा। (१२०)

एयं मोणं समणुवासिज्जासित्ति बेमि। (१२१)

[पंचम उद्देशः]

जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति,

१ (शांतिर्मरणं चेतिद्वंद्वः) २ संयमाय. ३ निवर्त्तेत.

माटे कुशळ पुरुषे अप्रमादथी मोक्ष अने प्रमादथी थतां मरण विचारीने तथा शरीरने क्षणभंगुर जाणीने प्रमाद दूर करवो. [११६]

विषयभोगथी कंइ तृप्ति थती नथी, माटे ए कशा कामना नथी. हे मुनि, ए कामभोगेच्छा महा भयंकर छे एम विचार. [११७]

माटे मुनिए कोइ जंतुने पीडा नहि करवी. [११८]

एवा अप्रमादी पराक्रमी मुनी ज वखणायेला छे, जेओ संयम पाळतां कशो खेद नथी पामता. [११९]

(गोचरीए जतां) कोइ नहि आपे तेना तरफ कोप नहि करवो, थोडुं नव्याथी तेनी निंदा नहि करवी, तेणे ना पाडयाथी झट पाछा वळवुं या तेणे वोहोराव्या बाद पण झट पाछा वळवुं. [१२०]

[हे मुनि,] तारे आवुं मुनित्व पाळवुं. [१२१]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए विषयभोग त्याग करी लोकनिश्राए आहारादिक लइने विचरवुं)

लोको पोताना माटे तथा पोताना पुत्र, पुत्री, वहुओ, नातजात, दाइ, राजा

आसं च छंदं च विगिंच धीरे। (१०८)

तुमं चेव तं शल्लमाहट्टु[1]। (१०९)

जे सिया, तेण णो सिया। (११०)

इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा मोहपाउडा। (१११)

थीलोभपव्वहिए ते भो वयंति "एयाइं आयतणाइं"। (११२)

से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरगतिरिक्खाए। (११३)

सततं मूढे धम्मं णाभिजाणति। (११४)

उदाहु वीरे। अप्पमादो महामोहे। (११५)

---

[1] आहृत्य (स्वीकृत्य) (अशुभ माद्रसे इतिशेषः)

हे धीर पुरुषो तमारे विषयनी आशा अने [1]छालचथी दूर रहेवुं. (१०८)

तमे जातेज ते आशारुप शल्य हृदयमां धरी हाथे करी दुःखी थाओ छो. [१०९]

पैशाथी भोगोपभोग मळे छे, तेम वखते नहि पण मळे. [११०]

पण मोहवंत प्राणिओ ए समजी शकता नथी. [१११]

स्त्रीओमां आसक्त थया थका तेओ बोलछे के "ए स्त्रीओज सुखनी स्थान छे." [११२]

पण खरुं जोतां तो तेओ दुःख, मोह, मरण, नरक, अने तिर्यंच गतिना हेतुभूत छे. [११३]

छतां हमेशां मूढ बनेला जीवो धर्म जाणी शकता नथी. [११४]

वीर प्रभुए मजबुताइथी कह्युंछे के स्त्रीनो विश्वास मुनिए नहि करवो. (११५)

---

[1] परानुवृत्तिथी वांच्छा.

अलं कुसलस्स पमादेणं, संति—मरणं[१] सपेहाए, भिदुरधम्मं सपेहाए। (११६)

णालं पास। अलं तवेएहि। एयं, पास मुणी? महब्भयं। (११७)

णातिवाएज्ज कंचणं। (११८)

एस वीरे पसंसिए—जे ण णिव्विज्जति आदाणाए[२]। (११९)

"ण मे देति" ण कुप्पेज्जा, थोवं लद्धुं ण खिंसए, पडिसेहिओ परिणमेज्जा[३], पडिलाभिओ परिणमेज्जा। (१२०)

एयं मोणं समणुवासिज्जासित्ति बेमि। (१२१)

[पंचम उद्देशः]

जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जांत,

१ (शांतिर्मरणं चेतिद्वंद्वः) २ संयमाय. ३ निवर्तेत.

माटे कुशळ पुरुषे अप्रमादथी मोक्ष अने प्रमादथी थतां मरण विचारीने तथा शरीरने क्षणभंगुर जाणीने प्रमाद दूर करवो. [११६]

विषयभोगथी कंइ तृप्ति थती नथी, माटे ए कशा कामना नथी. हे मुनि, ए कामभोगेच्छा महा भयंकर छे एम विचार. [११७]

माटे मुनिए कोइ जंतुने पीडा नहि करवी. [११८]

एवा अप्रमादी पराक्रमी मुनी ज वखणायेला छे, जेओ संयम पाळतां कशो खेद नथी पामता. [११९]

(गोचरीए जतां) कोइ नहि आपे तेना तरफ कोप नहि करवो, थोडुं मळ्याथी तेनी निंदा नहि करवी, तेणे ना पाडयाथी झट पाछा वळवुं या तेणे वोहोराव्या बाद पण झट पाछा वळवुं. [१२०]

[हे मुनि,] तारे आवुं मुनित्व पाळवुं. [१२१]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए विषयभोग त्याग करी लोकनिश्राए आहारादिक लइने विचरवुं)

लोको पोताना माटे तथा पोताना पुत्र, पुत्री, वहुओ, नातजात, दाइ, राजा

तंजहा, अप्पणो से, पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं, णातीणं, धातीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्मकराणं, कम्मकरीणं, आएसाए[1], पुढोपेहणाए,[2] सामासाए[3], पायरासाए[4], संणिहि–संनिचओ कज्जई इह मेगेसीं माणवाणं भोयणाए। (१२२)

समुट्ठिते अणगारे आरिए आरियदंसी अयं संधित्ति [5]अदक्खु, से णादिए; णादिआवए, णादियंतं समणुजाणए। (१२३)

सव्वामगंधं परिण्णाय णिरामगंधो परिव्वए। (१२४)

अदिस्समाणो कयाविक्कएसु;–से ण किणे, ण किणावए, किणंतं ण समणुजाणए। (१२५

---

१ (आदेशाः प्राघूर्णकास्तदर्थे) २ पृथक् (पुत्रादिभ्यः) प्रहेणकाय. ३ श्यामाशाय–रात्रिभोजनाय. ४ प्रातराशाय–प्रत्यूषभोजनाय. ५ अद्राक्षीत्

दास, दासी, चाकरनफर तथा परोणा माटे तथा पुत्रादिकोने जुदुं जुदुं वेहेंची आपवा माटे खावा पीवा सारु अनेक आरंभ करीने आहार बनावी राखे छे. (१२२)

माटे आवे प्रसंगे संयममां उज्जमाळ, आर्य, पवित्र बुद्धिमान, न्यायदर्शी अने तत्व समजनार अणगारे दूषित आहार लेवो नहि, लेवरावबो नहि, तथा लेनारने प्रशंसवो नहि. [१२३]

बधां दूषणो रूडी रीते जाणीने निर्दूषणपणे संयम पाळवुं. [१२४]

वळी मुनिए आहारनो क्रयविक्रय[1] न करवो, बीजा पासे न कराववो, करनारने रूडुं नहि मानवुं. (१२५)

---

१ लेवड देवड.

से भिक्खू कालण्णे, बालण्णे, [1] मायण्णे, खेयण्णे, खणयण्णे, विणयण्णे, ससमयण्णे, परसमयण्णे, भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे, कालाणुट्ठाई, अपडिन्ने[2] दुहओ[3] छित्ता, नियाई। (१२६)

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं उग्गहं च कटासणं, एतेसु चेव जाणेज्जा। (१२७)

लद्धे आहारे, अणगारे मातं जाणेज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं (१२८)

लाभोत्ति ण सज्जेज्जा, अलाभोत्ति ण सोएज्जा, वहुंपि लध्धुं ण णिहे[4], परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा, अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा (१२९)

१ छांदसत्वात् दीर्घत्वं. २ अनिदानः ३ रागद्वेषाभ्यां. ४ [स्थापयेत्]

एवो मुनि काळ,[1] वळ,[2] मात्रा,[3] खेद,[4] क्षण[5] विनय[6] स्वसमय,[7] परसमय,[8] अने भाव[9] नो जाणनार थइ परिग्रहनी ममता दूर करतो थको यथाकाळ अनुष्ठान करीने निरीह रही[10] रागद्वेष छेदीने मोक्षमार्गमां चाल्यो जाय छे. (१२६)

वळी वस्त्र, पात्र, कंवळ, पादपुंच्छन,[11] वसति[12] तथा कटासन ए सर्वे मुनिए गृहस्थ पासेथी शुद्ध रीते याची लेवां. [१२७]

मुनिए परिमित्त आहार लेवो एम भगवाने जणाव्युं छे. (१२८)

आहार मळ्यो जाणी खुशी नहि थवुं, नहि मळ्यो जाणी शोक न धरवो घणो आहार मळतां तेनो संग्रह राखवो नहि, बीजा परिग्रहथी पण दूर रहेवुं. वळी धर्मोपकरणने पण परिग्रहरूपे नहि देखतां धर्मोपकरणरूपे देखी तेमना पर ममता नहि धरवी. (१२९)

१ अवसर. २ पोतानी शक्ति. ३ विभाग. ४ अभ्यास. ५ समय. ६ ज्ञानादिकनो विनय. ७ स्वमत. ८ परमत. ९ चित्ताभिप्राय. १० इच्छारहितपणे (without love and hate) ११ रजोहरण. (Brooms) १२ रहेवानी जग्या. अवग्रह The ground or place which the house holder allows the mendicant

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते, जहेत्थ कुसले णोवालिप्पेज्जासि त्ति बेमि। [१३०]

कामा दुरतिक्कमा, जीवियं दुप्पडिवूहणं,[१] कामकामी खलु अयंपुरिसे, से सोयति, झूरति, तिप्पति, पिड्डति, परितप्पति। [१३१]

आयतचक्खू लोगविपस्सी लोगस्स अहोभागं जाणति, उड्ढं भागं जाणति, तिरियभागं जाणति। (१३२)

गढ्ढिए अणुपरियट्टमाणे[२] संधिं विदित्ता इह मच्चिएहिं[३], एस वीरे पसंसिए जे बद्धे पडिमोयए। (१३३)

जहा अंतो तहा बाहिं जहा बाहिं तहा अंतो। [१३४]

१ दुःप्रतिवृहणीयं. (दुर्वर्द्धनीयं) २ [कामाभिलाष निवृत्तये न प्रभवतीतिशेषः]
३ मर्त्येषु [यो विषयादीन् त्यजतीतिशेषः]

ए मार्ग तीर्थंकर देवोए बताव्यो छे. एमां प्रवर्त्तनार कुशळ पुरूषो कर्मथी बंधाता नथी. [१३०]

विषय वांछनाथी दूर रहेवुं घणुं विकट काम छे. वळी जीवित पण वधी शकतुं नथी. [माटे कोइ वखते पण प्रमाद नहि करवो] आ[१] जंतु हमेशां विषय वांच्छामां गरकाव थइ रहे छे ने विषयोनो वियोग थतां शोच करे छे, झुरे छे, निर्मर्याद थाय छे, पीडाय छे अने अकलाय छे. (१३१)

दीर्घदर्शी अने दुनिआना रंगने जाणनार पुरूष लोकना अधोभाग ऊर्ध्वभाग अने तिर्यग्भागने जाणे छे [एटले के एमां शी रीते जीव उत्पन्न थाय इत्यादि विना जाणी शके छे.] [१३२]

विषयमां गृद्ध लोको वारंवार संसारमां भटक्या करे छे. माटे मनुष्यभवमां अवसर आवेलो जाणीने जे विषयादिकनो त्याग करे ते पराक्रमी पुरुष वखणायो छे. एवो पुरुष, संसारमां बंधाइ गएला बीजा जीवोने पण अंदरना तथा बाहेरना बंधनोथी छोडावी शके छे. [१३३]

शरीर जेम बाहेर असार छे तेम अंदर पण असार छे. अने जेम अंदर असार छे तेम बाहेर पण असार छे.

१ आ पामर प्राणी.

अंतो पूतिदेहंतराणि पासति पुढोवि सवंति [१] पंडिए पडिलेहए। [१३५]

से मतिमं परिण्णाय मा य हु लालपच्चासी, मा तेसु तिरिच्छ मप्पाण मावायए [२]। [१३६]

कासंकसे [३] खलु अयं पुरिसे, बहुमायी, कडेण मूढे पुणो तं करेति लोभं, वेरं वड्ढति अप्पणो। [१३७]

जमिणं परिकहिज्जइ इमस्स चेव पडिवूहणयाए असरायइ [४] महासड्ढी अट्ट—मेतं पेहाए [५]। [१३८]

अपरिन्नाय कंदति [६] से तं जाणह जमहं बेमि। [१३९]

१ (श्रवंति नवभिः श्रोतैः) २ आपादयेत् ३ काषंकषः किंकर्तव्यताव्याकुलः) ४ अमरायते (अमर इवाचरति) ५ प्रेक्ष्य—पर्यालोच्य ६ अनुभवति.

माटे पंडित पुरुष शरीरनी अंदर रहेल दुर्गंधि वस्तुओ तथा शरीरनी अंदरनी स्थितिओ के जे हमेशां शरीरनी बाहेर मळादिकने झरती रहे छे तेने जाणी आ शरीरनुं यथार्थरूप जाणतो रहे छे. [१३५]

तेवा बुद्धिमान पुरुषे बाळको जेम मुखमांथी वहेती लारने पाछा चूशी ले छे तेम लार चूसनार नहि थवुं. [अर्थात् छांडला भोगोनी पुनरभिलाषा न करवी,] तेमज ज्ञानाभ्यासादिकमां विमुख पण नहि थवुं. [१३६]

"आ कीधुं अने आ करशुं" एवी चितावाळो पुरुष अति मायावी बनी तथा कामकाजथी व्याकुळ थइ वळी पण एवो लोभ करे छे के जेथी पोतानां दुःखोने वधारे छे. [१३७]

जे माटे एवुं केहवाय छे के ते महाइच्छावाळो पुरुष आ क्षणभंगुर शरीरना माटे आरंभ करतो थको जाणे अजर अमर होय एम वर्त्ते छे. [माटे मुनिए] एवा पुरुषने दुःखी जाणीने [काय तथा धनमां मन नहि धरवुं]. [१३८]

मूढ जीवो स्वरुप जाणता न होवाथी इच्छा अने शोकना अनेक दुःख भोगवे छे. माटे हुं जे कामपरित्याग विषे उपदेश आपुं छुं ते धारी राखो. [१३९]

ते इत्थ पंडिते पवयमाणे, से हंता, भेत्ता, लुंपिता, विलुंपिता, उद्दवइता, अकडं करिस्सामित्तिमण्णमाणे जस्सविय णं करेइ[१], अलं बालस्स संगेणं, जे वा से करेति बाले[२], ण एवं अणगारस्स जायतित्ति बेमि। [१६०]

[षष्ठ उद्देशः]

से त्तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए तम्हा पावकम्मं णेव कुज्जा, ण कारवे। १६१

---

१ (तस्यापि हननादिकाः क्रियाः स्युरितिशेषः) २ [तस्याप्यलं संगेनेतिशेषः]

परमार्थने नहि समजनार छतां पंडितपणानुं आभिमान धारी वकवाद करनारा जे परतीर्थिओ काम शमाववाना उपदेशक थइ वर्त्ते छे अने जाणे अमे कंइ अपूर्व काम करशुं एम डोळ धरता थका तेओ जीवोने हणनारा, कापनारा, फोडनारा, लूंटनारा, झूंटनारा, तथा प्राणथी रहित करनारा होय छे. एवा अजाण लोको जेने ऊपदेश आपे छे ते पण कर्मथी बंधाय छे. माटे एवा बाळोनी सोवत नहि करवी, एटलुंज नहि, पण जे तेवाओनी सोवत करता होय तेमनी पण सोवत नहि करवी. अने जे गृहवास छोडी मुनिओ थएला छे तेमने तो एवी रीते जीवघातथी कामचिकित्सा करवानो उपदेश करवो कल्पतोज नथी. (माटे तेमनी सोवत करवी.) [१४०]

छट्टो उद्देश.

[संयमार्थे लोकने अनुसरतां छतां तेनी ममता नहि करवी.]

पूर्वोक्त क्रिया जाणीने संयममां उज्माल थएला मुनिए जाते पाप कर्म न करवुं बीजा पासे पण न कराववुं. [१४१]

सिया तत्थेगयरे विप्परामुसति १, छसु अण्णयरंमि कप्पति।(१४२

सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढे विप्परियास मुवेति, सएण विप्पमाएण२ पुढो वयं पकुव्वति, जंसिम्मे पाणा पव्वहिया, पडिलेहाए णो णिकरणाए,३ एस परिण्णा पवुच्चति, कम्मोवसंती४। (१४३)

जे ममाइयमतिं जहाति, से जहाइ ममाइतं, सेहु दिट्ठपहे मुणी जस्स णत्थि ममाइतं। (१४४)

तं परिन्नाय मेहावी विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णं, से मतिमं परक्कमेज्जत्ति बेमि। (१४५)

णारतिं सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं; जम्हा अविमणे वीरे, त-

१ समारंभं करोति २ विविधैःप्रमादैः ३ निकरणं परपीडोत्पादनं तस्मै [नोत्कर्म कुर्यात् इतिशेषः] ४ एवंसति भवतीति शेषः

जो कोय छकाय मांहेना एक कायनो आरंभमां प्रवर्त्ततो होय तोपण ते छकाय मांहेना गमे ते कायनो आरंभ करनार गणायछे. (एटले के छए कायनो आरंभी गणाय छे.) [१४२]

सुखार्थी थइ दोडधाम करतो थको जीव पोताना हाथे करेला दुःख करीने मूढ बनी दुःखी थाय छे, तथा जाते करेला प्रमादथी व्रत भंग करे छे या विचित्र दशाओ भोगवे छे के जे दशाओमां रहेला जीवो अति दुःखित वर्ते छे. आवुं जाणीने मुनिए पर्ने पीडाकारी कंइ पण काम नहि करवुं. परिज्ञा ते ए कहेवाय. अने आम थयाथीज कर्मक्षयथाय छे. [१४३]

जे ममत्व बुद्धिने मूके छे ते ममत्व मूके छे, जेने ममत्व नथी तेज मार्गनो जाण मुनि जाणवो. [१४४]

एम जाणी चतुर मुनिए लोक स्वरूप जाणीने लोक संज्ञाओ दूर करी विवेकवंत थइ विचरवुं. [१४५]

पराक्रमी मुनि नथी रति धरतो, नथी अरति धरतो, माटे ते शांत होयछे

म्हा वीरेण रज्जति[1]। (१४६)

सद्दे फासे अहियासमाणे, णिव्विंद[2] णंदिं[3] इह जीवियस्स। (१४७)

मुणी मोणं समादाय धुणे कम्मसरीरगं; पंतं[4] लूहं[5] च सेवंति, वीरा संमत्तदंसिणो। (१४८)

एस ओघतरे मुणी, तिन्ने, मुत्ते, विरते, वियाहितेत्ति बेमि। (१४९)

[6]दुव्वसु–मुणी अणाणाए तुच्छए गिलाति वत्तए[7]। (१५०

एस[8] वीरे पसंसिए अच्चेइ लोयसंजोयं। (१५१)

एस णाए[9] पवुच्चति जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं, तस्स

---

१ (श्लोकोयं) २ निर्विंदस्व, जुगुप्सस्व ३ तुष्टिं ४ प्रांतं ५ रूक्षं ६ मुक्तिगमनायोग्यः ७ वक्तुं ८ सुवसुमुनिः ९ न्यायः

अने तेथीज ते रागी नथी थतो. [१४६]

शब्दादि विषयो उपस्थित थतां हे मुनि, तुं तेमां तारी खुशी नहि धारजे. [१४७]

मुनिए संयम धारीने कर्मोने तथा शरीरने तोडवा मंडवुं. पराक्रमी तत्वदर्शी पुरुषो हलकुं अने लूखुं भोजन करे छे. [१४८]

एवी रीते वर्त्तनार मुनिओ संसारना प्रवाहने तरे छे अने तेओ संसारना पारने पामेला परिग्रहथी मुक्त थएला अने त्यागी कहेवाया छे. [१४९]

तीर्थंकरनी आज्ञाने न मानतां स्वेच्छाथी वर्त्तनारा मुनि मुक्ति पामवाने अयोग्य थाय छे. तेवा मुनिओ ज्ञानादिकथी अपूर्ण होवाथी बोलवा करवामां बहु अचकाय छे. [१५०]

पण आज्ञाने माननार मुनिओ जेओ आ दुनिआनी जंजाळथी दूर थया छे तेओ पराक्रमी होवाथी वखणाया छे. [१५१]

[जंजाळथी छूटुं थवुं] ए बहु उत्तम रस्तो छे. [तीर्थंकर देवे] जे मनु-

दुक्खस्स कुसला परिण्ण मुदाहरंति। (१५२)

इति कम्म परिण्णाय सव्वसो[१] । (१५३)

जे अणन्नदंसी से अणण्णारामे, जे अणण्णारामे से अणण्णदंसी।
(१५४)

जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स कत्थति, जहा तुच्छस्स कत्थति तहा पुण्णस्स कत्थति। (१५५)

अविय हणे[२] अणातियमाणे[३]। एत्थंपि जाण, सेयं-ति णत्थि।
(१५६)

केयं पुरिसे कंच णए[४]। एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए

१ कथयतीतिशेषः २ हन्यात्—राजादिः। ३ अनाद्रियमाणः।
४ नतः

ज्योना दुःखोनां कारणो घताव्यांछे तेमनो कुशळ पुरुषो ज्ञान पूर्वक परिहार करेछे तथा करावे छे. [१५२]

ए रीते कर्मनुं स्वरूप जाणीने सर्व रीते उपदेश देवो. [१५३]

जे परमार्थदर्शी छे ते मोक्षना मार्ग शिवाय बीजे रमतो नथी. अने जे मोक्ष मार्ग शिवाय बीजे स्थळे नथी रमतो तेज परमार्थदर्शी छे. [१५४]

मुनिए जे रीते राजाने उपदेश आपवो तेज रीते रांकने पण आपवो ने जे रीते रांकने आपवो तेज रीते राजाने आपवो. [अर्थात् निरीहपणे बन्नेपर सरखो भाव राखवो पण एवो कंइ नियम नथी के एकरूपे उपदेश आपवो, किंतु जे जेम प्रतिबोध पामे तेने तेम समजाववुं.] [१५५]

[राजाने उपदेश आपतां तेना अभिप्रायने अनुसरीने उपदेश आपवो] नहि तो कदाच ते कोपायमान थइ हणवा पण उठे. माटे धर्म कथा करवानी रीति जाण्या शिवाय धर्मकथा करवामां पण कल्याण नथी. [१५६]

वास्ते मुनिए उपदेश आपतां "श्रोता पुरुष केवी तरेहनो छे तथा क्या देवने नमे छे" इत्यादि बाबतो विचारी उपदेश आपवो. एवी रीतथी उपदेश आपीने, संसारमां उर्ध्व अधो अने तिरश्चीन दिशाओमां बंधाइ रहेला जीवोने जे

उड्ढं अहं तिरियंदिसासु। (१५७)

से सव्वतो [१] सव्वपरिन्नाचारी ण लिप्पती छणपदेण [२] वीरे (१५८)

से मेधावी जे अणुग्घायणस्स [३] खेयन्ने [४] जे य बंधपमोक्ख मन्नेसी। (१५९)

कुसले [५] पुण णो बद्धे, णो मुक्के। (१६०)

से जं च आरभे जे च णारभे। अणारद्धं च ण आरभे। (१६१)

छणं छणं परिन्नाय [६] लोगसन्नं च सव्वसो। (१६२)

उद्देसो पासगस्स णत्थि। (१६३)

बाले पुण णिहे कामसमणुन्ने असमितदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टतित्ति बेमि। (१६४)

---

१ सर्वदा २ क्षणपदेन—हिंसया। ३ अणस्यकर्मण उद्घातनं दूरीकरणं तस्य ४ निपुणः। ५ केवली। ६ वर्जयेत् इतिशेषः।

पराक्रमी पुरूषो छोडावे छे ते वखणाया छे. [१५७]

तेवा पराक्रमी पुरूषो हमेशां ज्ञानक्रियाथी वर्त्तता थका हिंसाथी लेपाता नथी. [१५८]

जे पुरूष कर्मने दूर करवामां कुशळ होय तथा बंध अने मोक्षनो तपासनार होय ते खरेखरो बुद्धिमान् जाणवो. आ वात छद्मस्थने लागु पडे छे [१५९]

केवळी भगवान् तो नथी बंधायला अने नथी मूकायला [१६०]

तेओ जेम वर्त्त्या होय तेम वर्त्तवुं अने जेम नहि वर्त्त्या होय तेम नहि वर्त्तवुं [१६१]

हिंसा तथा लोकसंज्ञाने जाणी करीने तेनो परिहार करवो. [१६२]

परमार्थदर्शी मुनिने कशुं जोखम नथी. [१६३]

पण जे अज्ञानी जीवो स्नेहथी विषयोने सेवता रहेछे तेओ दुःखोने कशी रीते पण ओछा नहि करतां वधु दुःखी थया थका दुःखोनाज चक्रमां फर्या करे छे [१६४]

सीतोष्णीयं नाम तृतीय मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

सुत्ता अमुणी सया। मुणिणो सया जागरंति। (१६५)

लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं[1]। (१६६)

समयं लोगस्स जाणित्ता एत्थ सत्थोवरए[2]। (१६७)

जस्सिमे सद्दा य, रूवा य, गंधा य, रसा य, फासा य, अहिसमन्नागया भवंति, से आयवं, णाणवं, वेयवं, धम्मवं, बंभवं, पन्नाणेहिं परियाणाति लोयं, मुणी वच्चे, धम्माविदुत्ति, अंजू[3] आवट्टसोयसंग—मभि-

१ अज्ञानं २ भवेदितिशेषः। ३ ऋजुः

अध्ययन त्रीजुं.

शीतोष्णीय. *

पेहेलो उद्देश.

(परमार्थे सूतेला कोण?)

गृहस्थो सदा सूतेला छे. मुनिओ सदा जागता छे. (१६५)

दुनिआमां अज्ञान ए अहितकर्त्ता छे. (१६६)

माटे मुनिए हिंसाने थाळ लोकोनो आचार जाणीने छकायनी हिंसाथी दुर रहेवुं. [१६७]

जे पुरुषने शब्द, रुप, गंध, रस, तथा स्पर्श ए बधा सुंदर के असुंदर थतां

* टाढ ताप [वगेरेनी दरकार न राखवी एवा अर्थवाळा अध्ययननुं टुंकुं नाम शीतोष्णीय आप्युं छे.]

जाणति, सीओसिणच्चाइ, से निग्गंथे, अरतिरतिसहे फरूसयं णो वेदेति, जागरे, वेरोवरए, धीरे एवं दुक्खा पमुच्चति। (१६८)

जरामच्चुवसोवणीए णरे सततं मूढे धम्मं णाभिजाणाति। (१६९)

पासिय आउरिए पाणे, अप्पमत्तो परिव्वए। (१७०)

मंता एयं, मइमं, पास। (१७१)

आरंभजं दुक्ख मिणंति णच्चा, मायी पमाई पुणरेइ गब्भं। उवेहमाणे सद्दरूवेसु अंजू, माराभिसंकी मरणा पमुच्चति। (१७२)

समपणे[१] जणाया छे ते पुरुष चैतन्य, ज्ञान, वेद[२], धर्म तथा ब्रह्म[३]नो जाणनार जाणवो, अने ते पुरुष ज्ञानबळथी लोकोने जाणी शके छे अने तेवा ज पुरुष मुनि केहवाय छे. एवा धर्मना जाण सरळ मुनिओ संसारचक्र तथा विषयाभिलाषानो रागद्वेष साथे संबंध जाणेछे तथा सुख के दुःखनी कशी आशा नहि धरतां तेवा निःपरिग्रही मुनिओ अरति अने रतिरूप परीसहने सहन करता थका संयमनी मुस्केलीओने नथी संभारता एवी रीते ते पराक्रमी मुनिओ जागता रही वैर विरोधने दूर करता थका दुःखोथी मुक्त थाय छे. [१६८]

जरा अने मोतना सपाटामां सपडायला अने हमेशां महामोहथी मुंझाइ गएला पुरुषो धर्मने जाणी शक्ता नथी. [१६९]

दुःखित प्राणिओने जोइने मुनिए सावधानताथी संयममां प्रवर्त्तवुं. [१७०]

हे बुद्धिमान् मुनि, एवुं जाणीने [एटले के गृहस्थोने परमार्थे सूतेलो जोइ अने एवा सूतेलाओने अनेक दुःखो थतां जोइ] तुं तेम थवा मन नहि करीश. [१७१]

सघळां दुःखो आरंभथी थाय छे एम जाणी [तुं जाग्रत था,] [कारण के] प्रमादि अने कषायवंत प्राणी वारंवार गर्भमां आव्यां करे छे. अने जे पुरुष शब्दादिक विषयमां रागद्वेष नहि धरतां सरळ थइ वर्त्ते छे ते पुरुष मोतथी डरतो थको मोतना भयथी मुक्त थाय छे. [१७२]

१ रागद्वेषरहितपणे. २ आचारांगादिसूत्र. ३ निर्विकल्प सुख.

अप्पमत्तो कामेहिं, उवरतो पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते जे खेयन्ने। (१७३)

जे पज्जवजातसत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने। जे असत्थस्स खेयन्ने, से पज्जवजातसत्थस्स खेयन्ने। (१७४)

अकम्मस्स ववहारो ण विज्जत्ति। कम्मणा उवाही जायति। (१७५)

कम्मं च पडिलेहाए, कम्ममूलं च जं छणं[1]। (१७६)

पडिलेहिय, सव्वं समायाय दोहिं अंतेहिं[2] अदिस्समाणे। (१७७)

तं परिन्नाय मेहावी विदित्ता लोगं, वंता लोगसन्नं, से मइमं परक्कमिज्जासित्ति बेमि। (१७८)

---

१ क्षणं प्राण्युपमर्दकारि कर्म— २ रागद्वेषाभ्यां परिव्रजेदिति शेषः

जे पुरुषो परने थतां दुःखो जाणे छे तेवा पराक्रमी पुरुषोए संयमवंत थइ विषयो साथे नहि फसातां पापकर्मथी दूर रहेवुं. [१७३]

जे विषयोपभोगना अनुष्ठानने शस्त्ररूपे जाणे छे ते अशस्त्रने[1] जाणे छे अने जे अशस्त्रने जाणे छे ते विषयोपभोगना अनुष्ठानने शस्त्ररूपे जाणे छे. [१७४]

जे कर्मरहित मुक्त जीवो छे तेमने कशो संसार साथे संबंध नथी. कर्मथी ज सघळी उपाधीओ थाय छे. [१७५]

कर्मस्वरुप जोइने तेमने दुर करवा, तथा हिंसाने कर्मनी मूळहेतभुत जाणीने [तेथी दुर रहेवुं.] [१७६]

(कर्मस्वरुप) विचारी, (कर्म दूर करवानो) सर्व (उपदेश) ग्रहण करी, (राग अने द्वेष) ए बेनो परिहार करवो. [१७७]

बुद्धिमान् मुनिए रागादिकने (अहितकर्त्ता) जाणी तेमनो त्याग करी, तथा लोकने (रागादिकथी दुःखित थएलो) जाणी लोकसंज्ञा दूर करीने संयममां पराक्रमवंत थवुं. [१७८]

---

१ संयमने.

द्वितीय उद्देश.

जातिंच वुड्ढिंच इहज्ज [1] पास, भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं;
तम्हा तिविज्जो [2] परमंति णच्चा, संमत्तदंसी ण करेति पावं । (१७९)
उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं आरंभजीवी उभयाणुपस्सी;
कामेसु गिद्धा णिच्चयं [3] करेंति, संसिच्चमाणा [4] पुणरेंति गब्भं। (१८०)
अवि से हासमासज्ज, हंता [5] णंदीति [6] मन्नति;
अलं बालस्स संगेणं, वेरं वड्ढति अप्पणो । (१८१)
तम्हा—तिविज्जं [7] परमं—ति णच्चा, आयंकदंसी ण करेंति

१ अद्य २ अतिविद्यः ३ कर्मोपचयं ४ आपूर्यमाणाः ५ हत्वा. ६ क्रीडेति. ७ अतिविद्वान्.

बीजो उद्देश.

[पापनां फळ तथा हितोपदेश.]

हे मुनि, तुं जन्मना अने जराना दुःख जो. तने जेम सुख प्रिय छे तेम सर्व जीवोने सुख प्रिय छे एम विचार करी जाणतो था. माटे तत्वदर्शी उत्तम विद्वाने मोक्षने जाणतां थकां पाप कर्म नहि करवुं. [१७९]

मुनिए गृहस्थो साथे स्नेह के लटपट करवानी टेव नहि करवी. कारणके गृहस्थ आरंभथी आजीविका करे छे तथा हजु आ अने परलोक एवन्नेनां सुखने चाह्यां करे छे. अने जेओ कामभोगमां आशक्त थइ कर्मने वधारे छे तेओ ते कर्मोथी भराता थका वारंवार संसारमां भटक्या करशे. [१८०]

वळी कामासक्त पुरुष हास्य विनोदमां जीवोने मारीने पण रमत गमत माने छे. माटे एवा बाळ जीवो साथे सोवत नहि करवी कारण के तेम कर्याथी अंते आपणी खरावी वधवानी. [१८१]

माटे खरा विद्वान् पुरुषे मोक्षने जाणी करीने तथा नरकादिक दुःखोने

पावं; (१८२)

अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे, पलिछिंदिया[1] णं णिक्कम्मदंसी। (१८३)

एस मरणा पमुच्चति से, हु दिट्ठभए मुणी, लोकंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिते सहिते सयाजते कालकंखी परिव्वए। (१८४)

बहुं च खलु पावकम्मं पगडं, सच्चंसि धितिं कुव्वह, एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावकम्मं झोसति। (१८५)

अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं[2] अरिहइ पूरित्तए से अन्नवहाए, अण्णपरियावाए, अण्णपरिग्गहाए, जणवयवहाए, जणवयपरियावाए, जणवयपरिग्गहाए। (१८६)

आसेवित्ता एतमट्ठं इच्चेवेगे[3] समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं नो सेवते

1 छित्वा 2 केतनं—लोभेच्छां. 3 इत्येवैके

देखता थका पाप नथी करता. (१८२)

माटे हे धीर मुनि, तुं मूळ कर्म तेथी अग्र कर्मने जीवथी जूदा पाडे. कारण के कर्मोने तोडवाथीज सर्व पोताना पवित्र आत्म रुपने जोनार थाय छे. (१८३)

अने एवा मुनिओज मरणना भयथी मुक्त थाय छे, एवा मुनिओ संसारना दुःखोथी बीहीता थका लोकमां रहेला मोक्ष स्थळने जोइने राग द्वेष रहितपणे वर्त्तता थका शांत, समितिवंत, ज्ञानवंत अने यत्नवंत थइने काळक्रमे कर्मक्षय करता थका वर्त्ते छे. [१८४]

जो "पाप कर्म बहु करेलां छे" एम जणाय तो संयममां हिम्मतवान् थाओ. एमां तत्पर रहेला बुद्धिमान् पुरुषो सर्व दुष्ट कर्मोनो नाश करे छे. [१८५]

आ संसारी जीव अनेक कामोमां चित्तने दोडावेछे. ते चाळणी के दरिया जेवा लोभने भरपूर करवा मथेछे. तेथी ते बीजाओने मारवा. हेरान करवा, कबजे राखवा. देशने लूंटवा, देशने हेरान करवा, अने देशने कबजे करवा तैयार थाय छे. [१८६]

तेम कोइ पण केटलाएक[1] अने संयममां उजमाळ थया माटे हे मुनिओ

1 भरत राजादिक.

णिस्सारं पासिय णाणी। (१८७)

उववायं चवणं णच्चा अणण्णं चर माहणे। (१८८)

से ण छणे, ण छणावए, छणंतं णाणुजाणई। (१८९)

णिव्विंद णंदिं अरते पयासु [१], [२] अणोमदंसी णिसन्नो पावेहिं कम्मेहिं। (१९०)

कोहाइमाणं हणियाय वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं;

तम्हाय वीरे विरते वहाओ, छिंदिज्ज सोयं [३] लहुभूय गामी, [४] (१९१)

गंथं परिन्नाय इहज्ज वीरे, सोयं परिन्नाय चरिज्ज दंते;

उम्मज्ज [५] लध्धुं इह माणवेहिं, [६] णो पाणिणो पाण समारभेज्ज-

---

१ स्त्रीषु. २ अनवमं—ज्ञानादि—तद्दर्शी॥ ३ शोकं. ४ लघुभूतो मोक्ष स्तं गंतुं शील स्येति. ५ उन्मज्जनं. ६ मानवेषु.

तमारे दीक्षा लइ पछी भोगनी वांच्छा राखी बीजुं मृषवादरूप पाप नहि सेववुं, अने विषयोने निःसार गणवा. [१८७]

हे मुनि, जन्म अने मरण सर्वने छे, एम जाणी संयममां वर्त्या कर. (१८८)

माटे मुनिए जाते हिंसा न करवी बीजा पासे न कराववी, तथा तेना करनारने रूडुं नहि मानवुं [१८९]

स्त्रीओमां आशक्त नहि थतां कामथी थता सुखने धिक्कारवुं, अने ज्ञानादि उत्तम वस्तुने धारीने पाप—कर्मथी दूर रहेवुं. [१९०]

पराक्रमी मुनिए, क्रोध अने तेनुं कारण जे गर्व तेने भांगी नाखवुं अने लोभथी मोहोटा दुःखथी भरेली नरकगतिए जवाय छे एम जोवुं. माटे तेवा मोक्ष जवा तत्पर थएला मुनिए हिंसाथी दूर रही शोकसंताप न करवा. [१९१]

परिग्रहने अहितकर्त्ता जाणी आजेज तेने छांडवुं. तथा विषयवांच्छारूप भवग्रहने पण अहितकर्त्ता जाणी इंद्रियो वश करी वर्त्तवुं. आ मनुष्यभवमां ऊंचे आवेला

सि—त्ति बेमि. [१९२]

तृतीय उद्देश:

संधिं लोगस्स जाणित्ता[1] । [१९३]

आययो[2] बहिया पास, तम्हा ण हंता ण विघायये । [१९४]

[3] जमिणं अन्नमन्नवितिगिंछाए पडिलेहाए ण करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया? समयं[4] तत्थ उवेहाए अप्पाणं विप्पसायए । [१९५]

अणण्णपरमं नाणी, णो पमादे कयाइवी; आयगुत्ते सया धीरे,

१ न प्रमादः श्रेयानिति शेषः २ आत्मवदित्यर्थः ३ निश्चयनयसूत्रमेतत्. ४ समतांसमयं वा आगमं—

थइने प्राणिओनी हिंसा कदापि नहि करवी. [१९२]

त्रीजो उद्देश.

'पाप न करवां अने परीषह सहेवां एटलाथी कंइ साधु नथी थवातुं'
(किंतु साथे संयम जोइए)

अवसर मळेलो जाणीने प्रमाद न करवो. [१९३]

हे मुनि पोता तरफ जेम जुए छे तेम बीजा तरफ जो, माटे तारे कोइ जंतुने मारवुं नहि अने मरावबुं पण नहि. [१९४]

एक बीजानी शरमथी कोइ पाप कर्म नथी करतो तेमां शुं तेनुं मुनिपणुं कारण भूत छे?[1] (अर्थात् शुं एटलाथी ते मुनि कही शकाशे? किंतु समतामां रही जो तेम करे तो मुनि थइ शके.) माटे ए समताथी मुनिए पोताने अनेक प्रकारे प्रशांत करवुं. [१९५]

ज्ञानवंत मुनिए संयममां प्रमाद न करवो, किंतु हमेशां आत्माने कबजे राखी

१ आ निश्चयनयनुं मत छे. व्यवहारथी तो परस्परनी लज्जाथी पापकर्म परिहरतां पण ते मुनि कही शकाय छे.

जायामायाइ[1] जावए। [१९६]

विरागं रूवेसु गच्छेज्जा महता खुड्एहिं वा। [१९७]

आगतिं गतिं च परिण्णाय दोहिंवि अंतेहि अदिस्समाणेहिं से ण छिज्जइ ण भिज्जइ, ण डज्झइ, ण हम्मइ कंचणं[2] सव्वलोए। (१९८)

अवरेण पुव्वं ण सरंति एगे, किमस्सतीतं किंवागमिस्सं;
भासंति एगे इह माणवाओ, जमस्सतीतं तं आगमेस्सं। (१९९)
णातीत-मट्ठं णय आगमेस्सं, अट्ठं निअच्छंति तहागताओ,
विधूतकप्पे एताणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता खवए महेसी। (२००)
का अरती! के आणंदे,! एत्थंपि अग्गहे चरे;
सव्वं हासं परिच्चिज्ज, आलीणगुत्तो परिव्वए। (२०१)

१ संयमयात्रामात्रया. २ केनचिदित्यर्थः

धीरपणे संयम सचवाय तेवी रीते शरीरने नभाववुं [१९६]

मोहोटा के सामान्य सगळा रूपोमां विरक्त रहेवुं [१९७]

आगति अने गतिनुं स्वरूप जाणीने राग अने द्वेष जेणे दूर कर्याछे ते कोइथी पण नहि तोडी शकाय, नहि बाळी शकाय, अने नहि मारी शकाय. [१९८]

केटलाक[1] भूत अने भविष्यकाळना बनावोने याद नथी करता, अने आ जीवने शुं शुं थयुं अने शुं शुं थवानुं छे ते नथी विचारता. वळी केटलाएक कहछे के जे सुखदुःख आ जीवने थइ गयुं तेज पाछुं अगाउ पण थवानुं. [१९९]

पण तत्वज्ञानी पुरुषो तेम नथी कहेता. [तेओ तो कहे छे के कर्मपरिणति विचित्र होवाथी कर्मानुसार सुखदुःख थवानां] माटे पवित्र आचारवाणा महर्षिए ए पुर्वोक्त वात जाणीने कर्मने क्षय करवां. [२००]

योगि पुरुषना मनमां ते शी अरति होय अने श्यो आनंद होय? अने कदि मुनिने आसंयममां अरति अने संयममां आनंद उत्पन्न थाय तो त्यां पण आग्रह रहितपणे वर्त्तवुं वळी सर्वे हास्य मेली करीने इंद्रियो तथा मन वचन अने कायाने कबजे करीने फरवुं. [२०१]

१ अज्ञानी जीवो.

पुरिसा, तुममेव तुमं मित्तं; किं बहिया मित्त- मिच्छसि।(२०२)

जं जाणेज्जा उच्चालइयं[1] तंजाणेज्जा दूरालइयं[2], जं जाणे-ज्जा दूरालइयं तं जाणेज्जा उच्चालइयं । (२०३)

पुरिसा, अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि । (२०४)

पुरिसा, सच्चमेव समभिजाणाहि; सच्चस्साणाए से उवट्ठिए से मेहावी मारं तरति, सहिते धम्म मादाय सेयं समणुपस्सति । (२०५

दुहओ[3], जीवियस्स परिवंदण—माणण-पूयणाए[4]; जंसिएगे पमोयंति । (२०६)

दुक्खमत्ताए पुट्ठो णो झंझाए; पासिमं, दविए लोए लोयालोय-पवंचाओ मुच्चतित्ति बेमि । (२०७)

---

१ उच्चालयितारं कर्मणां. २ दूरालयो मोक्ष स्तद्धेतं. ३ द्वाभ्यां रागद्वेषाभ्यां हतः द्विहतः ४ हिंसादिषु प्रवर्त्तत इतिशेष,

हे पुरुष, तुं ज तारो मित्र छे. शा माटे बाहेर मित्रने शुए छे ? [२०२]

जे कर्मने नशाडनार छे ते ज मुक्ति पामनारो छे अने जे मुक्ति पामनारछे ते कर्मने नशाडनार छे. [२०३]

हे पुरुष, तारा आत्माने ज विषयोथी रोकी राखीने तुं दुःखोथी छूटीश. [२०४]

हे पुरुष, तुं सत्यनुंज सेवन कर. केमके सत्यना फरमानथी ज प्रवर्त्तता थका बुद्धिमान् मुनिओ संसारनो पार पामे छे अने धर्म पाळीने कल्याण मेळवे छे. [२०५]

रागद्वेषथी कलुषित थएलो जीव आ क्षणभगुंर जींदगीना कीर्त्ति अने मानादिकना अर्थे हिंसामां प्रवृत्त थाय छे अने ते कीर्त्यादिकमां खुश थनि रहेछे [पण तेथी आत्मानुं कल्याण थवानुं नथी.] [२०६]

मुनिए दुःख आवी पडतां व्याकुळ थवुं नहि, अने विचारवुं के साधुओ ज दुनियाना तरेहवार देखावोनी जंजाळथी मुक्त रहे छे. [२०७]

सी से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से णिरयदंसी जे णिरयदंसी से तिरियदंसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदंसी। (२१७)

से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा कोहंच, माणंच, मायंच, लोहंच, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, मरणचं,णरगं च, तिरियं च, दुक्खं च एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थरक पलियंतकरस्स। (२१८)

आयाणं णिसिद्धा सगडाब्भि। (२१९)

किमत्थि उवाधी पासगस्स? ण विज्जति णत्थित्ति, बेमि।[२२०]

ते नरकथी मुक्त थाय छे, जे नरकथी मुक्त थाय छे ते तिर्यंचगतिथी मुक्त थाय छे, ने जे तिर्यंचगतिथी मुक्त थाय छे ते दुःखथी मुक्त थाय छे- [२१७]

ए रीते बुद्धिशाळी पुरुषे क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, तथा मोह दुर करीने गर्भ, जन्म मरण, नरकगति, अने तिर्यंचगतिना दुःखो निवारवां. एम तत्वदर्शी शस्त्र त्यागी संसारना अंतकर्त्ता [भगवान वीरप्रभु]नुं दर्शनछे.[२१८]

माटे मुनिए कर्मोनां मूळकारणोने बंध करी प्रथम करेलां कर्मोने खपावतां रहेवुं. [२१९]

अने ज्यारे केवळिपणुं पमाय त्यारे केवळिने तो कशी उपाधि नथी ज होती. [२२०]

सम्यक्त्वाख्यं चतुर्थ मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

से बेमि—जेय अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा, भगवंतो, ते सव्वेवि, एव-माइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवंति, एवं परूवेंति,—सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा[1], ण परिघेतव्वा[2] ण परितावेयव्वा, णं उद्दवेयव्वा[3]

[२२१]

एस धम्मे, सुद्धे, णितिए, सासए, समेच्च लोयं खेयन्नेहिं पवेतिते

१ आज्ञापयितव्याः २ परिग्राह्याः ३ अपद्रावयितव्याः ।

अध्ययन चोथुं.

सम्यक्त्व.

पहेलो उद्देश.

(सत्यवाद)

हुं कहुंछुं के जे तीर्थंकर भगवान थइ गया, जे हाल वर्ते छे, अने जे थावता काळमां थशे ते बधा आ रीते कहे छे, बोले छे, जणावेछे, तथा वर्णवेछे, के "सर्व प्राण,[1] सर्वभूत,[2] सर्व जीव,[3] अने सर्व सत्वने[4] हणवुं नहि, तेमनापर हकुमत चलाववी नहि, तेमने कबजे करवां नहि, तेओने मारी नांखवा नहि अने तेओने हेरान करवां नहि." [२२१]

आवो पवित्र, अने नित्य धर्म, लोकना दुःखने जाणनार भगवाने सांभळवा

१-२-३-४ अहीं प्राण, भूत, जीव तथा सत्व ए चारे शब्दनो एकज अर्थ थायछे.

तंजहा, उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा, उवरयदंडेसु वा, अणुवरयदंडेसु वा, सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा, संजोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा। २२२]

तच्चं[1] चेयं तहा चेयं अस्सिं[2] चेयं पवुच्चइ। (२२३)

तं आइ-तु ण णिहे[3] ण णिक्खिवए, जाणि-तु धम्मं जहातहा। (२२४)

दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा। (२२५)

णो लोगस्सेसणं[4] चरे। (२२६)

जस्स णत्थि इमा णाती,[5] अन्ना तस्स कओ सिया। (२२७)

दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं जमेयं परिकहिज्जइ। (२२८)

---

१ तथ्य मेतत् २ अस्मिन्नेव प्रवचने इत्यर्थः ३ गोपयेत् ४ लोकस्यैषणां. ५ ज्ञातिर्लोकैषणा.

तयार थएलाओने, नहि थएलाओने,[1] मुनिओने, गृहस्थोने, रागिओने, त्यागिओने भोगिओने, तथा योगिओने वताव्यो छे. [२२२]

ए धर्म खरेखरो ज छे अने मात्र जिनप्रवचनमां ज वर्णवेलो छे [२२३]

माटे यथार्थपणे धर्मनुं स्वरूप जाणीने श्रद्धा कर्यावाद आलसु नहि थवुं, तथा समजीने लीधेला धर्मने कोइ वखते छोडी पण नहि आपवुं. [२२४]

देखाता दुनिआना ठाठमाठमां [अंजाइ न जतां] वैराग्य धरवुं. [२२५]

दुनिआनी देखादेखी नहि करवी. [२२६]

जेने देखादेखी नथी तेने बीजी कुमाति पण नहि थशे. अथवा जेने ऊपर बतावेला पवित्र धर्मनी श्रद्धा नहि होय तेने बीजी शी सुमाति थशे? [२२७]

ए वधी विना जे कही छे ते दीठेली पण छे, सांभळेली पण छे, जाणेली पण छे, अने अनुभवेली पण छे. [२२८]

---

१ कारण के कर्मनी विचित्र परिणति होवाथी वखते तेमने पण उपकार थायछे.

समेमाणा[1] पलेमाणा[2] पुणो पुणो जातिं पकप्पंति। (२२९)

अहोय राओय जयमाणे धीरे सया आगयपन्नाणे। पमत्ते बहिया। अप्पमत्ते सया परिक्कमिज्जासित्ति बेमि। (२३०)

[द्वितीय उद्देशः]

जे आसवा ते परिस्सवा। जे परिस्सवा ते आसवा। (२३१)

जे अणासवा ते अपरिस्सवा। जे अपरिस्सवा ते अणासवा। (२३२)

एते पए संबुज्झमाणे लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेदितं[3]। (२३३)

---

१ शाम्यंतो गृद्धिं कुर्वंतः २ प्रलीयमानाः ३ को धर्मप्रति नोद्यच्छेत इतिशेषः

संसारमां आसक्त थइ अंदर खुचनारा जीवो चिरंकाळ संसारमां भमे छे. [२२९]

माटे तत्वदर्शी धीर पुरूषोए प्रमादिओने धर्मथी बाहेर रहेला जोइ अहर्निश उज्माल थइ सावधानपणे वर्त्तवुं. [२३०]

बीजो उद्देश.

[परमतनुं विचारपूर्वक खंडन.]

जे कर्म बांधवाना हेतुओ छे ते कर्म खपाववाना हेतुपण थइ शके छे, ने जे कर्म खपाववाना हेतुओ छे ते वखते कर्म बांधवाना हेतु पण थइ पडे छे. [२३१]

अथवा तो जेटला कर्म खपाववाना हेतुओ छे एटला ज कर्म बांधवाना हेतुओछे अने जेटला कर्म बांधवाना हेतुओ छे तेटला ज कर्म खपाववाना हेतुओ छे. [२३२]

आ पदोने पूर्ण रीते समजनारा तीर्थकरना फरमाव्या प्रमाणे लोकोने कर्मोथी बंधाता जोइ कोण धर्ममां उज्माल नहि थाय? [२३३]

अग्घाति णाणी इह माणवाणं संसारपडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विन्नाणपत्ताणं; अट्टावि संता अदुवा पमत्ता [1]। अहासच्च मिणं त्ति बेमि (२३४)

ना णागमो मच्चुमुहस्स अत्थि। इच्छापणीया वंकाणिकेया कालग्गहीआ णिचये णिविट्ठा पुढो पुढो जाइं पकप्पंति। (पाठांतरं)–इत्थ मोहे पुणो पुणो। (२३५)

इह मेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवति। अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति। [२३६]

चिट्ठं[2] कूरेहिं कम्मेहिं, चिट्ठं परिविचिट्ठति; अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिविचिट्ठति। (२३७)

एगे[3] वयंति अदुवावि णाणी, णाणी वयंति अदुवावि एगे। (२३८)

१ यथा प्रतिबुद्धा इतिशेषः २ भृशं ३ चतुर्दशपूर्वविदादयः

ज्ञानी भगवान संसारमां रहेला अने प्रतिबोधने पामनारा अथवा बुद्धिशाळी पुरुषोने एवी रीते धर्म कहे छे के जेथी जीवो आर्त्तध्यानथी आकुल होवा छतां अथवा प्रमादी होवा छतां पण प्रतिबोध पामे छे. आ वात खरेखरी छे. [२३४]

मृत्युना मुखमांथी रहेला प्राणीने मृत्यु नथी आववानुं एम बिलकुल छे ज नहि. छतां आशाथी तणाता असंयमी जीवो मृत्युए पकडी लीधेला छतां आरंभमां तल्लीन रही विचित्र जन्म परंपरा वधारे छे अथवा वारंवार पाछा तेज आशाना पाशमां सपडाय छे. [२३५]

केटलाएक जीवोने तो ए नरकादिकना दुःखो साथे सोवत ज पडी रहेली होय छे; तेथी तेवां कर्मो करी त्यां उपजी त्यानां दुःख भोगवता ज रहे छे [२३६]

अति क्रूर कर्मोथी जीवो अतिभयंकर दुःखवाळा ठेकाणे जइ उपजे छे अने जे अतिक्रुर कर्म नथी करता ते तेवा ठेकाणे नथी उपजता. [२३७]

जे श्रुतकेवळीओ[1] कहे छे ते ज केवळज्ञानी कहे छे. अने जे केवळज्ञानी कहे छे तेज श्रुतकेवळिओ कहे छे. [२३८]

१ चउदथी दश पूर्व ज्ञानना धरनार श्रुतकेवळी कहेवाय छे

आवंती[1] केआवंती[2] लोयंसि समणाय माहणाय पुढो विवादं वदंति "से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, उड्ढं अहं तिरियं दिसासु सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, हंतव्वा, अज्जावेतव्वा, परिघेत्तव्वा, परियावेयव्वा, उद्दवेयव्वा। एत्थंपि जाणह, णत्थित्थ दोसो।" अणारियवयण—मेयं। (२३९)

तत्थ जे ते आरिया ते एवं वयासी—"से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुव्विन्नायं चभे, उड्ढ—अहं—तिरियंदिसासु सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे; जं णं तुब्भे एवं माइक्खह, एवं भासह, एवं परूवेह, एवं पन्नवेह—" सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेत्तव्वा, परियावेयव्वा, उद्दवेयव्वा, एत्थवि जाणह, नत्थित्थ दोसो।" अणारियवयण—मेयं। (२४०)

वयं पुण एव—माइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं

१ यावंतः २ केचन

आ जगतमां, जे कोइ श्रमणो[1] तथा ब्राह्मणो धर्म विरुद्ध बकवाद करे छे, जेवो के "अमे दीठुं, सांभळ्युं, मान्युं, नक्कीपणे जाण्युं, तथा रुडी रीते तपाशी जोयुं छे के सर्व प्राण, सर्व भूत, सर्व जीव, तथा सर्व सत्त्व हणवा, दाबवा, पकडवा दुःखी करवा के गर्दन कतल करवा. एम करतां कंइए दोष थतो नथी." ते सघळो बकवाद पापनो वधारनार छे, जे माटे ए तेमनो बकवाद ते अनार्य लोकोनुं ज वचन छे. [२३९]

अने जे आर्य पुरूषो छे ते तो एवुं ज बोले छे के "हे वादिओ, तमारुं ते जोवुं, सांभळवुं, मानवुं, नक्कीपणे जाणवुं, तथा रुडी रीते तपाशी जोवुं ए सघुंए दुष्ट छे,[1] जे माटे तमे एवुं कहो छो, के "सर्व जीवोने मारवा करवामां कशो दोष नथी," पण ए तमारुं बोलवुं अनार्य लोकने ज अनुसरतुं छे. [२४०]

अने असे तो एम कहिए छीए के "कोइपण जीवने मारवुं के दुःख उप-

१ बुद्धमतन साधुओ

पन्नवेमो–" सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा, ण अज्जावेतव्वा, ण परिघेत्तव्वा, ण परियावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा। एत्थपि जाणह, णत्थित्थ दोसो" । आरियवयण–मेयं । (२४१)

पुव्वं निकाय[1] समयं, पत्तेयं पत्तेयं पुच्छिस्सामो । हं भो पावादुया, किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं? समिया पडिवन्नेयावि एवं बूया,–सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं, असायं[2] अपरिणिव्वाणं[3] महब्भयं दुक्खंत्ति बेमि । (२४२)

(तृतीय उद्देशः)

उवेहेणं[4] बहियायलोयं । सेसव्वलोयंसि जे केइ विन्नु[5] । (२४३)

अणुवीइ पास, णिक्खित्तदंडा जे केइ सत्ता पलियं[6] चयंति

१ निकाच्य व्यावस्थाप्य २ अनभिप्रेतं ३ अनिवृत्तिरूपं ४ उपेक्षस्वैनं ५ ततोप्यधिकः ६ कर्म

नाववुं नहि एम करवामां कशो दोष नथी." आ वचन आर्यपुरुषोनुं छे. [२४१]

दरेक मतवालाना शास्त्रोमां शुं शुं कहेलुं छे ते तपाशी करीने अमे दरेक मतवालाने सवाल करिए छीए के हे परवादिओ! "तमोने सुख अप्रिय छे के दुःख अप्रिय छे"! जो दुःख अप्रिय छे, तो तमारा मुजब बधा जीवोने दुःख महा भयंकर अने अनिष्ट छे (२४२)

त्रीजो उद्देश.

(तपोनुष्ठान)

हे मुनि आ धर्मथी बाहेर रहेला पाखंडिलोकनी रीतभातपर तारे कशुं लक्ष्य नहि आपवुं. अने एम जे वर्त्ते छे ते बधा विद्वानोना शिरोमणि जाणवा तुं विचारी जो के जेओ आरंभने दुःखनुं कारण जाणी हिंसानां काम त्याग

१ खोटुं छे (wrong)

णरे मुयच्चा[1] धम्मविदुत्ति अंजू; आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा। एवमाहु संमत्तदंसिणो। (२४४)

ते सव्वे पावादिया दुक्खस्स कुसला परिन्न-मुदाहरंति, इति कम्म परिन्नाय सव्वसो। [२४५]

इह आणाकंखी पंडिए अणिहे एग—अप्पाणं सपेहाए धुणे सरीरगं। (२४६)

कसोहि अप्पाणं। जरेहि अप्पाणं। (२४७)

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो[2] पमत्थति, एवं अत्तसमाहिते अणिहे। (२४८)

विगिंच कोहं अविकंपमाणे इमं[3] णिरूद्धाउयं[4] सपेहाए। [२४९]

१ मृतार्चाः निःप्रतिकर्मशरीरा इत्यर्थः २ अग्निः ३ मनुष्यत्व ४ गलितायुष्कं.

करी शरीरनी पण कशी दरकार नहि करतां थका धर्मना जाण अने सरल थइ कर्मने तोडे छे ते खरेखरा उत्तम विद्वान्छे. एम यथार्थदर्शी पुरुषो कहेछे (२४४)

जे माटे ते पथा वादिओ सर्व रीते कर्मोनुं स्वरूप जाणी दुःखनी बाबतमां समजवंत बनतां ते दुःख कोइने पण नहि आपवुं जोइए एवो ठराव करशे. [२४५]

माटे आ जगतमां आज्ञा पाळवा चाहनार पंडित पुरूषे निरिह थइ आत्माने एकलो जोइने शरीरने तपथी शोषवुं. [२४६]

हे मुनि, तुं तारा शरीरने तपथी खूब कृश तथा जीर्ण कर. [२४७]

जे माटे जेम जूना लाकडांने अग्नि जल्दी बाळेछे तेम जे स्नेहरहित[1] अने सावधान पुरूष हशे तेनां कर्म जल्दीथी बळशे. [२४८]

वळी हे मुनि, मनुष्यभवनुं आयुष्य पूरुं थइ रहेवा आवेलुं जाणी हिम्मत धरीने क्रोधने अलगो कर. [२४९]

१ राग रहित [unattached]

दुक्खं च जाण अदुवागमिस्सं । पुढो फासाइं च फासे । लोयं च पास विप्फंदमाणी । (२५०)

जे णिव्वुडा, पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया । (२५१)

तम्हा—तिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासित्ति बेमि । (२५२)

[चतुर्थ उद्देशः]

आवीलए[1] पवीलए णिप्पीलए, जहित्ता पुव्वसंजोगं हिच्चा[2] उवसमं । (२५३)

तम्हा अविमणे वीरे सारए[3] समिए सहिते सया जए । (२५४)

१ आपीडयेत् २ गत्वा ३ स्वारतः

क्रोधादिकथी आवती काले केवां दुःख थशे ते विचार. तथा लोक केवी रीते ए क्रोधादिकथी टळवळे छे ते तपाश. [२५०]

अने जेओ कषायोने उपशमावी शांत बन्या छे तेओने परम सुखी कहेला छे. [२५१]

माटे खरा विद्वान पुरुषे क्रोधथी कोइ वखते बळवुं नहि. [२५२]

चोथो उद्देश.

(संयममां संस्थित रहेवुं)

मुनिए सघळी सांसारिक जंजाल छोडी उपशम[1] पूर्वक शरीरने शरुआतमां सादा तपथी दमवुं. पछी वधता तपथी दमवुं, अने प्रांते संपूर्ण रीते दमवुं. [२५३]

अने एटला माटे पराक्रमी मुनिए शांत मनथी संयममां राग धरी समिति[2] तथा ज्ञानादि हितकारक वस्तुओने साथे राखी हमेशां प्रयत्नवंत रहेवुं. [२५४]

१क्षमा. २ पवित्रपणे वर्त्तवानी रीतिओ.

दुरणुचरो मग्गो वीराणं अणियट्टगामीणं[1] (२५५)

विगिंच मंससोणियं। एस पुरिसे दवीए वीरे आयाणिज्जे वियाहिए जे धुणाति समुस्सयं[2] वसिता बंभचेरंमि। (२५६)

णेत्तेहिं[3] पलिछिन्नेहिं आयाणसोयगढिए बाले अव्वोच्छिन्नबंधणे अणभिक्कंतसंजोए। तमंसि[4] अविजाणओ आणाए लंभो णत्थि त्ति बेमि। (२५७)

जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्जे तस्स कुओ सिया। (२५८)

से हु पन्नाणमंते वुद्धे आरंभोवरए। सम्म—मेयंति पासह। जेण बंधं वहं घोरं परितावं च दारूणं। (२५९)

---

१ मोक्षगामिनां। २ शरीरं ३ इंद्रियैरित्यर्थः ४ वर्त्तमानस्योतिशेषः

मुक्ति मेळवनार वीर पुरुषोनो मार्ग घणो विकट छे. [२५५]

माटे हे मुनि, तुं तारां मांस अने लोही सूकाव. कारण के जे पुरुष ब्रह्मचर्यमां[1] हमेशां रहीने शरीरने तपथी दमे छे तेज वीर पुरुष मुक्ति मेळवनार होवाथी माननीय गणाय छे. [२५६]

जे पुरुष शरुआतमां कदाच इंद्रियोने वश करी वर्त्यो होय पण पाछो मोहना जोसथी विषयोमां आशक थाय छे, ते बाळ पुरुष कशा पण बंधनथी छूटो थएलो नथी तथा कशा पण प्रपंचथी रहित थएलो नथी. एवा अजाण पुरुषने मोहना अंधारामां वर्त्ततां परमेश्वरनी आज्ञानो लाभ[2] थतो नथी. [२५६]

अने ए रीते जेने पूर्व भवमां आज्ञानी प्राप्ति नथी अने भविष्यमां पण थवानी नथी तेने आ वर्त्तमान भवमां ते शी रीते थवानी? [२५८]

माटे ज्ञानवंत अने परमार्थदर्शी पुरुषो आरंभथी दूर रहे छे. तेमनी आ वर्त्तणुक घणी प्रशंसनीय छे. जे मा आरंभथी जीवने वध बंधनादि भयंकर दुःखो तथा असह्य पीडा भोगववी पडे छे. [२५९]

---

१ कामपरीत्यागमां. २ प्राप्ति. [सम्यक्त्वनी faith.]

पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, णिकम्मदंसी इह मच्चिएहिं । [२६०]

कम्मुणो सफलत दट्ठुं तओ णिज्जाति वेयवि। [२६१]

जे खलु भो, वीरा समिता सहिता सयाजता संघडंदासिणो [1] आतोवरया अहा तहा लोग मुवेहमाणा पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इति, सच्चंसि परिविचिट्ठिंसु । [२६२]

साहिस्सामो[2] णाणं वीराणं समिताणं सहियाणं सयाजताणं संघडंदसीणं आतोवरयाणं अहातहा लोग मुवेहमाणाणं । किमत्थि उवाधी? । पासगस्स ण विज्जति णत्थिात्ति बेमि । (२६३)

---

१ निरंतरदर्शिन: २ कथयिष्याम:

माटे हे मुनिओ, तमारे बाहेरना प्रतिबंध कापी करी मोक्ष तरफ लक्ष्य राखी आ दुनिआमां आरंभनो त्याग करी वर्त्तवुं. [२६०]

“करेलां कर्मनां फळ थवानांज” एम जोइने आगमना तत्वने जाणनार मुनिओए ते कर्मो बांधवाना हेतुओथी दूर रहेवुं. [२६१]

जे पुरुषो खरेखरा पराक्रमी, सत्प्रवृत्तिनी रीतिओथी वर्त्तनारा, ज्ञानादि गुणोमां रमनारा, हमेशां उद्यमवंत, कल्याण तरफ दृढ लक्ष्य धरनारा, पापथी निवर्त्तेला अने यथार्थपणे लोकने जोनारा हता तेओ पूर्व पश्चिम दक्षिण तथा उत्तर ए चार दिशाओमां रहेता थका सत्यने ज वळगी रह्या हता. [२६२]

तेवा सत्पुरुषोनो अभिप्राय हुं तमोने जणाववुं छुं के तत्वदर्शी पुरुषोने उपाधिओ नथी रहेती. [२६३]

आवंतीनाम्ना प्रसिद्धं.

लोकासारनामकं पंचम–मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

आवंती केआवंती लोयंसि विप्परामुसंति[1] अट्ठाए अणट्ठाए वा। एतेसु चेव विप्परामुसंति[2]। गुरू से कामा। तओ से मारस्स अंतो। जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे[3], णेव से अंतो[4], णेव से दूरे[5]। (२६४)

१ हिंसांकुर्वंतीत्यर्थः २ समुत्पद्यंतइत्यर्थः ३ मोक्षोपायात् ४ विषयसुखस्य ५ विषयसुखस्य.

[1]अध्ययन पांचमु.

लोकसार.

पहेलो उद्देश.

[प्राणिनी हिंसा करनार, विषयो माटे आरंभमां प्रवर्त्तनार, तथा विषयोमां आसक्त जे होय तेने मुनि न गणवो.]

जे कोइ आ जगतमां सप्रयोजन अथवा निष्प्रयोजन जीवोनी हिंसा करेछे तेओ पाछा तेज जीवोनी गतिओमां जइ ऊपजेछे. एवा अतत्त्वदर्शी जनोने विषय सुखो छोडाववां भारे मुश्केल पडेछे, माटे तेओ मरणनी परंपराथी छूटी शकता नथी अने एम होवाथी तेओ मोक्षना मार्गथी या सुखथी दूर रहेला छे. तेथी तेओ नथी विषयसुखना अंदर, अने नथी तेनाथी वेगळा. [२६४]

१ आ अध्ययननुं बीजुं नाम आवंती छे.

से पासति फुसिय[1] मिव कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं, एवं बालस्स जीवियं मंदस्स अविजाणओ। (२६५)

कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे ततो दुक्खेण मूढे विपरियास—मुवेति, मोहेणं गब्भं मरणाइ[2] एति एत्थ मोहे[3] पुणो पुणो। (२६६)

संसयं परियाणतो संसारे परिन्नाते भवति। संसयं अपरिजाणओ संसारे अपरिण्णाते भवति। (२६७)

जे छेए, सागारियं[4] ण से सेवए। (२६८)

कट्टु[5] एवं अविजाणओ[6] बितिया मंदस्स बालया। (२६९)

लद्धा[7] हुरत्था[8] पडिलेहाए आगमेत्ता[9] आणवेज्जा अणासेवण-

१ बिंदुमिव २ मरणादि ३ मोहकार्ये गर्भादिके. ४ मैथुनं ५ सेवित्वा ६ अपलपतः ७ लब्धान्कामान् ८ बहिश्चित्ते ९ ज्ञात्वा.

तत्वदर्शी जनो जुए छे के एवा अज्ञानीओनुं आयुष्य दर्भनी अणी पर रहेला वायराथी कंपायमान अने जलदीथी पडी जनारा जळबिंदुनी माफक अस्थिर छे. [२६५]

तेम छतां तेवा अज्ञानीओ क्रूर पाप करता थका ते पापना फळ उदय आवतां मूढ बनी विपर्यास पामे छे अने पाछा मोहथी गर्भ अने मरणादि दुःखमां रहेता थका वारंवार ते दुःखो पाम्या करे छे. [२६६]

जे [1]संशयने जाणे छे, ते संसारने पण जाणे छे जे संशयने नथी जाणतो तेणे संसार पण जाण्यो नथी. [२६७]

माटे जे चतुर होय तेमणे स्त्रि संग न करवो. [२६८]

जे स्त्री संग करीने पाछो गुरूना पासे इनकार जाय छे ते एकना बदले बे पाप करे छे. [२६९]

माटे मळेलां विषय सुखोने पण विचार पूर्वक दुःखना हेतु जाणीने तेमना

१ कारण के संशय ए प्रवृत्तिनो अंग गणाय छे. जे माटे अर्थ संशय छतां पण प्रवृत्ति देखायछे. अर्थ शब्दे मोक्ष नहि पण तेना उपाय लेवा.

याएत्ति बेमि (२७०)

पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे[1]। एत्थ फासे पुणो पुणो आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी। (२७१)

एएसु[2] चेव आरंभजीवी[3]। एत्थवि[4] बाले परिपच्चमाणे रमति पावेहिं कम्मेहिं असरणं सरणंत्ति मण्णमाणे। (२७२)

इह मेगेसिं एगचारिया भवति। से बहुकोहे, बहुमाणे, बहुमाए, बहुलोभे, बहुरए, बहुनडे, बहुसढे, बहुसंकप्पे, आसवसक्की[5] पलिओच्छन्ने[6] उट्ठियवायं पवयमाणे, "मा मे केइ अदक्खु" अन्नाणपमायदोसेणं सततं मूढे धम्मं णाभिजाणाति। (२७३)

१ परिणीयमानान् विषयाभिमुखं. २ गृहस्थेषु ३ परतीर्थिकः प्रार्थ्यथादिर्वा दुःखभाक्स्यादितिशेषः ४ संयमाभ्युपगमेपि ५ आश्रवसत्की—आश्रववान् ६ पलिताव च्छन्नः

सेववाथी दूर रहेवुं. [२७०]

जुओ केटलाएक विषयोमां आसक्त रही नरकादिक गतिओमां तणाया जाय छे. अने एवो जे कोइ आ दुनिआमा आरंभथी जीवनाराछे ते बधा वारंवार मोहजाळमां फसी पडे छे. [२७१]

वळी केटलाएक पासथ्थादिक पण ए गृहस्थोमां वर्त्तता थका सावद्यप्रवृत्तिथी प्रवर्त्तीने दुःखी थाय छे. अने आ संयम लीधा छतां पण तेवा बाळ जीवो विषयतृष्णाथी तणाइने अशरणने शरण मानता थका पापमां रमे छे. [२७२]

वळी आ मनुष्य लोकमां केटलाएक एकला थइ फरे छे, तेओ बहु क्रोधी, बहु मानी, बहु मायावी, बहु लोभी, बहु पापी, बहु ढोंगी, बहु धूर्त्त, बहु दुष्टाध्यवसायी, हिंसक, अने कुकर्मी होवा छतां "हुं खुब धर्म माटे उज्जमाल बन्यो छुं" एवो बकवाद करता थका अने "रखे कोइ मने जाणी जाय?" एवी बीकथी एकला थइने फरता थका अज्ञान अने प्रमादथी निरंतर मूढ बनी धर्मने कंइ पण समजता नथी. [२७३]

१ आचारहिन यतिओ—वेषधारी.

अद्दा पया माणव? कम्मकोविया[1], जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु आवट्टमेव मणुपरियट्टंतित्ति बेमि। (२७४)

[द्वितीय उद्देशः]

आवंती केआवंती लोयंसी अणारंभजीवी, एतेसुचेव मणारंभजीवी। (२७५)

एत्थोवरए तं झोसमाणे " अयं संधीति " अदक्खू, जे इमस्स विग्गहस्स अयं खणेत्ति मन्नेसी। (२७६)

एस मग्गे आरिएहिं पवेदिते। उट्ठितो णो पमायए, जाणि-तु दुक्खं पत्तेय सायं। (२७७)

---

१ कर्माणि अष्टप्रकारे कुशलाः

हे मनुष्य, जेओ पापानुष्ठानथी नहि निवर्तता अविद्याथी[1] ज मोक्ष थशे एम कहेछे तेवा दुःखी जीवो कर्ममां ज कुशळ छे, नहि के धर्ममां, अने तेओ संसारना चक्रमां ज फर्या करवाना. [२७४]

बीजो उद्देश.

[जे हिंसादिक पापोथी निवर्त्यो होय तेज मुनि गणाय.]

आ जगतमां जे कोइ निरारंभी[2] थइ वर्ते छे तेओ गृहस्थो पासेथी ज निर्दूषण[3] आहारादिक लइ अणारंभिपणे रहेछे. (२७५)

माटे हे मुनि तारे सावद्य प्रवृतिथी[4] दूर रही कर्मोने खपावतां थकां "हमणा आ अवसर छे." एम विचारी पवित्र संयम पाळतां रहेवुं; जे माटे तें जाण्युं छे के आ शरीरनो आ अवसर छे. (२७६)

तीर्थंकरदेवे ए मार्ग बताव्यो छे (अने आ मार्ग पण बताव्योछे) के दरेक जंतुओने जूदुं जूदुं सुख-दुःख थायछे एम जाणी दीक्षा लइ प्रमाद न करवो. (२७७)

---

१ अज्ञानथी. २ अहिंसक. ३ दूषण रहित. ४ पाप भरेली वर्तणुकथी.

पुढोछंदा इह माणवा। पुढो दुक्खं पवेदितं। से अविहिंसमाणे अणवयमाणे[1] पुट्ठो फासे विप्पणोदए। एस समियापरियाए वियाहिते। (२७८)

जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं; उदाहु[2] ते आयंका फुसंति, इति उदाहु[3] धीरे;—ते फासे पुट्ठो—हियासए। (२७९)

पुव्वंपेतं पच्छापेतं भिउरधम्मं विद्धंसणधम्मं अधुवं अणितियं असासयं चयावचइयं विप्परिण्णामधम्मं। पासह एयं रूवसंधिं। (२८०)

समुप्पेहमाणस्स एकायतणरतस्स इह विप्पमुक्कस्स णत्थि मग्गे[4] विरयस्सात्ति बेमि। [२८१]

आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती;—से अप्पं वा, बहुयं

१ अनपवदन् २ कदाचित् ३ उदाहृतवान् ४ नरकादिरूपः

जेम माणसोना आशय पण जूदा जूदाज छे तेम तेमनुं दुःख पण जूदुं जूदुंज छे. माटे मुनिए कशी हिंसा नहि करतां तथा कंइ पण मृषा भाषण नहि करतां परीषहोने सहन करवा. एवी रीते वर्त्तनारो मुनिज रुडा चारित्रवाळो वर्ण-व्यो छे. [२७८]

जेओ पापमां नथी प्रवर्त्तता तेमने कोइ वखते मोहोटा रोग आवी नडे तो धीर तीर्थंकरदेवे एम कह्युंछे के ते रोगो सहन करवा. [२७९]

कारण के आ शरीर मोडुं के वेलुं पण तूटवानुं या फूटवानुं अध्रुव१ अनित्य,२ अशाश्वत,३ वधतुं घटतुं अने नाश पामनार छे ज. हे मुनिओ, आ शरीरनुं ऊपर प्रमाणे स्वरूप तथा अवसर विचारो. [२८०]

जे पुरूष ऊपर प्रमाणे शरीरनुं स्वरूप तथा अवसर विचारी सर्वथी सरस ज्ञानादिक आयतनोमां[4] रमतो रही आ शरीरनी दरकार नथी धरतो तेवा त्यागी पुरुपने भटकवानो रस्तो नथी. [२८१]

आ दुनिआमां जे कोइ पासे परिग्रह होय जेवो के थोडो अथवा घणो.

१ नियमविनानुं. २ फेरफार पामनुं, ३ ते ते रुपे पण हमेशां नहि टकनारुं. ४ फायदा भरेला स्थळोमां

वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, एते सु चेव परिग्गहावंती। (२८२)

एव-मेवेगेसिं महब्भयं भवति। लोगवित्तं च णं उवेहाए। (२८३)

एए संगे अविजाणतो से सुपडिबुद्धं सूवणीयंति णच्चा, पुरिसा! परमचक्खू विप्परिक्कमे। एतेसु चेव बंभचेरं-त्ति बेमि। (२८४)

से सुयं च मे, अज्झत्थं च मेः-बंधपमोक्खो च तुज्ज अज्झत्थेव। [२८५]

एत्थ विरते अणगारे दीहरायं तितिक्खए। [२८६]

नानो अथवा माहोटा, सचित्त अथवा अचित्त, ते बधा कदाच व्रती कहेवाता होय तोए गृहस्थोना जेवाज परिग्रहिओ गणवा. [२८२]

ए परिग्रहिपणुं ज केटलाएकोने नरकादिक महाभय आपनारुं थायछे, तथा लोकोनो आचार[1] पण तेवो ज भयजनक थायछे, एम विचारी तेनाथी दूर रहेवुं. [२८३]

ए परिग्रहनो संग त्याग करनारो मुनि ते रुडी रीते प्रतिबोध पामेलो छे तथा तेने रुडी रीते ज्ञानादि गुण प्राप्त थया छे एम जाणी हे पुरुष, तारे उत्तम दृष्टि धरीने वर्त्तवुं. जे माटे निःपरिग्रहि अने उत्तम दृष्टिवंत पुरुषोमां ज ब्रह्मचर्य होयछे. [२८४]

मे सांभळ्युं पण छे, अने अनुभव्युं पण छे के कर्मोथी छूटवुं ए तारा आत्माथी ज थवानुं छे. [अर्थात् जो तुं ब्रह्मचर्यमां रहीश तोज कर्मोथी छूटीश.] [२८५]

माटे परिग्रहथी अलगा थएला मुनिए जीवनपर्यंत जे संकटो आवी पडे ते सहन करवां. [२८६]

---

१. आहार, भय, मैथुन, तथा परिग्रहरुप उत्कट संज्ञाओ.

पमत्ते बहिया[1] पास, अप्पमत्तो परिव्वए। (२८७)

एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जसित्ति बेमि। (२८८)

[तृतीय उद्देशः]

आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती एएसु[2] चेव अप्परिग्गहावंती, सोच्चा वई मेहावी, पंडियाण णिसामिया (२८९)

समियाए[3] धम्मे आरिएहिं पवेदिते—" जहेत्थ मए संधी[4] झो-

---

१ बहिर्व्यवस्थितान्। त्यक्तेषु सत्सु इति शेषः ३ समतया ४ मोक्षमार्गः कर्मसंधिर्वा.

प्रमादीओने धर्मथी पराङ्मुख थएला जोइ मुनिए अप्रमत्त थइ फरवुं. [२८७]

एम रुडो रीते तीर्थंकरभाषित संयमक्रियाने मुनिए परिपाळन कर्या करवी. [२८८]

त्रीजो उद्देश.

[जे मुनि होय ते कशो परिग्रह न राखे, तथा कामभोगनी इच्छा पण न करे.]

जे कोइ जगतमां निःपरिग्रहि थायछे ते बधाए तीर्थंकरदेवनी वाणी सांभळी विवेकवंत थइ पंडितोना वचन अवधारी सर्व प्रकारे परिग्रह छांडतांज निःपरिग्रही थायछे. [२८९]

तीर्थंकरदेवे समताथी[1] धर्म वर्णव्यो छे. ते बोल्या छे के "हे लोको जे रीते में अहीं कर्म खपाव्यां छे ते रीते बीजा मार्गोमां कर्म खपाववा मुश्केल छे, माटे

---

१ निष्पक्षपातपणे [Without partiality]

सिए[1] एव–मण्णत्थ संधी दुज्झोसए भवति । तम्हा बेमि णो णिहणेज्ज वीरियं । ” (२९०)

जे पुव्वुट्ठाई णो पच्छाणिवाती । जे पुव्वुट्ठाई पच्छाणिवाती । जे णो पुव्वुट्ठाई णो पच्छाणिवाई । से[2] वि तारित्तए सिया । जे[3] परिण्णाय लोग मण्णेसिता । एयं णियाय[4] मुणिणा पवेदितं । (२९१)

इह आणाकंखी पंडिते अणिहे पुव्वावररायं जयमाणे सया सीलं सपेहाए[5] । (२९२)

सुणित्ता भवे[6] अकामे अझंझे[7] । (२९३)

इमेणं[8] चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ । जुद्धारिहं ख-

१ सेवितः क्षपितोवा २ शाक्यादिरपि। ३ पासत्थादयः ४ ज्ञात्वा. ५ संप्रेक्ष्य तदेवानुपालयेत् । ६ भवेत् ७ मायालोभच्छारहित : ८ स्वशरीरेण

हुं कहुं छुं के मारो दाखलो लइ बीजा मुमुक्षाओए पण पोतानुं पराक्रम छुपाववुं नहि.”

केटलाएक[1] पहेलां पण उज्माल थइ दीक्षा ले छे अने पाछां पण पतित नथी थता. केटलाएक[2] पहेला उज्माल थइ दीक्षा ले छे पण पाछा पतित थायछे. केटलाक[3]नथी पहेला उज्माल थता अने नथी तेथी पाछा पतित थता. (शाक्तादिक तेथी सावद्य[4]क्रियामां प्रवर्त्तनारा पासत्थाओ[5]) नथी ऊठेला अने नथी पडेला आ वात मुनिए (वीर प्रभुए)ज रुडी रीते जाणीने जणावी छे. [२९१]

तीर्थंकर देवनी आज्ञा पाळवा इच्छनारा चतुर मुनिए निरीहपणे रात्रिना पहेला तथा छेल्ला पहोरे यत्नवंत थइ हमेशां शीळने[6] मोक्षांग[7] विचारीने तेने पाळवुं. [२९२]

शीळने नहि पाळनाराओनी थती दुर्दशाओ सांभळी कामभोगनी इच्छा तथा मायाथी रहित थवुं. [२९६]

हे मुनि, आ शरीर साथेज तुं युद्ध कर, बीजा बाहेरना युद्धनी तने शी

१ गणधरादिक. २ नंदिषेण वगेरे. ३ गृहस्थो. ४ आरंभ भरेला वर्त्तणुकमां ५ आचारहीन यतिओ. ६ संयमने. ७ मोक्षनुं कारण.

लु दुल्लहं । (२९४)

जहेत्थ कुसलेहिं परिन्नाविवेगे भासिते[1] । चुते हु बाले गब्भाइसु रज्जाति । (२९५)

अस्सिं[2] चेयं पव्वुच्चति । रूवंसि[3] वा छणंसि[4] वा । (२९६)

से हु एगे संविद्धपहे मुणी अण्णहा लोग—मुवेहमाणे । (२९७

इतिकम्मं परिन्नाय सव्वसो, से ण हिंसाति संजमति णो पगब्भति । उवेहमाणो पत्तेयं सायं, । (२९८)

१ स तथैव श्रद्धेय इतिशेषः २ जिनमत ३ रूपादौ गृद्धः ४ हिंसादौ प्रवर्तते इत्यर्थः

जरुर छे. शुद्धने योग्य आवुं शरीर फरी मळवुं घणुं मुस्केल छे. [२९४]

तीर्थंकर देवे विचित्र अध्यवसायोनी जे रीते समज आपी छे ते तेज रीते स्वीकारवी, माटे धर्म पामीने तेथी भ्रष्ट थएलो बाळ जीव गर्भादिक दुःख पामे छे. [२९५]

आ जिनशासनमांज एवुं कहेवाय छे के जे विषयोमां गृद्ध[1] थाय छे ते हिंसामां प्रवर्त्ते छे. [२९३]

अने मुनि तो खरेखरो तेज जाणवो के जे लोकोने मोक्ष मार्गमां विमुख प्रवृत्ति करतो देखी तेमने दुःखी विचारतो थको मोक्ष मार्गमां रुडी रीते चाल्यो जाय. [२९७]

माटे कर्म स्वरुप जाणीने शुद्ध मुनिओ "दरेक जीवनुं सुख अलग अलग छे" एम विचारी कोइ जीवनी हिंसा नथी करता किंतु संयममां वर्त्तता रही धीटाइथी दूर रहे छे. [२८८]

१ आसक्त.

वन्नादेसी[1] णारभे कंचणं सव्वलोए, एग—प्पमुहे विदिसप्पतिन्न[2] निव्विन्नचारी अरए पयासु। (२९९)

से वसुमं सव्वसमन्नागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मं तं णो अन्नेसी। (३००)

जं सम्मं—ति पासह, तं मोणं—ति पासह। जं मोणं—ति पासह तं सम्मं—ति पासह। (३०१)

ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं[3] गुणासातेहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं[4]। (३०२)

मुणी मोणं समायाय धुणे कम्म—सरीरगं। पंतं लूहं सेवंति वीरा संमत्तदंसिणो। एस ओहंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरए वियाहित्त—ति बेमि। (३०३)

---

१ वर्णः साधुकारः सुयशाइतियावत् तदाकांक्षी। २ विदिक्प्रतीर्णः ३ आर्द्रीयमाणैः ४ अगारमावसद्भिः।

सुयशना इच्छनार मुनिए सर्व लोकमां कंइ पण पाप प्रवृत्ति न करवी. किंतु फक्त मोक्ष तरफ दृष्टि राखी आडुं अवळुं नहि जोतां स्त्रीओमां अरक्त रही आरंभथी उदासीन रहेवुं. [२९९]

एवा संयमी मुनिओए सर्व रीते पवित्र बोध पामीने, नाहि करवा योग्य पाप कर्म तरफ कदापि दृष्टि नहि आपवी. [३००]

जे सम्यकत्व[1] छे ते मुनिपणुं छे ने जे मुनिपणुं छे ते सम्यकत्व छे. [३०१]

ए सम्यकत्व या मुनिपणुं हिम्मत हीन, काचा हैयाना, विषयासक्त, मायावी, प्रमादी, अने घरमां रहेनारा जीवोथी धरी शकायज नहि. [३०२]

किंतु मुनिओज एवुं मुनिपणुं धरीने शरीरने कशे छे. तेवा सम्यकत्ववंत वीर पुरुषो लूखुं अने हलकुं भोजन करे छे. अने एवा पराक्रमी अने सावद्यानुष्ठानथी निवर्त्तेला मुनिओज संसारना तरनार होवाथी तरीने पार पामेला तथा निःसंग होवाथी मुक्त वर्णव्या छे. [३०३]

---

१ निश्चय सम्यकत्व.

[चतुर्थ उद्देशः]

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कंतं भवति अवियत्त–
भिक्खुणो । (३०४

वयसावि एगे चोइआ कुप्पंति माणवा । उन्नयमाणे[२] य णरे
ा मोहेण मुज्झति । संबाहा[३] बहवो भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो ।
सतो । एयं ते मा होउ । एयं कुसलस्स[४] दंसणं । (३०५)

तद्दिट्ठीए[५] तम्मुत्तीए तप्पुरक्कारे तस्सनी तनीवेसणे जयंविहारी
ताणिवाती पंथणिज्झाती पलिबाहिर[६] पासिय पाणे गच्छेज्जा । से

१ अव्यक्तस्य २ उन्नत मानः ३ पीडाः ४ वर्द्धमानविभोः
गुरोर्दृष्टया ६ परिबाह्यः अवग्रहा- द्बहिर्वर्त्ती

चोथो उद्देश.

[अजाण, अगीतार्थ, अने सूत्रार्थमां निश्चय विनाना मुनिने
एकला फरवामां घणा दोष थाय छे)

सामर्थ्यहीन[१] मुनि एकलो थइने गामोगाम फरे तो तेनुं ते फरवुं तथा जवुं
सुंदर गणाय छे. केटलाएक मनुष्यो मात्र वचनोथी सारी शीखामण आपतां
ाखुश थाय छे. एवा अभिमानी पुरुषो [२] महामोहथी विवेकविकल बनी गच्छथी
ूटा पडे छे. तेवा अजाण अने अतत्वदर्शी पुरुषोने अनेक आवी पडती पीडाओ
ुर्लंघनीय थाय छे. हे मुनिओ, एवुं तमारा माटे नहि बनो एवुं कुशळ पुरुष
[वीरप्रभुनुं] दर्शन छे. [३०५]

माटे मुनिए हमेश गुरुनी नजर आगळ रहीने गुरुए बतावेली निःसंगताथी
गुरुना बहुमान पूर्वक, अने गुरु परना श्रद्धाथी, गुरुसमीप निवास करतां थकां
यतनापूर्वक गुरुना अभिप्रायने अनुसरीने मार्गना अवलोकन साथे जीवजंतुने जो-

१ वय तथा ज्ञाननी योग्यताथी रहित. २ अज्ञानथी.

अभिक्कममाणे पडिक्कमाणे संकुंचेमाणे पसारेमाणे विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे। (३०६)

एगया गुणसमियस्स रीयतो [1] कायसं-मणुचिन्ना एगतिया पाणा उद्दयंति; इहलोग वेयणवेज्जावडियं। जं आउट्टीकयं कम्मं तं परिन्नाय [2] विवेग-मेति। एवं से अप्पमाएणं विवेगं किट्टंति [3] वेदवी। (३०७)

से पभूयदंसी पभूयपरिन्नाणे उवसंते समिए सहिते सयाजए दट्ठुं विप्पडिवेदेति [4] अप्पाणं;—"किमेस [5] जणो करिस्सति। एस से परमारामे जाओ लोगंसि इत्थिओ." मुणिणा हु एतं पवेदितं। (३०८)

उव्वाहिज्जमाणे [6] गामधम्मेहिं. अवि णिव्वलाएस, [7] अवि ओ-

---

१ रीयमाणस्य सम्यगनुष्ठानवतः २ प्रायश्चितं. ३ कीर्त्तयति. ४ विप्रतिवेदयति. ५ स्त्रीजनः ६ उद्बाध्यमानः ७ निबलाशिकः निर्बलभोजी "स्यादि" तिशेष

तां थकां भूमंडळपर भमता रहेवुं. एटलुंज नहि पण जतां, आवतां, बेशतां, ऊठतां, वळतां, अने प्रमार्जन करतां सर्वदा गुरुनी अनुज्ञा लइ वर्त्तवुं. [३०६]

कोइ वखते एवा सद्गुणी मुनिए रुडी रीते वर्त्तता छतां तेना शरीरसंस्पर्शथी कोइ जंतु मरण पामे छे तो तेनो तेने आ भवमां क्षय थइ शके एटलो कर्मबंध पडे छे. अने जो आकुट्टिथी जाणी जोइने कायसंघट्टनादिकवडे कंइ कर्म बंधाय छे तो तेना माटे योग्य प्रायश्चित आचर्याथी कर्म क्षय थायछे. ए प्रायश्चित अप्रमादिपणे आचर्याथी कर्मक्षय थाय एम आगमना जाण पुरुषो बोलेछे. [३०७]

माटे दीर्घदर्शी, बहुज्ञानी, क्षमावंत, पवित्र प्रवृत्तिवंत, सद्गुणी, अने सदा यत्नवंत मुनिए स्त्रीओने देखी विचारवुं के ए स्त्रीओ मारुं शुं कल्याण करवानी छे? तथा आ दुनिआमां स्त्रीओ ज अतिशय चित्तने मुंझावनारी छे. ए बधुं मुनिए [वीरप्रभुए] जणाव्युं छे. [३०८]

विषयोथी जो मुनि पीडाय तो तेणे निर्बळ आहार करवो, पेटने अपूर्ण

मोदरियं कुज्जा, अवि उड्ढं ठाणं ठाएज्जा, अवि गामाणुगामं दूइज्जा, अवि आहारंवोछिंदिज्जा, अवि चए[1] इत्थीसु मणं। (३०९)

पुव्वं दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा। इच्चेते[2] कलहासंगकरा भवंति। पडिलेहाए[3] आगमित्ता[4] आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि। (३१०)

से णो काहिए,[5] णो पासणिए, णो संपसारए[6] णो ममाए, णो कयकिरिए, वइगुते,अज्झप्पसंवुडे, परिवज्जए सदा पावं। एयं मोणं समणुवासेज्जासि—त्ति बेमि। (३११)

---

१ त्यजेत्. २ स्त्रीसंबंधाः ३ प्रत्युप्रेक्षया. ४ ज्ञात्वा. ५ कथाकारकइत्यर्थः ६ पर्यालोचनकारीत्यर्थः

राखवानुं करवुं, एक जगे ऊभा रही कायोत्सर्ग करवा, ग्रामांतर जता रहेवुं,[1] छेवट तदन आहार पण छोडी आपवो,[2] पण स्त्रीओमां जाणी जोइने नहि फसावुं. [३०९]

स्त्रीओमां फसातां, पहेलां संकटो भोगववां पडे छे अने पछी कामभोग थाय छे. अथवा पहेलां कामभोग थाय छे तो पछी संकट भोगववां पडे छे. ए स्त्री कलहनी उत्पन्न करनारी छे. माटे ए बधुं जाणी विचार करी तेमनाथी दुर रहेवुं. [३१०]

स्त्रीसंग परित्यागी मुनीए स्त्रीओनी शृंगार कथा न करवी. स्त्रीओना अंगोपांग[3] न जोवां, स्त्रीओ साथे वातचीत न करवी, स्त्रीओपर ममता न करवी, स्त्रीओनी आगतास्वागता न करवी, किंबहुना, स्त्रीओ साथे वचनमात्रथी पण परिभाषण नहि करतां पोताना मनने कबजे करीने हमेशां पापाचारथी दूर थइ वर्तवुं. [३११]

---

१ कारण शिवाय मुनिने विहार निषिद्ध * छे. पण मोह उपशमाववा ने पण करवो. २ तेथी गमे ते रीते आत्मघात पण करवो पण स्त्रीओमां न फसावुं. ३ अवयवो * आ वात चतुर्मासस्थित मुनिने माटे संभवेछे. [भा. क.]

[पंचम उद्देश.]

से बेमि—तं जहा, अवि हरए[1] परिपुन्ने चिट्ठति समंसि भोमे उवसंतरए सारक्खमाणे। से[2] चिट्ठति सोयमज्झगए, से पास, सव्वतो गुत्ते। पास, लोए महेसिणो, जे य पन्नाणमंतो पबुद्धा आरंभोवथार, सम्म—मेयंति पासह, कालस्स कंखाए परिव्वियाति त्ति बेमि। (३१२)

वितिगिंच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं। (३१३)

सिया[3] वेगे अणुगच्छंति। असिया वेगे अणुगच्छंति। अणु—गच्छमाणेहिं अणणुगच्छमाणो कहं ण णिव्विज्जेज्जा। तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं। (३१४)

१ ह्रदः २ आचार्यः ३ सिता बद्ध गृहस्था इत्यर्थः

पांचमो उद्देश.

(मुनिए सदाचारथी वर्त्तवुं तथा तेना माटे जळाशयनो दृष्टांत.)

जेम कोइ एक सपाट प्रदेशमां एक निर्मळ जळथी भरपूर थएलो अने सुरक्षित जळाशय हमेशां स्वच्छ बन्यो रहे छे तेम केटलाएक पवित्र आचार्यो ज्ञान जळथी भरपूर बनी निर्दोष क्षेत्रमां रहीने जीवोनुं संरक्षण करता थका ज्ञानजळना प्रवाहने चलावनार थइने सुरक्षित बन्या रहेछे. एटलुंज नहि पण केटलाएक मुनिओ पण विवेकवंत बनी प्रतिबोध पामीने आरंभथी निवृत्त थइ समाधि मरणनी इच्छा राखता थका ते जळाशयना जेवाज वर्त्ते छे. [३१२]

"फळ थशे के नाहि थाय" एवो संशय राख्याथी जीवने समाधि[1] नथी मळती. [३१३]

वळी आचार्यना वाक्योने वखते गृहस्थो पण समजी शके छे, अथवा मुनिओ समजी शके छे, एवे वखते जे मुनि पोताना कर्मोदयथी ते समजी शक्तो नहि होय तेने मनमां खेद उत्पन्न थया विना रहेतो नथी. (आवा प्रसंगे गुरुए तेवा शिष्यने कहेवुं के हे शिष्य,] "जे जिनोए भाख्युं छे तेज निःशंकपणे सत्य छे," (एवी तारे श्रद्धा राखवी.) [३१४]

१ स्वस्थता.

सड्ढिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स समियं—ति मण्णमाणस्स एगया समिया होति, समियं ति मण्णमाणस्स एगया असमिया होति असमियं—ति मण्णमाणस्स एगया समिया होति, असमियं—ति मण्णमास्स एगया असमिया होति । (३१५)

समियं—ति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होति उवेहाए । (३१६)

असमियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होति उवेहाए । (३१७)

उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया—"उवेहाहि समियाए; इच्चेवं तत्थ संधी झोसितो भवति" । (३१८)

से उठियस्स ट्ठियस्स गतिं[1] समणुपासह । एत्थवि बालभावे

१ प्रतिष्ठां गतिंवा.

श्रद्धालु अने सांविग्नभावित[1] जीवो के जेओ दीक्षा लेती वखते "जिन भाषितज सत्य छे." एवुं माने छे तेओमांना केटलाएक त्यार बाद तेवीज श्रद्धा टकावी राखे छे अने केटलाएक संशयी वनी जाय छे. वळी जेओने शरुआतमां पाकी श्रद्धा नथी होती तेओमांना केटलाएक उत्तर काळमां शुद्ध श्रद्धावंत थइ जाय छे अने केटलाएक तेवाने तेवाज रहे छे.[(ए रीते परिणामनी विचित्रता छे) [३१५]

जे पुरुषनी श्रद्धा पवित्र छे तेने सम्यक् या असम्यक् वस्तु वन्ने सम्यक् विचारणाथी सम्यक् रुपे परिणमे छे. [३१६]

अने जे पुरुषनी श्रद्धा अपवित्र छे, तेने सम्यक् या असम्यक् वस्तु असम्यक् विचारणाथी असम्यक् रुपे परिणमि छे. [३१७]

माटे सम्यकविचार करनारा पुरुषे विचार नहि करनारा पुरुषने सम्यक् विचार करवा प्रेरित करवो के "हे पुरुष. तुं सम्यक् विचार कर, जे माटे तेम कर्याथी ज संयममां कर्मक्षय करायछे."

हे मुनिओ, श्रद्धावंत अने गुरुकुलमां वसनार मुनिनी पदवी अने गति

१ संविग्न एटले मुनि तेमणे भावित एटले समजावेला.

अप्पाणं णो उवदंसेज्जा। (३१९)

तुमंसि नाम तं चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि। तुमंसि नाम तं चेव, जं अज्जावेयव्वांति मन्नासि। तुमंसि नाम तं चेव, जं परितावेयव्वंति मन्नसि। तुमंसि नाम तं चेव, जं परिघेतव्वंति मन्नासि। एवं तुमंसि नाम तंचेव, जं उद्दवेयव्वंति मन्नसि। अंजू[1] चेयपडिबुद्धज्जीवी[2] तम्हा। ण हंता, ण विघायए; अणुसंवेयण–मप्पाणेणं[3], जं हंतव्वं णाभिपत्थए। (३२०)

जे आया से विन्नाया। जे विन्नाया से आया। जेण विजाणति से आया। तं पडुच्च परिसंखायए एस आयावादी सम्मियाए परियाए

१ ऋजुः २ एतत्प्रतिबोधजीवी। ३ ज्ञात्वा इतिशेषः

जुओ अने पासत्थाओनी पण पदवी अने गति जुओ. माटे बाळजनाचरित असयंममां आपणा आत्माने नहि स्थापवुं. [३१९]

हे पुरुष, जेने तुं हणवानो इरादो करे छे त्यां एम विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेना पर हुकुमत चलाववा तुं धारे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेमने दुःखी करवा तुं धारे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, जेने पकडवा चाहे छे त्यां विचार कर के ते तुंज पोते छे, अने जेमने मारी नाखवा धारे छे त्यां पण विचार कर के ते तुंज पोते छे. सत्पुरुष ज खरेखर एवी समज धरता वर्त्ते छे. माटे मुनिए कोइ पण जंतुने हणवुं के मारवुं नहि. केमके तेने हणवा के मारवाथी आपणे पाछुं तेवुं दुःख भोगववुं पडे छे. एम जाणीने कोइना पर हणवानो इरादो नहि धरवो. भावार्थ–परने दुःख उपजावतां पोतानो विचार करवो एटले के आपणने कोइ दुःख उपजावे तो केवुं लागे? एम दरेक बाबत प्रथम पोता उपर अजमावदी जोइए. [३२०]

जे आतमा छे तेज जाणनार छे. जेजाणनार छे तेज आतमा छे. किंवा जे

याहिते[1]—त्ति बेमि । (३२१)

[षष्ठ उद्देशः]

अणाणाए एगे सोवट्ठाणे[2] । आणाए एगे निरुवट्ठाणे । एतं ते मा होउ । एयं कुसलस्स दंसणं । (३२२)

तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तत्पुरक्कारे तस्सण्णी ताण्णिवेसणे[3] अभिभूय अदक्खू[4], अणभिभूते पभू निरालंबणयाए; जे महं अबहिमणे[5]। (३२३)

---

१ तस्येतिशेषः २ सोद्यमाः ३ तन्निवेशनः गुरुकुळ्वासीत्यर्थः ४ तत्त्वमितिशेषः ५ भगवदभिप्रायवर्तिमनो येषांते

ज्ञानवडे जाणी शकाय छे ते ज्ञान ज आत्मा छे. ए ज्ञानने अनुसरीने तद्रुप आत्मा बोलाय छे.[1] ए रीते जे ज्ञान अने आत्मानुं एकपणुं माने तेज खरो आत्मवादी छे. ने तेवा पुरुषनुंज यथार्थपणे संयमानुष्ठान कहेलुं छे. [३२१]

छट्ठो उद्देश.

(उन्मार्गमां न जवुं तथा राग द्वेष तजवा.)

कटलाएक जिनाज्ञाथी विपरीत प्रवृत्तिमां उद्यमी वर्ते छे. केटलाएक जिनाज्ञानुकूळ प्रवृत्तिमां निरुद्यमी छे. ए बन्ने वात, हे मुनि, तारे न थाओ, एम कुशळ (वीर प्रभु)नुं दर्शन छे. [३२२]

माटे जे पुरुष हमेशां गुरुनी दृष्टिमां वर्त्ततो होय, गुरु प्रदर्शित मुक्ति स्वीकारतो होय, गुरुनुं बहु मान करतो होय, गुरुपर श्रद्धा धरतो होय, गुरु कुळवास करतो होय, ते पुरुष कर्मोने जीतीने तत्त्व जोइ शके छे. अने एवा महा पुरुष के जेनुं मन लगार पण सर्वज्ञोपदेशथी बाहेर जतुं नथी ते कोइनाथी पण पराभूत न थतां निरालंबनता रुप भावनाने भाववा समर्थ थाय छे. [३२३]

---

१ जेमके जे इंद्र शब्दमां उपयुक्त होय ते इंद्र कही शकाय छे.

पवादेणं[1] पवायं[2] जाणेज्जा; सहसम्मइयाए,[3] परवागरणेणं, अन्नेसिं वा अंतिए सोच्चा। (३२४)

णिद्देसं[4] णातिवत्तेज्जा मेहावी सुपडिलेहिय सवत्तो सव्वयाए सम्ममेव समभिजाणिया[5]। [३२५]

इहारामं[6] परिन्नाय, अल्लीणगुत्तो परिव्वए। णिट्ठियट्ठि[7] वीरे आगमेणं सदा परिक्कमेज्जा[8] सि त्तिबेमि। [३२६]

उड्ढं सोता[9] अहं सोता, तिरियं सोता वियाहिया; एते साया वियक्खया, जेहिं संगंति पासह। (३२७)

आवट्ट–मेयं तु पेहाए, एण्थ विरमेज्ज वेदवी। (३२८)

---

१ गुरुपारपर्येण. २ सर्वज्ञोपदेशं ३ सहसात्मत्या, सहसंमत्यावा ४ आज्ञां ५ ज्ञात्वेत्यर्थः ६ संयममित्यर्थः ७ मोक्षार्थी, निष्ठितार्थोवा ८ पराक्रमेथाः ९ आश्रवद्वाराणि

गुरुपरंपराथी सर्वज्ञोपदेश जाणवो, अथवा जिनप्रवादथी परतीर्थिकना प्रवाद तपासवा. ते जिनप्रमाद तथा परतीर्थिक प्रवाद त्रण प्रकारे जाणी शकाय छेः— जाति स्मरणादिकथी, तीर्थंकरना उपदेशथी, अथवा वीजा आचार्योना पासेथी सांभळवाथी. [३२४]

माटे सर्व रीते सर्व प्रकारे सर्वज्ञवाद तथा परप्रवादने तपासीने सर्वज्ञप्रवादने यथार्थ जाणी बुद्धिमान् मुनिए सर्वज्ञोपदेशनुं उल्लंघन न करवुं. [३२५]

आ दुनिआमां संयमने खरेखरुं सुखस्थान जाणीने जितेंद्रिय थइ वर्त्तवुं. किंवहुना, मोक्षार्थी वीर पुरुषे हमेशा जिनाज्ञाथी ज प्रवर्त्तवुं. [३२६]

ऊंचे, नीचे, तथा तिरश्चीन दिशाओमां सर्व स्थळे पाप उपार्जन करनारा प्रवाह रहेला छे. ज्यां ज्यां आसक्ति[1] थाय छे त्यां त्यां कर्म वंध थया करे छे. [३२७]

कर्म रुपी [illegible] चक्रने जोइने विषयभोगथी आगमना जाण पुरुषे दूर रहेवुं. (३२८)

---

१ ज्यां ज्यां जीव पोताना मनथी वंधाइ वेसे छे.

विणे-तुं सोयं णिक्खम एस महं[1] अकम्मा जाणति, पासति, पडिलेहाए[2] णावकंखति, इह आगतिं गतिं परिण्णाय अव्वेति जातिमरणस्स वट्टमग्गं णवक्खायरते[3] । (३२९)

सव्वे सरा[4] णियट्टंति, तक्का[5] जत्थ ण विज्जति, मति तत्थ ण गाहिता, ओए[6] अप्पतिट्ठाणस्स[7] खेयन्ने । (३३०)

से ण दीहे, ण हस्से, ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमंडले, किन्ह, ण णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुकिल्ले, ण सुरहिगंधे, ण दुरहिगंधे, ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाते, ण अंबिले, ण महुरे, ण कक्खडे, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण

१ महान् २ प्रत्युप्रेक्ष्य ३ व्याख्यातोमोक्षस्तत्ररतः ४ स्वराः ध्वनयः ५ तर्काः ६ ओजः एकएव ७ मोक्षस्यज्ञाता यद्वा अप्रतिष्टानो नरक स्तत ज्ञाता सर्वलोकालोकज्ञइत्यर्थः

जे कोइ पुरुष पाप आववाना प्रवाहोने बंध करवा दीक्षा ले छे ते महा पुरुष घाति कर्म क्षय करीने सर्वज्ञ तथा सर्वदर्शी थाय छे, (इंद्रादिकने पूजनीय थाय छे) छतां परमार्थ विचारीने इंद्रादिकनी पूजानी पोते अभीलाषा नथी धरता, अने प्राणिओना संसारमां थता परिभ्रमणने जाणता थका जन्म मरणना चक्रमांथी छूटा थईने मुक्तिपुरीना सुखमां जइ विराजे छे. [३२९]

(मुक्तिना सुखमां रहेनारा जीवोनी जे अवस्था वर्त्ते छे ते जणाववा) कोइ पण शब्द समर्थ थता नथी, कोइ पण कल्पना दोडी शकती नथी, अने कोइनी मति पण पोहोंची शकती नथी. त्यां सकल कर्म रहित एकलो जीव संपूर्ण ज्ञानमय विराजे छे. [३३०]

ते मुक्तिस्थित जीव नथी लांबो, नथी टूंको, नथी गोळ, नथी त्रिकोण, नथी चोरस, नथी मंडळाकार; नथी काळो, नथी लीलो, नथी रातो, नथी पीळो, नथी धोळो; नथी सुगंधि, नथी दुर्गंधि; नथी तीखो, नथी कडुओ, नथी कसाएलो, नथी खाटो, नथी मीठो; नथी कर्कश, नथी सुकुमाळ, नथी भारी, नथी हलको नथी थंडो, नथी गरम, नथी स्निग्ध, नथी रुक्ष; नथी शरीरवालो, नथी जन्मधर-

लुक्खे, ण काऊ, [१] ण रुहे, ण संगे, ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अन्नहा,[२] परिण्णे, सण्णे। (३६१)

उयमा ण विज्जती । अरूवी सत्ता। अपयस्स पयं णत्थि! (३३२)

से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे इच्चेतावंत त्ति बेमि । (३३३)

---

१ न कायः—कायावान् नपुंसक इत्यर्थः

नार, नथी संगपामनार; नथी स्त्रीरुप, नथी पुरुषरूप, नथी नपुंसकरुप; किंतु ज्ञाता अने परिज्ञाता थइ बिराजे छे. [३३१]

मुक्त जीवोने जणाववा माटे उपमा कोइ छे ज नहि. केमके तेओनी अरुपी हैयाती रहेली छे. तेमज तेओने कशो पण अवस्थाविशेष छे नहि, माटे तेमने जणाववा माटे कोइ शब्दनी पण शक्ति नथी. [३३२]

केमके तेओ नथी शब्द रुप, नथी रुपरुप, नथी गंध रुप, नथी रस रुप अने नथी स्पर्श रुप. (अने वाच्य वस्तुना विशेष तो मात्र ए शब्दादिक पांच गुणज छे ते मुक्त जीवोमां छे नहि माटे तेओ अवाच्य छे.) [३३३]

धूताख्यं षष्ट मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

ओबुज्झमाणे[1] इह माणवेसु अक्खाति से णरे। जस्सिमाओ जातिओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति, अक्खाइ से णाण–मणेलिसं[2]।(३३४)

से किट्टति तेसिं समुट्ठियाणं णिक्खित्तदंडाणं समाहियाणं पन्नाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं। एवं पेगे महावीरा विपरक्कमंति। पासह, एगे

1 अवबुध्यमानः 2 अनीदृशं

अध्ययन छठुं

धूत[1]

पहेलो उद्देश.

[स्वजन संबंधिओ छोडीने धर्ममां परायण थवुं.]

तीर्थंकरो पोते आ संसारनुं यथार्थ स्वरूप जाणता थका मनुष्योने तेमना कल्याण माटे धर्म बतावता रहे छे तथा जेओने आ एकेंद्रियादिक जीव जातिओ[2] सर्व रीते यथार्थपणे मालुम होय एवा केवळी[3] अने श्रुत केवळीओ[4] पण सर्वोत्तम बोध आपे छे. [३३४]

तेओ धर्माचरण माटे उत्साही थएला प्राणि हिंसाथी निवर्त्तेला–सावधान–अने समजवान मुनिओने मुक्तिमार्ग बतावे छे. एवे वखते केटलाएक महापराक्रमी

1 धूत—कर्मोनुं धोवुं. 2 जीवोना वर्गो. 3 केवळज्ञानी 4 चौदपूर्विओ.

विसीयमाणे अणत्तपन्ने[1]। (३३५)

से बेमि–से जहावि कुम्मे, हरए विणिविट्ठचित्ते पच्छन्नपलासे[2] उम्मग्गं[3] से ण लभति। (३३६)

भंजगा इव[4] सन्निवेसं णो चयंति। एवं एगे अणेगरूवेहिं कुलेहिं जाया रूवेहिं सत्ता कलुणं थणंति[5]। णिदाणतो ते ण लभंति मोक्खं। [३३७]

अह पास तेहिं कुलेहिं आयत्ताए[6] जाया। (३३८)

---

१ अनात्मप्रज्ञा; २ पलाशप्रच्छन्नः ३ उन्मज्जनं उर्ध्वमार्गंवा ४ वृक्षा इव ५ स्तनंति लपंतीत्यर्थः ६ आत्मत्वाय आत्मीयकर्मानुभवाय.

पुरुषो संयमयां सारी रीते पराक्रम वतावे छे, अने केटलाएक अणसमजुओ संयममां लथडता पण रहे छे. [३३५]

जेम कोइएक जळाशयमां कोइएक काचवो तदासक्त थइने रहेता होय अने ते जळाशयनुं जळ सेवाल तथा कमलिनीओना पत्रोथी छवायलुं हे.वाथी पेला काचवाने पाणीनी ऊपर आववानुं वांकु मळी शकवुं घणुं मुश्केल छे, तेम आ संसार रुपी जळाशयमां जीवरुपी काचवाने सम्यक्त्वरुप वांकुं हाथ चडवुं पण एटलुंज मुश्केल छे. [३३६]

तथा जेम वृक्षो (तेओने गमे तेटलुं दुःख वेठवुं पडे छे तोए) पोताना स्थानथी आघा जता नथी. तेम केटलाएक जूदा जूदा कुळोमां जन्मेला जीवो शब्दादिक विषयोमां आसक्त बनी (दुःखबीज भरपूर घरवासने नहि छोडता थका अंते) करुण विलाप करता रहे छे, पण दुःखना मूळ कारण कर्मथी छूटी शक्ता नथी. [३३८]

जूदा जूदा कुळोमां पोतपोताना कर्म भोगववाने जीवो जन्म धरीने अनेक अवस्थाओ भोगवे छे. (३३८)

गंडी अदुवा कुट्ठी, रायंसी[1] अवमारियं;[2]
काणियं[3] झिम्मियं[4] चेव, कुणित्तं खुज्जितं तहा।
उअरिं च पास मूयं च, सूणियं च गिलासिणिं;[5]
वेवयं[6] पीढसप्पिं च, सिलिवतिं[7] महुमेहणं।
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो;
अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा।
मरणं तेसिं सपेहाए, उववायं चवणं णच्चा;
परियागं च सपेहाए, तं सुणेह जहातहा। [३३९]
संति पाणा अंधातमंसि वियाहिया; ता-मेव[8] सइं[9] असइं[10]

१ राजयक्ष्मवान् २ अपस्मारवान्. ३ काणत्वं ४ जडतां ५ भस्मको व्याधिस्तं ६ वेपं कंपं. ७ श्लीपदं. ८ अवस्थां. ९ सकृत् (अनुभूयोतिशेष:) १० असकृत्.

कोइने गंडमाळानो रोग थायछे, कोइने कोढ नीकले छे, कोइने क्षयरोग थाय छे, कोइने अपस्मार[1] थाय छे, कोइने आंखना रोगो थाय छे, कोइने शरीरनी जडता थवाना रोग थाय छे, कोइने हीनांगपणाना दोषो होय छे, कोइने कूबडापणुं होय छे, कोइने पेटना रोग थाय छे, कोइने मूंगापणु थाय छे, कोइने सोजो चडे छे, कोइने भस्मकरोग[2] थाय छे, कोइने कंपवा थाय छे, कोइने पीठ वळेली होय छे, कोइने श्लीपदरोग[3] थाय छे, तथा कोइने मधु प्रमेह थाय छे. ए रीते ए सोळ महारोगो बताव्या. तथा वळी अनेक शूळादिक पीडाओ अने जखम विगेरे भयंकर बनावो पण थता रहे छे. ए सर्वे रोग अने पीडाओथी छेवट मरण पण थाय छे. तथा जेमने रोग नथी थता एवा (देवताओने) पण जन्ममरण रह्या छे. एम जाणीने तथा ए बधां करेलां कर्मनां फळ छे एम धारीने कर्मना उच्छेदन माटे तत्पर थवुं. हे मुनिओ, हवे कर्मनां फळ हुं वर्णवुं छुं ते सांभळो. (३३९)

कर्मना वशथीज जीवो अंध थइने घोर अंधकारमय स्थळोमां रहेला वर्णव्या

१ घेलापणुं, सन्निपात वगेरे. २ अतिशय भूख उत्पन्न थाय ते. ३ पग कठिन थइ रहे ते. ४ बहु कर्म करवाथी.

अतिअच्च[1] उचावए फासे पडिसंवेदेंति। बुद्धेहिं एयं पवेदितं। (३४०)

संति पाणा वासगा[2], रसगा[3] उदए[4] उदयचरा, आगासगामिणो; पाणा पाणे किलेसंति। (३४१)

पास लोए महब्भयं। [३४२]

बहुदुक्खा हु जंतवो। (३४३]

सत्ता कामेहिं माणवा। अबलेण वहं गच्छंति सरीरेणं पभंगुरेणं। [३४४]

अट्टे से बहुदुक्खे, इति बाले पकुव्वति;
एते रोगे बहु णच्चा, आउत परितावए[5]। [३४५]

णालं पास। अलं तवेतेहिं। एयं पास मुणी! महब्भयं। णातिवाएज्ज कंचणं। (३४६)

---

१ अतिगत्य. २ वासका: शब्दंकर्तुं समर्थाः द्विंद्रियादयः ३ रसगा: संज्ञिनः ४ उदकरूपाः ५ परितापयेयुः प्राणिगणं.

छे, जेओ वारंवार त्यां जइने दारुण दुःख भोगवे छे. ए वधुं तीर्थंकरोए जणावेलुं छे. [३४०]

वळी बेइंद्रियादिक जीवो, जळचर जंतुओ, तथा पक्षिओ ए बधा एकमेकने दुःख आपता रहे छे. [३४१]

ए रीते जगतमां महाभय वर्त्ते छे. [३४२]

जंतुओना दुःखनी परिसीमा नथी, [३४३]

मनुष्यो कामभोगमां आसक्त रहे छे. निःसार क्षणभंगुर शरीरना माटे पाप करी लोको दुःखी थाय छे. [३४४]

विवेकहीन अने बहु दुःखने पामनारा अज्ञानी पुरुषो शरीरमां अनेक रोगो उत्पन्न थएला देखी तेनी चिकित्सामां अनेक जंतुओनो नाश करे छे, [३४५]

पण तेथी कंइ रोग तो टळता नथी. माटे हे मुनि, तारे एवी पापभरपूर चिकित्सा नहि करवी. जे माटे जीवहिंसा महाभयंकर छे. माटे मुनिए कोइ जीवने मारवो नहि. [३४६]

आयाण[1] भो, सुस्सूस भो, धूयवादं पवेदइस्सामि इह खलु अत्तत्ताए[2] तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएणं[3] अभिसंभूता, अभिसंजाता अभिणिव्वट्टा, अभिसंवुड्ढा, अभिसंबुद्धा, अभिणिक्खंता, अणुपुव्वेणं महामुणी[4]। (३४७)

त परक्कमतं परिदेवमाणा "मा णे चयाहि" इति ते[5] वदंति;
"[7]छंदोवणीया अज्झोववन्ना[7]", अक्कंदकारी जणगा रूवंति।
"अतारिसे मणी ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा[8]"। (३४८)

सरणं तत्थ णो समेति[9], किह णाम से रमति। एवं णाणं सया समणुवासिज्जासि-त्ति बेमि। (३४९)

---

१ आजानीहि. २ जीवास्तितया. ३. शुक्रशोणितादिक्रमेण ४ अभूवन्निति शेषः कुटुंबिनः ५ वयं त्वयीति शेषः ७ (कुटुंबिवाक्य मेतत्) ८ [एतदपि कुटुंबिवाक्यं] ९ मुनिरिति शेषः

हे मुनिओ, ध्यान धरीने सांभळो, हुं तमोने कर्मो धोवानो वाद[1] कही बतावुं छुं. आ संसारमां घणाएक जीवो स्वकृतकर्मोनी परिणतिथी ते ते कुळोमां, मावापना शुक्रसोणितसंयोगादिक[2] क्रमे करीन उत्पन्न थइ, जन्म पामी, मोहोटा थइ प्रतिबोध लही दीक्षा ग्रही अनुक्रमे महामुनि थया छे. [३४७]

ज्यारे सत्पुरुष दीक्षा लेवा तैयार थाय छे त्यारे तेना मावाप तथा स्त्रीपुत्रादिक शोक करता थका तेने कहे छे के "अेम तमारी इच्छा प्रमाणे वत्तनारा अने तमारा पर प्रीति धरनारा छीए माटे अमोने छोडीने दीक्षा ल्योमां. जे मावापने छोडी दे छे ते कंइ मुनि न गणाय तथा संसारने पण तरी शके नहि" [३४८]

पण अेवे वखते ते दीक्षा लेवा तैयार थएलो पुरुष तेमनुं कथन स्वीकारतो नथी केमके ते जाणे छे के तेनाथी हवे आ दुःखभरपूर गृहवासमां रही शकाय एम नथी. आवुं ज्ञान हमेशां मुनिए दिलमां धारी राखवुं. [३४९]

---

१ वार्त्ता २ लोही अने वीर्यनो संयोग.

(द्वितीय उद्देशः)

आतुरं लोय-मायाए[1] चइत्ता पुव्वसंजोगं, हिच्चा[2] उवसमं, वसित्ता बंभचेरंसि, अ सु[3] अणुवसु[4] वा जाणीतु धम्मं अहातहा अथेगे त-मवाइ[5] कुसीला, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं विउसेज्जा[6], अणुपुव्वेण अणहियासमाणे परीसहे दुरहियासए। कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्तेण वा अपरिमाणाए[7] भेदो[8] । एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं[9] अवतिन्नावेए[10] । (३५०)

१ आदाय ज्ञात्वा. २ गत्वा. ३ वीतरागो मुनिर्वा. ४ सरागः श्रावकोवा. ५ त्यजेयुः ६ व्युत्सृज्य—त्यक्त्वा. ७ अपरिमितकालंयावत् ८ शरीरनाशः ९ असंपूर्णैः १० अवतीर्णा भ्रांताः ।

बीजो उद्देश.

(कर्मोने आत्माथी दूर करवा)

आ दुनिआने दुःखी जाणी, मावाप तथा स्त्रीपुत्रादिकोने छोडी करीने उपशम धारण करी ब्रह्मचर्यने पाळन करनारा केटलाएक मुनिओ धर्मने जाणतां छतां पण तथाविध कर्मना उदयथी मोहजाळमां फसाइ सदाचारने छोडी आपे छे; अने विकट परीषहोने अनुक्रमे सहन करतां थाकी जइने वस्त्र, पात्र, कंवल, तथा पादपुंच्छनने छोडी गृहस्थपणुं आदरे छे. परंतु ए रीते जे कामभोगमां मूर्च्छित थाय छे तेने घणा थोडा वखतमां आ क्षणभंगुर शरीरथी जूदा पड्या पछी अनंत काळ लगी आवी सामग्री मळवी मुस्केल छे. ए रीते तेओ बहु दुःखमय काम—भोगोमां अतृप्त थया थका भटकता रहेवाना. [३५०]

केटलाएक भव्य पुरुषो धर्म पामीने दीक्षा लइ शरुआतथी ज सावधान रही जंजाळमां नहि फसातां लीधेली प्रतिज्ञामां दृढ थइ वर्त्ते छे. [३५१]

अहेगे धम्ममादाय आदाणप्पभिति सुपणिहिए चरे अप्पलीयमाणे दढे। (३५१)

सव्वं गिद्धिं परिण्णाय। एस पणते महामुणी। (३५२)

अइअच्च सव्वतो संगं "ण महं अत्थित्ति इति एगो-ह-मंसि" जयमाणे एत्थ विरते, अणगारे, सव्वसो मुंडे, रीयंते, जे अचेले परिवुसिए संचिक्खति[1] ओमायरियाए[2]। (३५३)

से आकुट्ठे वा, हए वा, लुंचिए वा, पलियं पकंथे[3], अदुवा पकंथे, अतहेहिं सद्दफासेहिं, इति संखाए[4] एगतरे[5] अन्नयरे[6] अभिन्नाय[7]

१ संतिष्ठति २ अवमौदर्या ३ प्रकथ्य ४ स्वकृततकर्मफळमिति-संख्याय ५ अनुकूलान् ६ प्रतिकूलान् ७ ज्ञात्वा

जे पुरुष बधी आसक्तिओने दुःख करनारी जाणी तेथी दूर रहे छे तेज महामुनि संयमी जाणवो. [३५२]

माटे मुनिए सर्व प्रपंच छोडीने, "मारुं कोइ नथी, हुं एकलो ज छुं," एवी भावना धरी पापक्रियाथी निवृत्त थइ मुनिना आचारमां यत्न करतां थकां, सर्व प्रकारे मुंडित थइ अचेल[1] बनी संयममां उत्साहवान रही परिमित आहार लइ पेटने अपूर्ण राखता रहेवुं. [३५३]

ज्यारे कोइ पुरुष मुनिने तेना प्रथमना निंदित कामो बोलीने अथवा गमे तेम बेअदब बोलो बोली तथा खोटा आरोपो चडावी निंदवा मंडे, अथवा मुनिना अंग उपर हुमलो करे, मारे के वाळ खेंचे, त्यारे मुनिए पोताना कीधेला कर्मोनुं फळ आवेलुं जाणी तेवा कंटाळो आपनारा प्रतिकूळ परीषहोने तथा स्तुतिविगेरे म-

[1] जीनकल्पिक होय तो सर्वथा वस्त्र रहित बनी अने स्थविर कल्पिक होय तो अल्प वस्त्र धारण करी. २ भावलग्न.

तितिक्खमाणे परिव्वए जे य हिरी[1], जे य अहिरीमाणे[2]। चिच्चा सव्वं विसोत्तियं फासे समियदंसणे ।[3] (३५४)

एते भो णगिणा वुत्ता, जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो[4] । (३५५)

"आणाए मामगं धम्मं[5]।" एस उत्तरवादे[6] इह माणवाणं वियाहिते । (३५६)

एत्थोवरए[7] तं[8] झोसमाणे । आयाणिज्जं परिण्णाय, परियाएणं[9] विगिंचइ[10] (३५७)

इह सेगेसिं एगचरिया होति। तत्थियरा इयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए से मेहावी परिव्वए। सुब्भि अदुवा दुब्भि । अदुवा तत्थ भेरवा पाणा पाणे किलेसंति । ते फासे पुट्ठो धीरो अहियासेज्जासि त्ति बेमि।(३५८)

१ मनोहराः २ अमनोहराः ३ स्पृशेदितिशेषः ४ प्रतिज्ञानिर्वाहकाइत्यर्थः ५ तीर्थकृद्वाक्यमेतत् ६ प्रधानवाद ७ अत्रः उपरतः रक्तः ८ कर्म ९ श्रामण्येन १० क्षपयाति.

नने हरनार अनुकूळ परीषहोने पण सहन करता रहेवुं. किंवहुना, कशी पण फिकर नहि धरतां शुद्ध श्रद्धा धरीने सर्व परीसह तथा उपसर्ग सह्या करवा. [३५४]

हे मुनिओ, ए रीते जेओ परीसह सही निःपरिग्रही रहे छे अने गृहवासमां पाछा नथी फसाता, तेओ ज परमार्थे नग्न[1] कहेला छे. [३५५]

तीर्थंकर देवे कह्युं छे के "आज्ञाथी मारो धर्म पाळवो." आ तेमणे मनुष्यो माटे उत्कृष्ट भाषण कहेलुं छे. [३५६]

माटे मुनिए संयममां लीन रही कर्मोने खपावतां थकां धर्म कर्या करवो. जे माटे कर्मनुं स्वरुप जाण्यावाद संयमथी कर्म क्षय थाय छे. [३५७]

केटलाएक महर्षिओने एकला फरवानी प्रतिज्ञा होय छे त्यारे ते उत्तम महर्षिओए अंतःप्रांत[2] कुळोमांथी निर्दोष आहार लइ पवित्रपणे विचरता रहेवुं अने ते आहार सुगंधी होय अथवा दुर्गंधि होय छतां तेना पर कशी प्रीती के अप्रीति नहि लाववी. वळी ज्यारे एकला विचरतां भयंकर सिंह विगेरे श्वापदो हेरान करे त्यारे धैर्य धरीने रुडी रीते ते परीषह सहन करवा. [३५८]

१ भावनग्न. २ साधारण—ऊतरता.

[तृतीय उद्देशः]

एयं खु मुणी आयाणं[1] सया सुअक्खायधम्मे विधूतकप्पे णिज्झोसइत्ता। (३५९)

जे अचेले परिवुसिए तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइः—परिजिन्ने मे वत्थे, वत्थे जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीविस्सामी, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहरिस्सामि, पाउणिस्सामि। (३६०)

अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति तेउफासा फुसंति दंसमसगफासा फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहिया-

१ धर्मोपकरणातिरिक्तंवस्त्रादि

त्रीजो उद्देश.

[मुनिए अल्प उपकरण[1] राखवां अने शरीरने जेम बने तेम कसता रहेवुं.]

हमेशां पवित्रपणे धर्म साचवनार अने आचारने पाळनार मुनि धर्मोपकरण शिवाय सर्व वस्त्रादिक वस्तुओ त्याग करे छे. [३५९]

जे मुनि अल्पवस्त्र राखे छे अथवा तदन वस्त्ररहित[2] रहे छे, ते मुनिने आवी चिंता नथी रहेती, जेवी के मारां वस्त्र फाटी गयां छे, मारे बीजुं नवुं वस्त्र लाववुं छे, सूत[3] लाववुं छे, सोय लाववी छे, तथा वस्त्र सांधवुं छे, सीववुं छे, वधारवुं छे, तोडवुं छे, पहेरवुं छे, के विंटाळवुं छे. [३६०]

वस्त्ररहित रहेतां तेवा मुनियोने कदाच वारंवार शरीरमां तणखला के कांटा

१ वस्त्र वगेरे सामान. २ जिनकल्पिपणामां. ३ सीववानो दोरो.

सेंति अचेले लाघवं आगममाणे[1] । तवे[2] से अभिसमण्णागए भवति । (३६१)

जहेयं भगवता पवेदितं तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्त–मेव समभिजाणिया । एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं[3] वासाणि[4] रीयमाणाणं दवियाणं पास, अहियासियं । (३६२)

आगयपन्नाणाणं किसा[5] बाहा भवंति, पयणुए मंससोणिए । विस्सेणिं कट्टु परिण्णाए[6] एस तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए–त्ति बेमि । (३६३)

विरयं भिक्खुं रीयंतं चिररातोसियं अरती तत्थ किं विहारए[7] ?

१ बुध्यमानः २ तपः ३ प्रभूतानि ४ वर्षाणि ५ कृशाः ६ परिज्ञया ७ प्रतिस्खलेत्

भराया करे[1] अथवा टाढ वाय, अथवा ताप लागे, अथवा दंसा[2] के मच्छरो करडे, ए विगेरे अणगमता परीषहो आवी नडे, त्यारे ते मुनिओ वस्त्ररहितपणामां निश्चिंतपणुं मानी ते बधा परीषह सहेता रहे छे. एम कर्याथी तप करेलुं गणाय छे. [३६१]

माटे जे रीते भगवाने जणाव्युं छे तेने अनुसरीने सर्व रीते पवित्र भावथी वर्त्तवुं. अने पूर्वे भव्य महर्षिओए घणा वर्षो लगी संयममां रही जे जे कष्टो सहन कर्यां छे ते तरफ जोता रहेवुं. [३६२]

समजदार मुनिओनी भुजाओ कृश होय छे अने तेमना शरीरमां मांस तथा लोही बहु थोडुं होय छे. एवा मुनिओ समत्वभावनाथी रागद्वेष तथा कषायरूप संसारश्रेणीने तोडी पाडी क्षमादिक गुणो धारीने वर्त्तता होवाथी भवजळधिथी तरेला, भवबंधनथी छूटेला, अने पापप्रवृत्तिथी दूर थएला कह्या छे. [३६३]

लांबा वखतथी संयमने धरनारा, असंयमथी निवर्त्तेला, उत्तरोत्तर प्रशस्त भावमां वर्त्तनार मुनिने पण वखते संयममां थएली अरति संयमथी स्खलित करावेछे.[3] अथवा कदाच एवा गुण विशिष्ट[4] मुनिने अरति कशुं पण करी

१ तृणशय्यापर सूवातुं होवाथी. २ डांस. ३ जे माटे कर्मपरिणति विचित्र छे ४ गुणसंपन्न.

(३६४)

संधेमाणे समुट्ठिए। जहा से दीवे असंदीणे। (३६५)

एवं से धम्मे आरियपदेसिए। (३६६)

ते अणवकंखमाणा, पाणे अणतिवातेमाणा दइता मेहाविणो पंडिया। (३६७)

एवं तेसिं भगवओ[1] अणुट्ठाणे जहा से दियपोए[2]। एवं ते सिस्सा दियाय राओय अणुपुव्वेण वाइय-त्ति[3] बेमि। (३६८)

[चतुर्थ उद्देशः]

एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइया तेहिं महा-

---

१ वर्द्धमानस्वामिनः २ पक्षिपोतः ३ वाचिताः पाठिताइत्यर्थः

शकती नथी. [३६४]

केमके ते मुनि उत्तरोत्तर प्रशस्त परिणामपर चढ्यो जाय छे. अने एवा उत्तरोत्तर प्रशस्त भावमां चडनार मुनि रुखेखर पाणीथी कदापि नहि ढंकाइ जता द्वीप तुल्य छे. [३६५]

तेमज तीर्थंकरस्थापित धर्म पण तेवा ज द्वीपतुल्य छे. [३६६]

माटे ते मुनिओ संसारना भोगोनी इच्छा त्याग करी प्राणीओनी हिंसा नहि करता थका सर्व लोकने प्रिय थइ मर्यादामां रहेता थका पंडितपद पामे छे. [३६७]

अने जेओने तेवुं ज्ञान नहि होवाथी जेओ हजु भगवानना धर्ममां रुडी रीते उत्साहवान् नथी थया एवा शिष्योने ते पंडित मुनिओ जेम पक्षिओ पोताना बच्चाने उछेरे छे तेम घणी घणी रीते संभाळ राखी धर्ममां कुशळ करावता रहे छे. ए रीते ते शिष्योने रात दिवस अनुक्रमे भणाव्या करवाथी तेओ संसार तरी शकवा समर्थ थाय छे. [३६८]

चोथो उद्देश.

(मुनिए सुखलंपट न थवुं)

उपर बताव्या प्रमाणे महापराक्रमी अने विद्यावंत गुरुओए रातदिवस

वीरोहिं पण्णाणमंतेहिं तेसिंतिए पण्णाण-मुवलब्भ हेच्चा उवसमं फारुसियं समादियंति। (३६९)

वसित्ता बंभचेरंसि आणं तं णो-त्ति मण्णमाणा। [३७०]

अग्घायं[1] तु सोच्चा णिसम्म, "समणुन्ना जीविस्सामो," एगे णिक्खम्म ते असंभवंता विडज्झमाणा कामेहिं गिद्धा अज्झोववण्णा समाहि-माघाय[2]-मझोसयंता सत्थार-मेव फरूसं वदंति। [३७१]

सीलमंता उवसंता संखाए[3] रीयमाणा "असीला" अणुवयमाणस्स बितिया मंदस्स बालया। (३७२)

णियट्टमाणा वेगे आयारगोयर-माइक्खंति। [३७३]

---

१ आख्यातं २ आख्यातं ३ प्रज्ञया

पोताना शिष्योने भणाव्याथी ते शिष्योमांना केटलाएक शिष्यो तेवा गुरुओ पासेथी विद्या मेळवीने उपशमने छोडी दइ गर्वित थइने उद्धत बनी जाय छे. [३६९]

वळी केटलाएक शिष्यो संयममां जोडायाबाद तीर्थंकरनी आज्ञानो अनादर करीने सुखलंपट थइ शरीरनी शोभा करवा मंडी पडे छे. [३७०]

केटलाएक "आपणे सर्वने माननीय थइशुं." एम विचारीने दीक्षा ले छे, अने तेथी मोक्षमार्गमां नहि चालतां कामेच्छाथी बळता थका सुखमां मूर्च्छित थइ करी विषयोमां ध्यान धरीने तीर्थंकरभाषित समाधिने नथी सेवता. अने जो तेमने कोइ शीखामण आपे छे तो ते सांभळीने ते शीखामण देनारने ज निंदवा मंडे छे. [ए सर्वे एमनी मूर्खाइ जाणवी.] [३७१]

वळी केटलाएक तो पोते भ्रष्ट छतां बीजा सुशील क्षमावंत अने विवेकथी वर्त्तता मुनिओने पण भ्रष्ट कहेता रहे छे, तेवा पासत्थादिक मंदजनोनी तो खरेखर बेवडी मूर्खाइ जाणवी. [३७२]

केटलाएक पोते संयम नथी पाळी शकता, पण आचार शुद्ध कही बतावे छे तेओनी बेवडी मूर्खाइ नथी थती.) [३७३]

[illegible] इंदसम्बूलितो [illegible] सुणे जीविंतं विणस्सिन्तंति ।
(१०४)

फुट्टं [illegible] णिवडंति जीविअस्सेव [illegible] । णिवडंति तेहिं तुलिज्जसंतं भवति। (१०५)

[illegible] हु ते मया। पुणे पुणे बाते पक्कंति. अहं संनंता [illegible] "अहलंति" [illegible], [illegible] फलं वद्धंति । पलितं पत्ते, अजुवा पत्ते [illegible]। तं नेहावी [illegible] धम्मं।
(१०६)

अहन्नहुं धुंनंति [illegible] बल्ले, [illegible] [illegible] "[illegible]"

१ [illegible] २ विधातो [illegible] ३ [illegible]

४ [illegible]

[illegible] [१०४]

[illegible] [१०५]

[illegible] [१०६]

[illegible]

घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे "घोरे धम्मे उदीरिए" उवेहइ[1] णं अणाणाए एस विसण्णे वितद्दे[2] वियाहिते-त्ति बेमि। (३७७)

किमणेणं भो, जणेण करिस्सामि-त्ति मण्णमाणा एवं एगे विदित्ता, मातरं पितरं हिच्चा णातओ य परिग्गहं, वीरायमाणे समुट्ठाए अविहिंसा सुव्वया दंता, पस्स, दीणे, उप्पइए पडिवयमाणे। (३७८)

वसट्टा कायरा य जणा लूसगा भवंति। (३७९)

अह-मेगेसिं सिलोए पावए भवति;—से समणविब्भंते समणविब्भंते[3] [३८०]

पासहेगे समन्नागएहिं[4] असमन्नागए. णममाणेहिं अणममाणे विरतेहिं अविरते दविएहिं अदविए। (३८१)

---

१ उपेक्षते २ विहिंसकः ३ वीप्सायां द्विरुक्ति ४ उद्युक्तविहारिभिः

साधारण–ऊतरता.

धारी तुं तेमनी आज्ञाथी बाहेर थइ ते धर्मनी उपेक्षा करतो रहे छे ते खरेखर तुं कामभोगमां मूर्च्छित अने हिंसामां तत्पर थएलो देखाय छे, एम हुं कहुं छुं. (३७७)

शरुआतमां केटलाएक पुरुषो दीक्षा लेती वखते मातापिता तथा स्त्रीपुत्रादिकने अनर्थमूळ जाणीने मावाप, ज्ञाति, तथा धनदोलत छोडी करी पराक्रम दाखवता थका दीक्षा लइ अहिंसक, पवित्र नियमने धरनारा, अने जीतेंद्रिय थइने संयमपर चडया थका पाछा तेपरथी भ्रष्ट थइ दीन बने छे. [३७८]

कारण के जेओ विषय अने कषायने तावे थइ दुर्ध्यानी थाय छे तथा जेओ सत्वहीन होय छे तेओ संयमथी भ्रष्ट ज थाय छे. [३७९]

अने संयमथी भ्रष्ट थतां तेमनी दुनिआमां घणी अपकीर्त्ति फेलाय छे, जेवीके, अरे आ जुओ साधु थइने पाछो संसारना भूलवामां पडयो छे. [३८०]

केटलाएक कमनशीब पुरुषो उग्रविहारिओ साथे रह्या थका आलसु थइ रहे छे, विनयवंत पुरुषो साथे अविनीत रहेछे. विरतिवंत पुरुषो साथे रही अविरत रहे छे अने पवित्र पुरुषो साथे रही अपवित्र रहे छे. [३८१]

अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासित्ति बेमि। (३८२)

[पंचम उद्देशः]

से गिहेसु वा गिहंतरेसुवा गामेसु वा गामंतरेसु वा नगरेसुवा नगरंतरेसुवा जणवएसु वा,जणवयंतरेसुवा, संतेगातिया जणा लूसगा[1] भवंति, अदुवा फासा फुसंति, ते फासे पुट्ठो धीरो अहियासए ओए[2] समियदंसणे[3]। [३८३]

१ उपसर्गकारकाइत्यर्थः २ ओजः एकः ३ प्रासदर्शनः

एम धारीने मर्यादाशीळ पंडित पुरुषे विषयवांच्छा त्याग करी हिम्मतवान रही तीर्थकरना उपदेशने अनुसरीने हमेशां प्रवर्त्तवुं. [३८२]

पांचमो उद्देश.

(मुनिए संकटोथी नहि डरवुं तथा कोइ प्रशंसा के सत्कार करे तेथी खुशी न थवुं.)

मुनिने आहारादिक लेवा जतां घरोमां[1], घरोनी आसपासमां, गामोमां, गामोनी आसपासमां, नगरोमां, नगरोनी आसपासमां, अने विहार करतां देशोमां तथा देशोनी आसपासमां, केटलाएक लोको उपसर्ग करे, अथवा बीजा कइ पण संकटो के दुःखो आवी पडे तो ते धीरपणे अडग रही सम्यकत्ववंत मुनिए सर्व सहन करवां. [३८३]

१ ऊंच नीच तथा मध्यम घरोमां.

दयं[1], लोगस्स, जाणित्ता पादीणं पडीणं दाहीणं उदीणं, आइक्खे, विभये, किट्टे, वेदवी। (३८४)

से उट्ठिएसु[2] वा अणुट्ठिएसु[3] वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए, संतिं, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं सोयं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं, अणइवत्तिय[4]। (३८५)

सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं[5] अणुवीइ भिक्खू धम्म—माइक्खेज्जा। [३८६]

अणुवीइ भिक्खू धम्म—माइक्खमाणे णो अत्ताणं आसाइज्जा, णो परं आसाइज्जा, णो अन्नाइं पाणाइं, भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसादेज्जा। [३८७]

---

१ दया २ साधुषु ३ श्रावकेषु ४ अनतिपत्य—अनातिक्राम्य ५ अत्र प्राणादय एकार्थवाचकाः

आगमना जाण मुनिए पूर्व, पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर ए सर्व स्थळोमां लोकना ऊपरे दया करतां थकां तेमने धर्म कहेवो, धर्मना विभाग बतावबा, तथा तेनां फळ जणाववां. (३८४)

तेणे सांभणवा इच्छनार दीक्षीत पुरुषोने तथा श्रावको विगेरेने अहिंसा, त्याग, क्षमा, उत्तम फळ, पवित्रता, सरळता, कोमळता, तथा निष्परिग्रहता ए सर्व बाबतो यथार्थपणे दर्शाववी. [३८५]

ए रीते विचारपूर्वक सर्व जीवोने मुनिए धर्म कहेवो. [३८६]

पूर्वापर विचारपूर्वक धर्म कहेतां थकां मुनिए पोताने तथा बीजा सर्व जीवोने कशा नुकशानमां ऊतारवा नहि. [३८७]

से अणासादए अणासादमाणे वज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं जहा से दीवे असंदीणे एवं से भवति सरणं महामुणी (३८८)

एवं से उट्ठिए ठियप्पा अणिहे अचले चले अबहिलेस्से परिव्वए। (३८९)

संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिणिव्वुडे । [३९०]

तम्हा संगं-ति पासह । गंथेहिं गढिया णरा विसण्णा कामक्कंता । तम्हा लूहओ [1] णो परिवित्तसेज्जा। (३९१)

जस्सिमे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, जेसि मे [2] लूसिणो णो परिवित्तसंति, से वंता [3] कोहं च माणं च मायं च लोभं च [4] । एस तुट्टे [5] वियाहिते—त्तिबेमि । (३९२)

---

१ रूक्षतः (संयमात्) २ येषु आरंभेषु) इमे लूषकाः (हिंसकाः) ३ वांत्वा ४ मोहनीयं त्रोटयतीति शेषः ५ त्रुटः अपगतः कर्मसंततेरितिशेषः

अने तेम कर्याथी ते महामुनि, नाश पामता जीवोने उत्तम बेटना मुजब शरण आपनार थाय छे. [३८८]

ए माटे दीक्षित पुरुषे आत्मा स्थिर राखी निरीह रही परीषहोथी नहि डरतां तथा स्थिरवास नहि करतां संयममां लक्ष राखी वर्त्या करवुं. [३८९]

जे माटे पवित्र धर्मने जाणी करीने ज सत्क्रिया करनारा पुरुषो मुक्त थया छे. [पण पवित्र धर्मने न जाणनारा पुरुषो मुक्त थता नथी.] [३९०]

माटे (हे मुनीओ) तमे प्रपंचमां मुंझासो नहि. धनदोलतमां मुंझाएला लोको अनेक कामनाओथी पीडाता रहे छे. माटे मुनिए संयमथी नहि डगवुं. [३९१]

जे पापप्रवृत्तिओ करतां हिंसक लोको नथी डरता तेवी सर्व पापप्रवृत्तिओथी जे पुरुष सर्व प्रकारे यथार्थ ज्ञान पूर्वक दूर रहेछे, ते पुरुष क्रोध मान माया तथा लोभने वमी करीने (मोहनीय कर्म तोडे छे) अने एवो पुरुष [कर्मनी जाळो थी) छूटो थएलो छे एम हुं कहुं छुं. (३९२)

कायस्स वियाघाए संगामसीसे वियाहिए । सेहु पारंगमे मुणी । अविहम्ममाणे फलगावयट्ठि कालोवणीते कंखेज्ज कालं जाव सरीरभेओ-त्ति बेमि । (३९३)

"शरीरनो नाश करवो" ए खरेखर, संग्रामनुं टोच छे. (ए वखते जे नहि मुंझाय) ते मुनि नकी संसारनो पार पामे छे. माटे मुनिए अंतकाळे परीषहोथी नहि डरतां लाकडाना पाटीआनी माफक अचळ रहीने मृत्युकाळ आवतां अणसण आदरी ज्यां लगी आ शरीरथी जीव जूदो पडे, त्यां लगी मरणकाळने इच्छतां रहेवुं. (३७३)

महापरिज्ञाख्यं सप्तम मध्ययनम्.

— o —

(इदं सप्तोदेश मध्ययनं व्यवच्छिनम्)

अध्ययन सातमुं

महापरिज्ञा.

(सात उद्देशनुं आ अध्ययन विच्छिन्न थयुं छे. केमके एवुं कहेवाय छे के श्रीमान् देवार्द्धिगणिए ज्यारे आ सूत्र पुस्तकपर लख्युं त्यारे ते अध्ययनमां केटलीक चमत्कारिक विद्याओ जेना तेना हाथे जाय तो लाभना बदले गेरलाभ थवानो वधु संभव रहे एम धारी ते लखवुं बंध राख्युं. गमे तेम होय पण आपणा कमनशीबे आवुं उत्तम अध्ययन विच्छिन्न थयुं छे, तेथी आपणने अतिशय अफशोष जाहेर कर्या शिवाय बीजो उपाय रह्यो नथी.]

भाषांतर कर्ता.

विमोक्षाख्य–मष्टम मध्ययनम्.

(प्रथम उद्देशः)

से बेमि समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा णो निमंतेज्जा णो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणेत्ति बेमि । (३९४)

"धुयं चेतं जाणेज्जा असणं वा जाव पायपुंछणं वा लभिया, णो लभिया, भुंजिया, णो भुंजीया, पंथं वियत्तुणवि उकम्म." विभत्तं धम्मं झोसेमाणे समेमाणे वलेमाणे पाएज्जावा णिमंतेज्जावा कुज्जा वेया-

अध्ययन आठमुं.

विमोक्ष.

पहेलो उद्देश.

(कुशीळ परित्याग.)

हुं कहुं छुं के मुनिए रुडा वेषवाळा[१] अथवा नरसा वेषवाळा[२] असंयतिने अतिशय आदरवंत थइने * अशन, पान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कंबळ, अने पादपुंच्छन[३] आपवां नहि, आपवा माटे निमंत्रण करवुं नहि, अने तेमनुं वैयावृत्त्य[४] करवुं नहि. [३९४]

ते असंयतिओ कहे के "हे मुनिओ तमे नक्की करी मानो के तमने अशनादि मळ्युं होय अथवा न मळ्युं होय, तमे ते खाधुं होय अथवा न खाधुं होय, तो पण तमारे अमारे त्यां आववुं. कदि आडो मार्ग होय अथवा वच्चमां कंइ

---

१ स्वमती–पासत्था प्रमुख. २ परमती–शाक्यादि. ३ रजोहरण. ४ चाकरी.
* अन्न, पाणी, मेवो, मीठाइ–आ अर्थ दरेक ठेकाणे समजी लेवो.

वडियं परं अणाढायमाणे-त्ति बेमि । (३९५)

इह मेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति । ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणे, "हणपाणे" घायमाणे, हणतो यावि समणुजाणमाणे, अदुवा अदिन्न—माइयंति, अदुवा वायाओ विप्पउंजंति; तंजहा, अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, सादिए लोए, अणादिए लोए, सपज्जवसिते लोए अपज्जवसिते लोए सुकडे-त्ति वा दुक्कडे-त्ति वा, कल्लाणे-त्ति वा, पावे—त्ति वा, साधू-त्ति वा असाधू-त्ति वा, सिद्धी-त्ति वा, असिद्धी-त्ति वा, णिरए-त्ति वा, अनिरए-त्ति वा (३९६)

मुनां घ होय, तोपण ते ओळगीने पधारवुं " ए रीते बोलीने जूदा धर्मने पाळनार तेओ आवता थका के जता थका कंइ आपे के आपवा माटे निमंत्रण करे अथवा कंइ वैयावृत्य करे तो ते कबुल करवुं नहि. किंतु जेम बने तेम अलगा रहेवुं. [३९५]

केटलाएकोने[१] आचार संबंधी बाबतनी माहिती होती नथी तेथी तेओ आरंभना अर्थी थइने परधर्मिओना वचनोनी नकल करीने " जीवोने मारो" एवुं कही बीजा पासे जीवोने मरावे छे, अने जीवना मारनारने रुडुं जाणे छे, अथवा अणदीधेलुं लेता रहे छे, अथवा अनेक प्रकारना नीचे मुजब वाक्यो बोले छेः—एक कहे छे "लोक छे" बीजा[२] कहे छे "लोक नथी." एक कहे छे "लोक निश्चल छे" बीजा[३] कहे छे "चळ [फरतो] छे." एक कहे छे "लोक आदिसहित छे," बीजा कहे छे "अनादि छे. एक कहे छे "लोकनुं अंत छे," बीजा कहे छे "नथी." एक कहे छे "ए ठीक कर्युं," बीजा कहे छे "ए खोटुं कर्यु." एक कहे छे "ए कल्याण छे," बीजा कहे छे "ए पाप छे." एक कहे छे आ साधु छे," बीजा" कहे छे "ए असाधु छे." एक कहे छे "सिद्धि छे," बीजा कहे छे "सिद्धि नथी." एक कहे छे "नरक छे," बीजा कहे छे "नरक नथी." [३९६]

१ पासत्था वगेरेने. २ नास्तिक. ३ भूगोळवादी.

जमिणं विप्पाडिवन्नां "मामगं धम्मं" पन्नवेमाणा, एत्थवि जाणह—अकम्हा। एवं तेसिं णो सुअक्खाए सुपन्नते धम्मे भवंति, से जहेतं भगवया पवेदितं आसुपण्णेण जाणया पासया। अदुवा गुत्ती वङगोयरस्स—त्ति बेमि। [३९७]

सव्वत्थ संमयं पावं। तमेव उवतिकम्म[1]। एस महं विवेगे वियाहिते। [३९८]

गामे अदुवा रण्णे, णेण गामे णेव रण्णे, धम्म—मायाणह पवेदितं माहणेण मईमया (६९९)

जामा[2] त्तिण्णि उदाहया, जेसु इसे आरिया संबुज्झमाणा समुट्ठिया। (४००)

---

१ व्यवस्थितोहामितिशेषः २ व्रतविशेषाः

ए रीते जे पोतपोताना धर्म वतावता रहे छे तेमने माटे उत्तर आपवाने एटलुं जाणवुं बस छे के "तमारुं बोलवुं अकस्मात् [हेतुविनानुं] छे." ए रीते ते एकांत वादिओनो धर्म शिघ्र बुद्धिशाळी[1] सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान वीर प्रभुनो कहेला धर्मना मुजब खरेखर रीते कहेलो के जणावेलो सिद्ध थतो नथी. (माटे समर्थ मुनिए परवादीओने वादमां जीतीने यथार्थ उत्तरो देवा) असमर्थ मुनिए मौन रहेवुं. [३९७]

(परवादिओने शरुआतमां मुनिए कहेवुं के) बधाओमां पाप रहेलुं छे,[2] हुं तेने छोडी वर्त्तुं छुं, ए मारो विवेक[3] जाणवो. [३९८]

बुद्धिशाळी[4] महान[5] वीर प्रभुए कह्युं छे के (विवेक होय तो) गाममां रहेतां पण धर्म छे अने अटवीमां रहेतां पण धर्म छे. [विवेक न होय तो] गाममां रहेतां पण धर्म नथी अने अटवीमां रहेतां पण धर्म नथी. [३९९]

[वळी ते भगवाने] त्रण याम [महाव्रत] बताव्या छे; जेओमां आ आर्यो प्रतिबोध पामीने तैयार थया छे. [४००]

---

१ सदा उपयोगवंत. २ कारणके बधाओ पाप करे छे. ३ मुकावलो-तफावत Distinction ४ केवल ज्ञानवान् ५ कोइने हणोमां" एवुं बोलनार.

जे णिव्वुता, पावेहिं कम्मेहिं अणियाणा ते वियाहिया। (४०१)

उड्ढं अधं तिरियं दिसासु सव्वंतो सव्वावंति च णं पाडियक्कं[1] जीवेहिं कम्मसमारंभे णं। (४०२)

तं परिन्नाय मेहावि णेव सयं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभेज्जा, णेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभावेज्जा, नेवन्ने काएहिं एएहिं दंडं समारंभंतेवि समणुजाणेज्जा। (४०३)

जेयन्ने एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंति तेसिंपि वयं लज्जामो। (४०४)

तं परिण्णाय मेहावी तं वा दंडं अण्णं वा दंडं णो दंडंमी दंडं समारंभज्जासि त्तिबेमि। ४०५

---

१ प्रत्येकं

जेओ निर्वृत [क्रोधादिक मटवाथी शांत] थया छे ते पापना कामथी अलगा रहेनार कह्याछे. [४०१]

उंचेनीचे, त्रिछुं, अने सघळी दिशाओ तथा विदिशाओमां, सर्व प्रकारे जीवोमां दरेक जीवदीठ कर्म समारंभ रहेलो छे, [४०२]

तेने रुडी रीते समजी करीने, मर्यादावंत मुनिए पोते ए पृथ्वीकायादिक जीवोनो आरंभ न करवो, बीजावती न कराववो, अने जेओ करता होय तेमने रुडा पण न गणवा. [४०३]

[मुनिए विचारवुं के] जेओ ए जीवोनो आरंभ करे छे तेनाथी पण अमे शरमाइए छीए. [४०४]

एम रुडी रीते जाणीने मर्यादावंत अने आरंभथी बीहीता मुनिए ते आरंभ अथवा बीजा आरंभ नहि करवा. [४०५]

[द्वितीय उद्देश.]

से भिक्खु परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयदेज्ज[२] वा सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, रूक्खमलं सि वा, कूंभारायय‌ाणंसि वा, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमितु गाहावती बूया, "आउसंतो समणा! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइ भुताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स, कीयं पामिच्चं[१] अच्छेज्जं[२] अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु वेतेमि,[३] आवसहं वा समुस्सिणामि, से भुंजह वसह।" (४०६)

आउसंतो समणा? भिक्खु तं गाहावतिं समणसं सवयसं संप-

१ त्वग्वर्त्तनांविदध्यात्. २ अपरस्मा दुद्धार्य गृहीतं. ३ आच्छेद्यं—आच्छिद्य गृहीतं. ४ वितरामि. ५ संप्रत्याचक्षीत.

बीजो उद्देश.

[अकल्पनीय परित्याग]

मुनि, श्मशानमां[१] अथवा सूनां घरमां अथवा पर्वतनी गुफामां अथवा झाडना मूळमां अथवा कुंभारना घरमां फरतो होय उभो होय अथवा सूतो होय अथवा बाहर क्यां पण विचरतो होय, तेने जोइ कोइ गृहस्थ, पासे आवी कहे के "हे आयुष्यमान् मुनि, हुं तमारा सारुं असन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र-कंबल तथा पादपुंच्छन, प्राणिओना आरंभथी बनावीने अथवा वेचातां लइने अथवा उधारे आणीने अथवा कोइ पासेथी झुंटावी लइने अथवा बीजाना होवा छतां तेमनी रजा लीधा शिवाय अथवा मारा घेरथी लावीने तमोने आपुंछुं अथवा तमारा सारुं मकान चणावुंछुं के समारुंछुं. माटे तमो खाओ अने रहो." [४०६]

हे आयुष्यमान् साधुओ ? ते मुनिए ते पोताना जाणीता अथवा मित्र गृ-

१ स्मशानमां स्थविर कल्पीने रहेवुं न घटे माटे तेवा पद जिनकल्पी माटे ना जाणवा एम टीकाकार जणावे छे.

डियाइक्खे[1] "आउसंभो गाहावइ? णो खलु ते वयणं आढस्सामि, णो खलु ते वयणं परिजाणेमि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा [४] वत्थंवा [४] पाणाइं वा [४] समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु वेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि। से विरतो आउसो गाहावती! एयस्स अकरणयाए। [४०७]

से भिक्खू परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमि-तु गाहावती आयगयाए पेहाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाणाइं (४) समारंभ जाव आहट्टु वेएति आवसहं वा समुस्सिणाति तं भिक्खू परिघासिउं, तं च भिक्खू जाणेज्जा सह संमइयाए परवागरणेणं अण्णेसिं वा सोच्चा "अयं खलु गाहावती ममट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाणाइं (४) समारंभ जाव वेएति आवसहं वा समुस्सिणाति" तं च भिक्खू संपडिलेहाए आगमेत्ता[2] आणवेज्जा अणासेवणाए-त्ति बेमि। (४०८)

१ संप्रत्याचक्षीत २ ज्ञात्वा.

हस्थने आ रीते कहेवुं." हे आयुष्यमान् गृहस्थ, हुं तारुं ए बोलवुं कबुल करतो नथी अने पाळतो नथी. माटे शा सारुं तुं मारा माटे आरंभादिक करीने वस्त्रादिकनी खटपट करे छे अथवा मकान चणावे छे? हे आयुष्यमान् गृहस्थ, हुं ए बाबतो न करवाना लीधे तो त्यागी थयो छुं. [४०७]

मुनि स्मशानादिकमां फरतो होय के बाहेर क्यां पण विचरतो होय तेने जोइने ते मुनिने जमाडवा कोइ गृहस्थ पोताना मनमां धारणा राखी ते मुनिना सारु आरंभादिक करीने आहारादिक आपे अथवा मकान चणे, एवामां ते मुनिने पोताना बुद्धिबळे अथवा तीर्थंकर देवे बतावेला मार्गथी खबर पडे अथवा ते गृहस्थना सगा वहालाना पासेथी सांभळ्याथी खबर पडे के "आ गृहस्थ मारा माटे आहारादिक नीपजावी मने आपवा चाहे छे अथवा मकान चणे छे" आम थतां ते मुनिए पूरती तपास करीने ते बाबत जाणीने ते गृहस्थने मनाइ पाडवी के हुं आहार के मकान वापरवानो नथी. [४०८]

भिक्खुं च खलु पुट्ठा[1] वा अपुट्ठा[2] वा जे इमे[3] आहच्च गंथा[4] फुसंति[5] से हंता "हणइ खणह[6] छिंदह दहह पयह आलुंपह विलुंपह सहसाकरेह विप्परामुसह"। ते फासे पुट्ठो धीरो अहियासए अदुवा आयारगोयर-माइक्खे तक्कियाण-मणेलिसं[7], अदुवा वइगुत्तीओ गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए, आयगुत्ते। बुद्धेहिं एयं पवेदितं। (४०९)

से समणुन्ने असमणुन्नस्स[8] असणं वा [४] वत्थं वा [४] नो पाएज्जा नो निमंतेज्जा नो कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणेत्ति बेमि। (४१०)

---

१ पृष्ट्वा वा २ अपृष्ट्वा वा ३ गाथापतयः ४ आहृत्य ढौकयित्वा ग्रंथात् महतो द्रव्यव्ययात् ५ उपतापयंति ६ क्षणुत ७ अनीदृशं तर्कयित्वा ८ पार्श्वस्थादेः

कोइ गृहस्थो मुनिने पूछी अथवा नहि पूछीने मोटुं खरच करी आहारादिक बनावी मुनि आगळ धरे ते मुनि अशुद्ध जाणी न ल्ये एटले तेओ तपे अने कदाच[1] मारे अथवा बोले के "आ साधुने मारो, कूटो, कापो, बाळो, पचावो, लूंटो, झूंटो, पूरुं करी द्यो, वधी रीते सतावो." आवा संकटमां आवी पडतां धीर मुनिए वधुं सहन करवुं; अथवा पुरुष विशेष विचारी[2] सरस रीते साधुनो आचार कही बताववा; अथवा मौन धरी आत्मगुप्त [सदा उपयोगी] थइने गोचरीनी अनुक्रमे रुडी रीते शुद्धि करता रहेवुं. एम ज्ञानिओए कहेलुं छे. [४०९]

संविग्न मुनिए आदरवान थइने असंविग्न पुरुषने आहार तथा वस्त्रादिक आपवां नहि, ते संबंधे मागणी पण न करवी अने तेनुं वेयावृत्य पण न करवुं, एम हुं कहुं छुं. [४१०]

---

१ वखते राजादिक होवाथी २ सामा पुरुषना स्वभाव विगेरे योग्यतानो विचार करी.

धम्म-मायाणह पवेइयं माहणेण मतिमया;-समणुन्ने समणुन्नस्स असणं वा (४) वत्थं वा (४) पाएज्जा णिमंतेज्जा कुज्जा वेयावडियं परं आढायमाणोत्ति बेमि। (४११)

[तृतीय उदेशः]

मज्झिमेणं वयसा एगेसंबुज्झमाणा समुट्ठिता। (४१२)

सोच्चा मेधावी वयणं पडियाणं निसामित्ता[1]। (४१३)

समयाए धम्मे आरिएहिं पवादिते। (४१४)

ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो परिग्गहावंति[2] सव्वावंति च णं लोगंसि। णिहाय दंडं पाणेहिं पावं कम्मं

---

१ समता मालंबेत इतिशेषः २ न परिग्रहवंतः

बुद्धिमान् महान महावीर प्रभुए कहेलो धर्म समजो. सविग्न मुनिए संविग्न मुनिने आहारवस्त्रादिक आदरपूर्वक आपवां ते संबंधे निमंत्रण पण करवुं, अने तेमनी चाकरी पण करवी, एम हुं कहुंछुं. [४११]

त्रीजो उदेश.

[खोटी शंकानुं निवारण]

मध्यम वयमां केटलाएक जीव प्रतिबोध पामी दीक्षा ले छे. [४१२]

चतुर पुरुषे पंडितोना वचन सांभळी तथा अवधारीने [समता राखवी] [४१३]

आर्य तीर्थंकरदेवोए समताए धर्म भाख्यो छे. [४१४]

दीक्षित मुनिओ कामभोगनी अभिलाषा छोडीने कोइ जीवनी पण हिंसा नहि करता थका तथा कशो पण परिग्रह नहि धारता थका आखा जगत्मां निःप

अकुव्वेमाणे एस महं अगंथे वियाहिए, ओए जुतिमस्स खेयन्ने[3] उववायं चवणं च णच्चा । [४१५]

आहारोवचया देहा, परीसहपभंगुरा । पासहेगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं (४१६)

ओए दयं दयति [४१७]

जे संनिहाणसत्थस्स[4] खेयन्ने से भिक्खू कालण्णे बालण्णे, मायाण्णे, खणयण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाइ अपडिन्ने दुहओ छेत्ता णियाति । [४१८]

तं भिक्खु सीयफासपरिवेयमाणगायं उवसंकमित्तु गाहावई

---

३ जुतिमतः संयमस्य खेदज्ञोनिपुण इत्यर्थः ४ संयमस्य

रिग्रही थाय छे. प्राणिओनी हिंसा छोडीने पापना काम नहि करता थका तेओ महोटा निर्ग्रंथ कहेला छे. एवा मुनिओ रागद्वेष छोडीने ओज एटले एकरुप बन्या थका संयमना जाणनार थइ, देवताओने पण जन्ममरण थतां जाणी पापनो परिहार करेछे. [४१५]

शरीर आहारथी वधे छे ने टके छे, छतां परीषहो [संकटो] आवतां तेनुं बळ घटे छे. जुओ घणाएक कातर जनो [व्यसनी मनुष्यो–Men whose organs are failing] परिषहोथी सघळी इंद्रियो नरम पडतां असमर्थ बनता रहे छे. [४१६]

पराक्रमी पुरुषो परीषहो पडतां पण दया छोडता नथी. [४१७]

जे मुनि संयममां कुशल होय तेज मुनि, काळ[1] बळ मात्रा क्षण विनय तथा समयना जाण जाणवा. तेवा मुनि परिग्रहनी ममता छोडीने टाइमसर क्रियाओ करता थका अप्रतिज्ञ एटले निदानरहित थइने. रागद्वेष बन्ने बाजु कापता थका रुडी रीते संयम मार्गमां चाल्या जाय छे. [४१८]

तेवा मुनिनुं शरीर वखते टाढथी ध्रुजतुं होय तेवामां कोइ गृहस्थ कहे

---

१ काळादि पदोनो अर्थ लोकविजयना पांचमां उद्देशमां फुटनोटमां आप्यो छे.

बूया :—"आउसंतो समणा, णो खलु ते गामधम्मा[1] उव्बाहंति ?"
"आउसंतो गाहावइ, णो खलु मम गामधम्मा उव्बाहंति, सीयफासं णो खलु अहं संचाएमि अहियासित्तए । णो खलु मे कप्पति अगणिकायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, अण्णेसिं वा वयणाए । (४१९)

सिया से एवं वदंतस्स परो अगणिकायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्जा वा पयावेज्जा वा । तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाएत्ति बेमि । (४२०)

[चतुर्थ उद्देशः]

जे भिक्खू तिवत्थेहिं परिवुसिते पायचउत्थेहिं[2] तस्सणं णो एवं

१ विषयाः २ पात्रचतुर्थैः

के "हे आयुष्मान् श्रमण तमने काम तो पीडतो नथीने ?" त्यारे मुनिए तेने कहेवुं के "हे आयुष्यमान् गृहस्थ, मने कंइ काम पीडतो नथी, किंतु ताढ वायछे ते हुं सही शकतो नथी, तेथी शरीर कंपे छे ; मारे कंइ अग्नि सलगाववो के बाळवो कल्पतो नथी. तेमज तेना पासे शरीरने तगावबुं करवुं अथवा बीजाने तेम करवा कहेवुं पण कल्पतुं नथी." [४१९]

कदाच मुनिए एम कह्याथी गृहस्थ पोते अग्नि सळगावी मुनिनुं शरीर तपावे तो मुनिए ते संबंधी हकीकत जाणीने तेने मनाइ पाडवी के मारे ए अग्नि सेववो युक्त नथी. [४२०]

चोथो उद्देश.

[मुनिए कारणयोगे वेहानसादि बाल मरण पण करवां.]

जे साधुने[1] पात्र अने त्रण वस्त्र होय तेने एवो विचार न थाय के मारे

१ जिनकल्पीने.

भवति "चउत्थं वत्थं जाइस्सामि"। से[1] अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा, अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, नो धोविज्जा, नो रएज्जा, नो धोत-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे[2] गामंतरेसु, ओमचेलए। एयंखु वत्थधारिस्स सामग्गियं। (४२१)

अह पुण एवं जाणेज्जा;–उवतिक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने अधापरिजुन्नाइं[4] वत्थाइं परिट्ठविज्जा; अदुवा संतरुत्तरे, अदुवा ओमचेले, अदुवा एगसाडे, अदुवा अचेले, लाघवीयं आगममाणे । तवे से अभिसमन्नागए भवति। जमेयं भगवया पवेदितं तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्त-मेव समभिजाणिया । (४२२)

१ यदिपुनः कल्पत्रयं न स्यात् तदा २ अगोपयन् ३ अपरहेमंतस्थीतिसाहिष्णूनितुतानि प्रत्युपेक्षयन् बिभर्ति. ४ क्वचित् प्रावृणोति क्वचित् पार्श्ववर्त्ति बिभर्त्ति.

चोथुं वस्त्र जोइशे. जो त्रण वस्त्र न होय तो सूझतां[1] वस्त्र याचवां अने जेवां जडे तेवां पहेरवां, वस्त्र धोवां के रंगवां नहि[2], धोएलां के रंगेलां पहेरवां नहि, गामांतरे जतां वस्त्र संताडवा नहि[3] अने ए रीते हल्कां वस्त्र राखवां. ए वस्त्रधारी मुनिनो आचार छे. [४२१]

हवे ज्यारे मुनि एम जाणे के शीयालो गयो हवे ऊनाळो बेठो त्यारे जूना-जूनां वस्त्र परठवी नाखवां[4] अथवा (वखते उनाळामां पण क्षेत्रादियोगे टाढनो संभव होय तो] कोइ वखते पासे राखवां अथवा त्रणमांथी एक परठवी दइ बे पहेरवां अथवा बे परठवी एक पहेरवुं अथवा टाढ टळता बधां छांडवां. कारण के ए रीते उपकरणनुं लाघव [ओछापणुं] प्राप्त थाय छे. आम करतां तप करेलुं गणाय छे. जे ए वधुं भगवाने भाष्युं तेनेज जाणीने वस्त्रसहितपणामां तथा वस्त्र-रहितपणामां जेम बने तेम सरखापणुंज जाणता रहेवुं. [४२२]

१ साधुने लेवा घटे एवा. २ स्थविरकल्पी वर्षादि कारणे वस्त्र धुए खरा. जिनकल्पी न धुए. ३ अर्थात संताडवानी जरूर न पटे एवां हल्कां वस्त्र पहेरवा ४ छांडी आपवां.

जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति पुट्ठो खलु अहमंसि, नाल महमंसि सीयफासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्वसमण्णागयपन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए आवट्टे, तवस्सिणो हु तं सेयं जं सेगे विह मादिए[1] । तत्थवि तस्स कालपरियाए । सेवि[2] तत्थ विअंतिकारए[3] । इच्चेतं विमोहायतणं हियं सुह खमं णिस्सेयसं आणुगामियं त्ति बेमि । ४२३)

---

१ आदद्यात् २ वेहानसमरणकर्त्तापि ३ व्यंतिकारकाऽन्त : क्रियाकारकः

जे साधुना मनमां एवो विचार उपजे के " हुं उपसर्गमां सपडायोछुं, हुं शीतादिक[1] उपसर्ग खमी शकतो नथी ? " त्यारे ते संयमी साधुए जेम बने तेम समजवान थइने अकार्यमां[2] प्रवृत्ति न करतां वेहानसादिक[3] मरणे मरवुं उत्तम छे. त्यां पण तेनो कालपर्यायज छे (एटले जेम भक्तपरिज्ञादिक[4] काळपर्यायवाला[5] मरण हित कर्त्ता छे तेम ए वेहानसादि मरण पण हितकर्त्ताज छे.] तेवी रीते मरनारा पण मुक्तिए जाय छे. ए रीते ए वेहानसादिक मरण पण मोहरहित पुरुषोनुं कृत्य छे, हितकर्त्ता छे, सुख कर्त्ता छे, वाजवी छे, कर्म खपावनार छे, अने भवांतरे तेनुं पुण्य चाली शके छे. [४२३]

---

१ आदिशब्दे स्त्री वगेरेना उपसर्गो लेवा. २ मैथुनादिकमां. ३ वेहानस मरण एटले आकाशमां चाली मरवुं. आदि शब्दथी झंपापात विगेरे मरण लेवा. ४ भक्त एटले भोजन तेनी परिज्ञा एटले त्याग तेणे करी मरवुं एटले अणसणथी मरवुं ते विगेरे. ५ वखतना अनुक्रमवाळा.

करणाए[1] । (४२७)

आहट्टु परिन्नं[2], आणक्खेस्सामि[3], आहडं च सातिज्जिस्सामि (१) आहट्टु परिन्नं, आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (२) आहट्टु परिन्नं, णो आणक्खेस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि (३) आहट्टु परिण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (४) एवं से अहाकिट्टिय-मेव धम्मं समहिजाणमाणे संते विरते सुसमाहितलेसे । तत्थवि तस्स कालपरियाए । से तत्थ विअंतिकारए । इच्चेतं विमोहायतणं हितं सुहं खमं णिस्सेयसं आणुगामियं-ति बेमि । (४२८)

१ करणाय–तदुपकाराय (स भिक्षुः प्रकल्पं पालयन् भक्तपरिज्ञया प्राणानपि जह्यात् नपुनः प्रकल्पं खंडयेदिति शेषः) २ परिज्ञां ३ अन्वेषयिष्यामि.

[तेवा मुनिए ए पोतानो आचार पाळतां भक्तपरिज्ञा नामना मरणे करीने प्राण जवा देवा पण आचार खंडवो नहि.] [४२७]

[चउभंगी] हुं वीजाने माटे लावीश, वीजानुं लाव्युं पण खाइश. [१] हुं वीजा माटे लावीश पण वीजानुं लाव्युं नहि खाउं [२] हुं वीजा माटे नहि लावीश, पण वीजाए आणेलुं खाइश. [३] हुं वीजा माटे पण नहि लावीश, वीजानुं लाव्युं पण नहि खाइश. [४] आ रीते जेम प्रतिज्ञा लीधी होय तेमज कह्या मुजब धर्मने पाळतो थको संकट पडतां शांत अने विरत वनी सारी ले. श्याओ धरतो थको मुनि (अणसण करे) पण प्रतिज्ञा–भंग न करे. तेम करतां पण तेनो काळपर्याय १ छे. ते मुनि त्यां कर्मक्षयनो करनार छे. ए रीते ए विमोही पुरुषोनुं स्थान छे, हितकर्त्ता छे, सुख कर्त्ता छे, वाजवी छे, कर्म खपावनार छे अने एनुं सुकृत भवांतरे पण चाले छे, [४२८]

१ काळपर्याय एटले वार वर्षनी संलेखनाथी शरीर घसवी अणसण करवुं ते.

[षष्ट उद्देशः]

जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायवितिएण, तस्स णो एवं भवइ, "वितियं वत्थ जाइस्सामि"। से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा, अधापरिग्गहियं वा वत्थं धारेज्जा। जाव गिम्हे पडिवन्ने, अधापरिजुन्नं वत्थं परिट्ठवेज्जा। अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले लाघवियं आगममाणे। तवे से अभिसन्नागए भवइ। जहेयं भगवया पवेइयं तमेव अभिसमेच्चा सव्वओ सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिया। (४२९)

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, असणंवा (४) आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा आसाएमाणे, दाहिणाओ वा

छठो उद्देश.

[धैर्यवंत मुनिए इंगित मरण[१] करवुं.)

जे साधु पासे पात्रा साथे मात्र एकज वस्त्र होय,[२] तेने एम चिंता नहि थवानी के हुं बीजुं वस्त्र मागीश. ते मुनि यथायोग्य वस्त्र याचे, अने जेवुं मळे तेवुं पहेरे; ऊनाळो आवतां ते परिजीर्ण वस्त्र परठवी दे; अथवा ते एक वस्त्र पहेरे पण अंते छांडी करीने वस्त्र रहित थइ निश्चिंत थाय एम करवाथी तेने तप प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने भाख्युं तेनेज जाणी करीने जेम बने तेम समपणुं समजता रहेवुं. [४२९]

साधु अथवा साध्वीए, असनादिक आहार करतां स्वाद मेळववा माटे ते आहारने डाबा गाल्थी जमणा गाले न लाववुं अने जमणाथी डाबे न लाववुं. आम स्वाद नहि लेवाथी घणी पंचात ओछी थवानी, तथा तप पण प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने कह्युं छे तेनेज जाणीने जेम बने तेम समपणुं जाणता रहेवुं.

१ इंगित एटले सांकेतिक एटले के आटला भेदम्मांज मारे हरवु फरवुं एवा धारवावाळुं अगसण करीने शरीर छांडवुं ते इंगित मरण कहेवाय. २ तेवा अभिग्रह लीधेल होवाथी.

हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा आसाएमाणे । से अणासायमाणे लाघवियं आगममाणे । तवे से अभिसमन्नागए भवइ । जहेयं भगवता पवेइयं तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वताए समत्त–मेव समभिज्जाणिया।
(४३०)

जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति;–से गिलाणामि च खलु अहं इमंमि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से अणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा । आहारं अणुपुव्वेण संवट्टित्ता कसाए पयणू किच्चा समाहिय-च्चे फलगावयट्ठी उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे, अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं[1] वा, खेडं[2] वा, कव्वडं[3] वा, मडंबं[4] वा, पट्टणं[5] वा, दोणमुहं[6]

१ कररहितं २ धूळिप्राकारवेष्टितं ३ क्षुल्लकप्राकारवेष्टितं ४ अ–र्द्धतृतीयगव्यूतांतर्ग्रामरहितं ५ जळस्थळ भेदभिन्नंद्विविधं ६ जळस्थळनि-र्गमप्रवेशं

[४३०]

जे मुनिनो एवो अभिप्राय थाय के हुं आ वखतमां[1] हवे आ शरीरने क्रियाना[2] क्रममां धरतां थकां अशक्त थाऊं छुं, ते मुनिए अनुक्रमे[3] आहारने घटाडवो, अने तेम करीने कषायो पातला करी शरीरथी थता व्यापारो नियमीने फळकनी[4] माफक रहेता थकां रोगादिक आवी पडतां तैयार थइ शरीरना संताप थी रहित थइ धैर्यधरी इंगित मरण करवुं. ते आ रीते के गाम, नगर, खेडुं-कसबो, मगणो, पाटण, बंदर, आगर, आश्रम, यात्रास्थळ, व्यापारस्थळ, के रा-

१ रोगादिक थवाथी अथवा लुखा आहारथी शरीर क्षीण थइ जवाथी, २ आवश्यकादिक क्रियाओमां ३ छठ अठमादिक्रमे, नहि के बार वर्षनी संलेख-नाना क्रमे, कारण के मांदु माणस कंइ तेटलो वखत टकी शके नहि. ४ जेम फळक [पाटीयुं] कपातां घडातां वधुं सहन करे तेम वधुं सहन करतां थकां

वा, आगरं[1] वा, आसमं[2] वा, संणिवेसं[3] वा, णिगमं[4] वा, रायधाणिं वा, तणाइं जाएज्जा। तणाइ जाइत्ता से तं–मायाए एगंत–मवक्कमिज्जा। एगंत मवक्कमित्ता अप्पंडे अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिंग पणय-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए पडिलेहिय [२] पमज्जिय [२] तणाइं संथरेज्जा। तणाइं संथरेत्ता एत्थवि समए इत्तरियं कुज्जा। [४३१]

तं सच्चं सच्चवादी ओए तिण्णे छिणणकहंकहे आतीतट्ठे अणातीते, चेच्चाण भिउरं कायं, संविहूणिय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे; अस्सिं वि–संभणयाए, भेरव–मणुचिन्ने। तत्थवि तस्स कालपरियाए। सेवि तत्थ वियंतिकारए इच्चेतं। विमोहाययणं हितं सुहं खेमं णिस्सेयसं आणुगामि-

१ स्वर्णाकरादि २ तापसावसथः ३ यात्रागतजनावासः ४ प्रभूततरवणिग्वर्गावसथः

जधानीमां जइने दर्भ विगेरे तणखला मागी आववां. ते लइने एकांत स्थळमां जवुं. त्यां जइ, कीडिओनां इंडा, जीवजंतु, बीज, वनस्पति, झाकळ, पाणी, कीडिओना नागरा,[1] लीलफुल, लीली माटी, तथा करोळिआथी राहित जमीनने रुडी रीते जोइ पुंजी प्रमार्जी, दर्भ पाथरवा. अने त्यां एवे वखते इत्वरिक[2] एटले पादपोपगम मरणना हिशाबे थोडी मुश्केलीवाळुं इंगित मरण करवु. [४३१]

सत्यवादी पराक्रमी, संसारनो पार पामेल, "केम करीश" एवी बीकथी रहित, रुडी रीते वस्तुस्वरुपने जाणनार, संसारमां नहि फसेल, मुनि जिनप्रवचनना विश्वासथी भयंकर परीषह तथा उपसर्ग अवगणीने आ विनश्वर शरीरने छां–डतां थकां खरेखरुं सत्य अने दुष्कर काम बजावे छे. आम करतां पण तेनो काळ-पर्याय [संलेखना] ज गणाय छे. ते मुनि आ स्थळे पण अंतक्रिया करे छे. ए रीते ए इंगित मरण विमोही पुरुषोनुं स्थान छे, हितकर्त्ता छे, सुखकर्त्ता छे, वाजबी

१ दरकीडीयारां २ अहीं सागारी अणसण न लेवुं केमके ते जिनकल्पीने न संभवे.

यं-ति बेमि । (४३२)

—:०:—

[सप्तम उद्देशः]

जे भिक्खू अचेले परिवुसिते. तस्स णं एवं भवति, चाएमि[1] अहं तणफासं अहियासित्तए, सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं अहियासित्तए, दंसमसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए; हिरिपडिच्छादणं च णो संचाएमि अहियासित्तए[2] एवं स कप्पति कडिबंधणं धारित्तए। (४३३)

अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंती, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंसमसगफासा फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले लाघवियं आगममाणे। तवे से अभिसमन्नागए भवति । जहेतं भगवया पवेदियं तमेव अभिसमेच्चा

१ शक्नोमि २ ह्रीप्रच्छादनं त्यक्तुं न शक्नोमि.

छे, कर्म खपावनार छे अने भवांतरे एनुं सुकृत साथे चाले छे [४३२]

सातमो उद्देश.

[पादपोपगमन मरण.]

जे साधु वस्त्ररहित [दिगंवर] होय, तेने एवुं थशे के हुं घासनो स्पर्श खमी शकुंछुं, ताप खमी शकुंछुं, दंश के मशकनो[1] उपद्रव खमी शकुंछुं अने बीजा पण अनुकूळ प्रतिकूळ परीषह खमी शकुंछुं; पण नग्न रहेतां लज्जा परीषह खमी शकतो नथी, ते साधुए कटिबंध वस्त्र [चोलपट[2] राखवुं.) [४३३]

जो लज्जा जीती शकाती होयतो अचेल [वस्त्र रहित] ज रहेवुं. तेम रहेतां

१ मच्छर २ चरोटो [अपभ्रंश]

सव्वओ सव्वत्ताए समत्त—मेव समभिजाणिया । (४३४)

जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा [४] आहट्टु दलइस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि [१] जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अन्नेसिं भिक्खूणं असणं वा० आहट्टु दलइस्सामि' आहडं च णो सातिज्जिस्सामि [२] जस्सण भिक्खुस्स एवं भवति;- अहं च खलु असणं वा० आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च सातिज्जिस्सामि [३] जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति;—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा० आहट्टु नो दलइस्सामि आहडं च णो सातिज्जिस्सामि (४)—अहं च खलु तेण अधातिरित्तेणं अधेसणिज्जेणं अधापरिग्गहिएणं असणेणं वा० अभिकंख साहाम्मियस्स कुज्जा

तृणस्पर्श, ताढ, ताप, दंशमशक, तथा बीजा पण अनेक अनुकूळ प्रतिकूळ परीषह आवे ते सहन करवा. एम कर्याथी लाघव [अल्पचिंता] प्राप्त थाय छे, अने तप पण प्राप्त थाय छे. माटे जेम भगवाने कह्युं छे तेनेज जाणी जेम बने तेम समपणुं जाणता रहेवुं. [४३४]

[चउभंगी] जे साधुना मनने एम थाय के हुं बीजा साधुने आहारादिक लावी आपीश, अने हुं पण बीजानुं लइश [१]; अथवा लावी आपीश पण लइश नहि [२]; अथवा हुं नहि लावी आपुं पण लावेलुं लइश. [३] अथवा हुं बीजा माटे लावीश पण नहि अने लइश पण नहि. [४] [ए रीते चउभंगीथी प्रतिज्ञा करे अथवा आ प्रमाणे छूटी प्रतिज्ञा करे के] मारे मारा खपथी वधेला यथायोग्य जेवा मळेल तेवा आहारादिकथी निर्जराना अर्थे साधर्मि मुनिनुं उपकारार्थे वैयावृत्त्य करवुं. अथवा मारुं कोइ तेवी रीते आहारादिक आपी वैयावृत्त्य करे ते स्वीकारीश. जे माटे एवी प्रतिमाथी लाघव प्राप्त थायछे. तप प्राप्त थायछे. माटे जेम भगवाने

कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिक्खए;
अहभिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं ।३। (४४०)

जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णावि पत्थए;
दुहतोवि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ।४।

मज्जत्थो णिज्जरापेही, समाहि-मणुपालए;
अंतोबहिं विउस्सज्ज, अज्झत्थं सुद्ध-मेसए ।५। (४४१)

जं किंचि वक्कमे जाणे, आउक्खेमस्स अप्पणो;
तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ।६। (४४२)

गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया;
अप्पपाणं तु विन्नाय, तणाइं संथरे मुणी ।७। (४४३)

कषाय पातळा करी आहार घटावी [संकट] सहन करतो थको जो साधु बदाच आहार विना बहु ज मुंझाय तो तदन आहारनो त्याग करी अणसण करे अथवा समाधि राखवा माटे थोडो वखत आहार लइ पछी संलेखणा चलावे. (४४०)

मुनिए अणसण करतां जीववुं पण न इच्छवुं तेम मरवुं पण न इच्छवुं. जीवित अने मरण ए बन्नेमां आशा न बांधवी. किंतु समभावी थइ निर्जरानी इच्छा धरतां थकां समाधि पाळ्या करवी. अंदरना [कषाय] अने बाहेरना (शरीरादिक) छोडीने पवित्र अंतःकरण (राखवा) चहावुं. [४४१]

(ओचिंत्यो कंइ रोग उत्पन्न थाय तो समाधिने इच्छता मुनिए) पोताना आयुष्य पाळवाना जे उपाय मालम होय ते उपाय अणसणना अंदर करी लइ समाधि मेळवी पाछी पण संलेखणा करवी. [४४२]

गाममां अथवा अरण्यमां स्थंडिल[1] तपाशीने तेने जीवजंतु रहित जाणीने त्यां दर्भादि तृणोथी त्यां संथारो पाथरवो. [४४३]

---

१ स्थळ.

अणाहारो तुअट्टेज्जा, पुट्ठो तत्थ हियासए;
णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं वि पुट्ठए ।८। [४४४]
संपप्पगा य जे पाणा, जे उ उड्ढ—महे—चरा;
भुंजंते मंससोणीतं, ण छणे ण पमज्जए ।९। (४४५]
पाणा देहं विहिंसंति, ठाणातो ण विउब्भमे;
आसवेहिं विवित्तेहिं, तिप्पमाणो हियासए ।१०।
गंथेहिं विवित्तेहिं, आउकालस्स पारए; [४४६]
पग्गहिअतरगं[1] चेयं, दवियस्स वियाणतो ।११। (४४७)
अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए;

१ इत्त इंगितमरणसूत्रं. प्रगृहीततरकं श्रेष्ठतरमित्यर्थः

ते संथारा पर आहार त्याग करी (अणसण करी) मुनिए शयन करवुं. अणसणमां जे परीषह के उपसर्ग [दुःख तथा संकट] ऊपजे ते सहन करवां. वळी मनुष्यो तरफथी उपसर्ग थाय तो मर्यादा उल्लंघवी नहि. (आर्तध्यानमां नो पडवुं.) [४४४]

फरता जंतुओ[1] पक्षिओ[2], सर्पादि जंतुओ, मांसभक्षी प्राणीओ[3], अने रक्तभक्षी प्राणिओ[4] अणसणमां रहेल मुनिने उपद्रव करे तो मुनिए हाथ विगेरेथी तेमने मारवुं नहि अने रजोहरणादिकथी शरीरने प्रमार्जवुं पण नहि. [४४५]

जंतुओ मारुं शरीर खाए छे पण मारा गुणो नथी खाता, एम विचारी मुनिए ते ठेकाणेथी ऊठी बीजे स्थळे न जवुं, आश्रवो[5] छांडीने आनंदमां रही सर्व सहन करवुं. वळी जूदा जूदा शास्त्रोने सांभळतां अथवा जूदी जूदी जातनो परिग्रह छांडतां पोतानुं आयुष्य पूरुं करवु. [४४६]

हवे जे संयमी मुनि गीतार्थ[6] होय तेवा मुनि इंगितमरण नामनुं अणसण करे छे. ते अणसण घणी कठिन रीते लेवाय छे. (४४७)

१ कीडिओ प्रमुख. २ गीधविगेरे ३ सिंहादि ४ मछर जेवा. ५ कषाय विगेरे पापना हेतुओ. ६ जघन्यथी पण नवपूर्वी होवा जोइए.

आयवज्जं पडीयारं विजहेज्जा तिहा तिहा।१२।[४४८]

हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं मुणिआ[१] सए;

विउस्सज्ज अणाहारो, पुट्ठो तत्थ हियासए ।१३। (४४९)

इंदिएहिं गिलायंते, समियं आहरे मुणी;

तहावि से अगरहे, अचले जे समाहिए ।१४। ४(५०)

अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए;

कायसाहारणट्ठाए, इत्थंवावि अचेयणे ।१५। (४५१)

परिक्कमे परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते; [२]

ठाणेण परिकिलंते,णिसिएज्जा य अंतसो ।१६। (४५२)

१ ज्ञात्वा २ यथायतः

ए अणसणमाटे ज्ञातपुत्र वीर प्रभुए एम कहेलुं छे के ते अणसणसंस्थित मुनिए जाते ज उद्वर्त्तनादि[१] क्रियाओ करवी बीजा पासे त्रिविधे त्रिविधे न करावबी. (४४८)

लीलोतरीवाळी जग्यामां न सूवुं किंतु निर्जीव स्थंडिलमां शयन करवुं आहारने त्यागीने जे उपसर्गो थता रहे ते सहन करवा. (४४९)

वळी इंद्रियो[२] वहु अकडाय त्यारे ते इंद्रियोने हरवी फेरवीने आत्माने समाधिमां राखवो. कारण के जेम तेम करतां पण जे समाधिवंत रहे छे ते पवित्र अने अचल कहेलो छे. [४५०]

ए अणसणमां नियमित करेली भूमिमां शरीरना सहज टकाव माटे जवुं आववुं, वेसवुं, चरणादिक पसारवा वगेरा क्रियाओ करी शकाय छे. अने जो कोइ समर्थ मुनि होय तो तेणे अचेतन (निर्जीव वस्तु) माफक अडगज थइ रहेवुं. [४५१]

पण तेम नहि करी शकता मुनिए वेशी वेशी थाकी जतां (समाधिना अर्थे] हरवुंफरवुं, अथवा हरतां फरतां थाकेला मुनिए यतनापूर्वक वेसवुं, अने ये सवाथी थाकी जतां शयन पण करवुं. [४५२]

१ उद्वर्त्तन-ऊठवुं, परिवर्त्तन–पासुं फेरववुं, उच्चार. खरचु जवुं, प्रश्रवण–पिशाब करवा जवुं, इत्यादि क्रियाओ. २ करचरणादिक.

आसीणे णेलिसं मरणं, इंदियाणि समीरए;
कोलावासं समासज्ज, वितहं पादुरेसए[1] ।१७। [४५३]
जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए;
ततो उक्कसे अपाणं, सव्वे फासे अहियासए ।१८। [४५४]
अयं [2] चायततरे सिया, जो एवं अणुपालए;
सव्वगायाणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ।१९। [४५५]
अयं से उत्तमे धम्मे, पुवट्ठाणस्स पग्गहे;
आचरं पडिलेहित्ता, विहरे[3] चिट्ठ माहणे ।२०। [४५६]
अचित्तं तु समासज्ज, ठावएतत्थ अप्पयं;
वोसिरे सव्वसो कायं, ण मे देहे परीसहा ।२१। (४५७)

१ गवेषयेत् २ पादपोपगममरणविधिः ३ अनुपालयेदित्यर्थः कार्यः

आवा अणसणमां उजमाल थएला मुनिए पोतानी इंद्रियो तेमना विषयोथी खूब खेंची लेवी. अवष्टंभना माटे (अढेलवा माटे) जे मुनिओ पोतानी पीठ पाछळ पाटिउं राखे छे ते सुषिर होय तो ते बदलावी बीजुं लेवुं. (४५३)

कारण के जेथी पाप उत्पन्न थाय तेनुं अवलंबन न करवुं. माटे सर्व सदोष योगोथी आत्माने दुर करीने सर्व परीषह तथा उपसर्ग सहेवा. (४५४)

(हवे पादपोपगम अणसण कहे छे) जे मुनि सर्व शरीर अकडातां पण जे स्थानमां अणसण करेलुं होय ते स्थानथी लवलेश पण न डगे अने ए रीते जे पादपोफगम अणसण पाळे ते सर्वथी अधिक काम जाणवुं. [४५५]

आ अणसण सर्वथी उत्तम छे, कारण के ए पेहेला बतावेला भक्तपरिज्ञा तथा इंगितमरण ए बन्ने अणसणोथी मुश्केल छे. [एनी विधि आ रीते छे] अचिर एटले निर्जीव भूमि तपासीने त्यां बेशीने ए अणसण आदरवुं. (४५६)

मतलब ए के अचित्त स्थंडिल अथवा फळक मेळवीने त्यां पोते स्थित थवुं, अने आखा शरीरने वोसरावबुं. [पछी परीषह के उपसर्ग थाय तो विचारवुं के] मारा शरीरमां परीषह छे ज नहि. [शरीर ज मारुं नथी त्यारे तेना परीषह ते मारे शेना होय] (४५७)

जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा इति संखया;
संवुडे देहभेयाए, इतिपन्ने धियासए ।२२। [४५८]
भिउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु वि;
इच्छालोभं ण सेवेज्ज, धुवं वन्नं सपेहिया ।२३। (४५९)
सासएहिं णिमंतेज्जा दिव्वमायं ण सद्दहे;
तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ।२४। (४६०)
सव्वट्ठेहिं अमुच्छिए, आउकालस्स पारए;
तितिक्ख[१] परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं-ति बेमि ।२५।
(४६१)

१ (उपसंहारसूत्रं)

वळी विचारवुं के ज्यां लगी जीवीश त्यां लगी परीषहोपसर्ग सहेवाना छे एम धारीने "में शरीरथी जूदो थवा माटे ज शरीरनो त्याग करेलो छे ?" एम विचारी पंडित मुनिए सर्व परीषहोपसर्ग सहन करवा. (४५८)

वळी आवे वखते कदाच कोइ राजादिक त्यां आवी अनेक लालचो बतावी मुनिनुं मन डगावे तो पण मुनिए ते क्षणभंगुर शब्दादिक विषयोमां राग करवो नहि. सदा स्थिर रहेनारी यशकीर्ति विचारीने मुनिए इच्छालोभ एटले "हुं चक्रवर्ती थाउं" ए विगेरे निदान न करवा. [४५९]

वळी कोइ कदाच शाश्वत एटले अनर्गल द्रव्यथी मुनिने निमंत्रणा करे तो मुनिए चिंतववुं के मारुं शरीर ज शाश्वत नथी माटे ए द्रव्य शाश्वत शी रीते बने." वळी कोइ देवता आवी माया बतावे तो ते पण मानवी नहि ; किंतु सर्व जंजाळ दूर करीने हे मुनि, तुं समज के ए नक्की देवमायाज छे. [४६०]

ए रीते सर्व विषयोमां अमूर्च्छित थइने मुनिए आयुकाळना पारंगामी थवुं [उपसंहार] ए रीते ए त्रणे मरणोमां उत्कृष्ट तितिक्षा [सहनशीळता] रहेली होवाथी स्वयोग्यतानुसारे गमे ते मरण कल्याणकर्त्ता छे (४६१)

....

उपधानश्रुताख्य नवम मध्ययनम्

[प्रथम उद्देशः]

अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय;
संखाय[1] तंसि हेमंते, अहुणापव्वइए रीयत्था[2] ।१। ४६२)
णोचेविमेण[3] वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते;
से पारए आवकहाए, एयं[4] खु अणुधम्मियं तस्स ।२।
(४६३)

---

१ ज्ञात्वा २ रीयतेस्म-विजहार इत्यर्थः ३ नचैवानेन ४ वस्त्रधारणं

अध्ययन नवमुं.

उपधानश्रुत.

पहेलो उद्देश.

(महावीर स्वामिनो विहार)

(हे जंबू,) में जेम सांभळ्युं छे तेम कहुं छुं के श्रमण भगवान [महावीरे] दीक्षा लइने हेमंत रुतुमां तरतज विहार कर्यो. [४६२]

(तेमने इंद्रे एक देवदूष्य वस्त्र आपेलुं हतुं पण) भगवाने नथी विचार्युं के ए वस्त्रने हुं शियाळामां पहेरीश. ते भगवान तो जीवितपर्यंत परीषहोना सहनार हता. मात्र बधा तीर्थंकरोना रिवाजने अनुसरीने तेमणे [इंद्रे आपेलुं] वस्त्र धर्युं हतुं. [४६३]

चत्तारी साहिए मासे, बहवे पाणजाइया आगम्म;
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुहिया[1] णं तत्थ हिंसिंसु ।३।

(४६४)

संवच्छरं साहियं मास, जं ण रिक्कासि[2] वत्थगं भगवं;
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थ-मणगारे ।४। (४६५)
अदु[3] पोरिसिं[4] तिरियभित्तिं, चक्खु-मासज्ज[5] अंतसो झाति[6];
अह चक्खुभीया[7] सहिया[8] ते[9], हंता हंता [10]बहवे कंदिंसु
।५। (४६६)

सयणेहिं[11] वितिमिसेहिं, इत्थीओ तत्थ से परिन्नाय;

१ आरुह्य २त्तक्यत्वान्. ३ अथ ४ पुरुषप्रमाणवीथिं ५ सावधानोभूत्वा ६ ध्यायति ७ दर्शनभीताः ८ संहिता मिलिताः ९ डिंभाः १० हत्वा हत्वा ११ शयनेषु—वसतिषु

[भगवानना शरीरे दीक्षा लेती वखते पुष्कळ सुगंधि वासक्षेप वर्षेलो होवाथी] चार महिना लगी घणा भ्रमरादिक जंतुओ तेमना शरीरने वलगता हता अने मांस तथा लोही चूसता हता. [४६४]

भगवाने लगभग तेर महिना लगी ते [इंद्रे दीधेलुं] वस्त्र स्कंधपर धर्युं हतुं. पछी ते वस्त्र छांडीने भगवान वस्त्ररहित अणगार थया [४६५].

भगवान सावधान थइ पुरुषप्रमाण मार्गने इर्यासमितिथी शोधीने चालता हता. आ वखते नाना बाळको तेमने देखी भयभ्रांत थइ एकठा मळी तेमने लाठमूठ[1] वगेरेथी मारता मारता रडवा लागता. [४६६]

वळी भगवान, गृहस्थ अने तीर्थंकरोथी सेळभेळ थएली वस्तिमां रहेता त्यारे जो स्त्रिओ तेमने प्रार्थना करती तो ते भगवान ते स्त्रिओने शुभमार्गनी अर्गळाओ[2] गणीने तेमनो परिहार करता थका मैथुन नहि सेवता. ए रीते तेओ

१ लाकडी—मुठी २ आगळिया रुप —विघ्न करनार.

सागारियं ण सेवइ, इति से सयं पवेसिया[1] झाति ।६।
(४६७)
जे केइ इमे अगारत्था, मीसीभावं पहाय से झाति;
पुट्ठोवि णाभिभासिंसु, गच्छति णाइवत्तती अंजू ।७। (४६८)
णो सुगर—मेत—मेगेसिं, णा भिभासे अभिवायमाणे;
हयपुव्वो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुव्वो[2] अपुन्नेहिं ।८। (४६९)
फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च[3] मुणी परक्कममाणे;
आघयणट्टगीताइं, दंडजुज्झाइं मुट्ठिजुज्झाइं ।९। (४७०)
गढिए मिहोकहासु, समयंमि णायपुत्ते विसोगे अदक्खू;

१ आत्मानं वैराग्यमार्गेप्रविश्य. २ हिंसितपूर्वः ३ अतिगत्य

पोते पोताना आत्माने वैराग्यमार्गमां लावीने धर्मध्यान ध्याता हता. [४६७]

भगवान, गृहस्थो साथे हळवुं मळवुं छोडीने ध्याननिमग्न रहेता. गृहस्थो कंइ पूछता तो तेमना साथे ए वखते भगवान बोलता नहि पण पोतानुं हित संपादन करवा चाल्या जता हता. सरल स्वभावी भगवान ए रीते मोक्ष मार्गने अनुवर्त्तता हता. [४६८]

भगवानने कोइ वखाणता तो तेना साथे पण कशुं बोलता नहि, तेमज जे पुण्यहीन अनार्यो तेमने दंडादिकथी मारता के वाळ खेंचीने दुःख देता तेमना तरफ कोप करता नहि. [एवुं भवर्त्तन खरे एवा महापुरुषो ज करी शके छे. प्राकृत जनोथी एम वर्तवुं मुश्केल छे.] [४६९]

वळी भगवान, नहि खमी शकाय एवा कठोर परीषहोनी कशी दरकार नहि करता अने लोकोथी थता नृत्य के गीतमां राग नहि धरतां; तथा दंडयुद्ध के मुष्टियुद्धनी वातो सांभळी उत्सुक नहि बनता. [४७०]

कोइ वखते ज्ञातनंदन भगवान, स्त्रीओने परस्परनी कामकथामां तल्लीन थएली जोता तो त्यां रागद्वेषरहित मध्यस्थपणे रहेता. ए रीते एवा जबरजस्त संकटो पर कशुं पण लक्ष नहि आपतां ज्ञातपुत्र भगवान् संयममां प्रवर्त्त्या जता

एताइं सो उरालाइं, गच्छति णायपुत्ते असरणाए ।१०।
अवि साहिए दुवासे सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते;
एगत्तगए पिहियच्चे, से अहिन्नायदंसणे संते ।११। (४७२)
पुढविं च आउक्कायं, तेउक्कायं च वाउक्कायं च;
पणगाय बीयहरियाइं, तसकायं च सव्वसो णच्चा ।१२।
"एयाइं संति" पडिलेह, चित्तमंताइं से अभिन्नाय;
परिवज्जियाण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे ।१३।
(४७३)
अदु थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए;
अदुवा सव्वजोणीया सत्ता कम्मुणा कप्पिया पुढो बाला ।१४।
(४७४)
भगवं च एव—मन्नेसीं, सोवहिए हु लुप्पती बाले;

हता. [४७१]

भगवाने दीक्षा लीधा अगाउ लगभग बे वर्षथी थंडुं पाणी पीवुं छोडेलुं हतुं. ए रीते तेओ बे वर्ष लगी अचित्त जळ पीता थका एकत्वभावना भावता कषायरूप अग्नि उपशमावीने शांत बन्या थका तथा सम्यक्त्वभावथी भावित रहेता थका दीक्षित थया. [४७२]

भगवान, पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु, सेवाळ—बीज—लीलोतरीरूप, वनस्पति, तथा त्रसकाय ए बधाने "छता" अने "सजीव छे" एम गणीने तेना आरंभनो परीहार करी विचरता. [४७३]

वळी स्थावर जीवो कर्मानुसारे भवांतरे त्रसरूपे पण ऊपजी शके छे अने त्रस जीवो स्थावररूपे पण ऊपजे छे. अथवा रागद्वेष सहित सर्व जीवो कर्मानुसार सर्व योनिओमां ऊपजता रहे छे. [एम संसारनी विचित्रता रहेली छे एवुं भगवान् विचारता] [४७४]

अने एम भगवान महावीरदेवे विचारीने जाण्युं के उपधिसहित[१] अज्ञानी

१ उपधि—उपात्रि—ते बे प्रकारनी छे द्रव्योपाधि तथा भावोपधि.

कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ।१५।
(४७५)
दुविहं समेच्च मेहावी, किरिय–मक्खाय मणेलिसं णाणी;
आयाणसोय–मतिवाय, सोयं जोगं च सव्वसो णच्चा ।१६।
(४७६)
अतिवातियं[1] अणाउट्टिं[2], सय–मन्नेसिं अकरणयाए;
जस्सि त्थिओ परिन्नाया सव्वकम्मवहा उ से अदक्खू[3] ।१७।
(४७७)
अहाकडं न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा बंधं अदक्खू;
जंकिंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था; ।१८।
(४७८)

---

१ अतिपातिकां निर्दोषां २ अहिंसां "आश्रित्य." इतिशेषः
३ अद्राक्षीत्.

जीव कर्मोथी बंधाय छे. माटे सर्व रीते कर्मोने जाणीने ते कर्मो तथा तेना हेतु पापने भगवान त्याग करता हता. [४७५]

ते ज्ञानवंत बुद्धिमान् भगवाने बे प्रकारना कर्म[1] तथा तेना आश्रवना मार्ग, हिंसाना मार्ग, तथा योग[2] ए बधुं जाणीने संयमनी अत्युत्तम क्रिया कहेली छे. [४७६]

वळी ते भगवाने पवित्र अहिंसाने अनुसरीने पोताने तथा बीजाओने पापमां पडता अटकाव्या. अने ते भगवाने स्त्रीओने सर्व पापनी मूळ तरीके जाणीने त्यागी छे माटे खरेखर ते ज भगवान परमार्थदर्शी हता. [४७७]

ते भगवान्, आधाकर्मादिक दूषित आहारथी सर्व रीते कर्म बंधाता देखीने तेवो आहार सेवता नहता. एम जे कंइ पापना कारण छे ते बधाने छांडीने भगवान शुद्ध आहार करता हता. ४७८

---

१ इर्यापत्यय कर्म तथा सांपरायिक कर्म वर्तमान-भावी कर्मो (Jacobi) Present and future Karmans. २ मन वचन कायरुप.

णो सेवती य परवत्थं,[१] परपाए[२] वि से ण भुंजित्था;[३]
परियज्जियाण ओमाणं[४], गच्छति संखडिं[५] असरणाए ।१९।
(४७९)

मायन्ने असणपाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिन्ने;
अच्छिंपि णो पमज्जिय, णोविय कंडूयये मुणी गायं ।२०।
(४८०)

अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ व पेहाए;
अप्पं वुइए पडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ।२१।(४८१)

सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोस्सज्ज वत्थ—मणगारे;
पसारित्तु बाहू परक्कमे, णो अवलंबिया ण कंधंसि.।२२।
(४८२)

---

१ प्रधानं परकीयं वा वस्त्रं २ परपात्रेपि ३ भुंक्ते ४ अपमानं ५ पाकस्थामं ६ अल्पशब्दोत्राभाववाची.

वळी परायुं वस्त्र अंगे नहि धरता; पराया पात्रमां पण ते नहि जमता; अने अपमानने नहि गणतां अदीन भावे रसोइखानाओमां आहार याचवा जता हता. [४७९]

वळी तेओ नियमित अशनपान वापरता; रसमां आसक्त न थता; तथा रस माटे प्रतिज्ञा पण नहि बांधता; किंबहुना खरज मटाडवा माटे खरडता पण न हता. [४८०]

भगवान विहार करतां आडुं के पूंठे अल्प जोता अर्थात् जोता नहि रस्तामां [illegible] अल्प बोलता अर्थात बोलता नहि. किंतु मार्ग जोता थका यत्नवंत थइ [illegible] जता हता. [४८१]

भगवान बीजे वर्षे ज्यारे अर्धी शिशिरऋतु वेठी त्यारे ते [इंद्रदत्त] वस्त्रने छांडी दइने छूट बाहुथी विहार कर्या जता. [अर्थात्] ताढना माटे बाहुने संकोचतां [नहि,] तथा स्कंध उपर पण बाहु धरता नहि. [४८२]

एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मइमया;
बहुसो अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रियंति त्ति बेमि ।२३।
[४८३]

[द्वितीय उद्देशः]

चरियासणाइं[1] सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ भइयाओ;
आइक्ख ताइं सयणा, सणाइं जाइं सेवित्था से महावीरो
।१। [४८४]

१ अयंच श्लोक श्चिरंतनटीककारेण न व्याख्यातः सूत्रपुस्तकेषु तु दृश्यते ।

ए रीते मतिमान् महान निरीह भगवान वीर प्रभुए अनेक रीते एवी विधि पाळी छे. ए विधिमां बीजा मुनिओए पण कर्म खपाववा यत्न करवो. (४८३)

बीजो उद्देश.

....

(महावीर स्वामिनी वसति)

वीर प्रभुए विहार करतां जे जे स्थळे निवास कर्यो ते ते स्थळो आ प्रमाणे छे. (४८४)

आवेसण[1]—सभा[2]—पवासु[3], पणियसालासु [4]एगदा वासो;
अदुवा पलियट्ठाणेसु[5] पलालपुंजेसु[6] एगदावासो ।२। [४८५]

आगंतारे आरामा गारे णगरे वि एगदा वासो;
सुसाणे सुण्णगारे वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो. ।३। [४८६]

एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी पतरेस[7] वासे;
राइं दियंपि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ।४। [४८७]

णिद्दंपि णो पगामाए, सेवइ य भगवं उट्ठाए;
जग्गावती य अप्पाणं, इसिंसाति[8] य अपडिन्ने ।५।(४८८)

---

१ शून्यं गृहं. । कुडयाद्याकृति २ पानीयशाळा. ३ पण्यशालासु हट्टेषु ४ अयस्कारकुड्यादिषु ५ मंचोपरिव्यवस्थितेषु तदध; ७ प्रकर्षेण त्रयोदशं वर्षं यावत् ८ शेते ।

कोइ वखते भगवान निर्जन झूपडाओमां; झूंपडीओमां, पाणी पीवा माटे करेला परबोमां के हाटोमां रहेता तो कोइ वखते लुहार विगेरेनी कोडोमां अथवा घासनी गंजीओमां नीचे रहेता. [४८५]

कोइ वखते परामां, बागमांना घरोमां के शहेरमां रहेता तो कोइ वखते मशाण, सुनां घर के झाडनी तलेटीमां रहेतां. [४८६]

ए रीते एवा स्थळोमां रहेतां थकां ते श्रमण मुनि प्रमाद परिहार करी समाधिमां लीन थइ बरोबर तेरमां वर्ष लगी पवित्र ध्यान ध्याता रह्या. (४८७)

दीक्षा लइने भगवान क्यांय पण बहु निद्रा लेता नहि.[1] अने हमेशां पोताने जगावता रह्या. क्यांक जरा सूता तो पण त्यां निद्रा करवानी इच्छा नहि करता. [४८८]

---

१ फक्त बार वर्षमां अस्थिकग्राम (वढवाण) पासे काउसग्गमां रह्या हता ते वखते एक मुहूर्त्त मात्र निद्रा लीधी हती एम टीकाकार जणावे छे.

संबुज्झमाणे पुणरवि, आसंसु भगवं उट्ठाए;
णिक्खम्म एगया राउ, बहिं चंकमित्ता मुहुत्तागं ६। (४८९)
सयणेहिं[1] तस्सुवसग्गा, नीचा आसी अणेगरूवा य;
संसप्पगाय[2] जे पाणा, अदुवा पक्खिणो उवचरंति[3] ।७।
(४९०)
अदुवा कुचरा उवचरंति, गामरक्खाय सत्तिहत्था य;
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगति या पुरिसो वा. ।८।
[४९१]
इहलोइयाइं परलोइयाइं भीमाइं अणेगरूवाइं;
अवि सुब्भि–दुब्भिगंधाइं सद्दाइं अणेगरूवाइं ।९।
अहियासए सया समिते, फासाइं विरूवरूवाइं; [४९२]

---

१ शयनेषु वसतिषु शयनै र्वा. २ अहिनकुलादयः ३ मांसादिकं भक्षयंति

तेओ निद्राने कर्म बांधनारी जाणता थका जागता रहेता. कदाच निद्रा आववा मांडती तो तेओ शीआळानी राते ताढमां बाहेर जइ मुहुर्त्त लगी ध्यान लीन थइ निद्रा टाळता. [४८९]

उपर जणावेला स्थळोमां रहेतां भगवानने भयंकर अनेक प्रकारना उपसर्ग (दुःख) थया. सर्प विगेरे जंतुओ तथा गीध विगेरे पंखिओ आवी भगवानने करडता हता. [४९०]

जार पुरुषो शून्य घरमां कुकर्म करवा जतां भगवानने देखी उपसर्ग करता गामना रखेवाळो शक्ति विगेरे हथीआरो हाथमां धरी भगवानने उपसर्ग करता. वळी विषयवांछनाथी भगवानने लोको उपसर्ग करता; जेम के भगवानने एकला देखी तेमना रुपथी मोहित थइ व्याकूल बनेली स्त्रीओ विषय भोग माटे तेमने प्रार्थना करती, तथा पुरुषो पण सतावता हता. [४९१]

ए रीते भगवाने मनुष्य तथा तिर्यंचो तरफथी अनेक प्रकारनी भयंकर सुगंधि तथा दुर्गंधि वस्तुओना तथा अनेक जातना शब्दोना, वीहामणा उपसर्ग हमेशां समितिथी वर्त्ततां थकां सहन कर्या. [४९२]

अरतिं रतिं अभिभूय, रीयति माहणे अबहुवाई ।१०। [४९३]
स जणेहिं तत्थ पुच्छिंसु[1], एगचरा[2] वि एगदा राओ;
अव्वाइते[3] कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।११। (४९४)
अय-मंतरंसि को एत्थ, अह-मंसि-त्ति भिक्खू आहट्टु;
अय-मुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए झाति ।१२।
जंसि-प्पेगे पवेयंति[4], सिसिरे मारुए पवायंते;
तंसि-प्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवाय[5] मेसंति. ।१३।
संघाडिओ[6] पविसिस्सामी, एधा य समादहमाणा;
पिहिता वा सक्खामो, अतिदुक्खं हिमगसंफासा ।१४।
तंसि भगवं अपडिन्ने, अधा वियडे अहियासए दविए;[7]

१ पृष्ट एकचरा उपपत्यादयः पप्रच्छु रितिशेषः ३ अव्यकृते ४ प्रवेपंते यद्वा प्रवेदयंत्यनुभवंति ५ निवातं---वातरहितस्थानं. ६ वस्त्राणि ७ संयमी

वळी भगवान हर्ष शोक टाळीने बहु थोडुं बोलता थका विचरता रहेता. [४९३]

(निर्जन स्थळमां भगवानने ऊभेला जोइ) लोको पूछता अथवा रात्रिने वखते जार पुरुषो तेमने पूछता के अरे तुं कोण उभो छे? आ वखते भगवान कशुं नहि बोलता; तेथी तेओ चीडवाइ वखते भगवानने मारवानुं पण करता. पण भगवान तो निरीह बन्या थका समाधिमां तल्लीन बन्या रहेता. [४९४]

" अरे अहीं कोण ऊभो छे " एवं लोकोए पूछतां, कोइ वखते भगवान बोलता के " हुं भिक्षुक ऊभो छुं. " ते सांभळी जो तेओ बोलता के " अहींथी जल्दी जतो रहे " तो भगवान अन्यत्र जता. कारण के ए उत्तम आचार छे. अने जो तेओ जवानुं कशुं नहि कहेतां कषायवंत बनता तो भगवान मौन रही त्यां ज [जे थवानुं हशे ते थशे एम विचारी] ध्यान करता. (४९५)

ज्यारे शिशिर ऋतुमां थंडो पवन जोसथी फुंकातो हतो, ज्यारे लोको थरथर

णिक्खस्स एगदा राओ, चाएति[1] भगवं समियाए. ।१५।
(४९६)

एस विही अणुक्कंतो माहणेण मईमया;
बहुसो अप्पडिण्णेण, भगवया एवं रियंति—त्ति बेमि।१६।
(४९७)

[तृतीय उद्देशः]

तणफासे सीयफासे, तेउफासे य दंसमसगेय;

---

१ शक्नोति

धूजता हता, ज्यारे अपर साधुओ तेवी थंडीमां निर्वात [वायरा विनानी] जग्या शोधता हता, तथा वस्त्रो पहेरवाने चहाता हता, ज्यारे तापसो लाकडां वाळीने शीतनुं निवारण करता हता, एम ज्यारे शीत सहन करवुं घणुं दुःखभरेलुं हतुं, तेवे समये संयमी भगवान (वीर प्रभु) निरीह बनी खुल्ला स्थानमां रही शीतसहन करता रहेता. कदाच अत्यंत शीत पडतां ते सहन करवुं विकट पडतुं त्यारे रात्रिए (मुहूर्त्त मात्र) बाहेर हरी फरीने साम्यपणे रहेता थका पाछा अंदर बेशी; ते शीत सहेता रहेता. [४९६]

ए रीते मतिमान् निरीह भगवाने वारंवार एवी विधि पालन करी छे; तेम बीजा मुनिओए पण वर्त्तवुं. [४९७]

त्रीजो उद्देशः

(वीर प्रभुए केवां परीषह सह्यां.)

(महावीरदेव) सदा समितिवंत बनीने कर्कश स्पर्श, ताढ, ताप, तथा दंश

अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं ।१। [४९८]
अह दुच्चर—लाढचारी, वज्जभूमिं च सुब्भभूमिं च;
पंतं सेज्जं सेविंसु, आसणगाइं चेव पंताइं ।२। [४९९]
लाढेसु तस्सु—वसग्गा, बहवे[1] जाणवया लूसिंसु;
अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु णिवतिंसु ।३।
(५००)
अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए डसमाणे;
छुछुकारंति आहंतुं, "समणं कुक्कुरा डसंतु" ।४। [५०१]
एलिक्खए[2] जणो भुज्जो, बहवे वज्जभूमिइ फरुसासी;

१ उपसर्गाणां विशेषणं २ ईदृक्षः

अने मशकना डंखो विगेरे भयंकर परीषहो सहन करता. [४९८]

वळी भगवान दुर्गम्य लाटदेशना वज्रभूमि तथा शुभ्रभूमि नामना बन्ने भागोमां जइ विचर्या हता. त्यां तेमने रहेवाने घणी हलकी वसतिओ मळती. तेमज पीठफळकादि आसन पण घणां हलकां मळता. [४९९]

लाट देशमां ते भगवानने घणा उपसर्गो थया. त्यांना लोको तेमने मारता; भोजन पण लूखुं मळतुं; तथा कूतराओ आवी वीरप्रभुना ऊपर पडता ने करडता. [५००]

आ वखते बहु थोडा ज लोक ते कूतराओने करडतां निवारता.[1] नहि तो; घणा लोको तो उल्टा भगवानने मारता थका तेमने करडवा माटे कूतराओने छुछुकारीने तेमना तरफ मोकलावता. [५०१]

आवा लोकोमां भगवान घणीवार विचर्या. त्यांनी वज्रभूमिना घणाखरा लोक लुखुं खाता तेथी तेओ वधारे क्रोधवाळा होवाथी साधुने देखी कूतराओवडे तेने एटलो बधो उपद्रव करता के त्यां (बौद्धधर्मी) भिक्षुको त्याना भोमिया छतां

१ अटकावता.

लट्ठिं गहाय णालीयं, समणे[1] तत्थएवि विहरिंसु ।५।

एवंपि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणएहिं;
संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि तत्थ लाढेहिं[2] ।६।

णिधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसज्ज मणगारे;
अह गामकंटए[3] भगवं, ते हियासए अभिसमेच्चा ।७।
[५०२]

णागो[4] संगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे; (५०३)
एवंपि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वोवि एगदा गामे ।८।

उवसंकमंत—मपडिन्नं, गामंतियंपि अप्पत्तं;
पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु, "एताती परं पलेहि[5]" त्ति. ।९।
[५०४]

---

१ शाक्यादयः २ लाटेषु ३ रूक्षालापान् ४ हस्ती ५ पर्येहि

पण एक म्होटी लाकडी के नाळ हाथमां पकडीने विचरतां, तेम छतां पण कूतराओ तेमनी पूठ पकडता तथा करडी खाता. ए रीते लाटदेश विहार करवाने घणो विकट हतो. त्यां वीरप्रभुए आरंभ त्याग करीने शरीरने पण वोसरावीने निर्जराने अर्थे नीच जनोनां कडवां वाक्यो सहन कर्यां. [५०२]

ए रीते जेम बळवान हस्ती संग्रामना मोखरे पोंहोंची जय मेळवी पराक्रम बतावे तेम वीरप्रभु ए विकट उपसर्गोना पारंगामी थया. [५०३]

वळी एक वखते जंगलमां चालतां चालतां सांज लगी तेमने कोइ गाम पण प्राप्त थयुं नहोतुं. अने कोइ स्थळे वळी तेओ गामना पादर जता के त्यांना अनार्य लोको सामा आवी तेमने मारता अने बोलता के "अहिंथी दूर जतो रहे" [५०४]

सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसीया ।३।
आयावई य गिम्हाणं, अत्थति उक्कुडुए अभितावे; [५१२]
अदु जावई[1]–त्थ लूहेणं, ओयण–मंथु–कुम्मासेणं ।४।
एताणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ठमासे य जावए भगवं; (५१३)
अवि इत्थ एगया भगवं, अद्धमासं अदुवा मासंपि ।५।
अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा विहरित्था[2];
रायोवरायं[3] अपडिन्ने, अन्नगिलाय[4]–मेगया भुंजे ।६।
छट्ठेण एगया भुंजे, अदुवा अट्ठमेणं दसमेणं;
दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ।७।
(५१४)
णच्चाण से महावीरे, णोचिय पावगं सय मकासी;
अन्नेहिं वा ण कारित्था, कीरंतंपि णाणुजाणित्था ।८। (५१५)

१ यापयति २ जलमपीत्वा इति शेषः ३ रात्रोपरात्रं ४ पर्युषितान्नं.

भगवान शीआळामां छांयडामां बेशी ध्यान करता, अने ऊनाळामां उत्कुटुक आसने तडकामां बेशी ताप सहन करता. [५१२]

शरीर–निर्वाहार्थे तेओ लुखा भात, मंथु[1] अने अडदोनो आहार करता. एम आठ महिना लगण ए त्रण चीजोज भगवाने वापरी. [५१३]

वळी पनर पनर दिवस लगी महिना महिना लगी तथा बे बे महिना ने छ छ महिना लगी भगवान पाणी नहि वापरतां दिनरात निरीह थइ विचरता. वळी अन्न पण ग्लान एटले ठरीगएलो वापरता ने तेपण त्रीजे त्रीजे, चोथे चोथे, तथा पांचमे पांचमे दहाडे वापरता. [५१४]

तत्त्वजाणीने महावीर देव पोते पाप नहि करता, बीजापासे नहि करावता, तथा करनारने रुडुं नहि मानता. [५१५]

१ ठळियासहित बोरनो भुको Pounded Jujube [Jacobi]

गामं पविस्स णगरं वा, घास—मेसे कडं परट्ठाए;
सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयतजोगयाए सेवित्था. ।९।
(५१६)
अदु वायसा दिगिंच्छित्ता, जे अन्ने रसेसिणो सत्ता;
घासेसणाए चिट्ठंते, सययं णिवातिए य पेहाए ।१०। (५१७)
अदु माहणं व समणं वा, गामपिंडोलगं च अतिहिं वा;
सोघागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा विट्ठितं पुरतो ।११।
वित्तिच्छेदं वज्जंतो, तेसि—मप्पत्तियं परिहरंतो;
मंदं परिक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घास—मेसित्था ।१२।
(५१८)
अवि सूइयं वा सुक्कं वा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं;
अदु बक्कसं पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ।१३।
(५१९)

भगवान शहेर के गाममां जइ बीजाने माटे करेलो आहार मागता, अने ए रीते पवित्र आहार लइने सावधानपणे ते आहार वापरता. [५१६]

भिक्षा लेवा जतां भगवानने रस्तामां भूख्या कागडा विगेरे पक्षीओ जमीनपर रहीने हमेशां पोतानो आहार लेतां जो नजरे पडता तो, भगवान तेमने कशी पण अडचण न पाडता थका चाल्या जता. [५१७]

तथा त्यां कोइ ब्राह्मण, श्रमण, भिखारी, विदेशी, चांडाळ, मार्जार के कूतराने कंइ मळतुं देखी तेमने विघ्न न पाडता थका तथा मनमां कशी अप्रीति नहि धरता थका धीमे धीमे चाल्या जता (किंबहुना, भगवान कुंथु[१] विगेरेनी पण हिंसा नहि करता थका भिक्षाटन करता.) [५१८]

वळी आहार पण भींजेलो, के सूकेलो, ठरी गएलो के बहु दिवसपरनो रांधेलो अडदनो अथवा जुनाधान्यनो के जवविगेरे नीरस धान्यना जेवो मळी आवे तोते शांतभावे वापरता, अगर नहि मळतो तोपण शांतभावे रहेता. [५१९]

१ कुंथवा

द्वितीयः श्रुतस्कंधः

(प्रथम चुडा)

पिंडैषणानामकं दशम मध्ययनम्.

(प्रथमो उद्देशः)

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए[1]

1 पिंडपातप्रतिज्ञया.

श्रुतस्कंध बीजो.

(पहेली चूळिका)

अध्ययन दशमुं.

पिंडैषणा.

पहेलो उद्देश.

[मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.]

जो कोइ भिक्षु अथवा भिक्षुणी आहार लेवा माटे गृहस्थना घरे जाय अने

पुण ओसहीओ जाणेज्जा अकसिणाओ असासियाओ विदलकडाओ तिरिच्छच्छिण्णाओ अव्वोच्छिण्णाओ तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतभज्जियं पेहाए, फासुयं एसणिज्जंति मण्णमाणे लाभे संते पडिग्गाहेज्जा[1] (५२६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे समाणेसे ज्ज पुण जाणेज्जा पिहुयंवा[2], बहुरयं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउलपलंबं वा, सइं[3] भज्जियं अफासुयं अणेसणिज्जं मण्णमाणे लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा, (५२७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा पिहुयं वा, जाव चाउलपलंबं वा, असइं भज्जियं दुक्खुत्तो वा भज्जियं तिक्खुत्तो वा भज्जियं फासुयं एसणिज्जं जाव लाभे संते पडिग्गाहेज्ज। (५२८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावतिकुलं जाव पविसित्तुकामे णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[4] वा, अपरिहारिएण सद्धिं, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज

१ कारणेसति २ पृथुकं. ३ सकृत् ४ परिहारिकः साधुः

वस्तुओ लइने वापरवी.[1] (५२६)

भिक्षु अथवा भिक्षुणीए एकज वार पौंवा, ममरा, पोंक. घहुंनो भूको, चोखा, कणक विगेरे अप्रासुक अने अयोग्य जाणीने ग्रहण करवां नहि. (५२७)

जो ए पौंवा विगेरे वेवार के त्रणवार शेकेला होय तो ते प्रासुक अने योग्य जाणी ग्रहण करवा. [५२८]

(गृहस्थना घेर प्रवेश करवानी विधि)

भिक्षु अथवा भिक्षुणीए आहार लेवा माटे गृहस्थना घर तरफ जतां अन्यतीर्थिको साथे अथवा ब्राह्मणो साथे अथवा पासत्थाविगेरे साथे तेना घरमां पेसवुं

१ प्रयोजन होय तो.

वा, [५२९]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी बा, बहिया वियारभूमिं[1] वा, विहार भूमिं[2] वा, णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा णो अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा, परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं बहिया विचारभूमिं वा, विहारभूमिं वा, णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा [५३०]

से भिक्खूवा [२] गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं, गामाणुगामं दुइज्जेज्जा (५३१)

से भिक्खूवा [२] जाव पविट्ठे समाणे से णो अण्णउत्थिअस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा; असणं वा [४] देज्जा वा अणुपदेज्जा[3] वा [५३२]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा अ॰

---

१ संज्ञाव्युत्सर्गभूमिं. २ स्वाध्यायभूमिं. ३ अनुप्रदापयेत् परेण.

के नीकळवुं नहिं. (५२९)

एज मुजब दिशाए तथा स्वाध्यायस्थळमां पण अन्यतार्थिक, के पासत्थाओ साथे आववुं के जवुं नहिं. [५३०]

वळी ग्रामानुग्राम विचरतां पण अन्यतीर्थिक गृहस्थ अने पासत्थाओ साथे विचरवुं नहिं. [५३१]

तथा ए त्रणेने मुनिए आहार देवो के देवराववो नहि. (५३२)

गृहस्थे जे आहार निर्ग्रंथ साधुनी सारु एटले के अमुक साधार्मिक साधुने उद्देशीने छकायनी हिंसा करी तैयार कर्यो होय, वेचातो लीधो होय, उधारे लीधो होय कोइना पासेथी झूंटावी लीधो होय के मालेकनी रजा वगर लइ राख्यो होय तेवो आहार ते गृहस्थ कोइ पण मुनि के आर्याने आपवा मांडे तो तेमणे जाणतां छतां ते आहार ग्रहण नहि करवो. अगर जो के ते आहार ते गृहस्थे पोते कर्यो होय अथवा बीजाए कर्यो होय, घरथी बाहेर काढयो होय अथवा न काढयो

सणं वा (४) अस्संपडियाए[1] साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ, समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं[2] अच्छेज्जं[3] अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेंति, तहप्पगारं असणं वा (४) पुरिसंतरकडं अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा, अनीहडं वा, अत्तट्ठियं वा, अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा, अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा, अणासेवियं वा, अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५३३

एवं बहवे साहम्मिया, एगा साहम्मिणी, बहवे साहम्मिणीओ, समुदिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा[4] (५३४)

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) बहवे समण[5] माहण-आतिथि किवण-वणीमए[6] पगणिय पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं जाव सत्ताइं समारब्भ आसेवियं वा अफासुयं अणेसणिज्जंति मण्णमाणे लाभे संते जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५३५)

१ अस्वप्रतिज्ञया, निर्ग्रंथप्रतिज्ञया. २ उच्छिन्नकं. ३ आच्छेद्यं ४ पूर्वपश्चिमतीर्थंकरमुनिना मयं कल्पः ५ शाक्यादयः श्रमणाः ६ वनीपकाः बंदिप्रायाः

होय, ते गृहस्थे ते आहार पोतानो करी राख्यो होय अगर न होय, तेणे वापरेलो होय तोपण ते अप्रासुक अने अनेषणीय जाणीने मुनिए के आर्याए ग्रहण न करवो. (५३३)

ए रीते घणा साधर्मिक साधुना माटे करेलो आहार तथा एक के घणी साध्वीओ माटे करेलो आहार पण कोइ साधु के साध्वीए ग्रहण करवो नहि.[1] (५३४)

जे भोजन, गृहस्थे घणा पण मुकरर संख्यामांना श्रमण, ब्राह्मण, प्राहूणा, दीन, के चारणभाटना माटे करेलुं होय ते वापरेलुं छतां के अणवापरेलुं छतां अप्रासुक अने अनेषणीय गणी मुनिए नहि लेवुं. (५३५)

१ पेहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ माटेज आ नियम छे.

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं जाव पविट्ठे समाणे से जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) बहवे समण माहण—अतिथि किवण—वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं (४) जाव आहट्टु चेतेति, तं तहप्पगारं असणं वा (४) अपुरिसंतरकडं जबहियाणीहडं अणत्तट्ठियं अपरिभुत्तं अणासेवितं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५३६)

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं बहियानीहडं अत्तट्ठियं परिभुत्तं आसेवियं फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्जा (५३७)

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसितुकामे से जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, इमेसु खलु कुलेसु णितिए पिंडे दिज्जति णितिए अग्गपिंडे दिज्जति, णितिए भाए दिज्जति, णितिए अवड्ढभाए दिज्जति, तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा (५३८)

जे भोजन, गृहस्थे घणा श्रमण, ब्राह्मण, परोणा, दीन, के भाटचारणना माटे करेलुं होय पण ते तेणे पोतेज कर्युं होय, घरथी बाहेर पण नहि लाव्युं होय अने हजु पोताना खपनुं गणी वापर्युं पण न होय तो ते अप्रासुक अने अनेषणीय गणीने मुनिए नहि लेवुं. [५३६]

पण जो ते भोजन गृहस्थे बीजाना हाथे कराव्युं होय, घर बाहेर राख्युं होय अने पोते पोताना खपनुं गणी ते वापरेलुं पण होय तो ते प्रासुक अने एषणीय जाणीने ग्रहण करवुं. [५३७]

जे कुळोमां हमेशां दान देवातुं होय अथवा जमती वेळा सरुआतमां दान माटे अग्रपिंड कहाडी राखवामां आवतो होय अथवा आखा भोजननो द्वितीयांश के चतुर्थांश दानमां अपातो होय अने तेथी त्यां घणा याचको आवता जता पडता होय तेवा कुळोमां मुनिए आहार-पाणी माटे न जवुं. [५३८]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सयाजए-त्ति बेमि [५३९]

(द्वितीय उद्देशः)

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) अट्ठमिपोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तेमासिएसु वा, चाउम्मासिएसु वा, पंच-मासिएसु वा, छम्मासिएसुवा[1] उऊसु वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्टेसु वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे एगातो उक्खातो[2] परि-एसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमु-

१ उत्सवेषु २ पिठरकात्.

साधु के साध्वीनुं एज कर्त्तव्य छे के हमेशां सर्व पदार्थोमां समभाव राखी ज्ञानदर्शन अने चारित्र साचवतां थकां सदा उद्योगी थइ वर्त्तवुं. [५३९]

बीजो उद्देश.

[मुनिए अशुद्ध आहार न लेवो तथा जमणवारमां न जवुं]

गृहस्थना घरे ज्यारे अष्टमीना उपवासना उत्सवप्रसंगे अथवा अर्द्धमासिक, मासिक, द्विमासिक, चतुर्मासिक, छमासिक, उत्सवना वखते अथवा ऋतुओना अंत्यादिने के आद्यदिवसे घणाएक [शाक्यादि] श्रमण, ब्राह्मण, परोणा, दीन, अने भाटच रणोने एक के अनेक वासणोमांथी भोजन पीरसातुं देखवामां आवे

हातो वा कालेवातितो वा संणिहिसंणिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा [४] अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं अफासुयं अणेसणिज्जं णो पडिग्गाहेज्जा (५४०)

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं जाव आसेवितं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा (५४१)

से भिक्खूवा [२] जाव पविट्ठे समाणे से जाइं पुण कुलाइं, जाणेज्जा, तंजहा, उग्ग कुलाणि [१] वा, भोगकुलाणि [२] वा, राइण्णकुलाणि वा, खत्तियकुलाणि [३] वा, इक्खागकुलाणि वा, हरिवंसकुलाणि वा, एसियकुलाणि [४] वा, वेसियकुलाणि वा, गंडागकुलाणि [५] वा, कोट्टागकुलाणि [६] वा, गामरक्खकुलाणि वा, वोक्कसालियकुलाणि [७] वा, अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगंच्छिएसु अगरहितेसु वा, असणं वा (४) फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्ज़ा (५४२)

---

१ आरक्षककुलानि २ राज्ञः पूज्यस्थानीयानी ३ राष्ट्रकूटादीनि ४ गोपालकुलानि. ५ नापितकुलानि ६ वर्द्धकिकुलानि ७ तंतुवायकुलानि.

अने हजु गृहस्थे ते भोजन जाते कर्याछतां वापर्युं न होय तो मुनिए ते भोजन अप्रासुक अने अनेषणीय जाणी न लेवुं. [५४०]

अने जो ते कोइ बीजा पुरुषे रांधी तैयार कर्युं होय अने गृहस्थोए वापर्युं होय तो ते मुनिए योग्य जाणी ग्रहण करवुं. [५४१]

मुनिए, उग्रकुळ,[१] भोगकुळ, राजन्यकुळ, क्षत्रियकुळ, इक्ष्वाकुकुळ, हरिवंशकुळ, एष्यकुळ,[२] वैश्यकुळ, गंडकुळ,[३] कोट्टागकुळ,[४] ग्रामरक्षककुळ अने बोकशाळीयकुळ, [५] तथा एवीज जातना बीजा पण अतिरस्कृत अने अनिंदित कुळोमां निर्दोष आहार लेवा जवुं. [५४२]

---

१ उग्रथी हरिवंशलगीना छकुळो रजपूतवर्गना छे. अने एष्यथी बोकशाळीयलगीना छ कुळो वैश्यवर्गना छे. २ गोवाळ. ३ उद्घोसणा करनार ४ सुतार ५ साळवी

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) समवाएसु वा, पिंडणियरेसु वा, इंदमहेसु वा, खंदमहेसु वा, रुद्दमहेसु वा, मुगुंदमहेसु वा, भूतमहेसु वा, जक्खमहेसु वा, णागमहेसु वा, थूभमहेसु वा, चेइयमहेसु वा, रुक्खमहेसु वा, गिरिमहेसु वा. दरिमहेसु वा, अगडमहेसु वा, तडागमहेसु वा, दहमहेसु वा, णदिमहेसु वा, सरमहेसु वा, सागरमहेसु वा, आगरमहेसु वा, अण्णतरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु बहवे समण—माहण अतिहि किवण—वणीमए एगातो उक्खातो परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं, जाव संणिहिसंणिचयातो वा परिएसिज्जमाणे पेहाए तहप्पगारं असणं वा [४] अपुरिसंतरकडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा (५४३)

अह पुण एवं जाणेज्जा, दिण्णं जं तेसिं दायव्वं, अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए गाहावतिभारियं वा, गाहावतिभगिणिं वा, गाहावतिपुत्तं वा, गाहावतिधूयं वा, सुण्हं वा, धातिं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं

ज्यारे गृहस्थना घरे मेळो भरायो होय अथवा पितृभोजन होय अथवा इंद्र, स्कंद, रुद्र, बळदेव, भूत, यक्ष, के नागनो महोत्सव होय अथवा स्तुप के चैत्यनो महोत्सव होय अथवा वृक्ष, गिरि, कूवा, तळाव, द्रह, नदि, सर, सागर के आगरने अथवा एवा जेवी गमे ते बाबतनो महोत्सव होय अने तेथी त्यां घणाएक [इत्यादि] श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दीन तथा भाटचारणोने एक के अनेक वासणोथी भोजन पीरसातुं होय अने ते भोजन आलेदो हाथे करेलुं छतां हजु ते गृहस्थोए वापरेलुं न होय तो तेवा आहारने अशुद्ध गणी मुनीए ते आहार न लेवो. [५४२]

पण जो त्यां मुनिने एम जणाय के जेमने ए भोजन आपवानुं हतुं तेमने अपायुं अने हवे गृहस्थ लोको तेने वापरे छे तो मुनिए गृहस्थनी स्त्रीने अथवा बेनने अथवा पुत्र, पुत्री के पुत्रवधूने अथवा धाइ, दास, के दासीने पेहे-

वा, कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा, "आउसो"त्ति वा, "भगि णी"त्ति वा, "दाहिसि मे इत्तो अन्नयरं भोयणजायं?" सेवं वदंतस्स परो असणं वा, [४] आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) सयं वाणं जाएज्जा, परो वा से देज्जा, फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा (५४४).

से भिक्खू वा [२] परं अद्धजोयणमेराए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए (५४५)

से भिक्खू वा [२] पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे अणाढा-यमाणे, पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे अणाढायमाणे दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे अणाढायमाणे (५४६)

जत्थेव सा संखडी सिया, तंजहा गामंसि वा, णगरंसि वा, खेडं-

त्यां जोइने कहेवुं के हे आयुष्यमान् अथवा बेन, तमे आ भोजनमांथी अन्यतर भोजन आपशो?. आम कहेता मुनिने तेओ अशनादि आहार आपवा मांडे तो मुनिए निर्दोष जाणी ते आहार लेवो. (५४४)

बीजा ग्रामोमां संखडि [जमणवार] होय तो एवे वखते मुनिए बे गा-उनी हदमां पण संखडिमांथी भोजन लेवा माटे न जवुं. [५४५]

जो पूर्व दिशामां संखडि होय तो मुनिए संखडि तरफ कशी लालच न राखतां पश्चिमदिशा तरफ जता रहेवुं. जो पश्चिमबाजु संखडि होय तो पूर्वतरफ वळवुं. जो दक्षिण बाजु संखडि होय तो उत्तर तरफ वळवुं. अने जो उत्तरबाजु संखडि होय तो दक्षिणतरफ वळवुं. [५४६]

विदश्चना, ज्यां ज्यां गाममां, नगरमां, खेडामां, कबाडामां, कस्बामां, शहेरमां, आगरोमां, बंदरमां, व्यापारस्थळमां, तीर्थस्थळमां, राज्यधानीमां, के नगरोपस्थळमां [कांपमां] संखडि होय तो संखडिने मनमां धारीने त्यां न जवुं.

सी वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोण-मुहंसि वा, निगमंसि वा, आसमंसि वा, रायहाणिंसि वा, संणिवेसंसि वा, संखडिं संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । केवली बूया "आयाण-मेयं" (५४७)

संखडिं संखडिपडियाए अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उद्देसियं वा, मीसजायं वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्छेज्जं वा, अणिसट्ठं वा, अभिहडं वा, आहट्टु दिज्जमाणं भुंजेज्जा. अस्संजए भिक्खुपडियाए खुड्डियदुवरियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियदुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पव्वायाओ कुज्जा, अंतोवा बहिंवा उवसयस्स, हरियाणि छिंदिय [२] दालिय [२] संथारगं संथारेज्जा, "एस विलुंगयामो सिज्जाए[1]." तम्हा से संजए णियंठे अण्णयरं वा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्ज

१ इतिविविच्य

कारण के केवळी भगवाने कह्युं छे के "संखडिमां जवाथी कर्म बंधाय छे" [५४७]

जो मुनि संखडिमांथी भोजन लेवा माटे संखडि तरफ जशे तो आधाकर्मिकादिदोष-युक्त दुष्ट आहारमां फसाइ पडशे. वळी असंयति ग्रहस्थो तेना सारु नाना दरवाजावाळी जग्याओने मोहोटा दरवाजावाळी करशे अथवा मोटा दरवाजावाळी जग्याओने नाना दरवाजावाळी करशे, सीधी जग्याओने आडी करशे, आडीओने सीधी करशे, बहु पवनवाळी जग्याओने निर्वातजग्याओ करशे, निर्वातजग्याओने बहु पवनवाळी करशे, वळी अंदर के बहार वनस्पतिओ कापी तोडी मकान सुधरावशे अथवा साधुने अकिंचन धारी तेना माटे सूवानुं बिछानुं पथरावशे. (एम अनेक दोष संभवे छे.) माटे निर्ग्रंथ संयति मुनिए अनेक प्रकारे

गमणाए (५४८)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठे हिं समिते सहिते सयाजये-त्ति बेमि (५४९)

(तृतीय उद्देश :)

से एगया अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिवित्ता छड्डेज्ज वा वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वासेदुक्खे रोयातंके समुप्पज्जेज्जा, केवलीबूया ' आयाण मेयं. " (५५०)

मनुष्यनी हयातीमां अने मनुष्यना मरण पछी कराती संखडिओमां भोजन लेवा माटे नहि जवुं. [५४८]

मुनिनुं एज कर्त्तव्य छे के हमेशां सर्व पदार्थोमां समता राखी पवित्र गुणो साचवतां थकां यत्नवंत थइ वर्त्तवुं [५४९]

त्रीजो उद्देश.

(मुनिने जमणवारमां जवाथी थता गेरफायदा)

जो मुनि संखडिभोजन करशे तो कोइ वखते तेने तेनाथी वमन के विशूचिकाना दुःखमां उतरवुं पडशे. अथवा तो खाधेलुं अन्न रुडी रीते न पचतां कुष्ठ के शूळादिक रोग उत्पन्न थशे. माटे केवळी भगवान जणावे छे के संखडिभोजन कर्मबंधनो हेतु छे. [५५०]

इह खलु भिक्खू गाहावतीहिं वा, गाहावतिणीहिं वा, परिवाय-एहिं वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झं सद्धिं सोडं पाउ[1] भो वतिमिस्सं हुरत्था[2] वा उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं संमिस्सिभाव-मावज्जेज्जा अण्णमण्णे वा से मते विप्परियासियभूते इत्थिविग्गहे वा कि-लीवे वा तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया "आउसंतो समणा, अहे आरामं-सिवा, अहे उवस्सयंसि वा, राओ वा, वियाले वा, गामधम्मणियंतियं कट्टु रहस्सियमेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टामो." तं चेगतितो सातिज्जेज्जा। अकरणिज्जं चेयं संखाए[3]। एते आयतणा संति संचिज्जमाणा पच्चवाया भवंति तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छा संखडिं वा संखडिं-

१ पातुं पीत्वेत्यर्थः २ बहिः ३ संखडिगमनं न कुर्यादितिशेषः

वळी ए संखडिओमां एकठा थएला गृहस्थो, गृहस्थनी स्त्रीओ, परिव्राजको, तथा परिव्राजिकाओ सिवे[?] साथे मुनि त्यां जइ एकठो भेळायाथी कदाच म-दिरापानमां पण फसी पडे[1] अने तेथी ते मदिरामत्त बनी पोताना मुकामे न-हि पोहोचतां त्यांज लथडी पडे छे. तथा त्यां निसाना आवेशथी बेहोश थइ स्त्रीओमां आसक्त थाय छे. अथवा त्यां रहेली स्त्रीओ के नपुंसकोमांनुं कोइ एक मुनिपर आसक्त थइ कहेवा मांडे छे के "हे आयुष्मन् श्रमण, आ बगीचामां अथ-वा उपाश्रयमां राते अथवा अमुक वखते आपणे एकठा मळी भोगविलासमां व-र्तीशुं." एम कही तेओ मुनिने विषयोथी ललचावी कबजे करे छे. अने तेमां कदाच एकलो मुनि फसाइ पण पडे छे, माटे ए वातने अकरणीय जाणीने मुनिए संखडिमां नहि जवुं. कारण के त्यां जवाथी उपर मुजब तथा ते सिवाय पण वखते वधता गेरफायदा थवा संभव छे, माटे निर्ग्रंथ संयतिए पूर्वसंखडि के पश्चात्संखडिमां भोजनार्थे जवानो इरादो नहि करवो. [५५१]

१ केमके लोलुप मनेम सर्व कंइ संभवे.

संपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए (५५१)

से भिक्खू वा (२) अन्नतरं संखडिं वा सोच्चा णिसम्म संपहावेति उस्सुयभूतेण अप्पाणेणं "धुवा संखडी[1]" णो संचाएति तत्थ इयरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए। माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा। से तत्थ कालेणं अणुपविसित्ता तत्थेतरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहरं आहारेज्जा (५५२)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा गामं व जाव रायहाणिं, वा, इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संखडी सिया, तंपि य गामं वा रायहाणिं वा संखडिंपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। केवली बूया आयाण—मेयं (५५३)

आइण्णोवमाणं संखडिं अणुपविस्समाणस्स पाएण वा पाए अक्कं-

---

१ इतिकृत्वेति शेषः

जो कोइ मुनि पूर्वसंखडि के पश्चात्संखडि थती सांभळी त्यां उत्सुकता धरी चाल्यो जशे तो त्या जूदा जूदा कुळोमांथी आधाकर्मादिदोषरहित पवित्र आहार ग्रहण करीने वापरी शकवानो नथी, किंतु त्यां दूषित आहार वापरीने दोषपात्र थवानो. माटे मुनिए संखडिमां नहि जवुं. किंतु भिक्षाना समये जूदा जूदा कुलोमां जइने पवित्र आहार मेळवी ते वापरवो. [५५२]

जे गाम के राजधानीमां संखडि थवानी होय त्यां तेना माटे मुनिए जवानो इरादो न करवो. केमके केवळज्ञानिओ बोल्या छे के तेम करतां कर्मबंध थाय छे. [५५३]

जे संखडिमां घणा लोक एकठा मळ्या होय अने भोजन थोडुं रंधायलुं होय त्यां जो मुनि जाय तो त्यां भीडंभीडामां तेना पग बीजाओना पगतळे

तपुव्वे भवति, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवति, पाएण[1] वा पाए आवडियपुव्वे भवति, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवति, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवति, दंडेण वा अट्ठिणा वा मुट्ठिणा वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वे भवति, सीतोदएण वा उसित्तपुवे भवति, रयसा वा परिघासिय पुव्वे भवति, अणेसणिज्जेण वा परिभुत्तपुव्वे भवति, अ-ण्णेसिं वा, दिज्जमाणे पडिगाहितपुव्वे भवति, तम्हा से संजए णिग्गंथे तहप्पगारं आइण्णोमाण संखडिं संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्जा ग-मणाए (५५४)

से भिक्खू वा [२] गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) एसणिज्जं सिया अणेसणिज्जं सिया वितिगिच्छसमावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए तहप्पगारं असणं वा (४) लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा. (५५५)

१ पात्रेण.

दवाशे, हाथ वीजाना हाथो साथे अथडाशे, पात्र वीजाओना पात्रो साथे अफळाशे, माथुं वीजाना माथा साथे अडकाशे अने शरीर वीजाना शरीर साथे घसाशे. वळी त्यां तेवी भीडमां लाकडी, हाडका, मूठ, पत्थर के खप्परनो मार पण कदाच सहेवा पडशे. अगर कोइ मुनिना शरीरपर ताढुं पाणी फेंकशे, अथवा धूळ फेंकशे, अथवा मुनिने त्यां अशुद्ध आहार मळशे, अथवा बीजाने मळवानुं छतां वचगाळेथी मुनि ते आहार झुंटावी लेशे. [ए रीते अनेक दोष संभवे छे] माटे निर्ग्रंथ मुनिए तेवी जातनी संखडिमां भोजन मेळववाना इरादाथी कदापि नहि जवुं. [५५४]

गृहस्थना घरे भिक्षा लेवा जतां मुनिने जे आहार निर्दोष के सदोष छतां शक भरेलो जणाय तो ते आहार तेवा मलिनाशयथी ग्रहण न करवो. [५५५]

से भिक्खू वा [२] गाहावतिकुलं पविसिस्कामे सव्वं भंडग—मायाय गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा (५५६)

से भिक्खू वा [२] बहिया विहारभूमिं वा विचारभूमिं वा णिक्खम्ममाणे पविसमाणे सव्वं भंडग मायाए बहिया विहारभूमिं वा विचारभूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा (५५७)

से भिक्खू वा [२] गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडग—मायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा (५५८)

से भिक्खू वा [२] अहपुण एवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छसंपातिमा वा तसा पाणा संघडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं भंडग मायाय गाहावइकुलं पिंडवाय पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा, बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमि वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा. गामाणुगामं दूइज्जेज्ज वा [५५९]

मुनिए[१] गृहस्थना घरे भिक्षा लेवा जतां सर्व धर्मोपकरण साथे लइने त्यां जवुं आववुं. [५५६]

तेमज स्वाध्यायभूमिपर अथवा दिशाए जतां पण तेवीज रीते जवुं आववुं, [५५७]

अने ग्रामानुग्राम विहार करतां पण तेज रीते वर्त्तवुं. [५५८]

पण जो वरसाद बहु वरसतो होय अथवा दव बहु पडतुं होय अथवा आकरा वायुथी धूळ बहु उडती होय अथवा झीणा जीवजंतुओ घणा ऊडतां होय तो त्यां सर्व धर्मोपकरण साथे लइने भिक्षा लेवा के भणवा दिशाए या ग्रामांतरे जवा आववानुं करवुं नहि. [५५९]

१ आ सूत्र जिनकल्पिक विगेरे माटे छे. एम टीकाकार जणावे छे. इहां समाचारी ए छे के जिनकल्पिके तो तेवे टांकणे चालवुं ज नहि. पण स्थविरकल्पिक कारण योगे जाय आवे तो साथे सर्वोपकरण नहि लेवां.

से भिक्खू वा [२] से ज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा; तंजहा, खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण वा, अंतो बहिंत्रा संणिविट्ठाण वा, गच्छंताण वा णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा, असणं वा (४) लाभे संते णो पडिगाहेज्जासित्ति बेमि [५६०]

चतुर्थ उद्देश.

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा मंसाइयं वा, मच्छाइयं वा, मंसखलं वा, मच्छखलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं संपेहाए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंगपणग–दग-मट्टिय–मक्कडासंताणगा, बहवे तत्थ समण–माहण–अतिहि–किवण–वणीमगा उवागता उवागमिस्संति, तत्थाइण्णा वित्ती, णो पण्णस्स

मुनिए चक्रवर्ति प्रमुख क्षत्रियो, राजाओ, ठाकोरो, सरदारो, के राजवंशी लोको, जेओ शहेरमां के शहेर बाहेर रहेता होय या रस्ते प्रयाण करता होय तेमने त्यांथी निमंत्रण छतां या नहि छतां आहार ग्रहण न करवो. [५६०]

चोथो उद्देश.

[मुनिए जमणवारमां न जवुं.]

मुनिए गृहस्थना[१] घरे भिक्षार्थे जतां तेने त्यां एवुं जणाय के अहिं मांस, मत्स्य के मद्यवाळुं विवाहभोजन, मृतकभोजन, या प्रीतिभोजन छे, अने तेने त्यां कोइ लइ जतुं होय, तोपण जो मार्गमां बीज, वनस्पति, ठार, पाणी, के झीणा जीवजंतु घणा होय अथवा त्यां घणाएक [बुद्धधर्मी] श्रमणो, ब्राह्मणो, वटेमार्गुओ, रंक भिक्षुको, के भाटचारणो, आवेला के आववाना होय अने तेथी त्यां बहु भीड थवानी होय जेथी चतुर मुनिने त्यां जवुं वळवुं मुश्केलभरेलुं थइ पडे अने

१ गृहस्थमां तमाम धर्मवाळानो समावेश थायछे.

णिक्खमणपवेसाए, वायणपुच्छणपरियट्टणाणुपेहाए धम्माणुओगचिंताए, सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए (५६१)

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, मंसाइयं जाव संमेलं वा हरिमाणं पेहाए अंतरा से मग्गा अप्पंडा जाव अप्पसंताणगा, णो जत्थ बहवे समणमाहणा जाव उवागमिस्संति, अप्पाइण्णा वित्ती, पण्णस्स णिक्खमणपवेसाए पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेहाए धम्माणुओगचिंताए, सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरेसंखडिं वा पच्छासंखडिं वा संखडिपडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए (५६२)

से भिक्खू वा (२) गाहावइकुलं जाव पविसित्तुकामे से ज्जं पुण जाणेज्जा खीरिणियाओ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए असणं वा (४) उवसंखडिज्जमाणं पेहाए पुरा अप्पजूहिए, सेवं णच्चा णो गाहावइकुलं

पठनपाठन के धर्मोपदेश अटकी पडवाना जणाय तो तेवा स्थळे ते मुनिए जवानो इरादो नहि करवो. [५६१]

पण जो तेवा मांस मत्स्य, के मद्यप्रधान, विवाहभोजन, मृतकभोजन, या प्रीतिभोजनमां मुनिने कोइ तेडी जतुं होय अने मुनिने मार्गमां कशी वनस्पति, जळ, के जीवजतुं नहि जणाय तेमज त्यां श्रमण–ब्राह्मणादिकनी बहु भीड पण नहि होय जेथी मुनिने त्यां जवुं आववुं सुलभ होय अने पठनपाठनादिक पण थइ शके तो तेवा स्थळे [कारणयोगे] मुनिए[१] भिक्षार्थे जवुं पण खरुं. [५६२]

गृहस्थना घरे मुनिए जतां त्यां ए वखते गायो दोवाती होय अथवा भोजन रंधातुं होय अथवा तैयार थइ रहुं छतां हजू बीजा याचकोने अपायुं नहि

१ मुनि रस्ते चाली थाक्यो होय या मांदगीथी उठ्यो होय या दुर्भिक्ष होय विगेरे कारणयोगे मांसादिक त्याग करवा समर्थ मुनिए त्यां जवुं एम टीकाकारे जणाव्युं छे.

पिंडवाय पडियाए णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा । से त्तमायाए एगंत म-वक्कमेज्जा, अणावाय–मसंलोए चिट्ठेज्जा । अहपुण एवं जाणेज्जा, खी-रिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए, असणं वा [४] उवक्खडियं पेहाए, पुरापजूहिते, से एवं णच्चा ततो संजयामेव गाहावातिकुलं पिंडवायपडि-याए पविसेज्ज वा निक्खमेज्ज वा (५६३)

भिक्खागा णामेगे एव माहंसु समाणे वा वसमाणे वा, गामाणु-गामं दूइज्जमाणे, "खुड्डाए खलु अयं गामे संणिरुद्धाए णो महालए, से हंता–भयंतारो बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायारियाए वयह" (५६४)

संति तत्थेगतियस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा, गाहावती वा, गाहावतिणीओ वा, गाहावतिपुत्ता वा, गाहावतिधूयाओ वा, गाहावतिसुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासी वा, दा-सीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा, तहप्पगाराइं कुलाइं पुरेसंथु-

नहि होय तो मुनिए ते घरमां प्रवेश न करवो. किंतु पाछा वळीने कोइ नहि दे-खी शके तेवा स्थळे जइ ऊभा रहेवुं. अने ज्यारे जणाय के गायो दोवाइ रही छे या भोजन तैयार थइ रहुं छे अने बीजा याचकोने अपाइ चूक्युं छे त्यारे यतना-पूर्वक ते गृहस्थना घरे जइने आहार लइ वळवुं. [५३३]

वृद्धपणाथी स्थिरवास करनारा के मासकल्पथी फरनारा मुनिओ नवा आ-वता मुनिओने एम कहे के "हे पूज्य मुनिओ, आ गाम घणुं नानकडुं छे अने अहीं [सूतकादिकथी] घणां घरो रोकायेलां छे. माटे आप बीजा गामे भिक्षा-माटे पधारो." तो मुनिए तेम सांभळी ग्रामांतरे चाल्या जवुं. [५६४]

कोइ गाममां मुनिना पूर्वपरिचित[१] तथा पश्चात्परिचित[२] सगावहाला र-हेता होय, जेवाके;–गृहस्थो, गृहस्थ वानुओ, गृहस्थपुत्रो, गृहस्थपुत्रीओ, गृहस्थ पुत्रवधुओ, दाइओ, दास, दासीओ, अने चाकरो, के चाकरडीओ; तेवा गाममां जतां जो ते मुनि एवो विचार करे के हुं एकवार बधाथी पहेलां मारा सगाओमां भिक्षार्थे जइश, अने त्यां मने अन्न, पान, दूध, दहिं, माखण, घी, गोळ, तेल,

१ स्वपक्षना २ स्त्रीपक्षना श्वशुरादिक.

याणि वा पच्छासंथुयाणि वा पुव्वामेव भिक्खायारियाए अणुपविसिस्सामि, अवेय इत्थ लभिस्सामि पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, नवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं वा, फाणियं वा, पूयं वा, सिहरिणिं वा, तं पुव्वामेव भुच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय संपमज्जिय, ततो पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावतिकुलं पिंडवायपडियाए पविसिस्सामि निक्खमिस्सामि वा। माइट्ठाणं फासे। णो एवं करेज्जा। से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता तत्थियरेयरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा। (५६५)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं। (५६६)

[पंचम उद्देशः]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, अ

मधु, मद्यमांस[1] तिलपापडी, गोळवाळुं पाणी, बुंदी, के श्रीखंड मळशे ते हुं सर्वथी पहेलां खाइ पात्रो साफ करी पछी बीजा मुनिओ साथे गृहस्थना घरे भिक्षा लेवा जइश, तो ते मुनि दोषपात्र थाय छे माटे मुनिए एम नहि करवुं, किंतु बीजा मुनिओ साथे वखतसर जूदा जूदा कुलोमां भिक्षानिमित्ते जइ करी भागमां मळेला, निर्दूषण आहार लइ वापरवो. [५६५]

एज भिक्षु के भिक्षुणीनो पूर्ण आचार छे. [५३३]

पांचमो उद्देश.

[मुनिए कयो आहार लेवो अने कयो नहि लेवो.]

गृहस्थने त्यां रंधाइ तैयार थएला आहारमांथी शरुआतमां थोडुंएक-

१ वखते कोइ अतिप्रमादि गृद्ध होवाथी मद्यमांस पण खावा चाहे माटे ते लीधाछे एम टीकाकार लखेछे.

ग्गपिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्गपिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्गपिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्गपिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए, अग्गपिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्गपिंडं परिट्ठवेज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणाति वा, अवहाराति वा पुरा' जत्थन्ने समण—माहण—अतिहि—किवण वणीमगा खद्धं खद्धं[1] उवसंकमंति, से हंता अहमवि खद्धं उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे णो एवं करेज्जा । (५६७)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि[2] वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । केवली बूया आयाण-मेयं. " । (५६८)

से तत्थ परक्कमेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे वा पवडेमाणे वातत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा खेलेण वा, सिंघाणेण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा सोणिएण वा, उ,

१ त्वरित त्वरितं २ परिखाः

देवताने चडाववामाटे कहाडेला अग्रपिंडनामे आहारने, काहाडती वेळा, नाखती वेळा, लइ जता वेळा, वेंहचती वेळा, खाती वेळा, के देवालयनी चोमेर ऊछाळती वेळा घणाएक श्रमण—ब्राह्मणादिक भिक्षुओ पूर्वे घणी वखत ते आहार खाधेलो अने मेळवेलो होवाथी फरी तेनामाटे त्यां ऊतावळा ऊतावळा दोडया जाय छे. तेमने देखीने मुनि विचारे के हुं पण त्यां जाऊं तो ते दोषपात्र थायछे. माटे मुनिए तेम न करवुं. (५६७)

मुनिए गृहस्थने त्यां भिक्षा लेवा जतां वचगाले गढ, खाइ, कोट, तोरण, के आगळीओ आडी आवे तो ते रस्ते नहि जतां बीजे रस्ते मुनिए त्यां जवुं. कारणके ते रस्ते जतां केवळज्ञानिओ जोखम भरेलुं गणेछे. [५६८]

जे माटे ते रस्ते चालतां कदाच मुनि त्यां लथडी जाय के पडी पण जाय अने तेम थतां तेनुं शरीर, विष्ठा मुत्र, श्लेष्म, थूक, वमन, पित्त, परु, वीर्य, के लोहीथी खराव पण थाय [हवे कदाच बीजो मार्ग न होवाथी मुनिए तेज रस्ते जतां]

पलित्ते सिया। तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए[1] पुढवीए, णो ससाणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए[2] पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलूए, कोलावासंसि[3] वा दारुए, जीवपतिट्ठिए सअंडे सपाणे जाव ससंताणए, णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा—संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा,—उव्वलेज्ज वा,—उव्वट्टेज्ज वा,—आयावेज्ज वा,—पयावेज्ज वा। से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्कर वा जाएज्जा। जाइत्ता से त्त मायाए एगंत-मवक्कमेज्जा (२) अहे झामथंडिलंसि[4] वा जाव अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि पडिलेहिय (२) पमज्जिय (२) ततो संजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा। [५६९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, गोणं वियालं[5] पडिपहे पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं मणुस्सं आसं हत्थिं सीहं वग्घं दीवियं अच्छं तरच्छं परसरं सियालं विरालं सु-

१ अनंतर्हितया. २ सरजस्कया. ३ घुणाकीर्णे ४ अथ दग्धस्थंडिले. ५ व्यालं दुष्टं.

तेनुं शरीर ऊपर जणावेली रीते अशुचिथी खराब थाय तो तेणे तरतनी सूकेली के चीकणी के कचरावाळी माटीथी अथवा सचित्त पत्थराथी या प्राणाजीवजंतुथी भरेला लाकडा विगेरेथी शरीरने घसवुं के साफ करवुं के सूकववुं नहि. किंतु तेवा वखते तरतज गृहस्थपासेथी निर्जीव घास पान के काष्ट अथवा रेती मागी लाववी. अने ते लइने एकांत स्थळमां जइने त्यां निर्जीव जमीनने जोइ प्रमार्जी यत्नापूर्वक ते तृणादिकवडे शरीरने साफ करवुं. [५६९]

मुनिने भिक्षा लेवा जतां मार्गमां विकाळ बळद, पाडो, मनुष्य, अश्व, हाथी सिंह, वाघ, दीपडो, रींछ, तरछ, शरभ, [अष्टापद], सीआळ, बिलाडो, कूतरो चाराहिसूअर, लोंकडो, के कोइपण जातनुं जंगली जानवर ऊभुं रहेलुं जणाय

णयं कोलसुणयं कोकंतियं[1] चित्ताचेल्लरयं[2] वियालं पडिपहे पेहाए, साति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा। [५७०]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी[3] वा, भिलुगा[4] वा विसमे वा विज्जले[5] वा परियावज्जेज्जा, साति परक्कमे संजयामेव णो उज्जुयं गच्छेज्जा। [५७१]

से भिक्खू वा (२) गाहावतिकुलस्स दुवारसाहं कंटकबोंदियाए पडिपिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय नो अवगुणेज्ज[6] वा, पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा। तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय पमज्जिय ततो संजयामेव अवगुणेज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा। [५७२]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा समणं वा, माहणं वा, गाम पिंडोलगं वा, अतिथिं वा, पुव्वपविट्ठं पेहाए णो तेसिं

---

१ लोस्टकं २ आरण्यजीवविशेषं ३ स्थला दघस्ता दवतरणं ४ स्फुटितकृष्णभूराजिः ५ कदर्मः ६ उद्घाटयेत्

अने बीजो रस्तो होय तो ते भयभरेला सीधे रस्ते न जतां बीजे रस्तेथी जवुं. [५७०]

एज प्रमाणे मार्गमां खाडा होय, खीला होय, कांटा होय, बोंकराना घस [नळियां] होय, फाटेली जमीन होय, टींबाटेकरा होय, के कीचड होय, तो मार्गांतर छतां ते मार्गे न जवुं. [५७१]

मुनिए गृहस्थना घरनो दरवाजो कांटानी डाळथी ढांकेलो देखी गृहस्थनी रजा लीधा शिवाय तथा जोया प्रमार्ज्या शिवाय ऊघाडवो नहि तेमज तेना अंदर पेसवुं पण नहिं. किंतु (जो जरुरी काम होय तो) गृहस्थनी रजा लइ पुंजी प्रमार्जी यत्ना पूर्वक ऊघाडवो अने अंदर जवुं. [५७२]

मुनिए गोचरीए जतां गृहस्थना घरे कोइ पण श्रमण, ब्राह्मण, भीखारी,

संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा, । केवली बूया "आयाण—मेयं" [५७३]

पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा [४] आहट्टु दलएज्ज अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पतिन्ना, एस हेऊ, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा से त्त-मायाए[1] एगंत-मवक्कमेज्जा (२) अणावाय-मसंलोए चिट्ठेज्जा । (५७४)

से परो अणावाय-मसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा आहट्टु दलएज्जा, से य वदेज्जा "आउसंतो समणा, इमे भो असणे वा (४) सव्वजणाए निसिट्ठे, तं भुंजह च णं, परिभाएह च णं." तं चेगतिओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ ओहेज्जा, "अवियाइ एयं ममसेव सिया" एवं माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा । से त्त-मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) से पुव्वा मेव आलोएज्जा "आउसंतो समणा, इमे भो, असणं वा (४) सव्वजणाए णिसिट्ठे तं भुंजह चणं, परिभाएह च णं" से वं वदंतं परो वएज्जा, "आउसंतो समणा, तुमं चेव णं परिभाएहि" से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्धं खद्धं[2] डायं[3] (२) ऊसढं[4] (२) रसियं २ मणुन्नं

१ तं पूर्वप्रविष्ट आदाय ज्ञात्वा. २ प्रचुरं प्रचुरं. ३ शाकं. ४ उत्सृतं वर्णादिगुणोपेतं

के परदेशीने पोताथी पेहेलो पेठेलो जोइ तेमना देखतां गृहस्थना दरवाजे ऊभा रेहेवुं नहि. केमके तेम ऊभा रेहेतां केवली भगवाने बहु दोष जणाव्या छे. [५७३]

जे माटे ते मुनिने दरवाजे ऊभो रहेलो जोइ गृहस्थ तेना माटे आहारादिक बनावीने आपवानुं करे छे. माटे मुनिना सारुं ऊपर जणाव्या मुजब आवी प्रतिज्ञा, आवो हेतु अने आवो उपदेश जरुरनो छे के तेणे गृहस्थने त्यां पूर्वे पेठेला याचकोना देखतां दरवाजे नहि उभा रहेवुं. किंतु कोइ नहि देखी शके तेवा स्थळे जइ ऊभा रेहेवुं. [५७४]

[२] णिद्धं (२) लुक्खं [२] से तत्थं अमुच्छिते अगिद्धे अगढिए अणज्झोवज्जणे बहुसममेव परिभाएज्जा। (५७५)

से णं परिभाएमाणं परो वदेज्जा "आउसंतो समणा, मा णं तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा पहामो[1] वा" से तत्थ[2] भुंजमाणे णो अप्पणो खद्धं (२) जाव लुक्खं- (२) से तत्थ अमुच्छिए (४) बहुसममेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा। (५७६)

१ पश्यामो वा २ परतीर्थिकैः सार्द्धं न भोक्तव्यं स्वयूथ्यैश्च पार्श्वस्थादिभिः हभुंजानाना मयं विधिः

एवे स्थळे ऊभा रेहेतां छतां मुनिने ते गृहस्थ त्यां आवी अशनादिक आहार आपे अने कहेके "हे आयुष्मन् साधुओ, आ आहार में तमो सर्वे जणने आप्यो छे. माटे तमे बधा जण भेगा मळी खाओ अथवा वेंहेंची ल्यो." तेम छतां ते मुनि आहार लव्याबाद गुपचुप रही एम विचार करे के "आ तो मनेज मात्र पूरतो छे" तो ते दोषपात्र थाय छे. माटे एवो वितर्क कदापि न करवो. किंतु ते आहार लइ बीजा श्रमणादिको पासे जवुं अने शरुआतमांज जणाववुं के "आयुष्मन् श्रमणो, आ आहार आप सर्व जणने एकठो मळ्यो छे. माटे भेगा खाओ अथवा वेंहेंची ल्यो." आम मुनिए कहेतां मुनिने कोइ कहे के "हे आयुष्मन् श्रमण, तुंज बधाने वेंहेंची आप." त्यारे मुनिए ते वेंहेंची आपतां पोता तरफ झाजो झाजो, या स्वादिष्ट या उत्तम उत्तम या रसिक रसिक या मनोहर मनोहर घृतवाळो घृतवाळो या चोखो चोखो नहि नाखवो. किंतु त्यां मुनिए सर्वे लोलपिपणुं त्याग करी शांतपणे ते बरोबर सरखीरीते ज वेंहेंची आपवो. [५७५]

अगर वेंहेचती वेळा कोइ मुनिने कहे के "हे आयुष्मन् श्रमण तुं वेंहेच मा. आपण बधा एकठा मळी खाशुंपीशुं." त्यारे मुनिए तेमना[1] साथे जमतां पण कशुं वधतुं वधतुं के सारुं सारुं पोते नहि खातां सरखी रीते शांतपणे जमवुं [५७६]

१ (परतीर्थिओ साथे नहि जमवुं पण स्वयूथिक पासत्यादिक साथे जमवाने आ विधि छे, एम टीकाकार जणावे छे.)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा, पुव्वपविट्ठं पेहाए णो ते उवातिकम्म पविसेज्ज वा ओभासेज्ज[1] वा। से य त-मायाए एगंत-मवक्कमेज्जा अणावाय-मसंले ए चिट्ठेज्जा। अह पुण एवं जाणेज्जा, पडिसेहिए व दिन्ने वा, ततो तसि णियाट्टते संजयामेव पविसेज्ज वा ओभासेज्ज वा। (५७७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं। (५७८)

[षष्ठ उद्देः]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, रसेसिणो बहवे पाणे घासेसणाए संथडे संणिवतिए पेहाए, तंजहा; कुक्कुड-

---

१ अवभाषेत वा.

मुनिए गृहस्थना घरे भिक्षार्थे जतां त्यां पोताथी अगाऊ पेठेला श्रमण, ब्राह्मण, भीखारी के अतिथिने ऊभा रहेला जोइने तेमनुं उल्लंघन करी कदापि अंदर पेशवुं के मागवुं नहि. किंतु तेम जाणी कोइ नहि देखी शके तेवा स्थळमां एकांते जइ ऊभा रहेवुं. अने ज्यारे एम जणाय के तेमने गृहस्थे पाछा वाळ्या छे अथवा दीधुं छे त्यारे तेमना जवा बाद मुनिए यत्नापूर्वक ते गृहस्थना घरनी अंदर जवुं के मागवुं. [५७७]

एज खरेखरो मुनि अने आर्याओनो आचार छे. [५७८]

छठो उद्देश.

[केवो आहार लेवो तथा केवो न लेवो तेना नियमो.]

मुनिने भिक्षे मार्गमां राथ जातेसल्लुप। कूकडाओ, सुअरो, तथा

जातियं वा, सूअरजातियं वा, अग्गापडासिं वा वायसा संघडा संणिवडिया पेहाए, सति परक्कमे संजयामेव नो उज्जुयं गच्छेज्जा। [५७९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे नो गाहावतिकुलस्स दुवारसाहं अवलंबिय (२) चिट्ठेज्जा; नो गाहावतिकुलस्स दगच्छड्डुणमत्तए चिट्ठेज्जा; नो गाहावतिकुलस्स चंदणिउयए[1] चिट्ठेज्जा णो गाहावइकुलस्स सिणाणस्स वा वच्चस्स वा संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा; णो गाहावतिकुलस्स आलोयं वा थिग्गलं वा संधिं वा दगभवणं वा बाहाउ पगिज्झिय (२) अंगुलियाए वा उद्दिसिय (२) ओणमिय (२) उण्णमिय (२) णिज्झाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए उद्दिसिय [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए चालिय [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए तज्जिय[2] (२) जाएज्जा; णो गाहावतिं अंगुलियाए उक्खुलंपिय[3] [२] जाएज्जा; णो गाहावतिं वंदिय [२] जाएज्जा णो वयणं फरुसं वदेज्जा। [५८०]

कागडा विगेरे घणाएक प्राणिओ खावा माटे रस्तामां एकठा मळेला जणाय तो ते रस्तो सीधो छतां बीजो मार्ग मळी आवतो होय तो ते रस्ते मुनिए नहि चालवुं. [५७९]

मुनिए भिक्षार्थे गृहस्थना घरे जतां त्यां गृहस्थना दरवाजानी शाखा पकडी उभा रहेवुं नहिं, ग्रहस्थना पाणी ढोळवाना स्थानक तरफ ऊभा रहेवुं नहि, कोगळा फेंकवाना स्थानक तरफ ऊभा रहेवुं नहि, अने स्नान करवाना के खरचु जवाना स्थान तरफ ऊभा रहेवुं नहिं. वळी ग्रहस्थना घरनी बारीओ या छिद्रो या फाट तथा पाणीआराने मुनिए पोताना हाथ के आंगळीओ अडकावी उंचानीचा थइ तेओमांथी ग्रहस्थनुं घर जोवुं नहिं. मुनिए आंगळीओवडे निशानी करी याचवुं नहिं. तेमज आंगळीओ वडे तेने धुणावीने के दबावीने पण याचवुं नहि तथा आंगळीओवडे तेने अरज करीने याचवुं नहि वळी ग्रहस्थने सलाम करीने पण कंइ याचवुं नहि. ग्रहस्थ कदाच कंइ नहि आपे तो कठोर वचन न बोलवां. [५८०]

अह तत्थ कंचि भुंजमाणं, पेहाए तंजहा; गाहावइयं वा जाव कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा;—"आउसो—त्ति वा, भइणि—त्ति वा, दाहिसि से एत्तो अन्नयरं भोयणजातं।" से एवं वदंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दविं वा, भायणं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा "आउसो-त्ति वा भगिणी—ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दविं वा, भायणं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेहि वा पहोवाहि वा। अभिकंखासि मे दातुं, एमेव दलाहि।" से सेवं वदंतस्स परो हत्थं वा [४] सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेत्ता पधोइत्ता आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारेण पुरेकम्मएण हत्थेण वा [४] असणं वा [४] अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो पडिगाहेज्जा। अहपुण एवं जाणे-

१ उदकार्द्रेण.

मुनिए गृहस्थने घरे जतां त्यां कोइने जमतो देखी शरुआतमां तपास करवी के आ कोण छे. के यावत् चाकर चाकरडी छे? त्यारबाद तेणे बोलवुं के "हे आयुष्मन् अथवा हे बेहेन, आ भोजनमांथी मने कंइ पण थोडुंएक भोजन आपशो?" एम मुनिए बोलतां गृहस्थ पोताना हाथ, पात्र, अने चाटवो के वासण थंडा पाणीथी अथवा ठरीने सचित्त थएला ऊना पाणीथी छांटे के धोवा मंडे तो मुनिए शरुआतमां ज तेने जणाववुं के "हे आयुष्यमान् या बेन तमे एम पाणीथी छांटीने के धोइने मने आपता ना, वगर छांटे धोएज मने आपो" तेम कहेतां पण जो ते गृहस्थ पोताना हाथपात्र पाणीथी छांटी के धोइने ज आपवा मंडे तो मुनिए तेवा आहारने अशुद्ध गणीने ग्रहण न करवुं. तेमज कदाच एम बने के गृहस्थ आहार आप्या अगाउ तेम चाहीने हाथपात्र पाणीथी भींजाइ गएला होय तोपण तेनावडे आहार मुनिए न लेवो. वळी कदि गृहस्थना हाथपात्र

एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणी ए वा सामग्गियं। [५८६]

(सप्तम उद्देशः)

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा (४) खंधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खित्ते सिया, तहप्पगारं मालोहडं असणं वा [४] जाव अफासुयं णो पडिगाहेज्जा। केवली बूया "आयाण—मेतं"। अस्संजए भिक्खुपडियाए पीढं वा, फलहगं वा, णिस्सेणिं

ए मुनि अने आर्याओनो पवित्र आचार छे. [५८६]

सातमो उद्देश.

(केम अने केवो आहार लेवो तथा केम अने केवो न लेवो.)

जे आहार गृहस्थे भींत ऊपर, थांभला उपर, मांचा ऊपर, माळ ऊपर, घर ऊपर के हवेली ऊपर अथवा एवी जातना कोइ पण उच्च स्थळमां राख्यो होय अने त्यांथी लावीने गृहस्थ आपवा मांडे तो ते आहार अशुद्ध गणीने मुनिए न लेवो केमके ज्ञानिओए तेमां दोष बताव्याछे. जे माटे गृहस्थ साधुना माटे त्यां बाजोठ, पाटीउं, निसरणी के ऊखल१ मांडी त्यां चडतां जो पडे तो

१ खांडणी Handmill &c.

वा, उदूहलं वा, आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा । से तत्थ दुरुहमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलेमाणे वा पवडेमाणे वा हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरूं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरंवा कायंसि इंदियजायं लूसेज्ज वा पाणाणि वा भूयाणी वा जीवाणी वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा वत्तेज्ज वा लेसेज्जा वा संघसेज्जा वा संघट्टेज्ज वा परियावेज्ज वा किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा । तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा (४) लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (५८७)

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) कोट्ठियातो वा कोलज्जातो[१] वा अस्संजए भिक्खुपडियाए उक्कुज्जिया अघउज्जिया ओहरिया आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) मालोहडंति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (५८८)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) मट्टिओलित्तं तहप्पगारं असणं वा (४) जाव लाभे संते णो पडि-

---

१ अधोवृत्तखाताकारात्.

तेना हाथ, पग, बाहु, साथळ, पेट, माथुं के गमे ते अंगनो भंग थाय तथा बीजां जीव जंतुओ पण हणाय माटे तेवी जातनो माळथी आणेलो आहार मळतां छतां पण न लेवो. [५८७]

वळी जो गृहस्थ, कोठीमां के कोठलामांथी साधुना माटे उंचो नीचो के आडो थइ आहार लावी मुनिने आपवा मांडे तो ते पण न लेवो. [५८८]

मुनिए जे आहार माटीथी लींपी बंध राखेलो होय ते मळतां छतां नहि लेवो. जे माटे केवळज्ञानिओए एमां दोष बताव्या छे, केमके असंयति गृहस्थ साधुना माटे माटी उखेडी ते आहारने कहाडवा जतां पृथ्वीकाय तथा अग्नि, वायु,

गाहेज्जा । केवली बूया "आयाण–मेयं" अस्संजए भिक्खू–पडियाए मट्टिओलित्तं असणं [४] उब्भिंदमाणे पुढविकाय समारंभेज्जा, तहा तेऊ–वाऊ–वणस्सति–तस– ायं समारंभेज्जा, पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा [४] लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । [५८९]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा (४) पुढवि कायपतिट्ठियं, तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [५९०]

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा [४] आउकायपतिट्ठियं तह चेव एवं अगणिकायपतिट्ठियं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा। केवली बूया "आयाण–मेयं" अस्संजए भिक्खुपडियाए अगणिं उस्सक्किय (२) णिसक्किय (२) ओहरिय (२) आहट्टु दलएज्जा अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव णो पडिगाहेज्जा । (५९१)

वनस्पति, अने त्रसकायनी हिंसा करे, तथा पाछुं बंध करतां पण तेवली हिंसा करे माटे साधुने एवी भलामण छे के तेणे माटीथी बंध करेलो आहार मळतां नहि लेवो. [५८९]

मुनिए जे आहार सचित्त पृथ्वीकाय उपर पडेलो होय ते पोताने अयोग्य धारी ग्रहण न करवो. [५९०]

एज रीते पाणी उपर रहेलो आहार पण न लेवो. वळी अग्नि उपर चडेलो आहार पण न लेवो केमके तेम करतां कर्मबंध थाय छे, जे माटे तेवे वखते असंयति गृहस्थ मुनिना माटे अग्निने वधती वाळशे अथवा ओछी करशे, अथवा हेठो ने आघुं पाछुं करशे. माटे मुनिए उपर जणावेली खास भलामण छे के तेणे अग्नि उपर चडेलो आहार ग्रहण न करवो. [५९१]

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, असणं वा (४) अच्चुसिणं अस्संजए भिक्खुपडियाए सूवेण वा, विहुणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुणहत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेणवा, फुसेज्ज वा, वीएज्ज वा; से पुव्वामेव आलोएज्जा " आउसे-त्ति वा, भगिणि—त्ति वा, मा एयं तुमं असणं वा [४] अच्चुसिणं सूएण वा जाव फुसाहि वा वीयाहि वा। अभिकंखसि मे दातुं, एमेव दलयाहि।" से सेवं वदंतस्स परो सूवेण वा जाव वीइत्ता आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं असणं वा (४) जाव णो पडिगाहेज्जा।

(५९२)

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा [४] वणस्सइकायपतिट्ठियं, तहप्पगारं असणं वा [४] वणस्सइकायपतिट्ठियं अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा। एवं तसकाएवि। (५९३)

आहार-पाणी अति ऊनां होवाथी गृहस्थ तेने मुनिना माटे सूपडावडे, वींजणावडे, मोरपींछना वींजणावडे, पंखावडे, शाखावडे, शाखाना कटकावडे, मोरपींछवडे, कपडावडे, कपडानी किनारवडे, हाथवडे के मुखवडे वींजीकरीने ठंडां करवां मांडे त्यारे मुनिए शरुआतमां ज तेने जोइने जणावबुं के " हे आयुष्मन्, अथवा बेहेन, तमे आ आहारपाणीने सूपडा के पंखा विगेरेथी वींजो मां. जो मने देवा चाहाता हो तो एमज आपो " एम कह्या छतां पण गृहस्थ ते आहारने सूपडा विगेरेथी वींजी करीने आपे तो तेवां जातनां आहार पाणी ग्रहण न करवां [५९२]

जे आहार वनस्पति ऊपर के त्रस जीवो ऊपर पडेलो होय ते पण मुनिए ग्रहण न करवो. [५९३]

(पानकाधिकारः)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण पाणगजातं जाणेज्जा, तंजहा; उस्सेइमं[1] वा, संसेइमं[2] वा, चाउलोदगं वा, अण्णतरं वा तहप्पगारं पाणगजातं अहुणाधोतं अणंबिलं अवोक्कंतं अपरिणतं अविद्धत्थं[3] अफासुयं अणेसणिज्जं मण्णमाणे णो पडिगाहेज्जा । [५९४]

अह पुण एवं जाणेज्जा चिराधोतं अंबिलं वक्कंतं परिणतं विद्धत्थं फासुयं जाव पडिगाहेज्जा । (५९५)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठे समाणे से ज्जं पुण पाणगजातं जाणेज्जा, तंजहा; तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं[4] वा, सोवीरं[5] वा, सुद्धवियडं वा, अण्णतरं वा तहप्पगारं पाणगजातं पुव्वामेव आलोएज्जा, "आउसो-त्ति वा, भगिणि-त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नतरं

१ पिष्टोत्स्वेदनार्थ मुदकं २ तिलधावनोदकं ३ अविध्वस्तं. ४ अवश्यानकं ५ आच्छणनाम्नाप्रसिद्ध

(पाणीनो अधिकार.)

लोट मशळवा माटेनुं पाणी, तिल धोयानुं पाणी, चोखा धोयानुं पाणी, तथा एवीज जातनुं बीजुं हरेक पाणी जो तरतनुं धोएलुं होय हजु तेनो स्वाद फर्यो न होय तेमज तेनुं पूरतुं परिणामांतर पण न थयुं होय तथा तेनो योनिध्वंश पण हजु न थयो होय तो तेवुं पाणी अनेषणीय जाणीने मुनिए नहि लेवुं. [५९४]

पण जो तेवुं पाणी लांबा वखतनुं धोएलुं स्वादथी फरेलुं परिणामांतर पामेलुं अने योनिरहित थएलुं होय तो ते लेवुं. [५९५]

मुनिए तिल, तुष, के यवोथी अचित्त करेलुं पाणी, ओसामणनुं पाणी छासनी पछण, ऊनुं पाणी, तथा एवी जातनां बीजां पाणी जोइने तेना मालकने कहेवुं "हे आयुष्मान् अथवा बेहेन, मने आ पाणीमांथी थोडुं पाणी आप-

पाणगजातं ?" से सेवं वदंतं परो वएज्जा "आउसंतो समणा, तुमं चेवेदं पाणगजातं पडिग्गहेण वा उस्सिंचियाणं (२) ओयत्तियाणं[1] गिण्हाहि, " तहप्पगारं पाणगजायं सयं वा गिण्हिज्जा, परो वा से दिज्जा, फासुयं लाभे संते पडिगाहिज्जा । (५९६)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण पाणगं जाणेज्जा अणंतरहियाए पुढवीए जाव संताणए ओहट्टु निक्खित्ते सिया, अस्संजए भिक्खुपडियाए उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा सकसाएण वा मत्तेण, सीओदएण वा सं-भोएत्ता आहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पाणगजातं अफासुयं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (५९७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (५९८)

---

१ अपवृत्त्य

शे ? " त्यारे ते कदाच एवुं बोले के " हे आयुष्मन् तमे पोतेज बीजा वासण वडे अथवा तेज पाणीना वासणने उलटावी ने पाणी लइ ल्यो " त्यारे मुनिए ते पोते पण लेवुं, अथवा बीजो आपे तो तेम पण लेवुं [५९६]

जे पाणी लीली के जीवजंतुवाली माटी पर राखेलुं होय अथवा असंयत गृहस्थ सचित्तपाणी के माटीथी भींजेला के खरडेला वासणवडे मुनीने आपवा मांडे अथवा ते पाणीमां बीजुं थोडुं थंडुं पाणी ऊमेरीने आपवा मांडे तो ते अप्रासुक जाणीने मुनिए नहि लेवुं. [५९७

ए सर्व मुनि तथा आर्याओना आचार छे. [५९८]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा पलंबजातं[1] तंजहा ; अंबपलंबं वा, अंबाडगपलंबं वा, तालपलंबं वा, झिज्झिरिपलंबं[2] वा सुरभिपलंबं[3] वा, सल्लइपलंबं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं पलंबजातं आमगं असत्थपरिणतं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव लाभेसंते णो पडिगाहेज्जा । (६०३)

से भिक्खू वा (२) जाव पविट्ठेसमाणे से ज्जं पुण पवालजातं जाणेज्जा, तंजहा ; आसोत्थपवालं[4] वा, णग्गोहपवालं वा, पिलंक्खुपवालं[5] वा, णीयूरपवालं[6] वा, सल्लइपवालं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं पवालजातं आमगं असत्थपरिणयं अफासुयं अणेसणिज्जं जाव णो पडिगाहेज्जा । (६०४)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण सरडुयजायं[7] जाणेज्जा, तंजहा ; अंबसरडुयं वा, कविट्ठसरडुयं वा, दाडिम सरडुयं

१ फलजातं २ (वल्लीविशेष :) ३ (शतद्रु :) ४ (पिप्पलं) ५ (पिप्पली) ६ (नंदी वृक्ष :) ७ अबद्धास्थिकफलजातं.

वळी आंबानांफळ, अंबाडानाफळ, ताळफळ, जिज्झिरिवेलनाफळ, शतद्रुफळ, सल्लकिफळ, तथा एवां बीजां पण हरेक फळ काचां होय ने शस्त्रथी छेदायलां नहि होय ते ग्रहण न करवां. (६०३)

तथा काचां अने शस्त्रथी नहि भेदायलां पीपळानां कूंपळ, वडनां कूंपळ, पीपळीनां कूंपळ, नंदीवृक्षनां कूंपळ, तथा शल्लकिनां कूंपळ पण नहि लेवां. [६०४]

एज रीते काचा अने शस्त्रथी नहि भेदाएलां आंबानां मोर (काचां फळ) कोठनां मोर, दाडमनां मोर बीलुनां मोर तथा एवी जातना बीजा पण सघळां

वा बिल्लसरडुयं वा, अण्णतरं वा तहप्पगारं सरडुयजातं आमं असत्थ-परिणतं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [६०५]

से भिक्खू वा [२] जाव पविट्ठे समाणे सेज्जंपुण मंथुजातं[१] जाणेज्जा, तंजहा ; उंबरमंथुं वा, णग्गोहमंथुं वा, पिलक्खुमंथुं वा आसोत्थमंथुं वा, अण्णतरं वा तहप्पगार मंथुजातं आमयं दुरुक्कं[२] साणुबीयं[३] अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । [६०६]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सेज्जंपुण जाणेज्जा, आमडागं[४] वा पूतिपिण्णागं[५] वा महुंवा, मज्जं वा, सप्पिं वा, खोलं[६] वा, । पुराणं; एत्थ पाणा अणुप्पसूता, एत्थ पाणा संवुड्ढा, एत्थ पाणा जाया एत्थ पाणा अवुक्कंता, एत्थ पाणा अपरिणता, एत्थ पाणा अविद्धत्था, णो पडिगाहेज्जा । (६०७)

---

१ चूर्णजातं २ ईषत्पिष्टं ३ अविध्वस्तयोनिकं ४ अर्द्धपक्वं ५ कुथितखलं ३ मद्याधः कर्दमः

मेर मुनीए ग्रहण न करवा [६०५]

मुनिने ऊंबरनुं चूर्ण, वडनुं चूर्ण, पीपळीनुं चूर्ण, पीपळानुं चूर्ण, के एवी जातना बीजा चूर्ण काचां थोडा पीसेलां अने सबीज [योनिसहित] जणाय तो ग्रहण न करवां. [६०६]

मुनिए गोचरीए जतां अर्धी रंधाएल शाकभाजी न लेवी तथा सडेलुं खोळ न लेवुं, तथा जूनुं मध, जूनी मदिरा[१], जूनुं घृत जूनो मदिरानो नीचे बेसलो कचरो, ए पण न लेवा, एटले के जे चीज जूनी थतां तेमां जीवजंतु ऊपजेल, अने हजु हयातीमां वर्त्तनारा जणाय ते चीज न लेवी. [६०७]

---

१ दवाओमां Tinctures spirits वपराय छे ते.

गं वा, कासवणालियं[1] वा, अण्णतरं वा आमं असत्थपरिणतं जाव णो पडिगाहेज्जा । (६१३)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा, कणं वा, कणकुंडग[2] वा, कणपूयलिं वा, चाउलं वा, चाउलपिट्टं वा, वा, तिलं वा, तिलपिट्टं वा, तिलपप्पडगं वा, अन्नतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणतं जाव लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । (६१४)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं ।(६१५)

---

१ श्रीपर्णीफलं २ कणमिश्रकुक्कुसाः

काचां अने शस्त्रवडे नहि चूरायलां होय तो ग्रहण न करवां. [६१३]

मुनिए धान्यना दाणा, दाणावाळा कूसका, दाणावाली रोटली, चावल, चावलनो लोट, तल, तलनो लोट, तलपापडी, के एवीज जातनुं बीजुं कंइ पण काचुं अने शस्त्रवडे नहि चुराएलुं होय ते ग्रहण न करवुं. (६१४)

ए सर्व, मुनि अने आर्यानो आचार छे. [६१५]

[नवम उद्देशः]

इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा, संतेगतिया सड्ढा [१] भवंति; गाहावती वा जाव कम्मकरी वा। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवंति;—जे इमे भवंति समणा, भगवंतो, सीलमंता, वयमंता, गुणमंता, संजता, संवुडा, बंभचारी, उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं कप्पति आहाकम्मिए असणं वा (४) भोइत्तए वा पाइत्तए वा। सेज्जंपुण इमं अम्हं अट्ठाए णिट्ठितं, तंजहा; असणं वा (४) सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो। अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सअट्ठाए असणं वा [४] चेतिस्सामो, [२] " एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा [३] णिसम्म [४] तहप्पगारं असणं वा (४) अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा। (६१६)

१ श्रावकाः प्रकृतिभद्रावा २ चेतयिष्यामो निष्पादयिष्याम इति-यावत् ३ (स्वयं) ४ (परतः)

नवमो उद्देश.

(कयो आहार लेवो अने कयो न लेवो)

आ जगतमां चारे दिशाओ तरफ केटलाएक गृहस्थो, स्त्रीओ के तेमना दास दासीओ श्रावको अथवा भद्र स्वभाववाळा होय छे. तेओ हमेशां एवुं बोले छे के "जे मुनिओ ज्ञानवंत, शीळवंत, व्रतवंत, गुणवंत, संयमवंत, संवरवंत, ब्रह्मचारी, अने मैथुनने त्याग करनारा होय तेओ आधाकर्मिक आहार पाणी बिलकुल लेता नथी. जे आपणा सारु आहार पाणी तैयार करेलां छे ते सर्वे तेमने आपशुं अने आपणे वळी आपणा सारुं बीजा तैयार करशुं" आवा वाक्यो सांभळीने मुनिए ते आहार पाणी अनेषणीय जाणीने ग्रहण करवां नहि. [६१६]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे वसमाणे वा गामाणुगामं दू-इज्जमाणे सेज्जंपुण जाणेज्जा गामं जाव वा रायहाणिं वा, इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा संतेगाति यस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा पच्छासंथुया वा परिवसंति, तंजहा ; गाहावती वा जाव कम्मकरी वा ; तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा। केवली बूया, " आयाण—मेयं। " पुरा पेहाए तस्स परो अट्ठाए असणं वा [४] उवकरेज्ज वा उवक्खडे-ज्ज वा ; अह भिक्खूणं पूव्वोवदिट्ठा (४) जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा। से त्त-मायाय एगंत—मवक्कमित्ता अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा। से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा [२] तत्थितरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं वेसियं पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारेज्जा। (६१७)

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आधाकम्मियं असणं वा [४]

मुनिए शहेरमां वसतां के ग्रामानुग्राम फरतां तेने एवुं जणाय के आ गाममां के आ राजधानीमां अमुक साधुना सगावहालां रहे छे तो तेवा सगाओना घरे भिक्षाकाळथी अगाऊ आहारपाणी माटे न जवुं. केमके तेम करतां बहु दोष संभवे छे. जे माटे भिक्षाकाळथी अगाउ त्यां गयाथी ते गृहस्थो मुनिने जोइने तेना माटे उपकरण बनाववा मांडशे अथवा आहार रांधवा मांडशे. माटे भिक्षुने एज भलामण छे के तेणे भिक्षाकाळथी अगाउ तेना सगावाहालाओना घरे नहि जवुं. कदाच ओचिंतुं त्यां जवाय तो झट पाछा वळी कोइ देखे नहि तेवा एकांत स्थळमां ऊभा रहेवुं. अने पछी भिक्षाकाळ थतां जूदा जूदा घरोमांथी निर्दूषण आहार लइने वापरवो. [६१७]

मुनिए वखतसर भिक्षार्थे जतां गृहस्थ तेना माटे उपकरण के आहार बनाववा मांडे अने मुनि तेम जाणीने ते वखतेज तेने मनाइ न पाडतां एम विचारे जे ज्यारे

उवकरेज्ज[1] वा उवक्खडेज्ज वा, तं चेगतिओ तूसणीओ उवेहेज्जा " आहड—मेव पच्चाइक्खिस्सामि " माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा " आउसो त्ति वा भगिणि—त्ति वा, णो खलु मे कप्पति आहाकम्मियं असणं वा (४) भोत्तए वा पायए वा । मा उवकरिज्जा, मा उवक्खडेहि । " से सेवं वदंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा (४) उवक्खडेत्ता आहट्टु दलएज्जा तहप्पगारं असणं वा [४] अफासुयं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा [६१८]

से भिक्खू वा [२] जाव समाणे से ज्जं पुण जाणेज्जा मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं पेहा। तेल्लपूययं वा आएसाए[2] उवक्खडिज्जमाणं पेहाए णो खद्धं खद्धं[3] उवसंकमित्तु ओभासेज्जा । णण्णत्थ गिलाणणीसाए । (६१९)

से भिक्खू वा जाव समाणे अण्णतरं भोयणजायं पडिगाहेत्ता

१ उपकरणं ढौकयेत् २ प्रावूर्णकार्थं ३ त्वरितं त्वरितं

मने आपवा मांडे त्यारे ना पाडीश तो ते दोषपात्र थाय छे. माटे एम नहि करवुं. किंतु शरुआतमांज मुनिए ते गृहस्थने जणाववुं के " हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, मने मारा माटे बनावेलुं आहारपाणी काम आवतुं नथी. माटे तमे मारा माटे बनावो मा. " एम कह्या छतां पण गृहस्थ आधाकर्मिक आहारपाणी बनावी आपवा मांडे तो ते, मुनिए ग्रहण न करवुं. [६१८]

मुनिए मांस के मत्स्य भुंजाता जोइ अथवा परोणाना माटे पूरीओ तलमां तळाती जोइ तेना सारु गृहस्थपासे उतावळा उतावळा दोडी ते चीजो मागवी नहि. अगर मांदगी भोगवनार मुनीना सारु [गरम पूरीओ] खपनी होय तो जूदीवात छे. [६१९]

जे मुनि कोइपण भोजन लइ आव्या बाद तेमांनुं सुगंधि सुगंधि खाइ

सुब्भिं सुब्भिं भोच्चा दुब्भिं दुब्भिं परिट्ठवेति; माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा । सुब्भिं वा दुब्भिं वा सव्वं भुंजे, न छड्डए । (६२०)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे अन्नतरं वा पाणयजायं पडिगाहेत्ता पुप्फं[1] आसाइत्ता कसायं[2] परिट्ठवेति, माइट्ठाणं संफासे णो एवं करेज्जा । पुप्फं पुप्फेति वा, कसायं कसाएत्ति वा, सव्वमेयं भुंजेज्जा, णो किंचिवि परिट्ठवेज्जा । (६२१)

से भिक्खू वा (२) बहुपरियावण्णं भोयणजायं पडिगाहेत्ता, बहवे साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया[3] अदूरगया, तेसिं अणालोइया अणामंतिया परिट्ठवेति, माइट्ठाणं संफासे णो एवं करेज्जा से त्त मादाय तत्थ गच्छेज्जा, (२) से पुव्वामेव आलोएज्जा " आउसंतो समणा, इमे मे असणं वा [४] बहुपरियावण्णे तं भुंजह

१ वर्णगंधोपेतं २ तद्विपरीतं ३ एकार्थिका इमे शब्दाः

करीने दुर्गंधि दुर्गंधि परठवी आपे तो ते दोषपात्र थायछे, माटे तेम न करवुं. किंतु सुगंधि दुर्गंधि सर्व कंइ खाइ जवुं; छांडवुं नहि. [६२०]

जो मुनि कंइ पण पाणी लइ आव्या बाद तेमांनुं मीठुं अने सुंदर पाणी पी करीने कसायलुं[1] पाणी परठवी आपे तो ते दोषपात्र थाय छे माटे एम नहि करतां मीठुं के कसायलुं सर्व कंइ पी जवुं; छांडवुं नाहि. [६२१]

जे मुनि पोताना खप करतां वधु भोजन लइ आव्यो होय ने त्यां नजीकमां घणा एक समानधर्मी मुनिओ रहेता होय तो तेमने ते आहार बताव्या के आमंत्रण कर्या शिवाय जो परठवी आवे तो दोषपात्र थाय छे माटे तेम नहि करवुं. किंतु ते आहार लइने मुनिए ते साधर्मिक मुनिओ पासे जइ कहेवुं "हे आयुष्मन् मुनिओ; आ आहार मने वधी पडयो छे माटे आप वापरो," आम कहे-

१ तूरुं Astringent

च णं " से सेवं वदंतं परो वदेज्जा " आउसंतो समणा, आहार-मेतं असणं वा [४] जावतियं (२) परिसडति तावतियं (२) भोक्खामो वा पाहामो वा, सव्व मेयं परिसडइ सव्वमेयं भोक्खामो वा । " (६२२)

से भिक्खू वा [२] सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा (४) परं समुद्दिस्स बहिया णीहडं तं परेहिं असमणुन्नातं अणिसिट्ठं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा, तं परेहिं समणुन्नातं संणिसिट्ठं फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा । [६२३]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (६२४)

नार मुनिने ते साधर्मिक मुनिओए आ प्रमाणे कहेवुं " हे आयुष्मन् मुनि, आ आहारमांथी जेटलो अमोने जोइशे एटलो वापरीशुं अगर बधो वापरीशुं [६२२]

मुनिए जे आहार बीजाने आपवामाटे लइ जवानो होय ते बीजानी रजा शिवाय ग्रहण न करवो. अने जो बीजाओ रजा आपे के आपवा माडे तो ते ग्रहण करवो. [६२३]

ए सर्व, मुनि अने आर्याओनो आचारछे. [६२४]

[दशम उद्देशः]

से एगतिओ साधारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलाति, माइट्ठाणं संफासे, नो एवं करेज्जा। से त-मायाए तत्थ गच्छेज्जा [२] पुव्वामेव आलोएज्जा "आउसंतो समणा, संति मम पुरेसंथुया वा पच्छासंथुया वा, तंजहा; आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा, अवियाइं एतेसिं खद्धं खद्धं दाहामि" सेणेवं वयंतं परो वएज्जा "कामं खलु आउसो अहापज्जत्तं णिसराहि, जावइयं [२] परो वदति तावइयं (२) णिसिरेज्जा, सव्वमेयं परो वदति सव्वमेव णिसिरेज्जा"। (६२५)

दशमो उद्देश.

(मुनिए आहारपाणी लावतां शी रीते वर्तवुं.)

कोइ पण मुनि बधा मुनिओना माटे साधारण आहार लाव्या पछी तेओने पूछया शिवाय पोतानी मरजी मुजब गमे तेने झट झट आपवा मांडे तो ते दोषपात्र थाय माटे कोइए तेम नहि करवुं किंतु तेवो आहार लावीने बधा मुनिओ पासे लइ जइ कहेवुं के "हे आयुष्मन् साधुओ मारा पूर्व परिचित[1] या पश्चात् परिचि[2] आचार्य;[3] उपाध्याय[4] प्रवर्तक;[5] स्थविर[6] गणी,[7] गणधर,[8] के गणावच्छेदकने[9] आ आहार हुं आपी आवुं?" आवुं सांभळी ते मुनिओए बोलवुं के "हे आयुष्मन्, खुशीथी जे जोइए ते आपी आवो. अगर जो तेमने बधो जोइतो होय तो बधो आपी आवो." [६२५]

१ जेमना पासे दीक्षा लीधेली तेओ २ जेमना पासे ज्ञानादि शीख्या होय तेओ ३ सूत्रार्थ शीखवनार ४ सूत्र शीखवनार ५ प्रवर्त्तावनार ६ वृद्ध ७ गच्छनायक ८ गच्छना अमुक भागने संभाळनार ९ गच्छनी चिंता करनार.

से एगतिओ मणुन्नं भोयणजायं पडिगाहित्ता पंतेण भोयणेण पलिच्छाएति "मामेतं छाइयं संतं दट्ठूणं सय-माइए आयरिए वा जाव गणावच्छेइए वा, णो खलु मे कस्सवि किंचि दायव्वं सिया," माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा, से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु "इमं खलु इमं खलु त्ति" आले, एज्जा, णो किंचिवि णिगूहेज्जा। (६२६)

से एगतिओ अण्णतरं भोयणजायं पडिगाहेज्जा, भद्दयं [७] भोच्चा विवन्नं (२) समाहरति, माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा। [६२७]

से भिक्खू वा (२) सेज्जंपुण जाणेज्जा, अंतरुच्छुयं वा उच्छुगं-डियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुमेरगं वा, उछुसालगं वा उछुडालगं व संबालिं, वा, संबलिवालगं वा;-अस्सिं खलु पडिग्गाहियंसि अप्पे सिया भोयण-

कोइ मुनि मनोहर भोजन लावीने मनमां विचारे के "रखेने आ खुल्लुं बतावीश तो आचार्य के उपरी साधु लइ लेशे पण मारे तो कोइने आपवुं नथी" एम विचारी ते मनोहर भोजनने हलका भोजन वडे ढांकी करीने पछी आचार्यादि कने बतावे तो ते दोष पात्र थाय छे. माटे एम मुनिए नहि करवुं; किंतु ते मनोहर भोजनना पात्रने ऊंचा हाथमां खुल्लुं धरीने "आ आ रह्युं, आ आ रह्युं" एम खुल्लुं बताववुं. कंइ पण वस्तु छुपाववी नहि. [६२६]

कोइ मुनि लावेला भोजनमांथी सारुं सारुं खाइ करीने खराब खराब बना-ववा जाय तो ते दोषपात्र थाय छे, माटे तेम पण नहि करवुं. [६२७]

मुनिए शेलडीनी गांठो, गांठावाळुं ककडुं, शेलडीना छाला, शेलडीनां पूंछडां, शेलडीनी आखी शाखा के तेनो कटको के चाफेली मगफळी के वालनी

जाए, बहु उज्झियधम्मए–तहप्पगारं अंतरुच्छुयं जाव संबलिवालगं वा अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा । (६२८)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा, बहुअट्ठियं मंसं वा, मच्छं वा बहुकंटगं;–अस्सिं खलु पडिगाहितंसि अप्पे सिया भोयणजाए, बहु उज्झियधम्मिए–तहप्पगारं बहुअट्ठियं मंसं मच्छं वा बहुकंटगं लाभे संते जाघ णो पडिगाहेज्जा । (६२९)

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया णं परो बहुअट्ठिएण मंसेण मच्छेण उवणिमंतेज्जा "आउसंतो समणा, अभिकंखसि बहुअ–ट्ठियं मंसं पडिगाहेत्तए ?" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वा-मेव आलोएज्जा, "आउसो–त्ति वा भइणित्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहुअट्ठियं मंसं पडिगाहेत्तए । अभिकंखसि मे दाउं, जावइयं तावइयं

फळी विगेरे जेओमां थोडुं खावानुं होयछे अने वहु छांडवानुं होयछे, तेवी चीजो ग्रहण न करवी. [६२८]

वळी वहु ठळियावाळुं [पनस विगेरे फळोनुं दळ] गर्भ[1] या वहु कांटावाळी मत्स्याकारनी वनस्पति जे लेवाथी थोडुं खावानुं वने अने वहु छांडवुं पडे छे ते पण ग्रहण नहि करवां. [६२९]

कदाच मुनिने कोइ निमंत्रण करेके "हे आयुष्मन् श्रमण, तमने ठळियावाळुं पुद्गल जोइए छीए"? आवुं वाक्य सांभळी मुनीए तरतज जवाव आपवो के "हे आयुष्मन् या वहेन, मने वहुठळियावाळुं पुदगल–गर्भ नथी जोइतुं, अगर तमे मने ते देवा चहाता हो तो जेटलुं तेना अंदर पुद्गल–गर्भ छे तेटलुं आपो ठळिया नहि

१ टीकाकार–वाह्य परिभोगादि माटे अनिवार्य कारणयोगे मूळ पाठना शब्दोनो अर्थ मत्स्य–मांस अपवाद मार्गे करेछे. परंपरा अर्थ भाषान्तरमां लख्या मुजब प्रसिद्धछे. जुओ शब्दार्थ विवेक.

ोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं । " से सेवं वदंतस्स परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि बहुअट्ठियं मंसं परिभाएत्ता णिहट्टु दलएज्जा; तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते जाव णो पडिगाहेज्जा । से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णो "हि" त्ति वएज्जा, णो " अणहि " त्ति वइज्जा । से—त्त मायाए एगंत—मवक्कमेज्जा, [२] अहे आरामंसिवा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडए जाव अप्पसंताणए मंसगं मच्छगं भोच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय से त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा । अहे ज्झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय (२) परिट्ठवेज्जा। [६३०]

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सिया, से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहए बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं, परिभाएत्ता णहिट्टु दलएज्जा; तहप्पगारं पडिग्गहग परहत्थंसि वा परपायंसि वा अफासुयं जाव

आपो" एम कह्या छतां पण गृहस्थ पोताना वासणमांथी तेवुं बहु ठळियावाळुं पुद्गल—गर्भ लावीने आपवा मांडे तो ते मुनिए तेना ज हाथमां के वासणमां रहेवा देवुं, ग्रहण नहि करवुं. अगर कदाच गृहस्थ ते मुनिना पात्रमां झट नाखीदे तो मुनिए ते गृहस्थने कशुं नहि कहेवुं, किंतु ते आहार लइ एकांत स्थळमां जइ जीवजंतु विगेरेथी रहित बाग के उपाश्रयनी अंदर बेशीने ते भोगवी ठळिया अने कांटा निर्जीव स्थंडिलमां पुंजी प्रमार्जी परठवी आववा. [३३०]

मुनिए गृहस्थना घरे भिक्षार्थे जइ [खांडविगेरे मांगतां] गृहस्थ पोताना वासणमांथी थोडुंएक बीडलूण के दरिआइ लूण लइने आपवा मांडे तो तेवुं अप्रासुक लूण ते वासणमां के तेना हाथमांज रहेवा देवुं. अगर ओचिंतुं लेवाइ जाय अने हजु गृहस्थ बहु दुर रहेलो नहि होय तो ते लूण लइने तरतज मुनिए ते गृहस्थने बतावदुं के "हे आयुष्मन् या बेहेन, आ तमे जाणतां छतां दीधुंछे के अजाणतां

णो पडिगाहेज्जा। से आहच्च पडिग्गाहिते सिया, तंच णातिदूरगए जाणेज्जा से त्त–मायाए तत्थ गच्छेज्जा (२) पुव्वामेव आलोएज्जा, " आउसो–त्ति वा भइणि–त्ति वा, इमं ते किं जाणता दिन्नं उदाहु अजाणता ?" सो य भणेज्जा " णो खलु मे जाणता दिन्नं, अजाणता दिन्नं। कामं खलु आउसो इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं, परिभाएह च णं।" तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिट्ठं ततो संजयामेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा। जं च णो संचाएति भोत्तए वा पायए वा, साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुप्पदायव्वं। सिया णो जत्थ साहम्मिया जहेव बहुपरियावन्ने कीरति तहेव कायव्वं सिया। (६३१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं। (६३२)

....

दीधुंछे" त्यारे गृहस्थ बोले के "मे जाणतां नथी दीधुं किंतु अजाणे दीधुं छे. पण हवे आपने खुशीथी आपुंछुं. माटे भले खाओ के वापरो." आ रीते जो गृहस्थ रजा आपेतो मुनिए यतनापूर्वक ते [अचित्त] लूण खावुं पीवुं, अने जे वधु होवाथी पोताथी न वापरी शकाय ते त्यां नजीकमां रहेनार बीजा साधर्मिमुनिओने आपी आववुं अगर त्यां बीजा सार्धमिक मुनिओ न होय तो जेम बहुपर्यापन्न[1] आहार माटे विधि करायछे तेम करवी [अर्थात् यतनापूर्वक परठवी आववुं.] [६३१]

ए बधो मुनि अने आर्याओनो आचार छे [६३२]

—=०=—

[1] वधी पडेलो आहार.

[एकादश उद्देशः]

भिक्खागा[1] णामेगे एव माहंसु समाणे[2] वा वसमाणे वा गामाणु-गामं दूईज्जमाणं मणुण्णं भोयणजातं लभित्ता; "से भिक्खू गिलाई, से हंदह[3] णं तस्साहरह[4] सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा, तुमं चेव णं भुंजेज्जासि" सेगतितो "भोक्खामि त्ति" कट्टु पलिउंचिय[5] पलिउंचीय आलोएज्जा तंजहा;-इमे पिंडे; इमे लोए[6], इमे तित्ताए, इमे कडुए, इमे कसाए, इमे अंबिले इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सदाति त्ति; माइट्ठाणं संफासे णो एवं करेज्जा तहेव[7] तं आलोएज्जा जहेव तं गिलाणस्स सयति, तंजहा;-

१ भिक्षाटाः २ समानान् सांभोगिकान् वा शब्दादसांभोगिकांश्च गृहीत यूयं ४ तस्य आहरत तस्मै प्रयच्छत ५ गोपित्वा गोपित्वा ६ रूक्षः ७ तथावस्थितं

अगीआरमो उद्देश.

[मळेला आहार माटेनी बे शिक्षाओ, तथा सातपिंडेपणाओ[1] अने सात पाणेषणाओ.[1]]

भिक्षार्थी मुनिओ पोताना संभोगी[3] के त्यां वसनारा के ग्रामानुग्राम फरनारा मुनिने एवुं कहे के "आपणामां अमुक मुनि मांदो छे, माटे तेना सारुं तमे रुडुं भोजन मळे तो लावीने तेने आपशो; अने ते मुनि जो ते नहि खाय तो ते तमे खाइ जजो." आवे वखते जो ते आहार ला.नार मुनि ते आहार पो.ते खावा

१ आहार लेवानी प्रतिज्ञाओ २ पाणी लेवानी प्रतिज्ञाओ ३ साथे बेसी जमनार (श्रीकामांना शब्दथी असंभोगिक पण साथे लीधा छे.)

तित्तयं तित्तएति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिले त्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा [६३३]

भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे मणुन्नं भोयणजातं लभित्ता; "से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह से य भिक्खू णो भुंजेज्जा, आहरेज्जा सि णं" "णो खलु मे अंतराए, आहरिस्सामि" इच्चेयाइ आयतणाइं उवातिक्कम्म[1]। [६३४]

अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेषणाओ सत्त पाणेसणाओ। त-

1 दध्या द्वाहरेद्वेतिशेषः।

इच्छीने तेना माटे मांदा मुनिने ऊंधु चतुं समजावे; जेमके, "आ लावेलुं भोजन छे पण ते लुखुंछुं. या तीखुं, कडक, कसायेलुं, खाटुं, के मीठुं छे जेथी ते मांदा माणसने लायकनुं नथी," तो ते मुनि दोषपात्र थाय छे. माटे एम कदापि नहि करवुं. किंतु जेम ते आहार मांदा मुनिने काम आवतो होय तेम तेने जणाववुं. [६३३]

भिक्षार्थी मुनिओ पोताना संभोगी के त्यां वसनारा के ग्रामानुग्राम फरता मुनिने आवुं कहे के आपणामां अमुक मुनि मांदो छे तेना माटे तेने रुडुं भोजन लावी आपजो. अने जो मांदो मुनि ते नहि खाय तो ते अमारा पासे लावशो आवुं सांभळी लावनार मुनि बोले के मने कंइ विघ्न नहि नडशे तो हुं लावी आपीश. आम कही ते मुनि आहार लावी मांदाने बतावे अने जो ते नहि खाय तो ते पोते खावा इच्छी बीजाओने जो बताववा नहि जाय तो ते दोषपात्र थाय छे. माटे तेम पण न करवुं. [६३४]

हवे मुनिने सात पिंडेषणाओ अने सात पानेषणाओ जाणवानी छे. त्यां पहेली पिंडेषणाओ के—चोखो हाथ अने चोखुं पात्र. चोखा हाथ अने चोखा

त्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा,—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते; तहप्प-गारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा मत्तएण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, सयं वा णं जाएज्जा, परोवा से दिज्जा; फासुयं जाव पडिगाहे-ज्जा इति पढमा पिंडेसणा। [६३५]

अहावरा दोच्चा पिंडेसणा;—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्तए; तहेव दोच्चा पिंडेसणा इति दोच्चा पिंडेसणा। [६३६]

अहावरा तच्चा पिंडेसणा;—इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दा-हिणं वा उदीणं वा संतेगतिया सड्ढा भवंति; गाहावती वा जाव कम्मकरी वा, तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूवरूवेसु भायणजातेसु उवणिक्खित्तपुव्वे[1] सिया, तंजहा;—थालंसि वा, पिठरंसि वा, सरगंसि[2] वा, परगंसि[3] वा, वरगंसि[4] वा। अहपुण एवं जाणेज्जा—असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—सेय पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहिए वा— से

१ अशनादि इतिशेष: २ सूर्पादौ ३ छब्बिकादौ ४ सहर्घ्यपात्रे

पात्रथीज मळतां आहारपाणी पोते मागी लेवां अथवा बीजो आपवा मांडे ते ग्रहण करवां. ए पहेली पिंडेषणा. [६३५]

बीजी पिंडेषणा आ के खरडेलो हाथ अने खरडेलुं पात्र. आवी रीतेज आहारपाणी ग्रहण करवा. ए बीजी पिंडेषणा. [६३६]

त्रीजी पिंडेषणा आ छे. आ पृथ्वीपर चारे बाजु केटलाएक गृहस्थथी मांडी चाकर लगीना श्रद्धालु जीव होयछे, तेओने त्यां थाळ, हांडां, सूपडां, छाब, के पहुं मूलां वासणमां आहारपाणी पडेलां होय छे, जो एवुं जणाय के तेना हाथ

पुव्वामेव आलोएज्जा, "आउसो त्ति वा, भगिणि त्ति वा, एतेणं तुमं अ-संसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेण, संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण अस्सिं पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवितु दलयाहि" तहप्पगारं भोयणजायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा, फासुयं जाव पडिगाहेज्जा तच्चा पिंडेसणा । (६३३)

अहावरा चउत्था पिंडेसणा;—से भिक्खू वा भिक्खूणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुअं वा जाव चाउलपलंयं वा—अस्सिं खलु पडिगाहितंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाते[1]—तहप्पगारं पिधुं वा सयं वा जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा । चउत्था पिंडेसणा [६३४]

अहावरा पंचमा पिंडेसणा; से भिक्खू वा भिक्खूणी वा जाव

१ अल्पं तुषादि त्यजनीयं

चोखा छे अने वासण खरडेलां छे, तो आवे वखते पात्रधारी अथवा करपात्री मुनिए शरुआतमांज आवुं कहेवुं के " हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, तमो चोखा हाथ अने खरडेला पात्रवडे अथवा खरडेला हाथ अने चोखा पात्रवडे आ आहार पात्रमां के हाथमां आपवानुं करो. " अने आ रीते मळेलो आहारज ग्रहण करवो. ए त्रीजी पिंडेषणा. [६३७]

चोथी पिंडेषणा—मुनि के आर्याए जे पौंवां के चोखानी भूकी एवी जणाय के जे लीधाथी धोडोज पश्चात्कर्म नामनो दोष थशे तथा तेमांनी थोडीज छाल वगेरे छांडवी पडशे तेवां पौंवां के चोखानी भूकी विगेरेज ग्रहण करवां. ए चोथी पिंडेषणा. [६३८]

पांचमी पिंडेषणा—मुनि के आर्याए जे भोजन गृहस्थे पोते खावा माटे

समाणे उग्गहितमेव भोयण जातं जाणेज्जा, तंजहाः—सरावंसि वा, डिंडिमंसि[1] वा कोसगंसि[2] वा अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणिसु उदगलेवे—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा। पंचमा पिंडेसणा। [६३९]

अहावरा छट्ठा पिंडेसणाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उग्गहियमेव भोयणजायं जाणेज्जा जंच सयट्ठाए पग्गहियं जंच परट्ठाए पग्गहियं पायपरियावन्नं पाणिपरियावन्नं फासुयं जाव पडिगाहेज्जा। छट्ठा पिंडेसणा। [६४०]

अहावरा सत्तमा पिंडेसणा;—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव समाणे उज्झियधम्मियं भोयणजायं जाणेज्जा—जंचन्ने बहवे दुपय—तउप्पय—समण—माहण—अतिहि—किवण—वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं भोयणजायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से दिज्जा जाव

१ डिंडिमं कांस्यं भाजनं २ मगधप्रसिद्धभाजनविशेषः

प्याला, थाळी, के कोपक नामना वासणमां खुल्लुं धरेलुं होय ने ते गृहस्थना हाथ परनी भीनाश सुकाइ गएली होय तोज ते ग्रहण करवुं. ए पांचमी पिंडेषणा. [६३९]

छट्ठी पिंडेषणा—मुनि के आर्याए जे भोजन गृहस्थे पोता माटे के बीजाने देवा माटे पात्र के हाथमां खुल्लुं धरेलुं जे भोजन जणाय तेज लेवुं, ए छट्ठी पिंडेषणा. [६४०]

सातमी पिंडेषणा—मुनी के आर्याए जे भोजन फेंकी देवा योग्य जणाय अने जेने बीजा मनुष्य के जानवरो अथवा तो श्रमण ब्राह्मणादिक लेवा न इच्छे

शय्याख्य मेकादश मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए, से अणुपविसे गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा। (६४५)

सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं[1] वा सेज्जं[2] वा निसीहियं[3] वा चेतेज्जा[4]। (६४६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अप्पंडं

१ कायेत्सर्गं २ संस्तारकं ३ स्वाध्यायं ४ चिंतयेत् कुर्यात्.

अध्ययन अग्यारमुं.

शय्या.

पहेलो उद्देश.

(वसतिना विविध दोषोनुं वर्णन.)

जे भिक्षुक अथवा आर्याने उपाश्रय [मकान] मेळववानी जरूर पडे त्यारे तेणे गाम नगर के राजधानिमां जवुं. [६४५]

जे मकान इंडां, जंतुओ, अने कीडीओवाळुं जणाय तेवा मकानमां स्थान शय्या के बेठक नहि करवी. [६४६]

भिक्षुक अथवा आर्याए जे मकानमां इंडां, जंतुओ अने कीडीओ घणा

अप्पपाणं जाव अप्पसताणाय तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहेत्ता पमज्जेत्ता ततो संजयामेघ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा। (६४७)

से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा अस्सिंपडियाए[५] एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएंति तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरगडे वा अपुरिसंतरगडे वा जाव आसेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। एवं बहवे साहम्मिया एगा साहम्मिणी बहवे साहम्मिणीओ। [६४८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा

५ एतान् मुनीन् प्रतिज्ञाय.

थोडां [१] जणाय तेवा उपाश्रयमां जोइ तपासी प्रमार्जन करी त्यारबाद यतनापूर्वक त्यां स्थान शय्या के बेठक करवी. [६४७]

वळी जे उपाश्रय मुनिओना माटेज बंधावेलो के राखेलो जणाय, जेमके, ते एक मुकरर समानधर्मी साधुना माटे जीवहिंसापूर्वक बंधायो होय या वेचातो लइ राख्यो होय अथवा भाडे राखेलो होय या झूंटावी लइ राखेलो होय या मालेकनी रजा शिवाय राखेलो होय या ते तैयार थइ रहेतां तरत बीजा माणसनी वती मुनिना सामे जइ जणावेलो होय तेवो उपाश्रय अगर तेज देनार धणीए चणेलो होय या बीजा पुरुषे चणेलो होय तेमज ते देनारे नहि वापरेलो होय या वापरेलो होय तोपण तेमां मुनिए तथा आर्याए स्थान शय्या के बेठक नहि करवी. एज रीते घणा मुनिओने या एक आर्या के घणी आर्याओने उद्देशीने करेला मकानमां पण नहि रहेवुं. [६४८]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान घणाएक (बुद्धमती) श्रमण, ब्राह्मण, व-

१ नहि जेवा only few

शय्याख्य मेकादश मध्ययनम्

(प्रथम उद्देशः)

जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा ३ भिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए, से अणुपविसे गामं वा नगरं वा जाव रायहाणिं वा। (६४५)

सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव ससंताणयं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं[1] वा सेज्जं[2] वा निसीहियं[3] वा चेतेज्जा[4]। (६४६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अप्पंडं

१ कायेत्सर्गं २ संस्तारकं ३ स्वाध्यायं ४ चिंतयेत् कुर्यात्.

अध्ययन अग्यारमुं.

शय्या.

पहेलो उद्देश.

(वसतिना विचित्र दोषोनुं वर्णन.)

जे भिक्षुक अथवा आर्याने उपाश्रय [मकान] मेळववानी जरुर पडे त्यारे तेणे गाम नगर के राजधानिमां जवुं. [६४५]

जे मकान इंडां, जंतुओ, अने कीडीओवाळुं जणाय तेवा मकानमां स्थान शय्या के बेठक नहि करवी. [६४६]

भिक्षुक अथवा आर्याए जे मकानमां इंडां, जंतुओ अने कीडीओ घणा

अप्पपाणं जाव अप्पसताणायं तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहेत्ता पमज्जेत्ता ततो संजयामेघ ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा। (६४७)

से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा अस्सिंपडियाए[५] एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूताइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु वेएंति तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतर-गडे वा अपुरिसंतरगडे वा जाव आसेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। एवं बहवे साहम्मिया एगा साहम्मिणी बहवे साहम्मिणीओ। [६४८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा

५ एतान् मुनीन् प्रतिज्ञाय.

थोडां [१] जणाय तेवा उपाश्रयमां जोइ तपासी प्रमार्जन करी त्यारबाद यतनापूर्वक त्यां स्थान शय्या के बेठक करवी. [६४७]

वळी जे उपाश्रय मुनिओना माटेज बंधावेलो के राखेलो जणाय, जेमके, ते एक मुकरर समानधर्मी साधुना माटे जीवहिंसापूर्वक बंधायो होय या वेचातो लइ राख्यो होय अथवा भाडे राखेलो होय या झूंटावी लइ राखेलो होय या मालेकनी रजा शिवाय राखेलो होय या ते तैयार थइ रहेतां तरत बीजा माणसनी वती मुनिना सामे जइ जणावेलो होय तेवो उपाश्रय अगर तेज देनार धणीए चणेलो होय या बीजा पुरुषे चणेलो होय तेमज ते देनारे नहि वापरेलो होय या वापरेलो होय तोपण तेमां मुनिए तथा आर्याए स्थान शय्या के बेटक नहि करवी. एज रीते घणा मुनिओने या एक आर्या के घणी आर्याओने उद्देशीने करेला मकानमां पण नहि रहेवुं. [६४८]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान घणाएक (बुद्धमती) श्रमण, ब्राह्मण, य-

१ नहि जेवा only few

अस्संजए भिक्खुपडियाए किवणवणीमए पगणिय पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं जाव वेएई तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा अहपुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव आसेविते पडिलेहित्ता पमज्जित्ता ततो संजयामेव ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। (६४९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उवस्सयं जाणेज्जा अस्संजए भिक्खुपडियाए[1] कट्टिए[2] वा उक्कंपिए वा छन्ने वा लित्ते वा घट्टे वा मट्ठे वा संसट्ठे वा संपधूमिए वा, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा अहपुण एव जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव आसेविते, पडिलेहित्ता पमज्जित्ता ततो संजयामेव जाव चेतेज्जा। (६५०)

---

१ उपाश्रयं कुर्यात् सचैवं भूतःस्यादितिशेषः २ काष्टादिभिःसंस्कृतः

टेमार्गु, याचक, के भाटचारणोना माटे करेलुं के राखेलुं जणाय अने ते मकान तें देनार पुरुषेज करेलुं होय अने हजु वपरायेलुं पण न होय तो तेवा मकानमां रहेवुं नहि, अने जो ते देनार पुरुषथी बीजा पुरुषे करेल होय अने वपरायेल पण होय तो मुनि अथवा आर्याए यतनापूर्वक तेमां रहेवुं. [६४९]

जे उपाश्रय मुनिना माटे असंयति गृहस्थोए सुधराव्यो होय, समराव्यो होय, लींपाव्यो होय, साफ कराव्यो होय के सुगंधित कराव्यो होय तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुषेज तेम करेलो होय अने सुधराव्या बाद वापरेलो पण न होय तो तेमां मुनि तथा आर्याए स्थान शय्या के बेठक नहि करवी. अने जो ते देनार पुरुषथी बीजा पुरुषे, करेलो होय अने वपरायेलो पण होय तो यतनापूर्वक त्यां वसवुं. [६५०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—असंजए भिक्खुपडियए खुड्डियाओ दुवारिओ महल्लिआओ कुज्जा, जहा पिंडेसणाए, जाव संथारगं संथरेज्जा बहिया णिणक्खु तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव अणासेविते णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरगडे जाव आसेविते—पडिलेहित्ता पमज्जित्ता ततो संजयामेव जाव चेतेज्जा। (६५१)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा असंजए भिक्खुपडियाए उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा, ठाणातो ठाणं साहरति, बहिया वा णिणक्खु[1]—तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। अह पुण एवं जाणेज्जा, पुरिसंतरगडे जाव चेतेज्जा। (६५२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा—असंजए

१ निस्सारयति

जे मकानमाना नाना ओरडाओने मुनिना माटे असंयति गृहस्थ मोहोटां करावे अगर मोहोटाने नाना करावे अथवा मुनिने माटे अंदर बेठक करे अथवा बाहिर करे तो तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुषेज तेम करेलो अने हजु वापरेलो न होय तो त्यां नहि वसवुं, पण जो ते बीजा पुरुषे करेलो अने वापरेलो जणाय तो त्यां यतनापूर्वक वसवुं [६५१]

जे मकानमांथी गृहस्थ साधुना माटे कंद, मूळ, पत्र, पुष्प, फळ, बीज, के घास वगेरे लीलोतरीने एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे लइ जाय अथवा बाहेर कहाडे तेवो उपाश्रय जो ते देनार पुरुषे तेम करेलो जणाय तो त्यां नहि रहेवुं, पण जो बीजा पुरुषे तेम करेलो जणाय तो त्यां रहेवुं. [६५२]

जे मकानमांथी गृहस्थ साधुना माटे बाजोट, पाट, नीसरणी के उखळ

भिक्खुपडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, ठाणातो ठाणं साहरति, बहिया वा णिणक्खु,—तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा । अहपुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव चेतेज्जा । (६५३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा, तं जहा;—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, णणत्थ आगाढा—गाढेहिं कारणेहिं[१], ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा । (६५४)

से आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा, उच्छोलेज्ज वा पहोएज्ज वा; णो तत्थ ऊसढं[२] पगरेज्जा, तंजहा;—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा,

१ तथाविधात् प्रयोजनादित्यर्थः २ उत्सृष्टं

उथलावीने एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे राखे अथवा बाहेर कहाडी मेले तेवो उपाश्रय जो लेनार धणीएज तेम करेल होय तो त्यां नहि वसवुं पण जो पुरुषांतरकृत होय तो यतनापूर्वक त्यां रहेवुं [६५३]

मुनिए के आर्याए थांभलानी टोच पर रहेला मकानमां मांचडाओ उपर के माळ उपर अथवा बीजी भों उपर अथवा अगाशीमां के बीजा कोइ पण आकाशवर्त्ती मकानमां जरुरी कारणो शिवाय रहेवुं नहिं [६५४]

कदाच त्यां रहेवुं पडे त्यारे त्यां थंडा के गरम पाणीथी हाथ, पग, दांत के मुख धोवां करवां नहि. तेमज त्यां खरचु पाणी के लघुनीत [पिशाब] तथा श्लेष्म [बडखा], वमन, पित्त, परु, लोही के कोइ पण शरीर संबंधी अशुचि करवी नहि, केमके तेम करतां केवळज्ञानिए दूषण वर्णव्यां छे, जे माटे त्यां तेम

पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नतरं वा सरीरावयवं। केवली बूया "आयाण-मेयं" से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे पवडेमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नतरं वा कायंसि इंदियजातं लूसेज्जा पाणाणि वा अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना जाव जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाते णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। (६५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं सखुड्डं[1] सपसुभत्तपाणं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतिकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स। अलसए[2] वा विसूइया वा छड्डी वा णं उव्वाहिज्जा अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुणवडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेलेण वा, घएण वा, णवणीतेण वा, वसाए वा,

१ सबालं क्षुद्रजंतुसहितं वा २ हस्तपादादिस्तभः श्वपथुर्वा

करतां कदाच मुनि स्खलित थइ नीचे पडी जाय तो तेना हाथपग के माथुं अथवा कोइ पण इंद्रियो भांगी नाश पामे अने हेठे आवेला जीव जंतुओनो पण नाश थाय. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे आकाशवर्त्ती मकानमां निवास न करवो [६५५]

जे मकांनमां बालबच्चां के स्त्रीओ रहेती होय अथवा कूतरा बिलाडा विगेरे क्षुद्र जंतुओ रहेतां होय अथवा जानवरो रहेतां होय तथा तेमनां खानपान त्यां रखातां होय तेवा गृहस्थना परिचयवाला मकानमां वास न करवो. कारण के तेवा गृहस्थना घरमां वसतां बहु दोष संभवे छे. त्यां रहेला मुनिने त्यां पहेलो दोष ए के कदाच जो सोजा, विशुचिका, उल्टी, के कोइ पण रोग के शूळ विगेरे पीडा उत्पन्न थशे तो त्यां रहेतां असंयाति गृहस्थो तरत करुणा लावीने ते मुनिना शरीरने तेल, घृत, माखण के चरबी मसळे के चोपडे, अथवा तो सुगंधि द्रव्यो वडे,

भिक्खुपडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, ठाणातो ठाणं साहरति, बहिया वा णिणक्खु,—तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरगडे जाव णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। अहपुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरगडे जाव चेतेज्जा। (६५३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा, तं जहा;—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, णणत्थ आगाढा—गाढेहिं कारणेहिं[१], ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। (६५४)

से आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा, उच्छोलेज्ज वा पहोएज्ज वा; णो तत्थ ऊसढं[२] पगरेज्जा, तंजहा;—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा,

१ तथाविधात् प्रयोजनादित्यर्थः २ उत्सृष्टं

उथलावीने एक ठेकाणेथी बीजे ठेकाणे राखे अथवा बाहेर कहाडी मेले तेवो उपाश्रय जो लेनार धणीएज तेम करेल होय तो त्यां नहि वसवुं पण जो पुरुषांतरकृत होय तो यतनापूर्वक त्यां रहेवुं [६५३]

मुनिए के आर्याए थांभलानी टोच पर रहेला मकानमां मांचडाओ उपर के माळ उपर अथवा बीजी भों उपर अथवा अगाशीमां के बीजा कोइ पण आकाशवर्त्ती मकानमां जरुरी कारणो शिवाय रहेवुं नहिं [६५४]

कदाच त्यां रहेवुं पड त्यारे त्यां थंडा के गरम पाणीथी हाथ, पग, दांत के मुख धोवां करवां नहि. तमज त्यां खरचु पाणी के लघुनीत [पिशाव] तथा श्लेष्म [घडखा], वमन, पित्त, परु, लोही के कोइ पण शरीर संबंधी अशुचि करची नहि, केमके तेम करतां केवळज्ञानिए दूपण वर्णव्यां छे, जे माटे त्यां तेम

पूतिं वा, सोणियं वा, अन्नतरं वा सरीरावयवं। केवली बूया "आयाण-मेयं" से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे पवडेमाणे वा हत्थं वा जाव सीसं वा अन्नतरं वा कायंसि इंदियजातं लूसेज्जा पाणाणि वा अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना जाव जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाते णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। (६५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं सखुड्डं[1] सपसुभत्तपाणं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतिकुलेण सद्धिं संवसमाणस्स। अलसए[2] वा विसूइया वा छड्डी वा णं उव्वाहिज्जा अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुणवडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेलेण वा, घएण वा, णवणीतेण वा, वसाए वा,

१ सबालं क्षुद्रजंतुसहितं वा २ हस्तपादादिस्तभः श्वपथुर्वा

करतां कदाच मुनि स्खलित थइ नीचे पडी जाय तो तेना हाथपग के माथुं अथवा कोइ पण इंद्रियो भांगी नाश पामे अने हेठे आवेला जीव जंतुओनो पण नाश थाय, माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे आकाशवर्त्ती मकानमां निवास न करवो [६५५]

जे मकांनमां बालबच्चां के स्त्रीओ रहेती होय अथवा कूतरा बिलाडा विगेरे क्षुद्र जंतुओ रहेतां होय अथवा जानवरो रहेतां होय तथा तेमनां खानपान त्यां रखातां होय तेवा गृहस्थना परिचयवाला मकानमां वास न करवो. कारण के तेवा गृहस्थना घरमां वसतां बहु दोष संभवे छे. त्यां रहेला मुनिने त्यां पहेलो दोष ए के कदाच जो सोजा, विशूचिका, उलटी, के कोइ पण रोग के शूल विगेरे पीडा उत्पन्न थशे तो त्यां रहेता असंयति गृहस्थो तरत करुणा लावीने ते मुनिना शरीरने तेल, घृत, माखण के चरबी मसळे के चोपडे, अथवा तो सुगंधि द्रव्यो वडे,

अब्भंगेज्ज वा मक्खिज्ज वा सिणाणेण[1] वा कक्केण[2] वा लोद्देण[3] वा वन्नेण[4] वा चुण्णेण वा पउमेण[5] वा आघंसेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा; सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पच्छोलेज्ज वा पहोएज्ज वा सिणाविज्ज वा सिंचेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पयालिज्ज वा उज्जलित्ता कायं आयावेज्ज पयावेज्ज वा अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा एस पतिन्ना जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा। (६५६)

आयाणं—मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए वसमाणस्स;—इहखलु गाहावती वा जाव कम्मकरी वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा वयंति वा रुंभंति वा उद्दवंति वा, अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा:—एते खलु अन्नमन्नं उक्कोसंतु वा, मा वा उक्कोसंतु जाव मा वा उद्दवंतु। अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना जाव जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। (६५७)

---

१ (सुगंधिद्रव्यसमुदय:) २ [कषायद्रव्यक्वाथ:] ३ लोध्रं प्रतितं ४ कंपिल्लकादि ५ पद्मं प्रतीतं

या उकाळेला क्वाथ जळवडे, या लोद्रवडे या चूर्णवडे या पद्मकवडे घशसे के खरडशे; अथवा थंडा के गरम पाणीथी छांटशे, धोशे, नवरावशे, सींचशे, अथवा लाकडाने लाकडा साथ घसी अग्नि सळगावी शरीरने तपावशे. माटे साधुने एवो भलामण छे के तेणे तेवी तरेहना गृहस्थना घरे निवास न करवो [६५६]

त्यां वसतां वळी बीजो आ दोष छे. त्यां रहेतां गृहस्थथी चाकर लगीना लोको अरसपरस बोलाचाली करे या मारामारी विगेरे बखेडो करे त्यारे ते देखी साधुनुं दिल उंचुं थाय जेमके "एओ भले लड्या करो अथवा एओ लडोमां" ते माटे साधुने ए भलामण छे के तेणे तेवा प्रकारना गृहस्थना घरे निवास न करवो [६५७]

आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्सः—इहखलु गाहावती अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पज्जालेज्ज वा विज्झविज्ज वा, अह भिक्खू उच्चावयं मण णियच्छेज्जाः- एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा, मा वा उज्जालेंतु, जाव मा वा विज्झवेंतु अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए नो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा। (६५८)

आयाण—मेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्स;—इहखलु गाहावतिस्स कुंडले वा, गुणं [1] वा, मणी वा, मोत्तिए वा, हिरन्ने वा, कडगाणि वा, तुडियाणि [2] वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा तरुणियं वा कुमारिं अलंकियविभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, "एरिसिया वा सा, णोवा एरिसिया" इति वा णं बूया, इति वा णं मणं साएज्जा। अह भिक्खुणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। (६५९)

१ रसना—मेखलामंडन मितियावत् २ अंगदानि

वळी त्यां त्रीजो ए दोष छे के त्यां गृहस्थ पोताना माटे अग्नि धखावीने वाळे के वधारे त्यारे मुनिनुं कदाच दिल उंचुं नीचुं थाय के आ गृहस्थो भले अग्नि धखावो, माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे तेवी जातना मकानमां नहि रहेवुं [६५८]

मुनिने गृहस्थ साथे वसतां चोथो आ दोष छे;—गृहस्थने त्यां कुंडल, कंदोरा, माणि, मोती, सुवर्ण, कडा, बाजुबंध, गंठा, सांकळ, हार, अर्धहार, एकावळी, मुक्तावळी, रत्नावळी, विगेरे आभूषणो जोइ अथवा तेना शणगारथी शोभित युवान कुमारिओ जोइ मुनिना मनने विकल्प थाय के मारे घेर पण नवुं आवुं हतुं या मारे त्यां आवुं न हतुं. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे आवे स्थळे न रहेवुं [६५९]

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्स:—इह गाहावतिणीओ वा, गाहावतिधूयाओ वा. गाहावतिसुण्हाओ वा, गाहावतिधातीओ वा गाहावतिदासीओ ।, गाहावतिकम्मकरीओ वा, तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवति:—" जे इमे भवति समणा भगवंतो जाव उवरता-मेहुणातो धम्मातो, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टित्ताए, जा य खलु एतेसिं सद्धिं मेहुणधम्मं परियारणाए आउट्टेज्ज्ञा, पुत्तं खलु सा लभेज्ज्ञा ओयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं[1] जसस्सिं संपहारियं[2] आलोयं दरिसिणिज्ज्ञं." एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सङ्किया तं तवस्सिं भिक्खुं मेहुणधम्मपरियारणाए आउट्टावेज्ज्ञा[3] । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा सेज्ज्ञं वा णिसीहियं वा चेतेज्ज्ञा । (६६०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (६६१)

. ...

१ रुपवंतं २ संग्रामशूरं ३ अभिमुखं कुर्यात्

गृहस्थ साथे वसतां पांचमो आ दोष छे, गृहस्थना घरे तेनी स्त्रीओ, अथवा पुत्रीओ अथवा वहुओ, अथवा दाइओ अथवा दासीओ एक बीजामां आवुं बोले छे के "जे आ स्त्री संभोगथी निवर्त्तेला श्रमण भगवंत होय छे तेओने स्त्रीओ साथे मैथुन करवुं निषिद्ध छे, पण जो कोइ स्त्री (एमने डगावीने) एमना साथे संभोग करे तो तेणीने बळवान् तेजस्वी रुपवान् यशस्वी अने विजयी पुत्रनी प्राप्ति थाय." आवुं बोल्वुं सांभळीने कोइ पुत्रनी वांछा धरनारी भोळी स्त्री ते तपस्वि मुनिने डगावीने तेने पोताना पाशमां पाडे. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे एवा स्थळे नहि रहेवुं [६६०]

ए सर्व मुनि अने आर्यानुं सदाचरण छे (६६१)

[द्वितीय उद्देशः]

गाहावई णामेगे सुइसमायारा भवंति, भिक्खू य असिणाणए मोयसमायारे[1] से तग्गंधे दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवति। जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ते भिक्खुपडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा नो करेज्जा वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। (६६२)

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावतिहिं सद्धिं संवसमाणस्सः—इह खलु गाहावतिस्स अप्पणो सअट्ठाए विरूवरूवे भोयणजाए उवखडिए

१ कायिकाव्यापारवान्, कार्यवशात्.

बीजो उद्देश.

मुनिने गृहस्थ साथे वसतां थता दोषो तथा तेणे क्या क्या स्थळे न रहेवुं.

गृहस्थ साथे मुनिने वसतां घणा दोष रहेला छे. घणाएक गृहस्थो शौचाचारने पाळनारा होय छे. अने मुनि तो स्नान रहित होवाथी तथा (कारण योगे स्नानीदिक, पण मुनि कर्म करता होवाथी) अपूर्ण शौचवाळा अने दुर्गंधि परसेवावाळा होय छे. जेथी ते गृहस्थने तेमां अळखामणा थइ पडे छे. वळी गृहस्थोने जे पेहेलां करवानुं होय ते ते मुनिनी शरमे पछीथी करवुं पडे छे अथवा जे पछी करवानुं होय ते पेहेलां करी ले छे. माटे मुनिने एवी संभावना छे के तेवे स्थळे गृहस्थ साथे न वसवुं. [६६२]

वळी गृहस्थने साथे वसतां आ दोष छे:—गृहस्थने त्यां पोताना

सिया, अह भिक्खुपडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेज्ज वा उवकरेज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा पीत्तए वा वियट्टित्तए[1] वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं नो तहप्पगारे उवस्सए ठाणं चेतेज्जा । (६६३)

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावतिणा सद्धिं संवसमाणस्सः—इह खलु गाहावतिस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्नपुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खुपडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदेज्ज वा किणेज्ज वा पामिच्चेज्ज वा दारुणा वा दारुपरिणामं कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा पज्जालेज्ज वा तत्थ भिक्खू अभिकंखेज्ज वा आतावेत्तए वा पयावेत्तए वा वियडित्तए वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं चेतेज्जा । [६६४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे रा-

१ तत्रैव विवर्त्तितुं आसितुं.

माटे जूदी जूदी जातनुं भोजन तैयार थएलुं होय छे. अने जो मुनि तेमने त्यां रहे तो मुनिना माटे पण ते गृहस्थ आहार पाणी तैयार करावे. अने वखते मुनि ते आहार पाणी खावा पीवा केरवापरवानी इच्छा पण करे. एटला माटे तेने भलामण छे के तेणे तेवा स्थळे मूळथीज न रहेवुं. [६६३]

गृहस्थो साथे वसतां आठमो आ दोष छे,—गृहस्थने त्यां पोताना माटे घणाएक लाकडांओ कापी फाडी राखेला होय छे. अने जो तेमने त्यां मुनि जइ रहे तो पछी तेना सारुं तेओ लाकडां फाडे या वेचातां लावे या उधारे लावे अने वळी लाकडा साथे लाकडुं घसीने अग्नि धखावे अने तेवे वखते कदाच मुनिने अग्नि पासे तापवा करवानी इच्छा उत्पन्न थाय. माटे मुनिने ए भलामण छे के तेणे तेवा स्थळे रहेवुं नहि. [६६४]

गृहस्थ साथे वसतां मुनिने नवमो आ दोष छे. गृहस्थने त्यां वसता

ओ वा वियाले वा गाहावतिकुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा[1], तेणे य तस्संधियारी अणुपविसेज्जा, तस्स भिक्खुस्स णो कप्पति एवं वदित्तए— " अयं तेणे पविसइ वा, णो वा पविसइ, उवलियति वा, णो वा उवलियति, आयवति वा, णो वा आयवति, वदति वा, णोवा वदति, तेण हडं अण्णेण हडं, तस्स हडं अण्णस्स हडं, अयं तेणे, अयं उवचरए, अयं हंता, अयं एत्थ मकासी, " तं तवस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणं—ति संकति । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव णो चेतेज्जा । (६६५)

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा, तंजहाः—तणपुंजेसु वा पलालपुंजेसु वा सअंडे जाव ससंताणए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएज्जा । (६६६)

---

१ उद्घाटयेत्.

मुनि के आर्या लघुनीत के वडी नीत करवा माटे रात्रिए अथवा सांज सवारे गृहस्थना घरनो दरवाजो उघाडे ते वखते कदाच कोइ चोर अंदर भराइ बेसे तो त्यां मुनिथी तो आवुं बोली शकाय नहि के "आ चोर पेसे छे के छुपाए छे या दोडी आवे छे के बोले छे, अथवा तेणे चोर्युं के बीजाए चोर्युं, ते गृहस्थनुं चोरायुं के बीजा कोइनुं चोरायुं, आ रयो चोर, आ रयो तेनो मददगार, आ रयो मारनार, अने एणे अहीं आघलुं कीधुं इत्यादि." एवी रीतने पाछलथी ते गृहस्थ ते तपस्विनेज चोर करी माने छे. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे गृहस्थना साथे नहि रहेवुं. (६६५)

मुनिने के आर्याने जे मकान घास तथा परालना जथ्थामां आवेलुं होवाथी त्यां इंडा तथा जीवसंतुलादि रहेलुं जणाय तेवा मकानमां तेमणे नहि रहेवुं. [६६६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तण-पुंजेसुवा पलालपुंजे सु अप्पंडे[1] जाव चेतेज्जा। [६६७]

से आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावतिकुलेसु वा परियाव-सहेसु वा अभिक्खणं अभिक्खण साहम्मिएहिं ओवयमाणेहिं णो ओवए-ज्जा[2]। [६६८]

से आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु वा जे भयंतारो उउबद्धियं[3] वासावासियं वा कप्पं उवातिणित्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो संवसंति, अय माउसो कालाइक्कंतकिरिया भवति। (६६९)

से आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु वा जे भयंतारो उउबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावेत्ता तं दुगुणात्ति गुणेण अपरिहरित्ता

अल्पशब्दोऽभाववचनः २ अवपतेत् ३ ऋतुबद्धं शीतोष्णकाल-योर्मासकल्पं.

अने जे मकान धान्य के परालना जथ्थामां आवेलुं छतां जीवजंतु रहित जणाय त्यां निवास करवो. [६६७]

वळी मुसाफरखाना, बंगला, घरो, तथा मठो के ज्यां वारंवार बीजा साधुओ आवी पडता होय त्यां पण मुनिए नहि जवुं. [६६८]

जे मुनि भगवंतो तेवा मुसाफरखाना, बंगला, या घरो के मठोमां एक म-हिनो अथवा वर्षाऋतुना चार महिना रह्या बाद फरी वारंवार त्यां आवी वसे छे, ते हे आयुष्मन्, कालातिक्रांतक्रिया नामे दोषवाळी वसती जाणवी. (६६९)

जे मुनि भगवंतो तेवा मुसाफरखाना के मठोमां एक महिनो अथवा वर्षा-ऋतुना चार महिना रही पछा ते गुजारेला काळथी बमणा[1] अथवा त्रमणुं अंतर

१ जेटलो वखत एक गाममां रहेल होय तेथी बमणो के त्रमणो वखत बिहार करी ने गाममां अवाय.

तत्थेव भुज्जो भुज्जो संवसंति अय—माउसो इतरा उवट्ठाणकिरिया यावि भवति । [६७०]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगतिया सड्ढा भवंति, तंजहा, गाहावती वा, जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते[1] भवति । तं सद्दहमाणेहिं तं पत्तियमाणेहिं तं रोयमाणेहिं बहवे समण—माहण—अतिहि- किवण—वणीमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं[2] भवंति, तंजहा:—आएसणाणि[3] वा, आयतणाणि[4] वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाणि वा, पणिय-

१ सुष्टुनिशांतःश्रुतः २ महांति—कृतानि इति शेष. ३ लोहकारशाळाः ४ देवकुलपार्श्वापवरकाणि.

नहि पाडतां तत्तज त्यां पाछा आवीने वसे छे, ए हे आयुष्मन् उपस्थानक्रिया नामे दोषवाळी वसति जाणवी. (६७०)

आ जगत्मां चारे बाजु केटलाएक गृहस्थ तथा स्त्रीओ भोळा अने श्रद्धालु होय छे. तेओने मुनिना आचारनी झाझी माहिती होती नथी. मात्र मुनिने दान आपवामां लाभफळ छे एवी श्रद्धा अने रुचि धरीने तेओ घणा श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दीन, रांक भाट वगेरेने रहेवा माटे मोटां मकानो चणावे छे जेवा के लोहारना कारखानाओ, देवालयोनी बाजुना ओरडाओ, देवालयो, सभाओ, प्रपाओ[1] दुकानो, वखारो, यानशाळाओ,[2] चूनाना कारखानाओ, दर्भना कारखानाओ, वाधरना कारखानाओ,[3] छालना कारखानाओ, वनस्पतिना कारखानाओ,

१ पाणीनां परब. पाणी पावाना अने तेनी जगा. २ गाडीखानाओ Houses for holding carriage. ३ चामडाना वरखाने वींटळी—वींटीने तेनी वाधरी पछी पाणीना जोर मेंलवामां ढपणी जाडी अने मजबुत सादडीओ बनवामां वापरवानां.

गिहाणि वा, पणियसालाओ वा, जाणगिहाणि वा, जाणसालाओ, सुधाकम्मंताणि[1] वा, डब्भकम्मंताणि वा, वद्धकम्मंताणि[2] वा, वक्ककम्मंताणि वा, वणकम्मंताणि वा, इंगालकम्मंताणि वा, कट्ठकम्मंताणि वा, सुसाणकम्मंताणि वा, संतिकम्मंताणि वा, सुण्णागारकम्मंताणि वा, गिरिकम्मंताणि वा, कंदराकम्मंताणि वा सेलोवट्ठाणकम्मंताणि[3] वा, भवणगिहाणि[4] वा, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं ओवयमाणेहिं ओवयंति अय–माउसो अभिक्कंतकिरिया[5] वि भवति। (६७१)

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगतिया सड्ढा भवंति–जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समण–माहण–अतिहि–किवण–वणीमए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवंति; तंजहा:–आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। जे भयंतारो तहप्पगा-

१ सुधाकर्मांतानि सुधागृहाणि २ वाध्रकर्मांतानि ३ पाषाणमंडपगृहाणि ४ द्वावपि शब्दावेकार्थौ ५ अल्प दोषाचेयं

अंगारना (अग्निना) कारखानाओ, काष्टना कारखानाओ, स्मशानगृह, शांतिगृह, शून्यघरो, पर्वतना मथाळापर बांधेला घरो, गुफाओ, तथा पाषाणना मंडपो विगेरे स्थळो–आवी जातना स्थळोमां ते श्रमण ब्राह्मणादिक आवी गया पछी जे मुनिभगवंतो तेमां उतरे छे ते हे आयुष्यमन्, अभिक्रांतक्रिया नामे दोषवाळी वसति[1] जाणवी [६७१]

आ जगत्मां चारे बाजु केटलाएक श्रद्धालु लोको होय छे तेओ श्रद्धा धरी घणा एक श्रमण ब्राह्मण अतिथि दीन तथा वंदिजनोना माटे जगाए जगाए उपर जणावेलां जूदी जूदी जातनां घरो चणावे छे. तेना घरोमां हजु अन्य श्रमणब्राह्म-

१ आ वसति थोडा दोषवाळी होवाथी मुनि सेवे छे.

राइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति, अय माउसो, अणभिक्कंतकिरिया वि भवति । [६७२]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइआ सड्ढा भवंति, तंजहा:—गाहावई वा जाव कम्मकरी वा । तेसिं च णं एव वुत्तपुव्वं भवति—"जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता जाव उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसिं कप्पाति आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए[1]; से जाणि इमाणि अम्हं अप्पणो अट्ठाए चेइयाइं भवंति, तंजहा:—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा, सव्वाणि ताणि समणाण णिसिरामो । अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सयट्ठाए चेतिस्सामो, तंजहा:—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा ।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरातरेहिं पाहुडेहिं[2] वट्टंति, अय—माउसो, वज्जकिरिया वि भवति । (६७३)

1 वसितुं 2 प्राभृतेषु दत्तेषु गृहेषु.

णादिक नहि आवी गएला छतां जे मुनि भगवंतो उतरे ते हे आयुष्यन् अनभिक्रांतक्रिया नामे दोषवाळी वसति जाणवी [६७२]

आ जगत्मां [illegible] वासु केटलाएक श्रद्धालु जीवो होय छे तेओ आम बोले छे—"जेओ आ मैथुन-धर्मथी निवर्तीने शीळवंत थइ श्रमण भगवंत थएला होय छे तेओने तेओनाज माटे करेला मकानमां उतरवुं निषिद्ध छे. माटे जे आपणे आपणा माटे बनावेलां घरो छे ते तेमने आपी देशुं; अने आपणे पाछा आपणा माटे नवां बनावी लेशुं." आवो अवाज सांभळी जे मुनि-भगवानो तेवा घरो तरफ जाय छे अने त्यां रहे छे, ते हे आयुष्मन्, वर्ज्यक्रिया नामनी दोषवाळी वसति जाणवी. [६७३]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति । तेसिं च णं आयारगोयरे णा सुणिसंते भवइ, जाव तं रोयमाणेहिं बहवे–समण–माहण–अतिहि–किवण–वणीमए पगणिय पगणिय पसुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा:–आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इतरातरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अय–माउसो, महावज्जकिरिया वि भवइ । (६७४)

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणंवा संतेगइया सड्ढा भवंति, जाव तं रोयमाणेहिं बहवे समण जाए समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तं जहा;–आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा । जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति इयरायरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अय–माउसो सावज्जकिरिया वि भवइ । (६७५)

आ जगतमां चारे बाजु केटलाएकक श्रद्धालु जीवो होय छे. तेमने मुनिना आचारनी कशी माहिति नथी होती तोपण श्रद्धा धरीने घणा श्रमण ब्राह्मण अतिथि दीन तथा वंदिजनोने माटे जूदुं जूदुं निर्धार करीने मकानो चणी राखे छे तेवा मकानो तरफ जे मुनिओ जइने रहे छे ते हे आयुष्मन्, महावर्ज्यक्रिया नामना दोषवाळी वसति जाणवी [६७४]

आ जगतमां चारे बाजु केटलाएक भोळा श्रद्धालु जीवो होय छे, तेओ घणा एक मुनिओना उद्देशे करी तेमना सारु मकानो चणावी राखे छे. तेवा मकानोमां जे मुनिओ जइने उतरे ते हे आयुष्मन् सावद्यक्रिया नामे दोषवाळी वसति जाणवी. [६७५]

इहखलु पाईणं वा पडीणं वा दाहिणं वा उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति, तंजहाः—माहावई वा जाव कम्मकरी वा। तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति, जाव तं रोयमाणेहिं एक्कं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं एवं महया आउ- तेउ—वाउ—वणस्सइ—तसकायसमारंभेणं, महया संरंभेणं महया आरंभेणं, महया विरूवरूवेहिं पावकम्मेहिं, तंजहाः—छायणओ, लेवणओ, संथारदुवारपिहणओ, सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवति, अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवति। जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, इतरातरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अय—माउसो, महासावज्जकिरिया वि भवइ। (६७६)

इहखलु पाईणं वा जाव तं रोयमाणेहिं अप्पणो सयट्ठाए तत्थ तत्थ अगारिहिं अगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहाः—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा महया पुढविकायसमारंभेणं जाव अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवति, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भ-

एज रीते जे मकान एकला तेज मुनिने उद्देशे गृहस्थे छकायना जीवोनी हिंसा करीने तथा छांपण गुंपण जळ छंटन अग्निज्वालन विगेरे अनेक पाप कर्म करीने तैयार करेलुं होय त्यां जइ मुनि रहे छे तेओ देखीता साधु छतां परमार्थे गृहस्थ जेवा होवाथी द्विपक्षी काम करे छे. माटे ते महासावद्य नामना दोषवाळी वसति थाय छे. [६७६]

आ जगत्मां चारे बाजुए रहेता श्रद्धालु जनोने अनेक पाप करी पोताना स्वप माटे बनेला कारखानां के मकानोमां जे मुनि—भगवानो जइने रहे छे तेओ

वणगिहाणि वा उवागच्छंति इतरातरेहिं पाहुडेहिं वदंति, एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अय–माउसो अप्पसावज्जा किरिया वि भवति। (६७७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं। (६७८)

[तृतीय उद्देशः]

" से¹ य णो सुलभे फासुए उंच्छे² अहेसणिज्जे। णो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं³ तंजहाः–छायणओ, लेवणओ, संथारदुवार-

१ गृहस्थं प्रति मुनिवाक्य मेतत् २ छादनादिदोषरहितः ३ पापोपादानकर्मभिः

साधुपणा रुप एक पक्षना कामनेज करनारा छे. तेमनी वसतिने अल्पक्रिया (क्रियादोप रहित) वसति जाणवी. [६७७]

(ए नव जातनी वसतिओमां अभिक्रांतक्रिया नामनी वसति अने अल्पक्रिया नामनी वसति मुनिने ऊतरवा योग्य छे) बाकीनी वसति अयोग्य छे ए सर्व मुनि तथा आर्यानो आचार छे. [६७८]

[त्रीजो उद्देशः]

(मुनिए क्या स्थळे रहेवुं–क्या स्थळे न रहेवुं.)

(जो कोइ गृहस्थ मुनिने कहे के अहीं आहार पाणी सुलभ छे माटे रहेवानी कृपा करो तो मुनिए आ प्रमाणे तेने कहेवुंः–) "सघळुं सुलभ छतां पण

पिहणओ, पिंडवायेसणाओ । सेय भिक्खू चरियारए ठाणरए निसीहियारए सेज्जा–संथार–पिंडवातेसणारए, " संति भिक्खुणो[1] एव मक्खाइणो उज्जुअडा णियागपडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया । (६७९)

संतेगइआ[2] पाहुडिया[3] उक्खित्तपुव्वा भवति, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवति, परिभाइय पुव्वा भवति, परिभुत्तपुव्वा भवति, परिट्ठावियपुव्वा भवति । एवं वियागरेमाणे समियाए वियागरेति ? हंता, भवति । (६८०)

---

१ भिक्षवः २ संति केचन ये एवंभूतां छलनां कुर्युर्यथा ३ दानार्थं कल्पिता वसतिः

निर्दोष जग्या मळवी मुश्केल छे. कारण के तेमां मुनिने माटे छत करी हशे या लीपुं गूंप्युं हशे या बेठकनो फेरफार कर्यो हशे या दरवाजा के बारणां नाना मोटा कर्या हशे वळी कदाच त्यां रहेतां मुनि ते जग्याना मालेकना घरथी अन्नातर दोषने टाळवा आहारपाणी न ल्ये त्यारे ते मालेक कोपायमान पण थाय; इत्यादि अनेक दोष संभवे छे. अने कदाच ए दूषणोथी रहित मकान मळे तोपण मुनिना स्वपने अनुकूळ मकान मळवुं मुश्केल छे कारण के तेओने तो वखते फरवानुं होय छे, वखते स्थिर बेसवानुं होय छे, वखते अभ्यास करवानुं होय छे, वखते सुवानुं होय छे. अने वखते गोचरीए जवानुं होय छे. माटे ए बधी बाबतमां सरळ पडतुं मकान मळवुं दुर्लभ छे." आ रीते केटलाएक सरळ मुमुक्षु मुनिओ निष्कपटपणे वसतिना दोष कही बतावे छे. [६७९]

वळी केटलाएक गृहस्थो मुनिना माटेज मकान बांधीने मुनि आगळ आवी छळना करे छे, जेमके आ मकान तो अमे अमारा सारुज बांध्युं छे, रंग्युं छे, धोळ्युं छे. के वापर्युं छे. माटे मुनिए एवी छळनाथी भूलवुं नहि. जे मुनि आवा प्रकारे वसतिना दोषो गृहस्थोने कही बतावे छे ते यथार्थपणाने काइं उल्लंघन करतो नथी. [६८०]

से [1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा–खुड्डियाओ, खुड्डदुवारियाओ, नीयाओ, संनिरुद्धाओ भवंति–तहप्पगारे उवस्सए राओ वा वियाले वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा पुरा हत्थेण पच्छा पाएण ततो संजतामेव णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा। [2]केवली बूया " आयाण मेयं। " जे तत्थ समणेण वा माहणेण वा छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिआ वा, भिसिया [3] वा, चेले वा. चिलिमिली [4] वा, चम्मए वा, चम्मकोसए [5] वा, चम्मच्छेदणए वा, दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले; भिक्खू च राओ वा वियाले वा णिक्खम्ममाणे वा पविसमाणे वा पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलेमाणे वा पवडेमाणे वा हत्थं वा पायं वा जाव इंदियजायं वा लूसेज्ज वा पाणाणि पा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारे उवर ए

१ कार्य वशात् चरकादिभिः सह संवासे विधि रयं यथा से भिक्खू वेत्यादि. २ अन्यथेति अध्याहार्य्यं। ३ (कमंडलुः) ४ यवनिका ५ पार्ष्णित्रं

कारणयोगे मुनिए चरक तापस विगेरेओना साथे एकज मकानमां रहेतां ते मकान जो घणुं नानुं नीचुं के सांकडुं होय तो तेवा मकानमां रातविराते नीकळतां के पेसतां पहेलां हाथ आगळ करी पछी पग आगळ धरीने यतना पूर्वक नीकळवुं के पेसवुं. एम कर्या शिवाय केवळज्ञानिओ कहे छे के दोषपात्र थवाय छे कारण के त्यां रहेला चरक तापसादिकोना ब्राह्मणोना छत्र, पात्र, दंड, लाकडी, कमंडलु वस्त्र, पडदा, चामडां, पगरखां, के चर्म कापवाना हथीआरो आम तेम रखडता पडेला होय छे. अने साधु जो रातविराते त्यांथी उपर जणवेली रीत वापर्या शिवाय आव जाव करे तो त्यां पडी के आखडीने हाथपग के कोइ पण शरीरनो अवयव

पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं ततो संजयामेव णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा। (६८१)

से आगंतारेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा । जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समाहिट्ठए, ते उवस्सयं अणुण्णवेज्जाः—" कामं[१] खलु आउसो, अहालंदं अहापरिण्णातं वसिस्सामो, जाव[२] आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए, जाव साहम्मियाए, तावता उवस्सयं गिहिस्सामो; तेण परं विहरिस्सामो । (६८२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा तस्स णामगोयं पुव्वामेव जाणेज्जा । तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंते-

१ तवेच्छया २ अत्र यावच्छब्दो नातिदेशे किंतु परिमाणार्थे तावता संबद्धश्चास्ति.

खोइ बेसे तथा तेम थतां जीवजंतुनी पण विराधना थाय माटे मुनिने ए भलामण छे के तेणे एवे प्रसंगे पेहेला हाथ आगळ करी पछी पग आगळ धरवा. [६८१]

मुनिए मुसाफरखाना, बंगला के घरो मागी लेवामां घणुं सावचेत रहेवुं. तेओनो जे मालिक अथवा कबजेदार मुखत्यार होय तेनी आ प्रमाणे रजा लेवी "हे आयुष्मन् जो तमारी इच्छा हो तो तमारी रजाना अनुसारे अमे अत्रे एक मास के चार मास रहीशुं. अगर एटलो वखत आपनी अहिं स्थिरता होय तो ज्यां सुधी आप अहीं हशो अथवा ज्यां सुधी आपने कबजे आ मकान हशे त्यां सुधीज अमे एमां रहीशुं. (कदाच गृहस्थ पूछे के तमे केटलाजण अहीं रहेशो तो मुनिए संख्या नियम न पाडवो किंतु आ प्रमाणे कहेवुं—) जेटला मुनिओ आवशे एटला रहीशुं [६८२]

मुनि अथवा आर्याए जेना मकानमां रहेवुं ते धणीना नामठाम पेहेलेथीज जाणी लेवां. अने त्यार बाद तेना घरथी निमंत्रण करतां के न करतां अशुद्ध आहा-

माणस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। [६८३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं णो पण्णस्स णिक्खमणपवेसणाए णो पण्णस्स वायण जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा। [६८४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइकुलस्स मज्झ मज्झेणं गंतु पएपएपडिबद्धं णो पण्णस्स णिक्खमण जाव चिंताए तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा। [६८५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुणं उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मरीओ वा अण्णमण्ण—मक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणंवा जाव चेतेज्जा। [६८६]

रपाणी ग्रहण नहि करवां. [६८३]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान, अग्नि तथा पाणीना प्रचारवाळुं जणाय अने तेथी तेमां नीकळवुं पेसवुं के वांचवा भणवानुं करवुं मुस्केली भरेलुं जणाय तो त्यां नहि रहेवुं. [६८४]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थना घरनी अंदरथी जवानुं होय ने तेथी नीकळवा पेसवानी तथा भणवा गणवानी अडचण पडती मालम पडे तो त्यां नहि रहेवुं. [६८५]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडीओ अरसपरस बोला चाली के मारामारी करता जणाय तथा मकानमां पण नीकळवा—पेसवानी तथा भणवा गणवानी अडचण पडती होवाथी नहि रहेवुं. [६८६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा, इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा अब्भंगेंति वा मक्खेंति वा णो पण्णस्स जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। [६८७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा कक्केण वा लोद्देण वा वण्णेण वा चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा उव्वट्टिंति वा णो पण्णस्स णिक्खमण जाव चिंताए—तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। [६८८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पण उवसस्यं जाणेज्जा-इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदगवियडेण

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडीओ अरसपरसना शरीरने तेल, घृत, माखण, के चरबी मशळता होय के चोपडता होय तेवा मकानमां उपर मुजबनी अडचण पडती होवाथी नहि रहेवुं. [६८७]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थ के चाकरडीओ एक एकना शरीरने खुशबोदार चीजो, कसायली[१] चीजोना क्वाथ, लोद्र, वर्णक, चुर्ण के पद्मक विगेरे साबुना गुण धरावनार चीजो घसता मशळता के मेल उतारता होय त्यां पण नीकळवा पेसवामां तथा भणवा गणवामां अडचण पडती होवाथी निवास न करवो. [६८८]

मुनिए अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो के चाकरडी एक—बीजाना शरीरने थंडा के गरम पाणीथी छांटता होय, धोता होय, पखाळता होय, के

१ Astringent

वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलिंति वा पधोवेंति वा सिंचंति वा सिणावेंति वा णो प णस्स जाव णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। [६८९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सें ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा इह-खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिता णिगिणा उवलीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति[1] रहस्सियं वा मंतं मंतेंति णो पण्णस्स जाव णो ठाणं वा जाव चेतेज्जा। [६९०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मे ज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा आ-इण्णसंलेखं[2], णो पण्णस्स जाव चिं ाए जाव णो ठाणं वा से ज्जं वा निसीहियं वा चेतेज्जा. । [६९१]

---

१ कथयंति. २ चित्राकं

—॥❀ ❀ ❀॥—

नवरावता होय त्यां पण जवा आववानी तथा भणवा गणवानी अडचण रहेली होवाथी उतरवुं नहि. [६८९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थो अथवा चाकर—चाकरडीओ नग्न थइने खुल्ला के छाना मैथुन करवा बाबतनी वातो करता जणाय अथवा बीजी कंई पण छूपी अकार्य संबंधी गुप्त वात करता जणाय त्यां पण भण-वागणवामां पडती अडचण तथा पोताना मनमां उत्पन्न थती कामवासना विगेरे अनेक दोषनो संभव होवाथी नहि रहेवुं. [६९०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां विरूप चित्रो पाडेलां होय तेवा मकानमां पण पूर्वानुभूत कामक्रिडाना स्मरणादिकनो संभव होवाथी नहि रहेवुं. [६९१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारं[1] एसित्तए :—। (६९२)

से ज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा सअंडं जाव संताणगं तहप्पगारं संथारगं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा। (६९३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं गरुयंतहप्पगारं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा। (६९४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं लहुयं अप्पडिहारियं[2] तहप्पगारं सेज्जासंथारयं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा। [६९५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पडं जाव संताणगं लहुयं पडिहारियं णो अहाबद्धं—तहप्पगारं लाभे ने णो पडिग्गाहेज्जा। (६९६)

१ फलकादि २ अप्रतिहारुकं गृहस्थेनपुनरनादीयमानं

संस्तारक एटले सूवानी शय्या ते केवी लेवी ?

मुनि तथा आर्याने ज्यारे संस्तारक (सूवानी शय्यानी) जरुर पडे त्यारे तेमणे आ रीते वर्तवुं. [६९२]

जे संस्तारक झीणा इडां के जीवजंतु सहित जणाय ते न लेवुं. [६९३]

जे संस्तारक जीवजंतु रहित छतां मोहोटुं जणाय ते पण न लेवुं. [३९४]

जे संस्तारक जीवजंतु रहित तथा नानुं छतां पण गृहस्थ ते पाछुं राखवा ना पाडतो होय तो ते पण न लेवुं. [६९५]

जे संस्तारक निर्जीव नानुं ने गृहस्थे पाछुं लेवा कबूल करेलुं होवा छतां बरोबर गोठवायेलुं न होय ते पण नहि लेवुं. [६९६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण संथारयं जाणेज्जा–अप्पडं जाव संताणगं लहुयं पडिहारियं अहावद्धं–तहप्पगारं संथारगं जाव लाभे संते पडिग्गाहेज्जा। (६९७)

इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म[1]। अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए; तत्थ खलु इमा पढमा पडिमाः—से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा उद्दिसिय उद्दिसिय संथारगं जाएज्जा, तंजहा; इक्कडं वा, कढिणं[2] वा, जंतुयं[3] वा, परगं[4] वा, मोरगं वा, तणं वा, कुसं वा, कुच्चगं[5] वा, पव्वगं वा; पिप्पलगं वा, पलालगं वा;[6] से

१ संस्तारको ग्राह्यइतिशेषः २ वंशकटादि. ३ जंतुकं तृणविशेषोत्पन्नं ४ येन तृणेन पुष्पाणि ग्रथ्यंते ५ येन कूर्चकाः क्रियंते ६ एतेच जळप्रधानदेशे सार्द्रभूम्यंतरणार्थं मनुज्ञाताः

मात्र जे संस्तारक निर्जीव नातुं गृहस्थे पाछुं लेवा कबूल करेलुं अने बरावर गोठवेलुं होय ते मळे तो मुनि के आर्याए ग्रहण करवुं. [६९७]

(संस्तारकनी चार प्रतिज्ञाओ)

मुनिए उपर मुजब दोषो टाळीने आ चार प्रतिज्ञाओवडे संस्तारक लेवा शीखवुं त्यां पहेली प्रतिज्ञा आः—मुनि अथवा आर्याए इकडनुं पाथरणुं, सादडी, जंतुक नामना घासनुं पाथरणुं, फूल गुंथवाना घासनुं पाथरणुं; मोरनां पीछांनुं पाथरणुं, तृणनुं पाथरणुं, दर्भनुं पाथरणुं, शर नामना रोपानुं पाथरणुं, गांठोनुं पाथरणुं, पींपळना पाननुं पाथरणुं, के पराळनुं पाथरणुं, इत्यादिक पाथरणाओ मांथी[1] गमे ते एकनुं मुकरर नाम लइने मागणी करवी. शरुआतमांज मुनिए कहेवुं के "हे आयुष्मन्, अथवा बेहेन, आ संस्तारकोमांथी अमुक संस्तारक मने आपशो?

आ पाथरणाओ जळभरपुर देशमां लीली जमीन ढांकवाने मुनि ग्रहण करे छे.

पुव्वामेव आलोएज्जा "आउसो त्ति वा, भगिणी ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?" तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं लाभे संते पडिग्गाहेज्जा । पढमा पडिमा । (६९८)

अहावरा दोच्चा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पेहाए संथारगं जाएज्जा, तंजहा; गाहावई वा जाव कम्मकरी वा; पुव्वामेव आलोएज्जा "आउसो त्ति वा भगिणि ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?" तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं जाव पडिग्गाहेज्जा । दोच्चा पडिमा ॥ (६९९

अहावरा तच्चा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागते, तंजहा; इक्कडे वा जाव पलाले वा; तस्स लाभे संवसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुए वा निसज्जिए वा विहरेज्जा तच्चा पडिमा । (७००)

ए रीते पोते मागी लेवुं, या बीजाए आपवानुं करतां ग्रहण करवुं, ए पेहेली प्रतिज्ञा. [६९८]

बीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणे छेः—मुनि अथवा आर्याए गृहस्थ के तेना चाकर नफर पासे पोताने जोइतुं संस्तारक पोताने दष्टिगोचर थाय तोज ते मागवुं. तेणे शरूआतमांज कहेवुं के "हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, आ संस्तारकोमांथी मने संस्तारक आपशो?" ए रीते तेवी जातनुं संस्तारक जाते मागी लेवुं अथवा गृहस्थ पोते आपवा मांडे तो निर्दोष जाणी ग्रहण करवुं. ए बीजी प्रतिज्ञा. [६९९]

त्रीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्याए पोते जेना मकानमां निवास कर्यो होय तेने त्यांथीज जो कंइ संस्तारक मळी आवे तो ते ग्रहण करवुं अने जो नहिं मळे तो (आखी रात) उत्कुटुक आसने[१] अथवा पलांठी वाळी बेशी करीने गुजारवी. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [७००]

[१] बे घुटणपर उतरत बेशीने.

अहावरा चउत्था पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहा - थड—मेव संथारगं जाणज्जा, तंजहा, पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहा-संथडमेव; तस्स लाभे संवसेज्जा; अलाभे उक्कुडए वा निसज्जिए वा विहरेज्जा । चउत्था पडिमा । (७०१)

इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति । (७०२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारं पच्चप्पिणित्तए, से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा सअंडं जाव संताणगं तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा । [७०३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए; से ज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं, तहप्पगारं संथारं

चोथी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्याए जे पत्थर के काष्टनुं संस्तारक यथायोग्य पणे पाथरेलुंज मळी आवे तेनापर रहेवुं. अगर तेम नहि मळे तो (आखी रात) उतरत आसने के पलांठी वाळी बेशीने गुजारवी. ए चोथी प्रतिज्ञा. [७०१]

ए चारे प्रतिज्ञाओमांनी कोइ पण प्रतिज्ञाने स्वीकार करता मुनिए बीजा मुनिने कोइ वखते पण धिकारवुं नहि. कारण के तेओ सर्वे परस्परनी समाधिथी जिनाज्ञामां रही सरखापणे रहेला छे. [७०२]

मुनि अथवा आर्याए ज्यारे लीधेलुं संस्तारक गृहस्थने पाछुं आपवुं पडे त्यारे जो ते संस्तारक इंडा के झीणा जीवजंतुवाळुं जणाय तो ते पाछुं नहि आपवुं. [७०३]

किंतु ज्यारे ते इंडा के जीवजंतु रहित जणाय त्यारे जोइ तपासी प्रमार्जन

पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय आयाविय आयाविय विणिधू-णिय विणिधूणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा। [७०४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा। के-वली[1] बूया "आयाण मेयं"। अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा वियालेवा उच्चारपासवणं परिठ्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायंवा जाव लूसिज्जा, पाणाणि वा जाव ववरोवेज्जा। अह भिक्खूणं पु-व्वोवादिट्ठा जाव जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा। [७०५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असिकंखेज्जा सेज्जासंथारगभूमिं प-

१ अन्यथेतियोज्यं

करी तडकामां तपावी तपावी (यतनार्थी) झाटकी झूटकीने त्यारबाद यतना पूर्वक गृहस्थने पाछुं आपवुं. [७०४]

मुनिए के आर्याए कोइ पण स्थळे रहेतां के ग्रामानुग्राम फरतां शरुआतमां त्यां खरचुपाणीनी भूमि जोइ तपाशी राखवी. नहि तो ते दोष पात्र थाय छे एम केवळज्ञानीए जणाव्युं छे. कारण वगर तपाशेली जग्यामां मुनि के आर्या रात-विरात वडीनीत के लघुनीत छांडता थका पडे के आखडे तो हाथपग के इंद्रियनो पण भंग थइ जाय तथा जीवजंतुनी विराधना थाय. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेमणे प्रथमथीज ते जगा जोइ तपाशी राखवी. [७०५]

मुनि अथवा आर्याए सुवा माटे अगाउथी जमीन तपाशी राखवी अने एवे-

डिलेहियए, णणत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण वा वुड्ढेण वा सेहेण वा गिलाणेण वा आएसेण[1] वा अंतेण[2] वा मज्झेण वा समेण वा विसमेण वा पवाएण वा णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय बहुफासुयं सेज्जासंथारगं संथरेज्जा। [७०६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुफासुयं सेज्जासंथारगं संथरित्ता अभिकंखेज्जा बहुफासुए सेज्जासंथारए दुरुहित्तए। [७०७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुफासुए सेज्जासंथारए दुरुहमाणे से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय पमज्जिय ततो संजयामेव बहुफासुए सेज्जासंथारगे दुरुहित्ता तओ संजयामेव बहुफासुए सेज्जासंथारए सएज्जा। [७०८]

१ प्राघूर्णकेन वा २ इतः सप्तम्यर्थे तृतीया.

प्रसंगे आचार्य, उपाध्याय, गणावच्छेदक, तथा वृद्ध, बाळ, बिमार के प्राहुणा मुनिना माटे रखायली जगा छोडी बाकीनी बीनी जगामां छेडे के वच्चमां सरखी जमीनमां के खरबचडीमां बहु पवनवाळीमां के पवन विनानीमां मुनिए यतना पुर्वक जोइ तपासी पुंजी प्रमार्जीने निर्जीव शय्या पाथरवी. [७०६]

मुनि के आर्याए उपर जणाव्या मुजब निर्जीव शय्या पाथरीने तेवी शय्यामां आळोटवा चहावुं. [७०७]

मुनि अथवा आर्याए शय्या पर सूती वखते शरुआतमांज मस्तकथी पग लगीना शरीरने प्रमाजा प्रमार्जीने यतना पुर्वक ते शय्या उपर शयन करवुं [७०८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुफासुए सेज्जासंथारए सयमाणे णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाएज्जा। से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहुफासुए सेज्जासंथारए सएज्जा। (७०९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा ऊससमाणे वा णीससमाणे वा कासमाणे वा छीयमाणे वा जंभायमाणे वा उड्डुए वा वातणिसग्गे वा करेमाणे पुव्वामेव आसयं[1] वा पोसयं[2] वा पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज वा जाव वायणिसग्गं वा करेज्जा। (७१०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्पससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंसमसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्पदंसमसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, स-

---

१ आस्यं मुखं २ पोप्यं अधिष्टानं

मुनि अथवा आर्याए शय्यामां शयन करतां कोइ कोइना हाथ पग के शरीरने अडकवुं नहि. अने वगर अटके यतना पूर्वक तेवी शय्यामां सूवुं. [७०९]

मुनि अथवा आर्याए सूवा बाद श्वासोश्वास लेतां खांसी करतां, छींकतां, जृंभा के उद्गार करतां या वातोत्सर्ग करतां पोताना मुख के अधिष्टानने हाथथी ढांकी यतना पूर्वक ते करवां. [७१०]

मुनि अथवा आर्याने सूवा माटे कोइ वखते सरखी जगा मळे कोइ वखते खरबचडी मळे, कोइ वखते पवनवाळी मळे कोइ वखते बंधीआर मळे, कोइ वखते कचरावाळी मळे कोइ वखते साफ करेली मळे, कोइ वखते डांसमच्छरवाळी मळे कोइ वखते डांसमच्छररहित मळे, कोइ वखते पडेली खडेली मळे कोइ वखते

परिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं सविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं[1] विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा। [७११]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिते सदा जएज्जासि त्ति बेमि। [७१२]

1 प्रगृहीततरं सुष्टु गृहीतं.

आबाद मळे, कोइ वखते भय भरेली मळे, कोइ वखते निर्भय मळे, एम विचित्र प्रकारनी जगाओ मळतां मुनि तथा आर्याए सर्वने सरखी रीते ग्रहण करी समभावपणे वर्त्तवुं. कंइ पण नरम गरम न थवुं. (७११)

एज मुनि अने आर्याना आचारनी पूर्णता छे के तेमणे सर्व कार्योमां हमेशां उत्साही थइ रहेवुं, एम हुं कहुं छुं.

ईर्याख्यं द्वादशमध्ययनं.

(प्रथम उद्देशः)

" अब्भुवगते खलु वासावासे, अभिपवुट्ठे[1], बहवे पाणा अभिसंभूया, बहवे बीया अहुणुब्भिन्ना, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया जाव संताणगा, अण्णोक्कंता पंथा, णो विण्णाया मग्गा, " सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा। (७१३

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा—इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा णो महती

१ पयोधर इतिशेषः

अध्ययन बारमुं.

ईर्या.[1]

पहेलो उद्देश.

मुनि अथवा आर्या एवुं जाणे के "वरसादनी रुतु आवी चूकी छे, वरसाद वरस्योछे, घणा जीवजंतु उत्पन्न थयाछे, घणा अंकुर फूटयांछे, रस्ताओ तेओवडे भराइ गया छे, अने तेओना पर वधु आवजाव थती अटकी पडवाथी तेओ पूरेपूरा मालम पण पडी शकता नथी" तो तेमणे गामोगाम फरवानुं बंध करी वर्षाकालना (चार महिना) लगी एक मुकामे निवास करवो. [७१३]

जे गाम के शहेरमां मुनिने योग्य मोहोटी भणवा करवाने अनुकूळ पडती

१ फरवुं के चालवुं हालवुं.

विहारभूमी [1], णो महती विचारभूमी [2], णो सुलभे पीठ–फलग–सेज्जा –संथारए, णो सुलभे फासुए उंच्छे [3] अहेसणिज्जे, बहवे जत्थ समण –माहण–अतिहि–किवण–वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती, णो पण्णस्स णिक्खमणपवेसाए जाव धम्माणुओगचिंताए,–से वं णच्चा तहप्पगारं गामं वा णगरं वा जाव रायहाणिं वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा । (७१४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण जाणेज्जा गामं वा जाव रायहाणिं वा इमंसि खलु गामंसि वा रायहाणिंसि वा महती विहारभूमी महती विचारभूमी, सुलभे जत्थ पीढफलग सेज्जा–संथारए, सुलभे फासुए उंच्छे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण जाव उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती, जाव रायहाणिंसि वा ततो संजयामेव वासावासं उवाल्लिएज्जा । (७१५)

---

१ स्वाध्यायभूमिः २ बहिर्गमनभूमिः ३ एषणीयः

जगा न होय अथवा खरचु पाणीनी सवल पडती जगा न होय अथवा मुनिने जोइता पाट वाजोठ के दर्भादिकना पाथरणां के शुद्ध आहारपाणी मळी शकतां न होय अथवा ज्यां घणाज भिक्षुको आवी वसेला होय के आवता होय जेथी मुनिने भणवा गणवामां कंइ पण अडचण पडे तेवा गाम के शहेरमां वर्षाकाळ गुजारवा माटे निवास नहि करवो. [७१४]

जे गाम के शहेरमां भणवा गणवाने तथा खरचु पाणीने अनुकूळ पडती विशाळ जगा मळी आवे तथा जोइती वस्तु के आहार पाणी मळवा सुलभ पडे अने झाझा भिक्षुको पण आवेला के आववाना न होय तेवे स्थळे मुनिए वर्षाकाळगुजारवो. [७१५]

अहपुण एवं जाणेज्जा,—चत्तारि मासा वासाणं वीईक्कंता, हेमंताण य पंचदस रायकप्पे परिवुसिते, अतरा से मग्गा बहुपाणा जाव संताणगा; णो जत्थ बहवे समण जाव उवागया उवागमिस्संतिय—सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७१६)

अहपुण एवं जाणेज्जा,—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंचदस रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा जाव संताणगा, बहवे जत्थ समण जाव उवागमिस्संति य, सेवं णच्चा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७१७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे पुरओ जुगमायं[1] पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे दद्दु[2] पायं रीएज्जा, साहट्टु[3] पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं वा कट्टु पादं रीएज्जा[4], साति

१ युगमात्रं चतुर्हस्त प्रमाणं. २ उध्धृत्य. ३ संहृत्य. ४ अयं चान्य मार्गाभावे विधिः सतितृतस्मिन् तेनैवगच्छेत्.

ज्यारे एम जणाय के वर्षाकाळना चार मास वही गया छे तेमज हेमंत रुतुना पंदर दिवस पण पसार थया छे, छतां हजु एक गामथी बीजे गाम जवाना रस्ताओ जीव तथा वनस्पतिथी भरपूरज छे अने तेमना पर हजु घणा लोको चालता थया नथी तो तेम जणातां मुनिए ते वखते पण ग्रामानुग्राम फरवानुं शरु नहि करवुं [७१६]

पण जो ए वखते रस्ताओ अल्प जीवजंतु अने अल्प वनस्पतिवाळा थयेला होय अने तेमनापर लोकोनी पण पूरती आवजाव थवा लागी होय तो तेवुं जाणी यतना पूर्वक मुनिए ग्रामानुग्राम फरवुं. [७१७]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां पोतानी आगलनो चार हाथ जेटलो रस्तो जोतां जोतां चालवुं. तेम चालतां ते रस्तामां हरता फरता जीवजंतु दे-

परक्कमे संजतामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जेज्जा। (७१८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा उदए वा मट्टिया वा अविद्धत्थे, सई परक्कमे णो उज्जुय गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७१९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे[1] वियाराए संथरमाणेहिं[2] जणवएहिं णो विहारवत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए। केवली बूया 'आयाण मेयं' ते णं बाला "अयं तेणे, अयं उवचरए,

१ लष्टे श्रेष्टे २ अन्येषु आर्यदेशेषु सत्सु.

खवामां आ अने बीजो र ता मळी आवतो होय तो ते जीवजंतुवाळो रस्तो छोडी बीजे रस्तेज चालवुं. पण जो बीजो रस्तो नहि मळे तो पोताना पग जीवजंतुथी आगळ या पाछळ या पडखे संभाळी संभाळीने मुकवा अने ए रीते चालवुं. [७१८]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे रस्तामां नाना जीवजंतु, वनस्पतिना बीज, वनस्पति, या लीली माटी आपवी पडे तो बीजो रस्तो मळतां छतां ते रस्ते न चालवुं. किंतु बीजेज रस्ते यतना पूर्वक चालवुं. [७१९]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वचगाळे के देशना सीमाडे वसेला हठीला, जड, अकाळचारी अने अकाणभक्षी जूदी जूदी जातना लूंटारा तथा म्लेच्छादिक अनार्य लोकोना विभागमां बीजा सारा देशो विहार करवाने अनुकूळ मळी आवतां छतां नहि करवुं. कारण के तेम करतां केवळज्ञानिओ बहु

अयं तओ आगए" त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा जाव उवद्दवेज्ज वा, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंच्छणं अच्छिंदेज्ज वा अभिंदेज्ज वा अवहरेज्ज वा परिभवेज्ज वा, । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा पतिण्णा जाव जं णो तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि जाव विहारवतियाए णो पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दुइज्जेज्जा (७२०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दुइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा गणरायाणि वा जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा वेरज्जाणि वा विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए संथरमाणेहिं जणवएहिं णो विहारवत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए। केवली बूया 'आयाण मेयं' ते णं बाल "अयं तेणे," तंचेव जाव णो विहारवतियाए पवज्जेज्ज गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्ज । (७२१)

दोष बतावे छे. जे माटे मुनिए त्यां जतां त्यांना अनार्य लोको ते मुनिने चोर के जासुस ठेरावी तेने अनेक उपद्रव करे या तेना वस्त्रपात्र लूंटी ले या चोरी ले. माटे मुनिने ए भलामण छे के तेणे तेवा प्रांतमां जवानुंज नहि करवुं. [७२८]

वळी जे प्रांतोमां कोइ राजाज नहि होय या अनेक जण राज्य कर्त्ता थइ पडया होय या राज्यकर्त्ता बहु लघुवयनो या बे राज्य चालतां होय या एक बीजानां विरोधी राज्य थइ पडयां होय तेवा प्रांतोमां, बीजा सारा देशो विहार करवाने अनुकूळ मळी आवतां छतां विहार नहि करवो, कारण के केवळज्ञानिए तेम करवुं निषिद्ध कर्युं छे जे माटे मुनिए तेवा स्थळे जतां त्यांना लोको तेने चोर के जासुस ठेरावी अनेक अडचणो पाडशे. माटे मुनिने एवी भलामण छे के तेणे तेवा प्रांतोमां नहि जतां बीजा सारा प्रांतोमां संभाळ पूर्वक फरता रहेवुं. [७२१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया:–से ज्जं पुण विहं[1] जाणेज्जा एगाहेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण वा पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, णो पाउणेज्ज वा, तहप्पगारं विहं अणेगाहगमणिज्जं सति लाढे जाव णो विहारवत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए। केवली बूया 'आयाण मेयं'। अंतरा से वासांसि वा पाणेसु वा बीएसु वा हरिएसु वा उदएसु वा मट्टियाए वा अविद्धत्थाए। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं तहप्पगारं अणेगाहगमणिज्जं जाव णो गमणाए, ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा गमणाए। (७२२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से णावासंतारिमं उदयं सिया, से ज्जं पुण णावं जाणेज्जा–असंजए भिक्खुपडियाए

१ अनेकाहगमनीयः पंथाः।

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे कोइ मोहोटुं मेदान उल्लंघवानुं आवी पडे के जेनो छेडो आखो एक दिवस के बे त्रण चार या पांच दिवस चाल्याथीज मळी शके या नहि पण मळी शके, तेवा बहु लांबा रस्ते बीजो टुंको रस्तो मळी आवतां छतां नहि चालवुं. कारण के तेवे लांबे रस्ते चालतां केवळज्ञानिए अनेक दोष बताव्या छे. जे माटे त्यां लांबो वखत चालवानुं होतां वच्चे कदाच वरसाद आवी पडे तो ते रस्तामां जीवजंतु, वनस्पति, पाणी तथा लीली माटी भराइ जाय छे. माटे मुनिए तेवे मार्गे नहि चालवुं. [७२२]

मुनिए वहाण पर क्यारे चढवुं ?

मुनि के आर्याने एक ग्रामथी बीजे ग्राम जतां वच्चे कदाच वहाणथीज तरी शकाय एटलुं पाणी आडे आवे तो तेमणे आ प्रमाणे वर्त्तवुं:–जे वहाण असंयमी गृहस्थे साधुना माटेज वेचातुं लइ राख्युं होय या उछीतुं लइ राख्युं होय,

किणेज्ज, वा पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णावापरिणामं कट्टु[1] थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिंचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा, तहप्पगारं णावं उड्ढगामिणिं वा अहेगामिणिं वा तिरियगामिणिं वा परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए अप्पतरो[2] वा भुज्जतरो[3] वा णो दुरुहेज्ज गमणाए। [७२३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छसंपातिमं णावं जाणेज्जा, जाणित्ता से त–मायाए[4] एगंत मवक्कमित्ता भंडगं पडिलेहेज्जा, पडिलेहित्ता एगओ भोयणभंडगं करेज्जा, करित्ता ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, पमज्जित्ता सागारियभत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाइत्ता एगं पायं जले किच्चा[5] एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव णावं दुरुहेज्जा। [७२४]

१ कुर्यादित्यर्थः २–३–इमे मार्गविशेषणे ४ ज्ञात्वा. ५ कृत्वा.

या अदलबदल करी राख्युं होय या स्थळथी जळमां के जळथी स्थळमां लावेलुं होय या भरेलुं होतां खाली कर्युं होय या खूची गएलुं होतां ऊपडावी राख्युं होय तेवा जूदी जूदी दिशा तरफ जता वहाण पर चार गाउ या बे गाऊ ज्ञाझा या थोडा रस्ता लगी पण चडवुं नहि. [७२३]

किंतु जे वहाणने गृहस्थो पोताना माटे ते पाणीना आरपार लइ जवाना होय तेवा वहाणनी मुनि के आर्याए शरुआतमां तपास करवी. तपास करतां ते मालम पड्याथी मुनिए एकांत स्थळमां आवी पोताना उपकरण पाल जोइ तपाशी लेवां. ते तपाशी लइ एक तरफ पगथी घरी माथा लगीना शरीरने प्रमार्जित करवुं. ते कर्या बाद सागारी अणसण ग्रहण करवुं. ते ग्रहण करीने पछी एक पग पाणीमां धरतां एक पग स्थळमां [एटले पाणीना ऊपर] धरतां वहाण पर चडवुं. [७२४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए अग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा. णो बाहाओ पगिज्जिय पगिज्झिय, अंगुलीए उवदंसिय उवदंसिय उण्णमिय उण्णमिय णिज्झाएज्जा । [७२५]

से णं परो[1] णावागतो णावागयं वएज्जा "आउसंतो समणा, एयं तुमं णावं उक्कसाहि वा वोक्कसाहि वा खिवाहि वा, रज्जुए वा गहाय आगसाहि" णो से–यं परिन्नं परियाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा । [७२६]

से णं परो णावागतो णावागयं वएज्जा "आउसंतो समणा, णो संचाएसि णावं उक्कसित्तए वा वोक्कसित्तए वा खिवित्तए वा रज्जुयाए वा गहाय आकसित्तए, आहर[2] एतं णावाए रज्जुयं, सयं चेव णं वयं नावं

१ नाविकः २ आनय.

मुनि अथवा आर्याए वहाणपर चडतां वहाणना मोखरे जइ न बेशवुं तथा सर्वथी अगाउ चडी न बेशवुं तथा वहाणना वच्चोवच पण चडी न बेशवुं. तेमज शरुआतमां वहाणना बाहेर उभा होतां वहाणना पडखाओने पकडी आंगळीओ वडे ताकी ताकीने या उंचा उंचा थइने तेना अंदर जोवातुं पण नहि करवुं. [७२५]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवारा लोको एम कहे के "आयुष्मन् श्रमण तमे आ वहाणने (अमुक दिशा तरफ) खेंचो या वाळो या एमांना सामानने दरिआमां के नीचे फेंको या दोरडांओ खेंचो." तो मुनिए ते वात करवा कबुल नहि थवुं किंतु अबोल रही धर्मध्यान कर्या करवुं. [७२६]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के "हे आयुष्मन् श्रमण, तमे आ वहाणने खेंचवा करवामां तथा एमांना सामानने फेंकी दोरडाओ

उक्कसिस्सामो वा जाव रज्जुए वा गहाय आकसिस्सामो, ” णो से—यं परिन्नं पीरयाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा। (७२७)

से णं परो णावागओ णावागयं वएज्जा “ आउसंतो समणा, एयं ता तुमं णावं अलित्तेण वा पीढेण वा वंसेण वा वलएण वा अवल्लएण वा वाहेहि; ” णो से यं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा। (७२८)

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जा “ आउसंतो समणा, एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा पाएण वा मत्तेण वा पडिग्गहेण वा णावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचाहि ” णो से—यं परिण्णं परिजाणेज्जा। (७२९)

से णं परो णावागतो णावागतं वएज्जा “ आउसंतो समणा,

ताणवाना काममां अशक्त छो तो अमुक दोरडुं मने लावी आपो अमे पोते वहाणने वाळवा करवानुं करता रहीशुं.” आवुं सांभळी मुनिए तेम पण कबुल नहि करवुं किंतु मौन रही धर्म ध्यान ध्याया करवुं. [७२७]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोक एवुं कहे के “हे आयुष्मन् श्रमण, आ वहाणने तमे आ पाटीआना अलताओ के हलेसांओवडे या वांस के वळावडे या अवल्लक नामना हथियार वडे आगळ चलावो.” तो आ वात पण मुनिए न स्वीकारवी. किंतु मौन रह्या करवुं. [७२८]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के “ हे आयुष्मन् श्रमण, आ वहाणना अंदर भराता पाणीने तमे तमारा हाथथी या पगथी या वासणथी के पात्रथी या वहाण मांहेना पाणी कहाडवाना हथियारथी बहार काढता रहो ” तो आ वात पण मुनिए न स्वीकारवी किंतु मौन धरी रहेवुं. [७२९]

वहाणपर चडेला मुनिने वहाणवाळा लोको एम कहे के हे “आयुष्मन् श्रमण

एतं तो तुमं णावाए उत्तिंग[1] हत्थेण वा पाएण वा बाहुणा वा ऊरुणा वा उदरेण वा सीसेण वा काएण वा णावाउस्सिचणेण वा चेलेण वा मट्टियाए वा कुसपत्तएण वा कुरुविंदेण वा पिहेहि " णो से—यं परिण्णं परिजाणेज्जा । (७३०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिंगेणं उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवरि णावं कज्जलावेमाणं[2] पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एवं बूया " आउसंतो गाहावइ, एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवति, उवरुवारि वा णावा कज्जलावेति " एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए[3] अबहिलेस्से एगंतिगएणं अप्पाणं विओसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव णावासंतारिमे उदए अहारियं[4] रीएज्जा । (७३१)

---

१ रंध्रं २ प्लाव्यमाना मित्यर्थः ३ अविमनस्कः ४ यथार्य भवति तथा

आ वहाणमां पडेला अमुक छिद्रने तमे तमारा हाथ, पग, बाहु, जंघा, उदर, मस्तक, के आखा शरीर वडे या वहाणमां रहेला उलिंचण नामना हथियारवडे या वस्त्र, माटी, कमळ पत्र के कुरुविंद नामना घासवडे ढांकी राखो." तो मुनिए आ वात पण नहि स्वीकारवी. [७३०]

मुनि अथवा आर्याए वहाणमां छिद्र पडयाथी पाणी भरातुं जोइ तथा उपरा उपरी वहाणने बुडतुं जोइ बीजाने ए वात जणाववी नहि अने पोते पण पोताना मनमां ए बाबतना संकल्पविकल्प धरवा नहिं. किंतु शांत पणे स्वस्वरुपमां रमता रही एकांत प्रदेशमां रहीने समाधिस्थ रहेवुं. ए रीते वहाणथी पार पमाता जळमार्गमां यथासुंदरताए प्रवर्त्तता रहेवुं. [७३१]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिते सदा जएज्जासि त्ति बेमि। (७३२)

[द्वितीय उद्देशः]

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जाः—"आउसंतो समणा, एयं ता तुमं छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं वा गिण्हाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थजायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा दारिगं वा पज्जेहि[1], " णो सेत्तं परिण्णं[2] परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा। (७३३)

१ पायय २ प्रार्थनामित्यर्थः

एज खरेखर मुनि अने आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे बधी बाबतोमां संभाळ पूर्वक वर्त्तवुं. [७३२]

बीजो उद्देश.

(वहाणपर चडवा तथा पाणीमांथी पसार थवा विगेरे विधि.)

वहाणपर चडेला मुनिने बीजा वहाणपर चडेला लोक एवुं कहे के "हे आयुष्मान् श्रमण आ छत्र या चर्म कापवानुं हथियार पकड, तथा आ जूदी जूदी जातना हथियारो धरी राख, अथवा आ बाळक के बाळिकाने (दूध विगेरे) पीवराव" आ हुकम स्वीकारवा नहि किंतु मौन रह्या करवुं. [७३३]

से णं परो णावागओ णावागयं वदेज्जाः—“ एस णं समणे णावाए भंडभारिए[1] भवति, से णं बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, ” एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढेज्ज वा णिव्वेढेज्ज वा उप्पोसं[२] वा करेज्जा । [७३४]

अह पुण एवं जाणेज्जाः—अभिकंतकूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा, से पुव्वामेव वएज्जा “ आउसंतो गाहावती, मा मेत्तो बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह; सयं चेव णं अहं णावातो उदगंसि ओगाहिस्सामि. ” से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा, अप्पुसुए जाव समाहीए ततो संजयामेव उदगंसि पवज्जेज्जा । (७३५)

१ भंडवत् भारवान् भंडेन वा भारवान् २ शिरोवेष्टनं.

वहाणपर चडेला मुनि तरफ वहाणमांनो कोइ बोले के “आ साधु वहाण उपर बहु बोजो करे छे, माटे एने बाहुथी पकडीने पाणीमां फेंकी द्यो, “आवां वाक्यो सांभळीने वस्त्रधारी मुनिए तरतज पोताना भारवाळां वस्त्रो ऊतारीने हलकां वस्त्रो वींटी लेवां. तथा माथापर पण वस्त्र वींटी लेवुं. [७३४]

एवामां ते क्रुर कर्मी अजाण मनुष्यो मुनिने बाहुथी पकडी पाणीमां नाखवा तैयार थाय तो तेना नाखवा अगाउज मुनिए कहेवुं के “हे आयुष्मन् गृहस्थो तमारे मने पकडीने पाणीमां नाखवानी कशी जरुर नथी. हुं जातेज वहाणथी पाणीमां झंपलावुं छुं,” आवुं बोलतां छतां जलदी ते माणसो मुनिने बाहुथी पकडीने फेंकी दे तो मुनिए मनमां कशो पण राग के द्वेष न लाववो तथा संकल्पविकल्प न करवा, तेमज ते अजाण पुरुषोने नाश करवा के मारवा कदापि नहि उठवुं. शांत पणे पाणीमां जइ पडवुं. [७३५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थं पाएण पायं काएण कायं आसाएज्जा[1], से अणासादए अणासायमाणे तओ संजयामेव उदगंसि पवज्जेज्जा। [७३६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्गणिम्मग्गियं करेज्जा, मा मेयं उदगं कण्णेसुवा अच्छीसु वा णक्कंसि वा मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवज्जेज्जा। [७३७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी या उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं[2] पाउणेज्जा, खिप्पामेव उवधिं विगिंचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चेव णं सातिज्जेज्जा अह पुण एवं जाणेज्जा, पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिंणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा। [७३८]

---

१ संस्पृशेत्. २ श्रमं

मुनि अथवा आर्याए पाणीमां तणातां हाथ साथे हाथ, पग साथे पग, अने शरीरना कोइ पण अवयव साथे बीजो अवयव लगाडवो नहि ए रीते यत्नपूर्वक तणाता रहेवुं. [७३६]

मुनि अथवा आर्याए पाणीमां तणातां डूबकीओ नहि मारवी, जेथी करीने कान, आंख, नासिका, तथा मुखमां पाणी जइने विनाश न पामे. [७३७]

मुनि अथवा आर्या पाणीमां तरतां थाकी जाय त्यारे तेमणे तरतज पोताने भारी पडता वस्त्रो छोडी देवां. ते वस्त्रोपर मूर्छित नहि रहेवुं. पछी ज्यारे कांठो प्राप्त थाय त्यारे पाणीथी शरीर भीजावलुं होय त्यां लगी कांठापरज बेशी रहेवुं. [७३८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वाससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज णिल्लेहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज पयावेज्ज वा। अह पुण एवं जाणेज्जा, विगतोदए मे काए वोच्छिण्णसिणेहे, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। [७३९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविया[1] परिजविया गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७४०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जंघासंतारिमे उदए सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, से पुव्वामेव पमज्जित्ता एगं पायं जले किच्चा एगं पायं थले किच्चा तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा। (७४१)

१ भृश मुल्लापं कुर्वन्

मुनि अथवा आर्याए पाणीथी भींजायला शरीरने घसवुं छांटवुं के दाववुं नहि तेमज तपाववुं करवुं पण नहि. (किंतु पोतानी मेळे पाणीने पडवा देवुं) अने ज्यारे शरीरपरथी सघळी भिनाश उडी जाय त्यारेज शरीरने घसवुं छांटवुं के दाववुं तथा तपाववुं. अने त्यार बाद ग्रामानुग्राम फरवानुं शरु करवुं. [७३९]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरता मार्गमां मळेला गृहस्थो साथे बहु बकवकारो करतां नहि चालवुं. किंतु संभाळ पूर्वकज चालता रहेवुं [७४०]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वचगाळे जंघा[1] प्रमाण पाणी ऊतरवानुं आवे त्यारे तेमणे आखा शरीरने प्रमार्जन करी एक पग जळमां धरतां अने एक पग स्थळमां धरतां संभाळपूर्वक रुडी रीते ते जळमांथी पसार थवुं [७४१]

१ साथळ.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे णो हत्थेण वा हत्थं पादेण वा पादं काएण वा कायं आसाएज्जा। से अणासादए अणासादमाणे तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा। (७४२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो सायावडियाए णो परिदाहवडियाए महति महालयंसि[1] उदगंसि कायं विउसेज्जा। तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा। अहपुण एवं जाणेज्जा पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा। (७४३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा। अहपुण एवं जाणेज्जा, विगतोदए मे काए छिण्णसिणेहे, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा। तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। [७४४]

१ वक्षस्थळादिप्रमाणे

मुनि अथवा आर्याए आवे वखते हाथ साथे हाथ, पग साथे पग, तथा शरीर साथे शरीर लगाववां नहि. [७४२]

मुनि अथवा आर्याए जंघाप्रमाणमां पाणीमांथी पसार थतां शरीरने ठंडक मेळववा माटे के बळतरा मटाडवा ऊंडा पाणीमां झोकाववुं नहि. किंतु जंघा-प्रमाणना पाणीमांथीज चाल्या जवुं. अने ज्यारे कांठो प्राप्त थाय त्यारे शरीरपर पाणीनी भिनाश होय त्यां लगी त्यांज थोभी रहेवुं. [७४३]

मुनि अथवा आर्याए ए वखते शरीरने घसवुं के तपाववुं नहि. पण ज्यारे भिनाश पोतानी मेळे उडी गएली जणाय त्यारे शरीरने छांटी छुंटी तडके तपावी करीने ग्रामानुग्राम फरवानुं शरु करवुं. [७४४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणी छिंदिय छिंदिय विकुज्जि विफालिय उम्मग्गेणं हरियवधाए गच्छेज्जा; "जहेयं पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरिताणि अवहरंतु." माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा। से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७४५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा तोरणाणि वा अग्गलाणि वा अग्गलपासगाणि वा गड्ढाओ वा दरीओ वा सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा। केवली बूया 'आयाण मेयं।' से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। (७४६)

से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा गुच्छाणि वा गुम्माणि वा लयाओ वा वल्लीओ वा तणाणि वा गहणाणि वा हरियाणि

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरवानुं करतां चीखळथी खरडायला पोताना पगोने साफ करवाना इरादाथी मार्गथी आघापाछा जइ लीलोतरीने तोडतां तोडतां दावतां दावतां के उखेडतां उखेडतां नहि चालवुं. जो तेम करे तो दोषपात्र थवानो, माटे एम नहि करवुं. किंतु शरुआतमांज तेमणे थोडी लीलोतरीवाळो रस्तो शोधवो अने तेना वडे ग्रामानुग्राम फरवुं. [७४५]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वचगाळे किल्ला, खाइ, कोट, तोरणो, आगळीओ, आगळीओना पडखाओ, खाडाओ, के कोतरो ओळंगवाना आवी पडे तो बीजो रस्तो मळतां ते रस्ते पसार नहि थवुं. केमके केवळज्ञानिए तेमां दोष जणाव्या छे. जे माटे तेवे रस्ते चालतां कदाच पडी आखडी पण जवाय. (७४६)

(बीजो रस्तो न मळतां जो तेवेज रस्ते जवुं पडे तो) त्यां पडतां के

वा अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा, जे तत्थ पाडिपहिया उवागच्छंति ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय अवलंबिय उत्तरेज्जा, तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। [७४७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि[१] वा सगडाणि वा रहाणी वा सच्चक्काणि वा परच्चक्काणि वा सेणं[२] वा विरूवरूवं संणिविट्ठं पेहाए सति परक्कमे संजयामेव णो उज्जुयं गच्छेज्जा। (७४८)

से णं परो सेणागतो वदेज्जा, "आउसंतो एसणं समणो सेणाए अभिनिवारियं करेइ, से णं बाहाए गहाय आगसाह." से णं परो बाहाहिं गहाय आगंसेज्जा, तं णो सुमणे सिया जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७४९)

१ गोधूमादिधान्यानि. २ स्कंधावारनिवेशादिकं

आखडतां झाड, गुच्छ, गुल्म, लताओ, वेलाओ, घास, बूटाओ, के गमे ते लीलोत्रीने पकडी पकडीने उतरवुं, अथवा तो त्यां जे वटेमार्गु आवी पडे तेना हाथनी मदद मागवी अने तेना हाथ पकडी पकडीने ते विषम रस्तो पसार करी ग्रामानुग्राम फरवुं. [७४७]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे धान्यनी वजारो, गाडीओ, रथो, लश्कर के जूदी जूदी सेनाओः पडाव नांखी पडेली जोइने बीजो रस्तो मळतां ते रस्ते नहि चालवुं. [७४८]

कदाच बीजो रस्तो न मळतां तेज रस्ते मुनिने चालवुं पडे तेवे वखते कोइ सैन्यनो माणस एवुं कहे के "आयुष्मन् सैनिको, आ साधु आपणा लश्करनी हीलचाल जोवाने जासुस तरीके आवेलो छे माटे एने धक्का मारी कहाडी मेलो" आवुं कही तेम करवा मांडे तोपण मुनिए कशो हर्षशोक न लाववो. किंतु समाधिथी वर्त्तता रहेवुं. [७४९]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिचा एवं वदेज्जा " आउसंतो समणा, केवतिए एस गामे रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा, हत्थी, गामपिंडोलगा[1], मणुस्सा, परिवसंति ? से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ? से अप्पुदए अप्पभत्ते अप्पजणे अप्पजवसे ? एय-प्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो णो आइक्खेज्जा; एतप्पगाराणि पसिणाणि णो पुच्छेज्जा । (७५०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (७५१)

1 ग्रामभिक्षाचराः

मुनि अथवा आर्याने मार्गे चालतां वच्चे वटेमार्गुओ मळे अने तेओ एवुं पूछवा मांडे के "हे आयुष्मन् श्रमण आ गाम के शहेर केवडुं मोटुं छे? तेमज अहीं केटला घोडा, हाथी, भिखारी, के मनुष्यो रहे छे? तथा एमां भात पाणी माणसो, अने धान्य घणां छे के थोडां छे? आवा प्रश्नो सांभळी तेनो कशो जवाब नहि वाळवो. तेमज मुनिए पोते पण एवा प्रश्न कोइने नहि पूछवा. [७५०]

ए सघळो मुनि अने आर्याओनो संपूर्ण आचार छे. [७५१]

[तृतीय उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूतिज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, जाव दरीओ वा, कूडागारणि[1] वा, पासादाणि वा, णूमगिहाणि[2] वा, रुक्खगिहाणि वा, पव्वयगिहाणि[3] वा, रुक्खं वा चेतियकडं[4], थूभं वा चेतियकडं, आएसणाणि वा, जाव भवणगिहाणि वा, णो बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय अंगुलीयाए उद्दिसिय उद्दिसिय उण्णमिय उण्णमिय णिज्झाएज्जा। ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७५२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छाणि[5] वा दवियाणि[6] वा णूमाणि[7] वा वलयाणि[8] वा गहणाणि[9] वा

१ पर्वतोपरिगृहाणि २ भूमिगृहाणि ३ गुहाः ४ वृक्षस्याधोव्यन्तरादिस्थानकं ५ नद्यासन्ननिम्नप्रदेशाः ६ अटव्यांवासार्थंराजरक्षितभूमयः ७ गर्त्तादीनि ८ नद्यावेष्टितभूभागाः ९ रण्यक्षेत्राणि

त्रीजो उद्देश.

(विहार करवानी विधि.)

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे आवता किल्ला, खाइ, कोट, गुफाओ, टेकरीओपर रहेला घरो, भोंयराओ, झाडोथी शोभतां घरो, पर्वत उपर बांधेला घरो, झाड नीचेना व्यंतरादिकना स्थानको व्यंतरादिकना स्तूपो (घुमटो), मुसाफर शाळाओ, तथा हरेक जातनां घरो हाथे पकडी पकडीने के आंगळीओ वडे ताकी ताकीने या ऊंचुं नीचुं थइने जोवां नहि. किंतु रुडी रीते संभाळथी वर्त्तवुं. [७५२]

एज प्रमाणे मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्राम चालतां वच्चे आवी पडतां नदीना नजदीकना नीचा प्रदेशो, मारान, जंगलो, खाडाओ, नदीथी वीटायली

गहण विदुग्गाणि वा वणाणि वा वणपव्वयाणि वा पव्वतविदुग्गाणि वा पव्वतगिहाणि वा अगडाणि वा तलागाणि वा दहाणि वा णदीओ वा वावीओ[१] वा पुक्खरणीओ वा दीहियाओ वा गुंजालियाओ[२] वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा, णो बाहाओ पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा । केवली बूया 'आयाण मेयं'। जे तत्थ मिगा वा पसू वा, पक्खी वा, सिरीसिवा वा, सीहा वा, जळचरा वा, थलचरा वा खचरा वा सत्ता ते उत्तसेज्ज वा वित्तसेज्ज वा वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा "वारेति मे अयं समणे ।" अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा पतिण्णा जं णो बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा । तओ संजयामेव आयरियउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७५३)

१ कमळरहिताः वाप्यः २ दीर्घा गंभीराः कुटिलाः श्लक्ष्णाः वाप्यः

टेकरीओ, ऊजड टेकरीओ, जंगलो, झाडीथी भरेला पर्वतो, पर्वतोपरना किल्लाओ, पर्वतपरना घरो, कूवा, तळावो, द्रहो, नदीओ, वावडीओ, पुष्करिणीओ (फूलोवाळी वावडीओ) दीर्घिकाओ, (रस्तवाली वावडीओ) गुंजालिकाओ, (ऊंडी कुंडाळावाळी वावडीओ) सरोवरो, सरोवरोनी हारो, इत्यादिक स्थळोने हाथ पकडी पकडीने के आंगळीओ वडे ताकी ताकीने जोवां नहि. कारण के केवळ ज्ञानीए तेम करतां दोष बताव्या छे. जे माटे तेम करतां त्यां जे हरिणादिक पशुओ तथा पक्षिओ, सर्पो, सिंहो विगेरे जळचर जंतुओ, स्थळचर जंतुओ, तथा आकाशचारी जंतुओ रहेला होय ते भय पामी दोडमदोडा करवा मंडे अथवा "अमोने आ श्रमण पाछा वाळे छे" एम धारी तेओ पाछा गीच झाडीमां आसरो ल्ये. एटला माटे मुनिओने एवी भलामण छे के तेमणे तेम नहि करवुं. किंतु संभाळ पूर्वक आचार्य के उपाध्याय साथे ग्रामग्राम फर्या करवुं. [७५३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरियउवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो आयरियउवज्झायस्स हत्थेण वा हत्थं जाव अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरियउवज्झाएहिं सद्धिं जाव दूइज्जेज्जा ।[७५४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरियउवज्झाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया से एवं वदेज्जा "आउसंतो समणा के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?" जे तत्थ आयरिए उवज्झाए वा से भासेज्ज वा वियागरेज्ज वा । आयरियोवज्झायस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा । तओ संजयामेव अहारातिणियाए दूइज्जेज्जा । (७५५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो अहारातिणियस्स हत्थेण हत्थं जाव अणासायमाणे ततो संजयामेव अहारातणियं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (७५६)

मुनि अथवा आर्याए आचार्य के उपाध्याय साथे विचरतां तेमना हाथपग साथे पोताना हाथपग नहि अफळावतां तेनी साथे विनयपूर्वक गामे गाम फरवुं. [७५४]

मुनि अथवा आर्याने आचार्य के उपाध्याय साथे फरतां वच्चे कोइ वटेमार्गु एवुं पुछे के "हे आयुष्मन् श्रमणो तमे कोण छो? अने क्यांथी आवो छो? अथवा क्यां जाओ छो?" त्यारे तेनो जवाब मुनिए न आपतां आचार्य के उपाध्याये वाळवो, अने तेमणे जवाब वाळतां मुनिए वच्चमां कशुं बोलवुं करवुं नहि किंतु संभाळ साथे विनयथी नम्र थइ वर्त्तवुं. [७५५]

मुनि अथवा आर्याए ग्रामानुग्रामे पोताथी अधिक गुणवाळा मुनि साथे विचरतां तेना हाथपग विगेरे अवयवोने अडकी अडचण आपवी नहि. [७५६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहारातणियं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः- " आउसंतो समणा, के तुब्भे ? " जे तत्थ सव्वरातिणिए से भासेज्ज वा वागरेज्ज वा । अहारातिणियस्स भासमाणस्स वियागरमाणस्स वा णो अंतराभासं भासेज्जा । ततो संजयामेव गामाणुगामं दूईज्जेज्जा । [७५७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया आगच्छेज्जा । तेणं पडिपहिया एवं वदेज्जाः-" आउसंतो समणा, अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहा, मणुस्सं वा गोणं वा महिसं वा पसुं वा पक्खि वा सिरीसिवं वा जलचरं वा, आइक्खह दंसेह. " तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा, णो जाणंति वएज्जा । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा (७५८)।

मुनि अथवा आयार पोताथी अधिक गुणवान साधु साथे ग्राम[illegible]ग्राम फरतां वच्चे कोइ वटेमार्गु मळे अने ते पुछे के " हे आयुष्मन् श्रमणो, तमे कोण छो ? " तो आनो जवाब अधिक गुणवाळा मुनिए वाळवो अने तेनी वच्चे बीजा मुनिओए कशुं न बोलवुं. किंतु संभाळ-पूर्वक वर्त्या करवुं. [७५७]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे कोइ वटेमार्गु मळे अने ते पुछे के हे आयुष्मन् श्रमणो, तमे आ रस्तापर जो कोइ मनुष्य, बळद, पाडुं अन्य जानवर, पक्षि, सर्प के जळचर जंतु जोयुं होय तो कहो अने बतावो" त्यारे मुनि के आर्याए ते बाबत तेमने कंइ पण कहेवुं के बताववुं नहि. अने तेमना ते सवालने कशी रीते पण स्वीकार न करतां मौन धरी रहेवुं. अथवा तो सरु जाणतां छतां पण "जाणुं छुं एम न बोलवुं" अने संभाळपूर्वक ग्रामानुग्राम फरता रहेवुं. [७५८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया आगच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः—" आउसंतो समणा, अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह उदगपसूयाणि कंदाणि वा मूलाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरिताणि वा, उदगं वा संणिहियं, अगणिं वा संणिक्खित्तं, सेसं तं चेव, से आइक्खह, जाव, दूईज्जेज्जा । (७५९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जाः—" आउसंतो समणा, अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह जवसाणि वा जाव सेणं वा विरूवरूवं संणिविट्ठं; से आइक्खह, जाव दूईज्जेज्जा । [७६०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया जाव " आउसंतो समणा, केवतिए एत्तो गामे वा जाव रायहा-

एज रीते मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे कोइ वटमागु मळे अने ते पूछे के "हे आयुष्मन् श्रमणो, तमे आ रस्ते जो कंद, मूळ, पान, फूल फळ, बीज, वनस्पति, पाणीनो जथ्थो, के अग्नि जोइ होय तो अमने कहो अने वतावो " त्यारे मुनि के आर्याए ते बावत तेमने कंइ पण कहेवुं करवुं नहि अने तेमना ते सवालनो कशी रीते स्वीकार न करतां मौन धरी रहेवुं अथवा जाणतां छतां "जाणुं छुं एम न बोलवुं" [७५९]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां वच्चे कोइ वटेमार्गुओ मळे, अने तेओ एवुं पूछे के "हे आयुष्मन् श्रमणो, आ मार्गपर तमे धान्य, के पडाव नाखी पडेलुं जूदुं जूदुं लश्कर देखता हो तो कहो अने बतावो." आवे वखते पण मुनिए उपर प्रमाणेज मौन रहेवुं अथवा "हुं जाणुं छुं एम न बोलवुं. (७६०)

एज रीते मुनि तथा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां कोइ वटेमार्गुओ एवुं पूछे के हे आयुष्मन् श्रमणो, "अहींथी हवे कयुं गाम के शहेर आवशे" त्यारे पण मुनिए

णी वा, से आइक्खह जाव दूईज्जेज्जा। [७६१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया जाव "आउसंतो समणा, केवतिए एत्तो गामस्स वा णगरस्स वा जाव रायहाणीए वा मग्गे, से आइक्खह, तहेव जाव दूईज्जेज्जा। (७६२)

से[1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूईज्जमाणे अंतरा से गोणं वियाल पडिपहे पेहाए जाव चितचेल्लडं वियालं पडिपहे पेहाए णो तेसिं भीतो उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, दुग्गं वा, अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महति महालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सत्थं[2] वा कंखेज्जा। अप्पुसुए जाव समाहीए तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७६३)

---

१ जिनकल्पिन माश्रित्य सूत्रद्वयमेतद्विज्ञेयं २ सार्थं

उपर प्रमाणेज मौन रहेवुं अथवा "हुं जाणुं छुं एम न बोलवुं. [७६१]

वळी मुनि के आर्याने मार्गे जतां कोइ वटेमार्गु एवुं पूछे के "हे आयुष्मन् श्रमणो, अहींथी गाम शहेर के राजधानीनो कयो रस्तो जाय छे ते जणावो" तो ते पण मुनिए नहि जणाववो. (७६२)

मुनि[1] तथा आर्याए ग्रामानुग्राम जतां वच्चे मार्गमां विकाळ बळद या विकाळ वाघने उभेलो जोइने तेमनाथी बी जइने अवळे मार्गे नहि पेसवुं, झाडपर नहि चडवुं, उंडा पाणीमां नहि पडवुं, तेमज वाड विगेरे आशराने के साथने पण नहि वांछवुं. किंतु धीरपणे समाधिथी संयमथी संभाळ पूर्वक त्यांथी ग्रामानुग्राम चाल्या जवुं. [७६३]

---

१ आ सूत्र जिन कल्पिना माटेनुं छे एम टीकाकारे जणाव्युं छे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं[1] सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा, इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवकरणपडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गं चेव जाव समाहिए ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (७६४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा तेणं आमोसगा एवं वदेज्जाः—" आउसंतो समणा, आहर एयं वत्थं वा पायं वा कंबलं वा पायपुंच्छणं वा, देहि, णिक्खिवाहि;" तं णो देज्जा, णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुणपडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जाएज्जा, तुसिणीयभावेण वा से णं आमोसगा "सयं करणिज्जं" ति कट्टु अक्कोसंति वा, जाव उवद्दवंति वा वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं

१ अनेकदिवसगम्यमार्गः

मुनि[1] अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम फरतां वच्चे लांबो मार्ग उल्लंघवानो आवी पडे अने त्यां एवुं मालम पडे के आ मार्गमां घणा लुंटारुओ वस्त्रादि उपकरण लुंटवा माटे एकठा थइ आववाना छे तोपण तेमनाथी बीने अवळे मार्गे या चालतो मार्ग छोडी बीजा मार्गे नहि चालवुं किंतु तेज रस्ते धीरपणे समाधिथी चाल्या जवुं. [७६४]

मुनि अथवा आर्याने मार्गे चालतां वच्चे लूंटारुओ मळे अने तेओ एवुं कहे के " हे आयुष्मन् साधुओ, आ वस्त्र, पात्र, कंबळ, के पग प्रमार्जवानुं उपकरण अमारा आगळ धरो, अमने आपो, अथवा तमे तमारा कबजामांथी छोडी द्यो। त्यारे ते मुनिए ते तेमने आपवां नहि किंतु पोताना कबजामांथी छोडी देवां, अने तेओए ते उपाडी लेतां मुनिए तेओने सलाम भरी भरीने के हाथ जोडीने के करगरीने ते पाछां नहि मागवां किंतु धर्मकथन पुर्वक मागवां, अथवा मौन धरी रहेवुं. कदाच ते लुंटारुओ तेमना दुष्ट रीवाजने अनुसरीने मुनिने धमकावे अथवा

१ आ सूत्र पण जिनकल्पिने माटे छे.

वा अच्छिदेज्ज वा जाव परिट्ठवेज्ज वा; तं णं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया "आउसंतो गाहावई, एते खलु मे आमोसगा उवकरणपडियाए 'सयं करणिज्जं' त्ति कट्टु अक्कोसंति वा जाव परिट्ठवेंति वा। एतप्पगारं मणं वा वयं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए जाव समाहीए ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। [७६५]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिते सया जएज्जासि त्ति बेमि। [७६६]

हेरान करे के वस्त्रादि उपकरण लूंटील्ये तो ते वात मुनिए गाममां के दरबारमां पसराववी नहि. तेमज कोइ गृहस्थ पासे जइ तेने एवुं पण नहि कहेवुं के "हे आयुष्मन् गृहस्थ, आ लूंटारुओ वस्त्रादिवस्तु लूंटवा पोताना दुष्ट रीवाजने अनुसरीने मने धमकावे छे, हेरान करे छे के लूंटे छे." वळी आवी रीते मनथी के शरीरथी पण कशी हीलचाल न करवी. किंतु धीरपणे समाधिथी यत्ना पूर्वक ग्रामानुग्राम फरता रहेवुं. (७६५)

एज मुनि अने आर्याना आचारनी संपुर्णता छे के तेमणे बधी बाबतोमां सावधानीथी वर्त्तता रहेवुं एम हुं कहुंछुं. [७६६]

भाषाजातं नाम त्रयोदश मध्ययनम् ।

[प्रमथ उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ[1] आयाराई सोच्चा णिसम्म इमाइं अणायारियपुव्वाइं जाणेज्जाः— जे कोहा वायं विउंजंति, जे माणा वा, जे मायाए वा, जे लोभा वा, वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुस वयंति; सव्व मेतं सावज्जं वज्जेज्जा विवेग मायाए । (७६७)

१ वाचि

अध्ययन तेरमुं.

भाषाजात.

पहेलो उद्देश.

(भाषाना सोल विभाग तथा चार प्रकारो)

मुनि अथवा आर्याए पोताने जे रीते बोलवुं जोइए ते रीतो जाणीने जे रीतो खराब अने सत्पुरुषोए नहि वापरेली छे तेवी रीतो परिहार करवी. जेवी केः—क्रोधथी बोलाता वाक्यो, मानथी बोलाता वाक्यो, कपटथी बोलाता वाक्यो लोभथी बोलाता वाक्यो, जाणी बूझीने बोलाता वाक्यो, अजाणपणे बोलाता कठोर वाक्यो, इत्यादिक सर्वे दोषभरेला वाक्यो मुनिए विवेक राखीने वर्जन करवां. [७६७]

धुवं[1] वेयं जाणेज्जा, अधुवं वा; असणं वा पाणं वा खाइमं वा वा साइमं वा लभिय, णो लभिय; भुंजिय, णो भुंजिय; अदुवा आगते, अदुवा णो आगते; अदुवा एति, अदुवा णो एति; अदुवा एहिति, अदुवा णो एहिति; एत्थवि आगते, एत्थवि णो आगते; एत्थवि एति, एत्थवि णो एति; एत्थवि एहिति, एत्थवि णो एहिति । [७६८]

अणुवीइ णिट्ठाभासी[2] समियाए संजए भासं भासेज्जा; तंजहा, एगवयणं, (१) दुवयणं (२) बहुवयणं; (३) इत्थिवयणं, (४) पुरिसवयणं,

१ साधुना नैवं सावधारणं वचो वाच्यं यथा २ सावधारणभाषी.

मुनिने कोइए कंइ पूछतां (जो पाकी खबर नहि होयतो) मुनिए एवं नक्की ठेरावीने नहि बोलवुं के अ। नक्की एमज छे या एम नथीज, अथवा अमुक साधु नक्की आहारपाणी लावशे के नहिज लावी शकशे, या त्यां खाइनेज आवशे या नहिज खाइ आवशे, अथवा ते आव्योज छे के नथीज आव्यो, या आवेज छे के नथीज आवतो; या आवशेज के नहि आवशे, या अंही आवेलोज छे के नथीज आवेलो, या अहीं आवेज छे के नथीज आवतो, या अंही आवशेज के नहिज आवशे, इत्यादि [७६८]

किंतु काम पडतां विचार करीनेज पछी नकीपणे, बोलतां सावधान रहीने भाषासमिति साचवीने भाषा बोलवी ते भाषामां बोलाता वाक्योना सोळ भाग रहेला छे, जेओ आ प्रमाणे छेः—

एक वचन,[1] द्विवचन,[2] बहुवचन,[3] स्त्रीजातिवचन,[4] पुरुषजातिवचन,[5] नपुंसक जातिवचन,[6] अध्यात्म वाक्य,[7] उत्कर्ष वाक्य,[8] अपकर्ष वाक्य,[9] उत्कर्षा-

१ घोडो २ संस्कृतमां अश्वौ ३ घोडाओ ४ गाय ५ बळद ६ घर ७ पेटमां होय ते खोली जवानुं वाक्य जेमके "जळ पा" ने बदले "रु पा" ८ रूपवती स्त्री ९ कुरुपवती स्त्री

(५) णपुंसगवयणं, (६) अज्झत्थवयणं, (७) उवणीतवयणं, (८) अवणीतवयणं, (९) उवणीयावणीयवयणं, (१०) अवणीय–उवणीयवयणं (११) तीयवयणं, (१२) पडुप्पन्नवयणं, (१३) अणागतवयणं, (१४) पच्चक्खवयणं, (१५) परोक्खवयणं। (१६) [७६९]

से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वदेज्जा, जाव, परोक्ख-वयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वदेज्जा। इत्थी वे–स, पुमि वे- स, णपुंसग वे–स, एवं वा वेयं, अण्णहा वा वेयं, अणुवीइ णिट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं [1] उवातिकम्म। [७७०]

अह भिक्खू णं जाणेज्जा चत्तारि भासाजायाइं; तंजहा, सच्चमेगं पढमं भासज्जायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव सच्चं णेव मोसं "असच्चामोसं" णाम तं चउत्थं भासज्जातं। [७७१]

---

१ दोषस्थानानि.

पकर्ष वाक्य,[1] अपकर्षोत्कर्ष वाक्य,[2] भूतकाळ वचन,[3] वर्त्तमानकाळ वचन,[4] अनागतकाळ वचन,[5] प्रत्यक्ष वचन [6] अने परोक्ष वचन. [7] [७६९]

मुनिए एक वचन ज्यां कहेवानुं होय त्यां एकवचन वापरवुं. एम परोक्ष वचनना ठेकाणे परोक्षवचन वापरवुं. वळी आ स्त्रीज छे के पुरुषज छे के नपुंसकज छे अथवा आ बाबत आमज छे के तेमज छे ए सघळुं तपासी नक्की कर्या बाद भाषासमिति साचवी नक्की पणे बोलवुं. अने सघळी जातना वचनदोष परिहार करवा. [७७०]

मुनिए नीचे लखेला भाषाना चार प्रकारो जाणवा जेमके:–पेहेली सत्य भाषा, बीजी असत्य भाषा, त्रीजी मिश्र भाषा अने चोथी सत्यासत्यरहित व्यवहार भाषा. [७७१]

---

१ रुपवती किंतु दुःशीला २ कुरुपा परंतु सुशीला ३ थयुं ४ थाय छे ५ थशे ६ आ ७ ते.

से बेमि जे अतीता जेय पडुप्पन्ना जे य अणागता अरहंता भगवंतो, सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा भासंति वा भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा पणव्वंति वा पण्णविस्संति वा । सव्वाइं च णं एयाणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसवंताणि फासमंताणि चओवचइयाइं विपरिणामधम्माइं भवंतीति समक्खायाइं । [७७२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा [1], पुव्वं भासा अभासा, भासमाणा भासा भासा, भासासमयवितिक्कंता भासिया भासा अभासा । [७७३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाय भासा सच्चा, जायभासा मोसा, जाय भासा सच्चामोसा, जाय भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं [2] कक्कसं [3] कडुयं [4] णिट्ठुरं [5] फरुसं [6] अण्हयकारिं [7] छेदकारिं

१ एवं जानीयादिति शेषः २ अनर्थदंडप्रवृत्त्युपेतां. ३ चर्वितांक्षरां. ४ चित्तोद्वेगकरीं. ५ हक्काप्रधानां. ६ मर्यादोद्घटनपरां. ७ आश्रवकरीं.

हुं कहुं छुं के थइ गएला, वर्त्तमान, अने थनारा तीर्थंकरो भाषाना एज चार प्रकार कही बतावे छे. ए चारे भेदोमां वपराती भाषाना पुद्गलो वर्ण–गंध रस–अने स्पर्शवाळा छे, तथा वधघट अने फेरफारने पामता पण कहेला छे. [७७२]

मुनि अथवा आर्याए जाणवानुं छे के बोल्या अगाउनी भाषा (अर्थात भाषाना पुद्गलो) ते अभाषा छे बोल्या पछीनी भाषा पण अभाषाज छे मात्र बोलाती भाषाज भाषा जाणवी. [७७३]

मुनि अथवा आर्याए पापप्रवृत्ति फेलावनारी, निंदिताक्षरवाळी, सामा धणीनादिलमां कचवाट उपजावनारी, धमकी भरेली, सामा धणीना मर्मने खुल्लुं करनारी, कर्मबंध करावनारी, कोइपण जीवना अंगोपांगनो छेद करावनारी, परि-

परितावणकरिं उवद्दवकरिं भूतोवघाइयं, अभिकंख णो भास भासेज्जा। [७७४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतमाणे, आमंतिते वा अपडिसुणमाणे णो एवं वदेज्जा;—होले—ति वा, गोले—ति वा, वसले ति वा, कुपक्खे ति वा, घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावादी ति वा, एयाइं तुमं, इतियाइं ते जणगा। एतप्पगारं भासं सावज्जं जाव अभिकंख णो भासेज्जा। [७७५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणमाणे एवं वदेज्जाः—अमुगेति वा, आउसो ति वा, आउसंतो ति वा, सावगेति वा, उपासगेति वा, धम्मिएति वा धम्मपियेति वा। एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघातियं अभिकंख भासेज्जा। [७७६]

ताप उपजावनारी, कोइने उपद्रव करनारी या जीवघात करावनारी—सत्य भाषा या मृषा भाषा या व्यवहारु भाषा जाणी वूझीने कदापि नहि बोलवी. [७७४]

मुनि अथवा आर्याए कोइ पण पुरुषने बोलावतां अथवा बोलाव्या छतां नहि सांभळतो होतां तेने एम न कहेवुं के अरे होल, अरे गोल (गुलाम), अरे वृषल (चांडाळ), अरे कुपक्ष, अरे घडदास, अरे कूतरा, अरे चोर, अरे व्यभीचारी अरे कपटी, अरे जूठा, इत्यादि; अथवा तुं आवो छे या तारां मावाप आवां छे इत्यादि आवी रीतनी दोषित भाषा मुनिए नहि बोलवी. [७७५]

किंतु कोइ पण पुरुषने मुनि अथवा आर्याए बोलावतां अथवा बोलाव्या छतां तेणे नहि सांभळतां आ प्रमाणे तेने बोलावचुं—हे अमुक, हे आयुष्मन्, हे आयुष्मंतो, हे श्रावक, हे उपासक, हे धार्मिक, हे धर्मप्रिय,—इत्यादि. आवी तरहनी निर्दोष भाषा वापरवी. [७७६]

जाव, महुमेही महुमेहीति वा, हत्थच्छिण्णे हत्थाच्छिण्णे त्ति वा, एवं पाद–णक्क–कण्ण–उट्ठ–च्छिण्णे त्ति वा । जेया वन्ने तहप्पगारा तहप्पगाराहिं भासाहिं बूइया बूइया कुप्पंति माणवा, तेयावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख णो भासेज्जा । [७८२

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहावेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वदेज्जा: ओयंसी ओयंसीति वा, तेयंसी तेयंसीति वा, वच्चंसी वच्चंसीति वा, जसंसी जसंसिति वा अभिरूवं अभिरूवेति वा, पडिरूवं पडिरूवेति वा, पासादियं पासादियेति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीएति वा । जेयावण्णे तहप्पगारा एयप्पगाराहि भासाहिं बूइया बूइया णो कुप्पंति मा णवा, तेयावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख भासेज्जा । तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा । [७८३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगतियाइं रूवाइं पासेज्जा, तंज-

मेही, छिन्नहस्त[1] ने छिन्नहस्त, एज रीते छिन्नपाद, छिन्ननास, छिन्नकर्ण, तथा छिन्नओष्ठ कहीने बोलाववुं नहि. मतलब के जे मनुष्यो जे शब्दोवडे बोलाव्याथी नाखुश थता होय ते मनुष्योने ते ते शब्दोवडे चाहीने नहि बोलाववुं. [७८२]

मुनि अथवा आर्याए तेवां रुपो जोइने पण तेओमां रहेला कोइ पण गुणने ग्रहण करीने काम प्रसंगे तेमने रुडां नामोथी बोलाववुं, जेमके पराक्रमीने पराक्रमी, तेजस्वीने तेजस्वी, वक्ताने वक्ता, यशस्वीने यशस्वी, सुरुपने सुरुप, मनोहरने मनोहर, रमणीयने रमणीय, अने देखवालायकने देखवा लायक कहीने बोलाववुं अने ए रीते बीजा पण जे मनुष्यो जे शब्दोवडे बोलाव्याथी नाखुश थता नहि होय तेवा निर्दोष शब्दोवडे तेमने बोलाववुं. [७८३]

मुनि अथवा आर्याए कोट, किल्ला, के घर विगेरे देखीने एवुं कहेवुं नहि के

---

१ जेना हाथ कपायला होय ते छिन्नहस्त कहेवाय.

हा, वप्पाणि वा, जाव, भवणगिहाणि वा, तहावि ताइं णो एवं वदेज्जा, तंजहा, सुकडे इ वा, सुट्ठु कडे इ वा, साहु कडे इ वा, कल्लाणे इ वा, करणिज्जे इ वा। एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा। [७८४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहावेगयाइं रूवाइं पासेज्जा, तंजहा, वप्पाणि वा जाव, भवणगिहाणि वा, तहावि ताइं एवं वदेज्जा, तंजहा, आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए त्ति वा, अभिरूवं अभिरूवेति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा। [७८५]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए, तहावि तं णो एवं वदेज्जा, तंजहाः—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा। एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा। [७८६]

ए सुडा बनेला छे या खुब बनाव्या छे, या फायदाकारक छे या करवा लायक छे कारण के एवुं बोलवुं सावद्य (सदोष) छे. [७८४]

किंतु मुनि अथवा आर्याए कोट, किल्ला, के घर विगेरे देखीने काम पडतां एवुं बोलवुं के ए हिंसाथी करेला छे, या पापथी करेलां छे, या बहु मेहेनते करेलां छे, या रमणीय छे; या देखवा लायक छे; या सरखी बांधणीवाला के शोभीतां छे; ए रीते निरवद्य (निर्दोष) भाषा बोलवी. [७८५]

एज रीते मुनि अथवा आर्याए आहारपाणी तैयार करेलां जोइ एवुं न बोलवुं के ए सारां कर्यां छे या रुडी रीते कर्यां छे या फायदाकारक छे; या करवा लायक छे कारण के एम बोलवुं ए दोष भरेलुं छे. [७८६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा, आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दं भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा, मणुण्णं मणुण्णे ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा । [७८७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, मणुस्सं वा गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, जलयरं वा,—से त्तं परिवूढकायं—पेहाए णो एवं वदेज्जा—थुल्ले ति वा, पमेतिले[1] ति वा, वट्टे ति वा, बज्झे ति वा, पाइमे ति वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । [७८८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं जाव जलयरं वा से त्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वदेज्जा;—परिवूढकाए ति वा, उवचितकाए ति वा

---

१ प्रमेदुरः

किंतु मुनि अथवा आर्याए आहारपाणी तैयार थएलां जोइ काम पडतां एवुं बोलवुं के ए हिंसाथी के पापथी करेलां छे, या मेहेनतथी करेलां छे, वळी ते जो रुडां होय तो रुडां कहेवां; ताजां होय तो ताजां कहेवां, रसवालां होय तो रसिक कहेवां अने मनोहर होय तो मनोहर कहेवां एम निर्दोष भाषा वापरवी. [७८७]

मुनि अथवा आर्याए मनुष्य, या बळद, या पाडा, या हरिण, या कोइपण जातना जानवर, या पक्षि, या सर्प, या जळचारी जंतुने पुष्टावस्था प्राप्त थएला देखी एवुं नहि बोलवुं के आ जाडाछे, अथवा आनंदी छे, अथवा गोळ छे, अथवा मारवा लायक छे, अथवा पकडवा लायक छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेली छे माटे नहि बोलवी. [७८८]

मुनि अथवा आर्याए मनुष्य के यावत् जळचारी जंतुने अवस्थावंत थएला देखी काम पडतां एवुं बोलवुं के आ शरीरे मोहोटा थएला छे, या शरीरे सुपेर

उवचितमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा, एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा। (७८९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वदेज्जा, तंजहा, गाओ दोज्झा ति वा, दम्मा इ वा गोहरा, वाहिमा ति वा रहजोग्गा ति वा। एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा। (७९०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा;—जुवं गवे ति वा, धेणू ति वा, रसवति ति वा; हस्से ति वा, महल्लए ति वा, महव्वए ति, संवाहणे ति वा। एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासेज्जा (७९१)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतु मुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि वा, रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वदेज्जा, तंजहा:—पासायजोग्गा

लाछे, या लोहीमांसे सुभरेला छे, या लगभग संपूर्ण अंगवाळा थया छे, आवी रीतनी भाषा निर्दोष छे माटे ते बोलवी. [७८९]

मुनि अथवा आर्याए जूदी जूदी तरेहनी गायो अथवा बळदो जोइने एवुं नहि बोलवुं के आ गायो दोहवा लायक छे, अथवा आ वाछरडाओ खेडवा लायक छे, अथवा गाडीमां जोडवा लायक छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेली छे, माटे नहि वापरवी. [७९०]

मुनि अथवा आर्याए जूदी जूदी तरेहनी गायो अथवा बळदो जोइने काम पडतां एवुं बोलवुं के आ बळद जुवान छे, अथवा आ गाय दूधवाळी के रसवाळी छे, या आ बळद नानो छे, या मोटो छे, या भार उपाडवा समर्थ छे, आवी रीतनी भाषा निर्दोष छे, माटे बोलवी. [७९१]

मुनि अथवा आर्याए, बाग पर्वत के वनमां जइ त्यां रहेला मोटा झाडोने जोइ एवुं नहि बोलवुं के आ झाडो हवेलीना कामना छे या दरवाजाना कामना

ति वा, तोरणजोग्गा ति वा, गिहजोग्गा ति वा, फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल–णावा–उदगदोणि–पीठ—चंगवेर–णंगल–कुलिय–जंतलट्ठि–णालि–गंडी–आसण–सयण–जाण–उवस्सय–जोग्गा ति वा । एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा । (७९२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतु मुज्जाणाइं पव्वयाणि वणाणिय, रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा, जातिमंता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला[1] ति वा, पासादिया ति वा, जाव पडिरूवा ति वा । एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभिकंख भासेज्जा । (७९३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी बहुसंभूता वणफला पेहाए तहावि ते

१ चतुर्षु दिक्षु चतुःशाखावंति

छे, या घ ना कायना छे, या वांकडा करवाना कामना छे, या अगलाना कामना छे, या वहाण के मञ्वाना कामना छे, या पाट के बाजोठना कामना छे, या हळ कुरिया के यंत्रलष्टिना[1] कामना छे, या पनाळ के गंडीना (कुंडीना) कामना छे या बेशवाना, सूवाना, चडवाना के रहेवाना सामानना कामना छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेल छे, माटे नहि बोलवी. [७९२]

मुनि अथवा आर्याए बाग, पर्वत, के वनमां जइ मोहोटा झाड जोइने काम पडतां एवुं केहेवुं के आ झाडो सारी जातना छे, या उंचा अने गोळ छे, या मोहोटा विस्तारवाळा छे, या बहु शाखावाळा छे चोमेर सरखी नीकळेली चार शाखावाळा छे, या रमणीय छे, आवी रीतनी भाषा निर्दोष छे माटे काम पडतां बोलवी. [७९३]

मुनि अथवा आर्याए वनमां घणां फळो पाकेलां जोइने एवुं न बोलवुं के

१ गाडानी ऊंव वगेरेना.

णो एवं वदेज्जा, तंजहा;—पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया ति वा, टाला[1] ति वा, वेहिया[2] ति वा। एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा। [७९४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूतफला अंबा पेहाए एवं वदेज्जा, तंजहा:—असंथडा[3] ति वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया ति वा, भूतरूवा ति वा। एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा। [७९५]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एवं वदेज्जा, तंजहा:- पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवी इ वा, लाइमा इ वा, भज्जिमा इ वा, बहुखज्जा इ वा। एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव णो भासेज्जा। [७९६]

---

१ कोमलानि २ द्विधाकर्तुयोग्यानि ३ असमर्थाः

आ फळो पाकेलां छे अथवा पचावीने खावा लायक छे, अथवा हमणाज फोडवा लायक छे अथवा कोमल छे अथवा बे कटका करवा लायक छे, एवी रीतनी भाषा पाप भरेली छे, माटे नहि बोलवी. [७९४]

मुनि अथवा आर्याए आंबानां झाड बहु फूलेलां जोइ काम पडतां एवुं बोलवुं के आ झाडो भार झीली शकतां नथी, या बहु फळेलां छे या एओमां घणां फळो तैयार थएलां छे, या एओमां फळोनुं रुप बंधायुं छे. आवी रीतनी निर्दोष भाषा काम पडतां बोलवी. [७९५]

मुनि अथवा आर्याए धान्य बहु पाकेलां जोइ एवुं नहि बोलवुं के ए पाकेलां छे अथवा काचां छे, ग्रह छे, या सुकवा योग्य छे, या भुंजवा योग्य छे, आवी रीतनी भाषा पाप भरेली छे माटे नहि बोलवी. [७९६]

वस्त्रैषणाख्यं चतुर्दश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए। से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा,—जांगियं[1] वा, भंगियं[2] वा, साणयं[3] वा, पोत्तयं[4] वा, खोमियं[5] वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं[6] [८०२]

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं

१ ऊर्णानिष्यत्रं २ लालानिष्पन्नं, ३ सणानिष्पन्नं ४ पत्रानिष्पन्नं ५ कार्पासिकं ६ धारयेदितिशेषः

अध्ययन चौदमुं.

वस्त्रैषणा.

पहेलो उद्देश.

(मुनिए वस्त्रो केवां अने केम लेवां?)

मुनि अथवा आर्याए कपडां तपास पूर्वक लेवां. जेवां के—ऊनना, रेशमी, शणना, पानना, कपासना, अर्क तूलनां, अने एवी तरेहनी बीजी जातोनां [८०२]

जे मुनि युवान बळवान निरोगी अने मजबूत बांधावाळो[1] होय तेणे ए-

१ दुर्वळ वृद्ध के हलका संहननवाळो होय ते पोतानी समाधि प्रमाणे वे क वधु वस्त्रो पण धारे. जिनकल्पि तो पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणेज वर्ते—तेने अप वाद नथी.

वत्थं धारेज्जा, णो बितियं । जा णिग्गंथी सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा; —एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं । एएहिं वत्थेहिं अविज्जमाणेहिं अह पच्छा एगमेगं संसीविज्जा । (८०३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थपडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (८०४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, अस्सं-पडियाए[१] एगं साहम्मियं समुद्दिस पाणाइं, (जहा पिंडेसणाए)। (८०५)

एवं—बहवे साहम्मिया, एगं साहम्मिणिं, बहवे साहम्मिणीओ, बहवे समणमाहणा, तहेव पुरिसंतरकडं [जहा पिंडेसणाए] (८०६)

---

१ अस्वप्रत्ययं, निर्ग्रंथनिमित्तं.

कज वस्त्र पहेरवुं; बीजुं नहि पहेरवुं. आर्याए चार साडीओ राखवीः—एक बे हाथनी, बे त्रण हाथनी, अने एक चार हाथनी. अने ए मुजब कदाच वस्त्र न मळे तो ते बीजा साथे सांधी पूरां करवां. [८०३]

मुनि अथवा आर्याए बे गाऊथी लांबे कपडा मागवा माटे जवानो इरादो न करवो. [८०४]

मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र गृहस्थे एकज मुनिने माटे तैयार करेलुं होय ते नहि लेवुं. (अहिं वधारे विशेष पिंडेषणा नामना अध्ययन प्रमाणे समजवो.) [८०५]

एज रीते घणा मुनि, एक आर्या, घणी आर्याओ, तथा घणा श्रमण ब्रा-ह्मणोना माटे तैयार करेलां वस्त्रो विषे पण पिंडेषणा नामना अध्ययनमां कहेला आगळ पाछळना सूत्र प्रमाणे समजी लेवुं. [८०६]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, अस्सं-जए भिक्खूपडियाए कीतं वा, रत्तं वा, धट्ठं वा, मट्ठं वा, संसट्ठं वा, सं-पधूमितं वा तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। अहपुण एवं जाणेज्जा, पुरिसंतरकडं जाव पडिग्गाहेज्जा। (८०७)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा वि-रूवरूवाइं महद्धणमोल्लाइं, तंजहा;—आजिणाणि वा, सहिणाणि [1] वा, स-हिणकल्लाणाणि वा, आयाणि [2] वा, कायकाणि [3] वा, खोमियाणि वा, दु-गुल्लाणि [4] वा, पट्टाणि वा, मलयाणि वा, पतुण्णाणि [5] वा, अंसुयाणि वा, [6] चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालि-याणि वा, कायहाणि वा, कंबलगाणि वा, पावरणाणि वा, अण्णयराणि

१ श्लक्ष्णानि. २ अजारोमनिष्पन्नानि ३ इंद्रनीलवर्णकपासोद्भ-वानि ४ दुकूलानि ५ वल्कलोद्भवानि ६ देशप्रसिद्धानि अतःपरंसर्वाणि

मुनि अथवा आर्याए जे कपडां गृहस्थे साधुना माटे खरीदी लावेलां, या धोइ राखेलां, या रंगी तैयार करेलां, या साफ करेलां, या सुधारेलां, या धूप आपी सुगंधित करी राखेलां होय तेवां वस्त्र तेज माणसे तेम करेलां होय तो तेना पासेथी नहि लेवां, पण जो बीजा माणसे तेम करेलां होय तो लइ शकाय. [८०७]

मुनि अथवा आर्याए नीचे जणावेला जूदी जूदी किशमनां बहु मूल्यवान वस्त्रो नहि लेवां:—चामडानां कपडां, सुंवाळां कपडां, सुंवाळां अने शोभितां कपडां, बकरीना वाळथी बनेलां आशमानी रंगना रुथी बनेलां, सफेद रुनां, बं-गाळी रुनां बनेलां, पट्टसूत्रना बनेलां, मळय सूत्रनां बनेलां, छालना बनेलां, अं-शुक, [1] चीनांशुक, देशराग, आमिल, गज्जळ, फालिक, कायद, तथा ऊननां अ-

१ अंशुकथी कायद सुधीनी जातो देशोना नामोथी लखेली छे.

तहप्पगाराइं वत्थाइं महणद्धणमोल्लाइं लाभे संते णो पडिग्गाहेज्जा । [८०८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि जाणेज्ञा, तंजहा; उद्दाणि [1] वा, पेसाणि वा पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकंताणि वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि आईणपाउरणाणि वत्थाणि लाभे संते णो पडिगाहेज्ञा । [८०९]

इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्ञा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए । [८१०]

---

१ मत्स्यचर्मनिष्पन्नानि

ने मलमलनां कपडां तथा एवी तरहनां बीज पण सर्वे बहुमूल्यवान् कपडां मुनिए नहि लेवां. [८०८]

मुनि अथवा आर्याए नीचे जणावेलां चामडाना वस्त्रो न लेवां:—उद्र जातना मत्स्यना चामडानां, पेश नामना जानवरना चामडानां तथा पशमना बनेला काळा—नीला—तथा धोळा हरणना चामडानां, सोना जेवी कांतिवाळा तारथी या सोनाना पाटथी या किनखावथी या जरीथी भरेला चामडानां, वाघना चामडानां या वाघना चामडाथी मढेलां, या आभूषण रूप या आभूषणथी जडेलां, तथा एवी जातना बीजा चामडानां कपडां मुनिए पहेरवां नहि. [८०९]

उपर जणावेला दोषो टाळीने मुनिए नीचे लखी चार प्रतिज्ञाओथी वस्त्र लेवां. [८१०]

तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तंजहा, जंगियं वा, भंगिपं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा परो वा णं देज्जा, फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिगाहेज्जा। पढमा पडिमा। (८११)

अहावरा दोच्चा पडिमा.–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पेहाए वत्थं जाएज्जा, तंजहा, गाहावती वा, जाव, कम्मकरी वा,–से पुव्वामेव आलोएज्जा, " आउसो त्ति " वा, भगिणी त्ति " वा, " दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं ? " तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा, जाव फासुयं एसणीयं लाभे संते पडिग्गाहेज्जा दोच्चा पडिमा। ८१२

अहावरा तच्चा पडिमा:–से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा, अंतारेज्जगं वा, उत्तरिज्जगं वा तहप्पगारं वत्थं सयं

त्यां पहेली प्रतिज्ञा आ प्रमाणे छे: मुनि अथवा आर्याए उनना, रेशमना, शणना, पानना, कपाशना, के तूलना कपडांमांनुं अमुक जातनुंज कपडुं लेवानी धारणा करवी. अने तेवुं कपडुं पोते मागतां अथवा गृहस्थे आपवा मांडतां निर्दोष होय तो ग्रहण करवुं. ए पेहेली प्रतिज्ञा. [८११]

बीजी प्रतिज्ञा:–मुनि अथवाआर्याए पोताने खप लागतुं वस्त्र गृहस्थना घरे जोइने ते मागवुं. ते आ रीते के शरुआतमांज गृहस्थना घरमां रहेता माणसो तरफ जोइने कहेवुं के हे आयुष्मन् अथवा हे बेहेन, मने आ तमारा वस्त्रोमांथी एकाद वस्त्र आपशो? आवी रीते मागतां अथवा गृहस्थे पोतानी मेळे तेवुं वस्त्र आपतां निर्दोष जाणीने ते वस्त्र ग्रहण करवुं. ए बीजी प्रतिज्ञा. [८१२]

त्रीजी प्रतिज्ञा:–मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र गृहस्थे अंदर पहेरीने वापरेलुं या उपर पहेरीने वापरेलुं होय तेवुं वस्त्र पोते मागी लेवुं, या गृहस्थे आपवा मांड-

वा णं जाएज्जा, जाव पडिग्गाहेज्जा । तच्चा पडिमा । (८१३)

अहावरा चउत्था पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झियधम्मियं वत्थं जाएज्जा । जंचण्णे बहवे समण—माहण—अतिहि—किवण—वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झियधम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फासुयं जाव पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा । (८१४)

इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं जहा पिंडेसणाए । (७१५)

सिया णं तीए एसणाए एसमाणं परो वदेज्जा "आउसंतो समणा एज्जाहिं तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा सुयतरे वा, तो ते वयं आउसो अण्णयरं वत्थं दासामो," तहप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा "आउसो त्ति वा, भइणि त्ति वा, णो खलु मे कप्पति, एयप्पगारे संगारे वयणे पडिसुणेत्तए । अभिकंखसि मे

तां निर्दोष जणातां ग्रहण करवुं. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [८१३]

चोथी प्रतिज्ञाः—मुनि अथवा आर्याए फेंकी देवा लायक वस्त्रो मागवां एटले के जे वस्त्रो बीजा कोइ पण श्रमण, ब्राह्मण, मुसाफर, रांक, के भिखारी चाहे नहि तेवां पोते मागी लेवां या गृहस्थे पोतानी मेळे आपतां निर्दोष जणातां ग्रहण करवां. ए चोथी प्रतिज्ञा. [८१४]

ए चारे प्रतिज्ञाओ माटे वधु खुलासो पिंडेषणा नामना अध्ययनथी धारवो. [८१५]

कदाच उपरनी प्रतिज्ञाओने अनुसरीने जोइतां वस्त्र लेवा जतां मुनिने कोइ गृहस्थ एवुं कहे के हे आयुष्मन् श्रमण, तमो एक मास रहीने अथवा दस दिवस रहीने अथवा पांच दिवस रहीने अथवा आवती काले अथवा परम दहाडे अत्रे आवजो तो तमोने अमे कोइ पण वस्त्र आपीशुं" आवा बोल सांभळी मुनिए कहेवुं जोइए के "हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, माराथी आवी रीतनुं बोलवुं कबूल

दातुं, इयाणिमेव दलयाहि." से णेवं वदंतं परो वदेज्जा "आउसंतो समणा अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णयरं वत्थं दासामो," से पुव्वामेव आलोएज्जा, "आउसो त्ति वा भइणि त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे सगारे पडिसुणेत्तए । अभिकंखसि मे दातुं, इमाणिमेव दलयाहि ।" से सेवं वदंतं परो णेत्ता वदेज्जा "आउसो त्ति वा भयणी त्ति वा, आहरेयं[1] वत्थं, समणस्स दास्सामो; अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सताइं समारब्भ समुद्दिस्स जाव चेइस्सामो." एयप्पगारं णिग्घोसंसोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८१६)

सिया णं परो णेत्ता वएज्जा " आउसो त्ति वा, भइणी त्ति वा, आहरेयं वत्थं, सिणाणेणवा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा समणस्स

१ आहरस्वैतत्

करी शकाय तेम नथी माटे जो देवा चाहाता हो तो हमणांज आपो आम कह्याथी गृहस्थ कदाच कहे के हे आयुष्मन् श्रमण त्यारे मारी पाछल चाल्या आवो तो तमने कोइ पण जोइतुं वस्त्र आपीशुं." त्यारे मुनिए जवाब आपवो जोइए के हे आयुष्मन् अथवा बेहेन माराथी एवा बोल कबूल थइ शके तेम नथी. माटे जो देवा चहाता हो तो हमणाज द्यो." आवी रीते मुनिए कह्याथी गृहस्थ पोताना घरमां रहेला माणसने कहे के "हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, पेहेलुं वस्त्र लइ आव, आपणे ते वस्त्र आ साधुने आपीशुं; अने आपणे आपणा माटे पाछुं बनावी लेशुं." आवा बोल सांभळी मुनिए तेवी जातनां वस्त्र सदोष धारीने ग्रहण करवां नहि. [८१६]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ पोताना घरना माणसोने आवुं कहे के "हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, पेलुं वस्त्र लइ आवो, एने आपणे स्नानादिकमां घप-

णं दास्सामो. ” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा, आउसो त्ति वा, भयणी त्ति वा, मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण[1] वा जाव पघंसाहि वा। अभिकंखसि मे दातुं, एमेव दलयाहि। ” से णेवं वदंतस्स परो सिणाणेण वा जाव पघंसित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा। [८१७]

से णं परो णेत्ता वदेज्जा “ आउसो त्ति वा भइणी त्ति वा, आहर एतं वत्थं, सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेणवा उच्छोलेत्ता वा पधोवेत्ता वा समणस्स दासामो ” एयप्पगारं णिग्घोस—तहेव, णवरं, “ मा एयं तुमं वत्थं सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेहि वा पधोवेहि वा। अभिकंखांसि—सेसं तहेव, जाव णो पडिग्गाहेज्जा। [८१८]

से णं परो णेत्ता वदेज्जा,—“ आउसो त्ति वा, भयणीत्ति वा, आ-

१ सुगंधिद्रव्येण

गता सुगंधी द्रव्यो वडे घसी के वासी करीने साधुने आपीशुं ’ आवा शब्दो सांभळीने मुनिए पेहेलेथीज कहेवुं के “ हे आयुष्मन् अथवा वहेन, ए वस्त्रने तमे तेवा सुगंधि द्रव्यो वडे घसता के वासता नहि. जो देवा चाहता हो तो घस्या के वास्या वगर एमज आपो. तेम छतां गृहस्थ घसी के वासीने आपे तो तेवुं वस्त्र अयोग्य गणीने लेवुं नहि. [८१७]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ पोताना घरना माणसोने एवुं कहे के हे आयुष्मन् अथवा वेहेन, पेलुं वस्त्र लइ आवो, आपणे तेने थंडा या गरम पाणीथी छांटीने अथवा धोइने आ साधुने आपीशुं. आवा बोलो सांभळी मुनिए तेम करवा ग्रहस्थने ना पाडवी; अने कहेवुं के जो तमे मने देवा चाहाता हो तो एमने एमज आपो. तेम कह्या छता गृहस्थ माने नहि तो ते वस्त्र ग्रहण न करवुं. [८१८]

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ घेर जइ पोताना माणसोने कहे के “ हे

हरेतं वत्थं, कंदाणि वा हरियाणि वा विसोधेत्ता समणस्स दासामो. ” एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जाव, “ भइणी त्ति वा, मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव विसोहेहि, णो खलु मे कप्पति एत्तप्पगारे वत्थे पडिग्गाहित्तए । ” से सेवं वदंतस्स परो कंदाणि वा जाव विसोहेत्ता दलएज्जा तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । (८१९)

सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा[1] से पुव्वामेव आलोएज्जा “आउसो त्ति वा भइणी त्ति वा तुमंचेवणं संतियं[2] वत्थं अंतोमंतेण पडिलेहिस्साभि.” केवली बूया ‘आयाण—मेयं;’—वत्थंतेण ओबद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, हिरण्णे[3] वा, सुवण्णे वा, मणी वा, जाव, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जाव जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा । (८२०)

---

१ दद्यात् २ त्वदीय मेव ३ रूप्यं

आयुष्मन् अथवा बेहेन, पेहुं वस्त्र लावो आपणे एना ऊपर अडेला कंद के लीलो तरी ऊतारी साफ करीने ए वस्त्र साधुने आपीशुं.” आवा बोलो सांभळीने तेम करता गृहस्थने ना पाडवी. ना पाड्या छतां गृहस्थ माने नहि तो ते वस्त्र ग्रहण न करवुं. (८१९)

कदाच मुनिने तेडी जनार गृहस्थ मुनिने कोइ पण वस्त्र आपवा मांडे तो मुनिए शरुआतमांज कहेवुं के “हे आयुष्मन् अथवा बेहेन हुं एकवार तमारा वस्त्रने चारे बाजु तपाशी लउं, पछी ग्रहण करीश. जो तपास्या वगरज ते वस्त्र मुनि ग्रहण करे तो केवळ ज्ञानिओए तेमां दोष बताव्या छे. कारण के ते वस्त्रना छडामां कदाच कुंडळ, सांकळ, रुपुं, सोनुं, मणि के रत्ननी माळा विगेरे पण बांधेला होय (अने ते कंइ मुनिने लेवा योग्य नथी.) तथा वळी ते वस्त्र साथे जीवजंतु के धान्य या लीलोतरी वळगेलां होय, माटे मुनिने खास एज भलामण छे के तेणे शरुआतमांज वस्त्रने चारे बाजु तपाशी पछी ग्रहण करवुं. (८२०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा सअंडं जाव संताणगं, तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८२१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं अलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रोच्चइ, तहप्पगारं वत्थं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८२२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, अप्पंड जाव संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं रोइज्जंतं रुच्चइ तहप्पगारं वत्थं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा " णो णवए मे वत्थे " त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा जाव पधंसेज्जा । [८२३]

मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र, इंडां के जीवजंतुथी भरेलुं जणाय अने जे पोताना वरतुं पण न होय तथा जे झाझुं टकी शके नहि तथा जे थोडा वखत सूधी ज वापरवा मळतुं होय तथा जे धरवा लायक न होय तथा कोइ पण रीते पसंद पडतुं पण न होय तेवा अयोग्य वस्त्रने ग्रहण न करवुं. [८२१]

मुनि अथवा आर्याए जे वस्त्र इंडां के जीवजंतुथी रहित, पोताना खपनां व , टकाउ, हमेशना माटे मळतुं, अने धरवा लायक तथा पसंद पडतुं होय ते .. निर्दोष वस्त्रने ग्रहण करवुं. [८२२]

मुनि अथवा आर्याए " मारुं वस्त्र नवुं नथी अर्थात् जुनुं थइ गएलुं छे " एम धारीने तेने जरा झाझेरा सुगंधी द्रव्योथी घसवुं के मसळवुं नहि, [८२३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा " णो णवए मे वत्थे " त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीतोदगवियडेण वा जाव पधोवेज्जा ।(८२४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा " दुब्भिगंधे मे वत्थे " त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, तहेव, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा, (आलावओ) । (८२५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धाए, जाव संताणाए आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा । (८२६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि[१] वा, उसुयालंसि[२]

१ उंबरे वा. २ उदूखले वा.

एज प्रमाणे जूना थएला वस्त्रने जरा झाझेरा थंडा के गरम पाणीथी धोवुं पण नहि.[१] [८२४]

मुनि अथवा आर्याए " मारुं वस्त्र मेलुं थएल छे " एम धारीने जरा झाझेरा सुगंधि द्रव्योथी तेने घसवुं मसळवुं नहि तथा थंडा के गरम पाणीथी तेने धोवुं करवुं नहि. [८२५]

मुनि अथवा आर्याने ज्यारे कोइ पण वस्त्रने तडके सुकववानी जरुर पडे त्यारे ते वस्त्रो तेमणे तरतनी सूकेली, या भींजेली या जीवजंतुवाळी जमीन पर न सुकाववां, [८२६]

एज प्रमाणे ते वस्त्रो लाकडानी स्थूणी उपर या दरवाजा पर या उखल

१ गच्छ निर्गत अर्थात् जिनकल्पि साधुना माटे आ सूत्र छे. गच्छमां रहेला मुनिए तो यतनापूर्वक वस्त्र धोवां पण खरां एम टीकाकार जणावे छे.

वा, कामजलंसि [1] वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खत्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा णो पयावेज्ज वा। [८२७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि [2] वा, भित्तिंसि [3] वा, सेलंसि वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा। [८२८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारे वत्थे खंधंसि वा, चंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा, अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा। [८२९]

से—त्त—मादाय एगंत मवक्कमेज्जा; अहे ज्झामथंडिलंसि वा, जाव, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पमज्जिय पम-

१ स्नानपीठे वा. २ भित्तौ ३ नदीतटे

उपर या स्नान करवाना बाजोठ उपर या एवीज किशमनी कोइ जमीनथी उंची रहेती वस्तु उपर आमतेम लटकतां टांगीने नहि सूकववां [८२७]

वळी ते वस्त्रो भींतउपर या नदीना तट उपर या पापणो उपर अथवा एवीज किशमना हरेक जमीनथी उंचा रहेता पदार्थ पर पण नहि सुकववां [८२७]

वळी ते वस्त्रो कोइ पण चीजोना ढगला उपर या मांचा उपर या माळ उपर या घर उपर या हवेली उपर अथवा एवी जातना बीजा कोइ पण उंचा पदार्थो उपर पण नहि सूकववां. [८२९]

किंतु ते वस्त्रो लइने एकांत स्थळमां जवुं, अने त्यां जीवजंतुरहित स्थळ

वा परिहरित्तए वा; " थिरं वा णं सतं णो पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय प- रिट्ठवेज्जा; तहप्पगारं ससंधितं[२] वत्थं तस्स चेव णिसिरेज्जा; णो अत्ताणं साइज्जेज्जा। [८३४)

से एगतिओ तहप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म " जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं मुहुत्तगं जाइत्ता जाव एगा- हेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण वा पंचाहेण वा विप्पवसिय विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणो गेण्हंति अण्ण- मण्णस्स अणुवयंति, तं चेव, जाव, णो सातिज्जंति, बहुवयणेण भासि- यव्वं (८३५)

से हंता " अहमवि मुहुत्तं परिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा दु–ति–चउ–पंचाहेण वा विप्पवस्सिय विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं गमेव सिया " माइट्ठाणं संफासे। णो एवं करेज्जा। (८३६

१ उपहतं

ईने परठववुं[१] नहि किंतु एवी जातनुं वस्त्र पाछुं आपनार मुनिनेज सोंपवुं. [८३४]

एज प्रमाणे घणा मुनिओ पासेथी घणा मुनिओ वस्त्र मागी बीजे गाम एक बे त्रण चार के पांच दिवस रही पाछा आवी वस्त्र पाछा आपवा मांडे तो घणा मुनिओए ते वस्त्र जो कंइ पण बगडेलां होय तो लेवां नहि–किंतु तेमनेज सोंपवां. [८३५]

आवी वात सांभळीने कोइ मुनि एवुं विचारे के " हुं पण कोइ मुनि पासेथी उधारुं वस्त्र मागी बीजे गाम जइ आवुं के जेथी ए वस्त्र बगडी जवाथी मनेज मळशे," तो ते मुनि दोष पात्र थाय छे. माटे तेम नहि विचारवुं. [८३६]

१ छोडी देवुं नहि

वा, कामजलंसि[1] वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खत्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा णो पयावेज्ज वा । [८२७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि[2] वा, भित्तिंसि[3] वा, सेलंसि वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा । [८२८]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा, तहप्पगारे वत्थे खंधंसि वा, चंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा, अंतलिक्खजाए जाव णो आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा । [८२९]

से–त्त–मादाय एगंत मवक्कमेज्जा ; अहे ज्झामथंडिलंसि वा, जाव, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पमज्जिय पम-

---

१ स्नानपीठे वा. २ भित्तौ ३ नदीतटे

उपर या स्नान करवाना बाजोठ उपर या एवीज किशमनी कोइ जमीनथी उंची रहेती वस्तु उपर आमतेम लटकतां टांगीने नहि सूकववां [८२७]

वळी ते वस्रो भींतउपर या नदीना तट उपर या पाषणो उपर अथवा एवीज किशमना हरेक जमीनथी उंचा रहेता पदार्थ पर पण नहि सुकववां [८२७]

वळी ते वस्रो कोइ पण चीजोना ढगला उपर या मांचा उपर या माळ उपर या घर उपर या हवेली उपर अथवा एवी जातना बीजा कोइ पण उंचा पदार्थो उपर पण नहि सूकववां. [८२९]

किंतु ते वस्रो लइने एकांत स्थळमां जवुं, अने त्यां जीवजंतुरहित स्थल

ज्जिय ततो संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा । (८३०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (८३१)

(द्वितीय उद्देशः)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं[1] वत्थाइं जाएज्जा अहापरिग्गहाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे[2] गामंतरेसु ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं[3] । (८३२]

---

१ अपरिकर्माणि २ अगोपयन् ३ एतच्च सूत्रं जिनकल्पिकोद्देशेन द्रष्टव्यं, वस्त्रधारित्व विशेषणात् गच्छांतर्गतेपि चाविरुद्धं ।

जोइ तपाशी पुंजी प्रमार्जी यत्न पूर्वक ते वस्त्रो सूकववां. [८३०]

एज खरेखर मुनि अने आर्याओना आचारनी संपूर्णता छे. [८३१]

बीजो उद्देश

(वस्त्र संबंधी वधु आज्ञाओ)

मुनि अथवा आर्याए वस्त्रोने सुधारवां करवां नहि, किंतु जेवां मळे तेवांज पहेरवां; तथा धोवां के रंगवां पण नहि, अने जो धोएलां के रंगेला होय तो पहेरवां नहि. अने ग्रामांतरे जतां पोतानां वस्त्रो संताडवां नहि. ए वस्त्रधारि मुनिनो आचार छे.१ [८३२]

आ सूत्र जिनकल्पि मुनिना माटे छे अने वस्त्रधारि एवा विशेषणथी स्थविर कल्पिना माटे पण घटी शके छे. (वृत्ति.)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवर मायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए [1] णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा। एवं बहिया विचारभूमीं विहारभूमीं वा गामाणुगामं दूइजेज्जा। अह पुण एवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए, णवरं, सव्वं चीवर—मायाए। (८३३)

से एगइओ मुहुत्तगं मुहुत्तगं पाडिहारियं बीयं वत्थं जाएज्जा, जाव एगाहेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण पंचाहेण वा विप्पवसिय उवागच्छेज्जा। तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा [1], णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थपरिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु-एवं वदेज्जा “आउसंतो समणा, अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए

मूहूर्तादिकालोद्देशेन। 1 वस्त्रस्वामी

मुनि अथवा आर्याए भिक्षा लेवा जतां या खरचु पाणी जतां या ग्रामानुग्राम विहार करतां सघळां वस्त्र साथे लेवां. अने जो थोडो के घणो वरसाद वरसतो जणाय पिंडेषणा नामना अध्ययनमां कह्या मुजब वर्त्तवुं. [८३३]

कोइ मुनि पासेथी कोइ मुनि, बे घडी या एक बे त्रण चार के पांच दिवस सूधी वापरवा माटे उधारुं वस्त्र मागी तेटलो वखत बीजे गाम एकलो रही आवी पाछो आवतां ते वस्त्र पाछुं आपवा मांडे तो (जो ते वस्त्र ते मुनिए त्यां एकला रह्याथी सूतां करतां बगाडयुं होय तो) ते तेवुं पेहेला मुनिए पोता सारु लेवुंज नहि, तथा लइने बीजाने देवुं नहि, तथा उधारुं टेरवी राखवुं नहि के हमणा तुंज वापर पछी मने बीजुं देजे, तथा तेना बदले बीजुं वस्त्र बदलवामां लेवुं नहि, तथा बीजा मुनिने पण एम नहि कहेवुं के आ वस्त्र तमोने जोइतुं होय तो ल्यो;” वळी ते वस्त्र लांबो वखत चाली शके तेवुं मजबूत होय तो तेने तोडी फा-

वा परिहरित्तए वा ; " थिरं वा णं सतं णो पलिच्छिदिय पलिच्छिदिय प-रिट्ठवेज्जा; तहप्पगारं ससंधितं[२] वत्थं तस्स चेव णिसिरेज्जा; णो अत्ताणं साइज्जेज्जा । [८३४)

से एगतिओ तहप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म " जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं मुहुत्तगं जाइत्ता जाव एगाहेण वा दुयाहेण वा तियाहेण वा चउयाहेण वा पंचाहेण वा विप्पवसिय विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणो गेण्हंति अण्णमण्णस्स अणुवयंति, तं चेव, जाव, णो सातिज्जंति, बहुवयणेण भासियव्वं (८३५)

से हंता " अहमवि मुहुत्तं परिहारियं वत्थं जाइत्ता जाव एगाहेण वा दु–ति–चउ–पंचाहेण वा विप्पवस्सिय विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि, अवियाइं एयं गमेव सिया " माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा । (८३६

१ उपहतं

डीने परठववुं[१] नहि किंतु एवी जातनुं वस्त्र पाछुं आपनार मुनिनेज सोंपवुं. [८३४]

एज प्रमाणे घणा मुनिओ पासेथी घणा मुनिओ वस्त्र मागी बीजे गाम एक बे त्रण चार के पांच दिवस रही पाछा अवी वस्त्र पाछा आपवा मांडे तो घणा मुनिओए ते वस्त्र जो कंइ पण बगडेलां होय तो लेवां नहि–किंतु तेमनेज सोंपवां. [८३५]

आवी वात सांभळीने कोइ मुनि एवुं विचारे के " हुं पण कोइ मुनि पासेथी उधारुं वस्त्र मागी बीजे गाम जइ आवुं के जेथी ए वस्त्र बगडी जवाथी मनेज मळशे," तो ते मुनि दोष पात्र थाय छे. माटे तेम नहि विचारवुं. [८३६]

१ छोडी देवुं नहि

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करेज्जा; णो विवण्णाइं वण्णमंताइं करेज्जा; "अण्णं वा वत्थं लभिस्सामि त्ति" कट्टु अण्णमण्णस्स देज्जा; णो पामिच्चं कुज्जा; णो वत्थेण वत्थपरिणामं करेज्जा; णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा, "आउसंतो समणा, अभिकंखसि मे वत्थं धारित्तए वा परिहरित्तए वा;" थिरं वा ण संतं णो पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा, जहाचेयं वत्थं पावगं-परो मन्नइ। परं चणं अदत्तहारिं[1] पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणे णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा। जाव अप्पुस्सुए जाव ततो संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। [८३७]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा अंतरासे विहं[2] सिया। से जं पुण विहं जाणेज्जा 'इमंसि खलु विहंसि बहवे आ

१ अदत्तहारिणं तस्करं. २ अटवीप्रायः पंथाः।

मुनि अथवा आर्याए शोभीतां वस्त्रोने (चोरोना भयथी) कुशोभीतां न करवां;[1] कुशोभितां वस्त्रोने सुशोभित न करवां "बदलामां हुं बीजुं वस्त्र मेळवीश" एम विचारी एक बीजाने वस्त्रो आपवां नहि; वळी वस्त्रो उधारे पण आपवां नहि; तथा एक वस्त्र आपी बीजुं वस्त्र लेवुं नहि; तथा बीजा मुनिने ते वस्त्र लेवानुं पूछवुं नहि, तथा वस्त्र मजबुत छतां "ए वस्त्र बीजाओने सारुं नथी देखातुं" एम विचारी तेना कटका करी परठववुं नहि. वळी रस्ते जतां चोरोने देखी आडे मार्गे नहि चालवुं, किंतु धीरजथी यत्नापूर्वक चाल्या जवुं. [८३७]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां वच्चे मोटोटुं मेदान आवी पडतां अने त्यां एवुं जणाय के आ मेदानमां घणा लूंटाराओ वटेमारुओना कपडा लूंटवां

१ मुल्यवान मेलां तेवां वस्त्र लेवांज नहि.

मोसगा वत्थपडियाए संपिंडिया, ' णो तेसिं भीओ उम्मग्गेण गच्छेज्जा। जाव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । (८३८)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा पडियागच्छेज्जा, ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा " आउसंतो समणा, आहरेत्तं वत्थं, देहि निक्खिवाहिं, " जहा इरियाए[1] णाणत्तं वत्थपडियाए । [८३९]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं । (८४०)

---

१ ईर्याध्ययनवत् नानात्वं बोध्यं ।

लूंटघा माटे भराइ बेठा छे. तो तेमनाथी बीही जइने आडे मार्गे नहि जवुं किंतु धीरजथी तेज रस्ते चाल्या जवुं. [८३८]

मुनि अथवा आर्याने ग्रामानुग्राम जतां वच्चे लूंटाराओ आवी मळे अने तेओ कहे के 'आयुष्मन् तपस्वी, आ वस्त्र लाव, दे, के छोडी दे" तो जेम इर्याध्ययनमां कहेलुं छे तेम वर्तवुं. [८३९]

ए मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे. [८४०]

पात्रैषणाख्यं पंचदश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देसः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए । से-ज्जं पुण पायं जाणेज्जा तंजहा,—अलाउपायं वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा तहप्पगारं पायं जे णिग्गंथे तरुणे जाव थिरसंघयणे से एगं पायं धारेज्जा, [1] णो बीयं । [८४१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए पायपडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए । [८४२]

१ जिनकल्पिकादिः

अध्ययन पंदरमुं.

पात्रैषणा.

पहेलो उद्देश.

(पात्र केवां अने शी रीते लेवां ?)

मुनि अथवा आर्याए ज्यारे पात्र जोइतुं होय त्यारे तुंबीनुं पात्र अथवा माटीनुं पात्र अथवा एवीज तरेहनुं बीजुं कोइ पण पात्र लेवुं. अने जे मुनि युवान अने मजबूत बांधावाळो होय तेणे मात्र एकज पात्र राखवुं. [1] [८४१]

मुनि अथवा आर्याए पात्र लेवा माटे बे गाऊनी हदथी बाहेर न जवुं. [८४२]

१ आ नियम पण जिनकल्पि साधुने माटे छे, एम टीकाकार जणावे.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण पायं जाणेज्जा, अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं; जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा । पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिते तहेव । [८४३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहण (वत्थेसणा लावओ) [८४४]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं, तंजहा, अयपादाणि वा, तंबपादाणि वा, सीसग–हिरण्ण–सुवण्ण–रीरिया–हारपुड[1] पायाणि वा, मणि–काय–कंस–संख–सिंग दंत–चेल–सेल–पायाणि वा, चम्मपायाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महद्धणमोल्लाइं पायाइं अफासुयाइं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८४५]

---

१ लोहपात्रं.

मुनि अथवा आर्याए जे पात्र गृहस्थे एकज मुनिने माटे उद्देशाने तैयार कर्युं होय ते नहि लेवुं. अहीं पिंडेषणा नामना अध्ययन प्रमाणे चार आलापक बोली जवा. [८४३]

तेमज अनेक श्रमण–ब्राह्मण माटेनो आलापक वस्त्रैषणा मुजब जाणवो. [८४४]

मुनि अथवा आर्याए जे पात्रो बहु मूल्यवाळां जणाय जेवा के लोढानां, त्रांबाना, सीसानां, रुपानां, सोनानां, पीतळनां, पोलादनां, मणिनां, काचनां, कांसाना, शंखनां, शींगडानां, दांतनां, कपडानां, पत्थरनां, चामडानां, के एवी कोइ पण तेहनां बहु मूल्यवान पात्रो होय ते तेमणे ग्रहण करवां नहि. [८४५]

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा से उजाइं पुण पादाइं जाणेज्जा वि-रूवरूवाइं महद्धणबंधणाणि वा, अयबंधणाणि वा, जाव चम्मबंधणाणि वा तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं अफासुयाइं णो पडिग्गाहेज्जा । इच्चेया-इं आयतणाइं उवातिकम्म । [८४६]

अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं पादं एसित्तए । तत्थ खलु इमा पढमा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय उद्दिसिय पायं जाएज्जा, तंजहा, लाउयपायं वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा, त-हप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा, जाव पडिगाहेज्जा । पढमा पडिमा । [८४७]

अहावरा दोच्चा पडिमाः—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पेहा ए पायं जाएज्जा, तंजहा, गाहावई वा जाव कम्मकरी वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा " आउसो त्ति वा, भइणी ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्ण-

वळीजे पात्रो उपर लोढा के चामड के कोइ पण तेवी चीजना बहु मूल्य-वान पट्टा लगाडेला होय ते पण ग्रहण नहि करवां. ए रीते पापना स्थळथी अ-ळगा रही वर्त्तवुं. [८४६]

मुनिए चार प्रतिज्ञाओथी पात्र गवेषवा जवुं. ते चार प्रतिज्ञाओमांनी पहेली प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या अमुक जातनुं नाम लइ तेज पात्र मागे;—जेवुं के तुंबीपात्र, काष्टपात्र, मृत्तिकापात्र, वगेरे, अने ते मागवाथी या पोतानी मेळे आपे तो ते ग्रहण करे. ए पहेली प्रतिज्ञा. [८४७]

बीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या अमुक जातनुं पात्र गृह-स्थना घरे जोया बादज मागे अने ते मुजब गृहस्थ के चाकरडीने शरुआतमां जोइ कहे के "हे आयुष्मन् या बहेन, आ तुंबीपात्र, काष्टपात्र के मृत्तिकापात्र वगे-

यरं पादं, तंजहा, लाउयपादं वा " जाव तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा जाव पडिगाहेज्जा । दोच्चा पाडिमा । (८४८)

अहावरा तच्चा पाडिमा;—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण पादं जाणेज्जा संगतियं वा वेजयंतियं वा, तहप्पगारं पायं सयं वा जाव पडिग्गाहेज्जा । तच्चा पडिमा । (८४९)

अहावरा चउत्था पडिमा;—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झियधम्मियं पादं जाएज्जा; जं च–ण्णे बहवे समणमाहणा जाव वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं पादं सयं वाणं जाव पडिग्गाहेज्जा । चउत्था पडिमा । (८५०)

इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं (जहा पिंडेसणाए) [८५१]

रेमांनुं अमुक पात्र मने आपशो ?" ए रीते माग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थ के चाकर ते आपे तो ग्रहण करे. ए बीजी प्रतिज्ञा. [८४८]

त्रीजी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या, गृहस्थे वापरेलुं या गृहस्थना वपराता बे त्रण पात्रोमांनुं एक पात्र माग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थे आपतां ग्रहण करे. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [८४९]

चोथी प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—मुनि अथवा आर्या जे पात्र फेंकी देवा जेवुं होय अने तेथी जेने बीजा कोइ (बौद्ध) भिक्षुक ब्राह्मण के भीखारी लोक ले नहि तेवुं पात्र माग्याथी या पोतानी मेळे गृहस्थे आपता ग्रहण करे. ए चोथी प्रतिज्ञा. [८५०]

ए चार प्रतिज्ञाओमांनी कोइ पण प्रतिज्ञाने अंगीकार करनार मुनिए उत्कर्ष न करवो के "के हुं उग्रतपनो करनार छुं; या, बीजो साधु एम करी शके नहि." किंतु "जिनाज्ञा पाळनार सर्व साधु महापुरुषज छे" एम जाणी शुद्ध संयम पाळवो. [८५१]

से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वदेज्जा "आउसंतो समणा एज्जासि तुमं मासेण वा" (जहा वत्थेसणाए.) (८५२)

से णं परो णेत्ता वदेज्जा, "आउसो त्ति वा भइणी ति वा आहरे यं पादं, तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंघेत्ता वा तहेव, सिणाणाइ तहेव, सीतोदगकंदादि तहेव। (८५३)

से णं परो णेत्ता वदेज्जा "आउसंतो समणा, मुहुत्तगं मुहुत्तगं अत्थाहि जाव, ताव अम्हे असणं वा उवकरेसु वा उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो सपाणं संभोयणं पडिग्गहगं दास्सामो. तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो सुट्ठ साहु भवति." से पुव्वामेव आलोएज्जा "आ-

आ रीतनी तजवीजथी मुनिने पात्र मागता जोइ गृहस्थ कहे "हे आयुष्मन् श्रमण, तमो एक महिनो रहीने आवजो" इत्यादि सांभळी मुनिए जेम पिंडैषणाध्ययनमां कह्युंछे तेम करवुं. [८५२]

मुनि के आर्याने तेडी जनार गृहस्थ कहे के "हे आयुष्मन् श्रमण, या बेहेन, पहेलुं पात्र लाव; के जेथी तेने तेल, घी, माखण के चरबी चोपडी या सुगंधि चीजो वडे सुवासित करी या उना के ताढा पाणीथी धोइ या कंद के वनस्पतिथी स्वच्छ करी मुनिने आपशुं." आवां बोल सांभळी मुनिए तरत ते बाबत मनाइ पाडवी अने कहेवुं के जो आपवा चाहता हो तो एमज आपो." तेम कर्या छतां गृहस्थ नहि माने तो ते पात्र मुनिए के आर्याए लेवुं नहि. [८५३]

तेडी जनार गृहस्थ कहे के "हे आयुष्मन् श्रमण, तमे थोडीवार उभा रहो,[१] तेटलामां अमे आ रसोइपाणी तयार करी लेशुं; अने त्यारे हे आयुष्मन् तमोने रसोइपाणी सहित पात्र आपीशुं, केमके खाली पात्र साधुने आप्याथी सा-

१ कारण के अमारा पासे बीजुं वधतुं पात्र नथी (टीका)

उसो त्ति वा भइणी ति वा, णो खलु मे कप्पइ आधाकम्मिए असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा, भोत्तए वा पायए वा। मा उवकरेहि मा उवक्खडेहि; अभिकंखासि मे दातुं, एमेव दलयाहि " से सेवं वदंतस्स परो असणं वा जाव उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। (८५४)

सिया सेवं परो णेत्ता पडिग्गहगं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा " आउसो त्ति वा भइणी ति वा तुमं चेव णं संतियं अंतोअंतेण पडिलेहिस्सामि (८५५)

केवली बूया आयाण–मेयं। अंतो पडिग्गहांसि पाणाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा जाव अह भिक्खूणं पुव्वोवादिट्ठा एस पतिण्णा जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा। (८५६)

रुं न देखाय" आवे प्रसंगे साधुए जोइ तपासी कहेवुं के "हे आयुष्मन् अथवा बेहेन, मने मारा माटे करेलां रसोइपाणी काम लागवाना नथी. माटे मारा माटे ते तैयार करता ना. जो पात्र देवा चाहता हो तो एमज खाली आपो." आम कह्या छतां गृहस्थ आहारपाणी तैयार करी ते सहित पात्र आपवा मांडे तो ते अयोग्य जाणी ग्रहण करवुं नहि.,[८५४]

तेडी जनार गृहस्थ पात्र आपवा मांडे त्यारे मुनिए शरुआतमां जोइ करी कहेवुं के के "हे आयुष्मन् या बेहेन, आ पात्र तमारुं छतांज हुं चारे बाजुथी जोइने लइश.[८५५]

जो जोया वगर मुनि पात्र ले तो केवळज्ञानी कहे छे के एथी कर्मबंध थाय. कारण के कदाच ते पात्रना अंदर जीवजंतु के वनस्पति (लीलफूल) पण आवी जाय. ते माटे मुनिने उपर मुजब भलामण छे के तेणे शरुआतमांज पात्रने बधी बाजु जोइ तपासी ग्रहण करवुं. [८५६]

सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए; णाणत्तं,—तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा। [८५७]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहितेहिं सया जएज्जासि त्ति बेमि। [८५८]

[द्वितीय उद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पवि-

सअंडादि[1] सर्व आलापक वस्त्रैषणा मुजब जाणवा मात्र ए विशेष छे के जो तेल, घी, माखण, के चरबी विगेरेथी खरडेल पात्र जणाय तो निर्जीव स्थंडिल भूमिमां जइ जोइ पुंजी प्रमार्जी यतना पुर्वक तेने घसी नाखवुं. [८५७]

एज खरेखर मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के वधी वात-तोमां सदा यतना पुर्वक वर्त्तवुं. एम हुं कहुं छुं. [८५८]

बीजो उद्देश.

पात्र विषे वधु आज्ञाओ.

मुनि अथवा आर्याए आहार लेवा माटे गृहस्थना घरे जतां शरुआतमांज

१ वस्त्रैषणा नामना चौदमां अध्ययनमांनी कलम ८२१ थी ८३० सुधी-नी कलमो प्रमाणे अहिं पण सर्व हकीकत जाणी लेवी.

समाणे पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं ततो संजयामेव, गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा । (८५९)

केवली बूया 'आयाण मेयं.' अंतोपडिग्गहंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पतिण्णा, जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं, उवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ कुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा । [८६०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ—जाव—समाणे सिया. से परो अभिहट्टु अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु[1] दलएज्जा तहप्पगारं पडिग्गहगं[2] परहत्थंसि वा परपादंसि वा अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८६१]

१ निस्सार्य. २ (अत्र मूलसूत्र पुस्तके "तहप्पगारं पडिग्गहगं" इति लिखितं लभ्यते परं टीकाकारेण तथा प्रकारं शीतोदक मिति व्याख्यातत्वात् तहप्पगारं सीओदगं" इति शुद्ध पाठः संभाव्यते. न ज्ञायते बालावबोधकारः कथं वृत्तिं नानुसृतः!)

पात्रने जोइ तपाशी, जीवजंतु दूर करी, रज प्रमार्जी यतनापूर्वक आहार लेवा जवुं आववुं. [८५९]

जो पात्र जोया प्रमार्ज्या विना आहार लेवा जाय तो केवळज्ञानी कहे छे के तेथी कर्मबंध थाय छे. जे माटे कदाच ते पात्रनी अंदर जीवजंतु, लीलफूल के रज पण रहेली होय माटे मुनिने उपर मुजब भलामण छे के तेणे शरुआतमांज पात्रने जोइ तपाशी पुंजीप्रमार्जी यतना पूर्वक आहार लेवा जवुं आववुं. [८६०]

मुनि अथवा आर्या गृहस्थना घरे आहारपाणी लेवा गएला होय, अने कदाच त्यां ते गृहस्थ पोताना पात्रमां टाढुं पाणी नाखीने ते मुनिने आपवा मांडे तो ते गृहस्थना हाथमां के पात्रमां रहेलुं तेवुं टाढुं पाणी अयोग्य जाणीने ग्रहण करवुं नहि. [८६१]

सेय आहच्च[1] पडिगाहिए सियाऽ[2] से खिप्पामेव उदगंसि साहरेज्जा, सपडिग्गह—मायाए च णं परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए चणं भूमीए णियमेज्जा। (८६२)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससणिद्धं वा पडिग्गहं णो आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा। (८६३)

अह पुण एवं जाणेज्जा,—वियडोदए मे पडिग्गहे छिण्णसिणेहे, तहप्पगारं पडिग्गहं ततो संजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा। (८६४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ. पविसिउकामे सपडिग्गह-मायाए गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा। एवं बहिया विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा। (८६५)

१ कदाचित् २ प्रथमं तस्य दातु रुदकभाजने प्रक्षिपेत् तदनिच्छायां शेषसूत्रं.

कदाच ते भूलचूकथी लेवाइ जाय तो तरतज (ते देनार धणीने त्यां पाछुं आपी आववुं पण जो ते लेवानी ते ना पाडे तो) बीजा कूवा विगेरेना सरखी जातना पाणीमां तेने नाखी देवुं; तेम न बने तो पात्र सहित परठवी देवुं; अथवा भीनाशवाळी जमीनमां ढोळी आववुं. [८६२]

मुनि अथवा आर्याए पाणी भींजेलुं के भींनाशवाळुं पात्र मशळवुं के सूकववुं नहि. [८६३]

किंतु ज्यारे एवुं जणाय के मारा पात्र उपरनुं पाणी के भीनाश दूर थयां छे, त्यारे ते मशळवुं के सूकववुं [८६४]

मुनि अथवा आर्याए गृहस्थना घेर आहार लेवा जतां पात्रो सहित जवुं आववुं अने एज रीते बाहेर विहारभूमिमां गामोगाम फरतां पण पात्रो सहित फरवुं. [८६५]

तिव्वदेसियादि जहा बीयाए वत्थेसणाए. णवरं, एत्थ पडिग्गहतो।
(८६६)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहितेहिं सया जएज्जा सि, त्ति बेमि । (८६७)

मुनिए पात्र लेवा जतां जो थोडो या घणो बरसाद वरसतो होय तो जेम पिंडैषणामां विधि बतावी छे तेम वर्त्तवुं. [८६६]

एज खरेखर मुनि तथा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के तेओए सर्व बाबतमां सदा यत्नवंत रहेवुं; एम हुं कहुं छुं. [८६७]

अवग्रह–प्रतिमाख्यं षोडश मध्ययनम्.

[प्रथम उद्देशः]

" समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्त-भोगी पावं कम्मं णो करिस्सामी ति, समुट्ठाए, सव्वं भंते अदिण्णादाणं पच्चक्खामि " । [८६८]

से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा; णेव–ण्णेणं अदिन्नं गिण्हावेज्जा; णेव–ण्णेणं अदिण्णं गिण्ह-

अध्ययन सोळमुं

अवग्रह–प्रतिमा.

पहेलो उद्देश.

(रहेवानुं मकान केवुं पसंद करवुं.)

'हुं श्रमण छुं माटे हुं घर, दोलत, पुत्र, परिवार, तथा चतुष्पदादिक सर्वे वस्तुनी ममता छोडीने भिक्षावृत्तिथी बीजा पासेथी जे कंइ मळशे तेनावडे निर्वाह करतो थको पापकर्म नहि करीश. आ रीते सावध थइ हुं एवी प्रतिज्ञा लउं छुं के हे पूज्य, मारे सर्व जातनी बीजाए नहि आपेली वस्तु ग्रहण करवी नहि." [८६८]

आवा प्रतिज्ञावंत मुनिए गाम के शहेरमां जइ पोते जाते, बीजाए नहि आपेली वस्तु लेवी नहि; बीजाने कहिने लेवरावबी नहि, तथा जे लेतो होय तेने

तं समणुजाणेज्जा । जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिंपि याइं भिक्खू, छत्तयं[1] वा मत्तयं वा दंडगं वा जाव चम्मच्छेदणगं वा, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा पगिण्हेज्ज वा; तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय गिण्हेज्ज वा पगिण्हेज्ज वा । [८६९]

से आगंतरेसु वा (४) अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा:--जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समाहिट्ठाए, ते उग्गहं अणुण्णवेज्जा, "कामं खलु आउसो, अहालंदं[2] अहापरिण्णातं[3] वसामो । जाव आउसंतस्स उग्गहे,

१ वर्षाकल्पादि, यदिवा कारणिकः क्वचित् कुंकुणदेशादा वातिवृष्टि संभवात् छत्रकमपि गृह्णीयात्. [टीका] २ यावन्मात्रं कालं. ३ यावन्मात्रं क्षेत्रं.

भलुं मानवुं नहि किं वहुना जेओनी साथे दीक्षा लीधेली होय. तेओनां पण छत्रक,१ मात्रक, दंडक, के चर्म्मछेदनक तेमनी रजा लीधा शिवाय तथा जोया प्रमार्ज्या शिवाय नहि लेवां, किंतु, तेओनी रजा लइ जोइ प्रमार्जीने ते ग्रहण करवां. [८६९]

मुनिए ज्यारे मुसाफरखाना के घर विगेरे स्थळे पोताने रहेवानी जग्या मागवी होय त्यारे पहेलां "आ जग्या मने योग्य छे?" एम विचार करीने पछी त्यां जे मालेक के मुखी होय तेओनी आ प्रमाणे रजा लेवी:--"हे आयुष्मन्, जो आपनी मरजी होय तो जेटला वखत लगी जेटली जगा वापरवा आपशो तेटला वखत लगी तेटली जग्यामां अेम रहीशुं. अने ज्यां लगी. हे आयुष्मन्, तमारी

१ वर्षाकल्प नामनुं कपडुं अथवा कोंकण विगेरे देशोमां बहु वरसाद होवाथी कदाच मुनिने ते कारणे छत्र पण राखवुं पडे (टीका)

जाव साहम्मियाए, ताव उग्गहं गिण्हिस्सामो, तेणपरं विहरिस्सामो।" (८७०)

से किंपुण तत्थो—ग्गहंसि पवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोतिया[1] समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियए असणे वा (४) तेण ते साहम्मिया संभोइया उवणिमंतेज्जा; णो चेव णं परवडियाए उगिज्झिय उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा। (८७१)

से आगंतारेसु वा (४) जाव से किंपुण तत्थोग्गहंसि पवोग्गहियंसि ; जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुन्ना उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियए पीढे वा फलए वा सेज्जासंथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुन्ने उवणिमंतेज्जा; णो चेवणं परवडियाए उगिज्झिय उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा। (८७२)

१ एकसामाचारीप्रविष्टाः

परवानगी छे त्यां लगी जेटला अमारा समानधर्मी साधु आवशे तेओ साथे रहीशुं त्यारबाद चाल्या जशुं." [८७०]

रहेवानी जग्या मळव्या बाद त्यां जे सदाचारवंत सांभोगिक (साथे बेशी जमनारा) साधुओ आवे तो तेओने मुनिए पोते लावेला आहारपाणीथी निमंत्रित करवा, पण बीजाए लावेला आहारपाणीथी बहु बहु खेंचीने निमंत्रण न करवुं. [८७१]

रहेवानी जग्या मळव्या बाद त्यां जे सदाचारवंत समानधर्मी पण असांभोगिक (साथे नहि जमी शकनार) साधुओ आवे तो तेओने मुनिए पोते लावेला बाजोठ, पाट, के शय्याना पाथरणाथी निमंत्रित करवा; पण बीजाए लावेलाथी बहु बहु खेंचीने निमंत्रण न करवुं. [८७३]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जपुणं उग्गहं जाणेज्जा गाहाइ-कुलस्स मज्झेमज्झण गंतुं पंथेपडिबद्धं वा, णो पण्णस्स–जाव से एवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८७९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा–इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा–तहेव ते-ल्लादि–सिणाणादि–सीओदगवियडादि–णगिणादि य–जहा सेज्जाए आ-लावगा। णवरं उग्गहवत्तवता। (८८०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा आइण्ण-संलेक्खं णो पण्णस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८८१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामग्गियं। (८८२)

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थोना समुदायमांथी थइने दाखल थइ शकातुं होय अने तेना लीधे प्राज्ञ पुरुषने नीकलवा पेशवामां अगवड भरेलुं होय तेवुं मकान न लेवुं [८७९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां घरधणी के चाकरडीओ अरसपरस लढता होय, तेज मुजब ज्यां तैलादिकथी अभ्यंगन करता होय, नहाता होय, अथवा नग्न थइ रहेता होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान चित्रामणथी भरपूर होय अने तेथी धर्म-ध्यानने अनुकूळ न होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८१]

एज मुनि अथवा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के सर्व बाबतोमां सावधान रहेवुं. [८८२]

[द्वितीय उद्देशः]

से आगंतारेसु वा [३] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा—जे तत्थ ईसरे समाहिट्टाए ते उग्गहं अणुण्णवित्ता, "कामं खलु आउसो, अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो. आउस्संतस्स उग्गहे, जाव साहम्मियाए, ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो; तेणपरं विहरिस्सामो"। (८८३)

से किंपुण तत्थ उग्गहंसि पवोग्गाहियंसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा, दंडए वा छत्तए वा जाव चम्मच्छेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा; बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्ज्ञा; णो सुत्तं वा णं पडिबोहेज्ज्ञा; णो तेसिं किंचिवि अप्पतियं[1] पडिणीयं करेज्जा। (८८४)

१ मनसःपीडां

बीजो उद्देश.

(रहेवानुं मकान पसंद करवानी रीत तथा ते बाबतनी सात प्रतिज्ञाओ)

मुनिए मुसाफरखाना विगेरे स्थळे विमर्ष-पूर्वक[1] अवग्रह (मुकाम) मागतां ते स्थळना मालेक अथवा मुखीनी आ प्रमाणे रजा लेवीः—"हे आयुष्मन्, जेवुं स्थळ अने जेवी तेना मालेकनी रजा होय ते प्रमाणे अमे रहिए छीए. माटे ज्यां सूधी तमो अहीं छो अथवा ज्यां लगी तमारी रजा छे त्यां लगी अने जेटला अमारा संघाती आवशे ते प्रमाणे अवग्रह (मुकाम) लेशुं; त्यार बाद चाल्या जशुं." [८८३]

अवग्रह (मुकाम) लीधा बाद शुं करवुं? त्यां जे श्रमणो के ब्राह्मणोना दंड, छत्र, के चर्मच्छेदक शस्त्र पड्यां होय ते अंदरथी बाहेर न लाववां; बाहेरथी अंदर न मोकलवां; तेओ सूतेला होय तो तेमने जगाडवा नहि; तथा तेमने कंइ अणगमतुं के प्रतिकूळ नहि करवुं. [८८४]

१ निश्चयपूर्वक Having reflected on his fitness.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जपुणं उग्गहं जाणेज्जा गाहाइ-कुलस्स मज्झेमज्झण गंतुं पंथेपाडिबद्धं वा, णो पण्णस्स–जाव से एवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८७९)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा–इहखलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा–तहेव ते-ल्लादि–सिणाणादि–सीओदगवियडादि–णगिणादि य–जहा सेज्जाए आ-लावगा। णवरं उग्गहवत्तवता। (८८०)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जंपुण उग्गहं जाणेज्जा आइण्ण-संलेक्खं णो पण्णस्स जाव चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो उग्गहं उगिण्हेज्ज वा [२] (८८१)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामग्गियं। (८८२)

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां गृहस्थोना समुदायमांथी थइने दाखल थइ शकातुं होय अने तेना लीधे प्राज्ञ पुरुषने नीकलवा पेशवामां अगवड भरेलुं होय तेवुं मकान न लेवुं [८७९]

मुनि अथवा आर्याए जे मकानमां घरधणी के चाकरडीओ अरसपरस लढता होय, तेज मुजब ज्यां तैलादिकथी अभ्यंगन करता होय, नहाता होय, अथवा नग्न थइ रहेता होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८०]

मुनि अथवा आर्याए जे मकान चित्रामणथी भरपूर होय अने तेथी धर्म-ध्यानने अनुकूळ न होय तेवा मकानमां रहेवुं नहि. [८८१]

एज मुनि अथवा आर्योना आचारनी संपूर्णता छे के सर्व बावतोमां सावधान रहेवुं. [८८२]

[द्वितीय उद्देशः]

से आगंतारेसु वा [३] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा—जे तत्थ ईसरे समाहिट्ठाए ते उग्गहं अणुण्णवित्ता, "कामं खलु आउसो, अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो. आउस्संतस्स उग्गहे, जाव साहम्मियाए, ताव उग्गहं उग्गिण्हिस्सामो; तेणपरं विहरिस्सामो"। (८८३)

से किंपुण तत्थ उग्गहंसि पवोग्गहियंसि? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा, दंडए वा छत्तए वा जाव चम्मच्छेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा; बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा; णो सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा; णो तेसिं किंचिवि अप्पतियं[1] पडिणीयं करेज्जा। (८८४)

१ मनसःपीडां

बीजो उद्देश.

(रहेवानुं मकान पसंद करवानी रीत तथा ते बाबतनी सात प्रतिज्ञाओ)

मुनिए मुसाफरखाना विगेरे स्थळे विमर्श-पूर्वक[1] अवग्रह (मुकाम) मागतां ते स्थळना मालेक अथवा मुखीनी आ प्रमाणे रजा लेवीः—"हे आयुष्मन्, जेवुं स्थळ अने जेवी तेना मालेकनी रजा होय ते प्रमाणे अमे रहिए छीए. माटे ज्यां सूधी तमो अहीं छो अथवा ज्यां लगी तमारी रजा छे त्यां लगी अने जेटला अमारा संघाती आवशे ते प्रमाणे अवग्रह (मुकाम) लेशुं; त्यार बाद चाल्या जशुं." [८८३]

अवग्रह (मुकाम) लीधा बाद शुं करवुं? त्यां जे श्रमणो के ब्राह्मणोना दंड, छत्र, के चर्मच्छेदक शस्त्र पड्यां होय ते अंदरथी बाहेर न लाववां; बाहेरथी अंदर न मोकलवां; तेओ सूतेला होय तो तेमने जगाडवा नहि; तथा तेमने कंइ अणगमतुं के प्रतिकूळ नहि करवुं. [८८४]

१ निश्चयपूर्वक Having reflected on his fitness.

से भिक्खू वा [२] अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए: जे तत्थ ईसरे जे तत्थ समाहिट्ठाए, ते उग्गहं अणुजाणावेज्जा " कामंखलु जाव विहरिस्सामो " (८८५)

से किंपुण तत्थोग्गहंसि पवोग्गहियंसि? अह भिक्खू इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, से ज्जं पुण अंबं जाणेज्जा सअंडं जाव संसताणं तहप्पगारं अंबं अफासुयं जाव णो पडिगाहेज्जा। (८८६)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण अंबं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं अतिरिच्छछिण्णं अवोच्छिणं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। (८८७)

से भिक्खू वा [२] सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा अप्पंडं जाव संताणगं तिरिच्छछिण्णं वोच्छिणं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा। (८८८)

साधु अथवा साध्वीए आंवाना वनमां (मुकाम लेवा) जतां तेना मालेक के मुखीनी पण उपर मुजब रजा लेवी. [८८५]

आंवाना वनमां मुकाम लीधा वाद शुं करवुं? त्यां जो साधु आंवाना फळ खावा इच्छे[1] तो जे आंवानुं फळ (केरी) इंडा तथा कीडीओथी भरेलुं होय तेवुं अयोग्य फळ नहि लेवुं. [८८६] *

साधु अथवा साध्वीए जे आंवानुं फळ इंडा तथा कीडीओथी रहित छतां कापेलुं के कटका पाडेलुं न होय ते अयोग्य जाणी लेवुं नहि. [८८७] *

साधु अथवा साध्वीए जे आंवानुं फळ इंडा तथा कीडीओथी रहित छतां आडुं अवळुं कापेलुं होय के तेना जूदा जूदा कटका करेला होय तेवुं फळ योग्य जाणीने लेवुं. [८८८] *

---

१ कारणयोगे टीका. * कलम ८८५ थी ८९९ सुधी आंवा शेलडी लसण वगेरे ज्यां आवे त्यां ते अचित्त होय तोज वापरवानो भावार्थ छे.

से भिक्खू वा [२] अभिकंखेज्जा अंबभित्तय[1] वा अंबपेसि य[2] वा अंबचोयगं[3] वा अंबसालगं[4] वा अंबदालगं[5] वा, भोत्तए वा पायए वा सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगंवा जाव अंबदालगं वा सअंडं जाव संताणगं अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। (८८९)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं वा अप्पंडं जाव संताणगं अतिरिच्छच्छिण्णं वा अवोच्छिण्णं वा अफासुयं जाव णो पडिग्गाहेज्जा। (८९०)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं वा अप्पंडं जाव संताणगं तिरिच्छच्छिण्णं वोच्छिण्णं फासुयं जाव पडिग्गाहेज्जा। (८९१)

---

१ आम्रार्द्ध २ आम्रफालीं ३ आम्रत्वचं ४ रसं ५ सूक्ष्मखंडानि.

साधु अथवा साध्वीए आंबाना फळना अर्धकटका, अथवा फाळ, अथवा छाल, अथवा रस, अथवा झीणा कटका खावा पीवाना होय तो जे कटका विगेरे इंडां के कीडीओथी भरेला होय ते अयोग्य जाणीने नहि ले। [८८९]

साधु अथवा साध्वीए आंबाना फळना अर्ध कटका विगेरे, इंडां के कीडीओथी रहित छतां आडा अवळा कापेला के छूटा पाडेला न होय तो अयोग्य जाणी नहि लेवां. [८९०]

किंतु जो ते आंबाना अर्ध कटका विगेरे, इंडां के कीडीओथी रहित छतां कापेला कूपेला के छूटा पाडेला होय तो लेवां. [८९१]

से भिक्खू वा (२) अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए; जे तत्थ ईसरे, जाव, उग्गहंसि । (८९२)

अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुं भोत्तए वा पायए वा, से ज्जं उच्छु जाणेज्जा सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । अतिरिच्छच्छिण्णं तहेव । तिरिच्छच्छिण्णं तहेव । (८९३)

से भिक्खू वा (२) सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा अंतरुच्छुयं[1] वा, उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडालगं वा, सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८९४]

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण जाणेज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा सअंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा । [८९५]

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण जाणेज्जा अंतरुच्छुयं वा जाव डालगं वा अप्पंडं जाव णो पडिग्गाहेज्जा अतिरिच्छच्छिण्णं । (८९६)

तिरिच्छच्छिण्णं तहेव पडिग्गाहेज्जा । [८९७]

१ पर्वमध्यं ।

साधु अथवा साध्वीए सेलडीना वनमां मुकाम करवो तेना मालेक के मुखीनी रजा लइ रहेवुं. [८९२] *

त्यां जो सेलडी साधुने खावी पीवी पडे तो जे सेलडी इंडां के कीडीओथी भरेली होय के कापेली कूपेली न होय ते नहि लेवी किंतु इंडां-कीडिओथी रहित छतां कापेली के छूटी पाडेली होय ते लेवी. [८९३] *

एज मुजब सेलडीनी गांठो, गंडेरी, फाळियां, रस, के कटका पण इंडां-कीडीवाळां के कापकूप विनाना होय ते न लेवां [८९४-८९५-८९६]

किंतु इडां कीडीओथी रहित छतां कापेलां कूपेलां होय ते लेवां. [८९७]

* जुओ फुटनोट कलम ८८५ नी.

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ञा ल्हसुणवणं उवागच्छित्त ए। तिण्णिआलावगा तहेव। णवरं ल्हसुणं। (८९८)

से भिक्खू वा [२] अभिकंखेज्ञा ल्हसुणं वा, ल्हसुणकंदं वा, ल्हसुणचोयगं वा, ल्हसुणणालगं वा, भोत्तए वा पायए वा, से ज्जं पुण जाणेज्ञा ल्हसुणं वा, जाव, ल्हसुण बीयं वा सअंड जाव णो पडिग्गाहेज्ञा। एवं अतिरिच्छच्छिण्णेवि। तिरिच्छछिण्णे पडिग्गाहेज्ञा[1]। (८९९)

से भिक्खू वा [२] आगंतारेसु वा [४] जाव; उग्गहियंसि, जे तत्थ गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिक्कम[2]। ९००)

अह भिक्खू जाणेज्ञा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं उग्गहं उगिण्हित्तए। [९०१]

---

१ आम्रादिसूत्राणा मवकाशो निशीथषोडशोद्देशका दवगंतव्यः
२ अवग्रहंगृहीतुं जानीयादितिशेषः

साधु अथवा साध्वीए लसणना वनमां जतां पण एज मुजब वर्त्तवुं [८९८] *

साधु अथवा साध्वीए लसण, लसणनुं कंद, लसणनी फाळ, के लसणनी नाळ खावा पीवा इच्छतां ते जो इंडां–कीडीओथी भरेलां के कापकूप वगरनां होय तो न लेवां किंतु इंडां–कीडिओथी रहित छतां कापेला कूपेला होय तो लेवां. [८९९] *

साधु अथवा साध्वीए मुशाफरखाना विगेरे स्थळोमां निवास कर्या बाद त्यां गृहस्थोनी कर्मजनक प्रवृत्तिथी दूर रही वर्त्तवुं [९००]

पहेली प्रतिज्ञाः–मुशाफरखाना विगेरे स्थळोमां मुकाम मागी तेना मालेकनी रजा लगी रहीशुं. ए पहेली प्रतिज्ञा. [९०१]

---

* जुओ फुटनोट कलम ८८९ नी.

तत्थ खलु इमा पढमापडिमा:—से आगंतारेसु वा [४] अणुवीइ उग्गहं जाएज्जा, जाव, विहरिस्सामो। पढमा पडिमा। (९०२)

अहावरा दोच्चा पडिमा[1]:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं गिण्हिस्सामि; अण्णेसिं भिक्खूणं उग्गहिए उग्गहे उवल्लिस्सामि"। दोच्चा पडिमा। (९०३)

अहावरा तच्चा पडिमा[2]:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, "अहं

१ द्वितीया प्रतिमा सामान्येन इयंतुगच्छांतर्गतानां संभोगिकाना मसंभोगिकानां चोद्युक्तविहारिणां. यत स्तेन्योन्यार्थं याचंत इति. २ तृतीया—एषा त्वाहालंदिकानां यतस्ते सूत्रार्थविशेष माचार्यादभिकांक्षंते, आचार्यार्थं याचंते

बीजी प्रतिज्ञा:[1]—कोइ साधु एवो ठराव करे के "हुं बीजा साधुओने माटे अवग्रह मागीश. अने बीजाओए लीधेला अवग्रहमां रहीश." ए बीजी प्रतिज्ञा. [९०३]

त्रीजी प्रतिज्ञा:[2]—कोइ साधु एवो ठराव करे के "हुं बीजा साधुओना अर्थे अवग्रह (मुकाम) लइश; पण बीजाओना लीधेला अवग्रहमां रहीश नहि." ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [९०४]

चोथी प्रतिज्ञा:[3]—कोइ साधु एवो ठराव करे के "हुं बीजा माटे अवग्रह

१ बीजी प्रतिज्ञा; गच्छमां रहेल सांभोगिक या असांभोगिक उद्युक्त विहारवाळाने होय; कारण के तेओ एक बीजा माटे मागे छे. जुओ फुटनोट कलम ८९९ नी

२ त्रीजी प्रतिज्ञा, अहालंदिक मुनिने होय; जे माटे तेओ सूत्रार्थनो अवशेष आचार्य पासेथी चाहे छे तेमज आचार्य माटे याचे छे.

३ चोथी प्रतिमा, गच्छमां रहेला अभ्युद्यत विहारि मुनिओ जेओ जिनकल्पीआदिकना माटे तयारी करता होय तेमने होय.

च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं गिण्हिस्सामि; अण्णेसिं च उग्गहिए उग्गहे णो उवल्लिस्सामि। तच्चा पडिमा। (९०४)

अहावरा चउत्था पडिमा[1]:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति, "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए उग्गहं णो उगिण्हिस्सामि; अण्णेसिं च उग्गहे उग्गहिए उवल्लिस्सामि।" चउत्था पडिमा। (९०५)

अहावरा पंचमा पडिमा[2]:—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवति "अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए उग्गहं उगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं, णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं। पंचमा पडिमा.। (९०६)

अहावरा छट्ठा पडिमा[3]:—से भिक्खू वा (३) जस्सेव उग्गहे

१ चतुर्थी, इयंतु गच्छएवाभ्युद्यतविहारिणां जिनकल्पाद्यर्थं परिकर्म कुर्वतां. २ पंचमी—इयंतु जिनकल्पिकस्य. ३ षष्ठी, एषापि जिनकल्पिकादेः

नहि लइश; पण बीजाओना लीधेला अवग्रहमां रहीश." ए चोथी प्रतिज्ञा. [९०५]

* मुनिए अवग्रह (मुकाम) लेतां आए सात प्रतिज्ञाओ जाणवी जोइए:— [९०१]

पांचमी प्रतिज्ञा[1]:—कोइ साधु अथवा साध्वी एवो ठराव करे के 'हुं फक्त मारा माटेज अवग्रह लइश; शिवाय बे, त्रण, चार, के पांचना माटे नहि लइश." ए पांचमी प्रतिज्ञा. [९०६]

छट्ठी प्रतिज्ञा[२] —कोइ साधु अथवा साध्वी कोइना अवग्रहमां रही जो

१ पांचमी जिनकल्पिने होय.

२ छठ्ठी जिनकल्पि विगेरेने होय.

* ३२७ मा पानामां ९०१ कलमनुं भाषांतर रही जवाथी अहीं दाखल करेलुं छे. माटे वांचनारे तेनो संबंध मेळवी लेवो.

उवल्लिएज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागते, तंजहा, इक्कडे जाव पलाले वा, तस्स लाभे संवसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुए वा णेसज्जिए वा विहरेज्जा। छट्ठा पडिमा। (९०७)

सत्तमा पडिमा;—से भिक्खू वा [२] अहासंथडमेव उग्गहं जाएज्जा; तंजहा, पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा, अहासंथडमेव, तस्स लाभे संवसेज्जा; तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा णेसज्जिओ वा विहरेज्जा। सत्तमा पडिमा। (९०८)

इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं, जहा पिंडेसणाए। (९०९)

सुयं मे आउसं, तेणं भगवया एव मक्खायं; इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहे उग्गहे पण्णत्ते:—तंजहा, देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गा-

त्यांज इक्कड के पराळ[१] विगेरे शय्या मळे तो सुए; नहि तो उत्कटुक आसने अथवा बेशीने रात्रि कहाडे. ए छट्ठी प्रतिज्ञा. [९०७]

सातमी प्रतिज्ञाः—साधु अथवा साध्वी अमुक प्रकारनोज अवग्रह मागे, जेवो के, पत्थरना तळवाळो या, काष्टना तळवाळो विगेरे, अने तेवोज जो मळे तो त्यां सुए, नहिं. तो बीजी तरेहनो मळतां उत्कुटुक आसने अथवा बेशीने रात कहाडे ए सातमी प्रतिज्ञा. [९०८]

ए सात प्रतिज्ञाओमांथी गमे ते प्रतिज्ञाथी वर्तवुं. आ स्थळे आत्मोत्कर्ष-वर्जनादिक पिंडैषणा मुजब जाणवो. [९०९]

हे आयुष्मन्, में सांभळ्युं छेः ते भगवाने आ रीते कह्युं छे—स्थविर भगवंतोए पांच प्रकारनो अवग्रह कह्यो छे, जेमके,—देवेंद्रनो अवग्रह, राजानो[२] अव-

१ जव, गहूं विगेरेनुं पराळ.

२ राज शब्दे चक्रवर्त्ति राजा इहां लेवो.

ह्यावइउग्गहे, सागारियउग्गहे, साहम्मियउग्गहे । (९१०)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स [२] सामग्गियं ९११)

[प्रथमा चूला समाप्ता]

ग्रह, गाथापतिनो१ अवग्रह, सागारिकनो२ अवग्रह, साधर्म्मिकनो अवग्रह, (९१०)

एज वधी साधु अथवा साध्वीना आचारनी संपूर्णता छे के सर्वे बाबतमा जवीजथी रहेवुं. [९११]

(पहेली चूला पूर्ण थइ)

---

१ गाथापति शब्दे जे जग्यानो राजा शेय ते लेवो. २ सागारिक शब्दथी गृहस्थ लेवो.

द्वितीया चूला

स्थानंनाम सप्तदश मध्ययनम्.

(एकोद्देशं)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेइ ठाणं ठाइत्तए; से अणुपविसेज्जा गामं वा, णगरं वा, जाव सण्णिवेसं वा । से अणुपविसित्ता गामं वा, जाव सण्णिवेसं वा, से ज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा सअंडं जाव समक्कडासंताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं अफासुयं अणेसणिज्जं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा । एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं । जाव उदयपसूयाइंत्ति । [९१२]

बीजी चूळीका.

अध्ययन सत्तरमुं.

स्थान.

पहेलो उद्देश.

(उभा रहेवा माटे जग्या केवी पसंद करवी ?)

साधु अथवा साध्वीए उभा रहेवा माटेनी जग्या मेळववा सारु गाम नगर के सन्निवेशमां जतां जे स्थान इंडां-मकोडी विगेरेथी भरेलुं जणाय तेवुं स्थान मळतां छतां अयोग्य गणी नहीं लेवुं ए रीते सघळुं शय्याध्ययन माफक जाणवुं. यावत् जे स्थान पाणीथी पेदा थतां कंदादिकथी व्याप्त होय तेवुं स्थान पण नहि लेवुं. [९१२]

इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए। (९१३)

तत्थिमा पढमा पडिमाः—"अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबेज्ज काएण, विपरिकम्मादी [१]; सवियारं [२] ठाणं ठाइस्सामि"। पढमा पडिमा. (९१४)

अहावरा दोच्चा पडिमाः—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबेज्जा काएण। विपरिकम्माइ; णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि। दोच्चा पडिमा। (९१५)

अहावरा तच्चा पडिमाः—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा; अवलंबेज्जा णो काएण; विप्परिकम्माइ; णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति। तच्चा पडिमा। (९१६)

---

१ आकुंचनप्रसारणादि २ पादविहरणं.

ए उपर बतावेला कर्मजनक स्थानोथी दूर रही साधुए चार प्रतिज्ञाओथी उभा रहेवानुं मुकरर करवुं. [९१३]

त्यां पहेली प्रतिज्ञा आ प्रमाणेः—अचित्त स्थळमां रहेवुं अचित वस्तुनुं अवलंबन करवुं, हाथ पगनुं आकुंचन–प्रसारण करवुं, तथा थोडुं फरवानुं राखवुं. ए पहेली प्रतिज्ञा. [९१४]

बीजी प्रतिज्ञाः—अचित्त स्थळमां रहेवुं; अचित्त वस्तुनुं अवलंबन करवुं; हाथ पगनुं आकुंचन–प्रसारण करवुं; किंतु फरवानुं बंध राखवुं. ए बीजी प्रतिज्ञा [९१५]

त्रीजी प्रतिज्ञाः—अचित्त स्थळमां रहेवुं; अवलंबन कंइ पण न करवुं; हाथ पगनुं आकुंचन–प्रसारण करवुं; अने फरवानुं बंध राखवुं. ए त्रीजी प्रतिज्ञा. [९१६]

अहावरा चउत्था पडिमाः—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा काएण, णो विपरिकम्मादी, णो सविचारं ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेसमंसुलोमणहे संणिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति; चउत्था पडिमा। (११७)

इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं जाव पग्गहियतरायं विहरेज्जा। णो तत्थ किंचिवि वदेज्जा। (११८)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जएज्जासि त्ति बेमि। (११९)

ठाणसत्तिक्कयं समत्तं पढमं.

चोथी प्रतिज्ञाः—अचित्त स्थळमां न रहेवुं, अचित्त वस्तुनुं पण अवलंबन न करवुं, हाथ पगनुं आकुंचन के प्रसारण न करवुं, तेमज हरवुं फरवुं पण नहि; किंतु शरीर तथा केश, स्मश्रु, [1] लोम[2] अने नखोने (मुकरर वखत सुधी) वोसरावीने एटले के मारा नथी एम गणीने निःप्रकंपपणे[3] रहेवुं. ए चोथी प्रतिज्ञा. [११७]

ए चार प्रतिज्ञाओमांथी गमे ते प्रतिज्ञा धारीने वर्त्तवुं. कदाच कोइ ए प्रतिज्ञाओ नहि धारे तेनो अवर्णवाद न करवो. [११८]

ए सघळी साधु तथा साध्वीना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे सर्व बाबतोमां सावधानपणे वर्त्तवुं. [११९]

१ दाढी Beard २ रुंवाडा ३ हाल्या चाल्या विना perfectly motion less

निषीथिका[1] नामक मष्टादश मध्ययनम्.

[एकोद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए; से पुण णिसीहियं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं अणेसणिज्जं लाभे संते णो चेतिस्सामि । [९२०]

से भिक्खू वा (२) अभिकंखइ णिसीहियं गमणाए से ज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा अप्पंडं अप्पपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं फासुयं एसणिज्जं लाभे संते चेतिस्सामि एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदयपसूयाए त्ति । [९२१]

१ स्वाध्याय भूमिः

अध्ययन अढारमुं.

निषीथिका.[1]

पहेलो उद्देश.

(अभ्यास करवा माटे जग्या केवी पसंद करवी ?)

साधु अथवा साध्वीए स्वाध्याय करवा माटे [पोतानो उपाश्रय छोडी] बीजी जग्याए जतां ते जग्या जीवजंतुवाळी जणाय तो मळतां छतां अयोग्य गणी नहि लेवी. [९२०]

साधु अथवा साध्वीए स्वाध्याय करवा माटे (पोतानो उपाश्रय छोडी) बीजी जग्याए जतां ते जग्या जीवजंतुथी रहित जणाय ने ते मळे तो योग्य जाणीने लेवी. ए रीते सघळी विगत शय्या नामना अध्ययनना मुजब लेवी. (९२१)

१ अभ्यास करवा माटे बीजी जग्या.

जे तत्थ दुवग्गा वा, तिवग्गा वा, चउवग्गा वा, पंचवग्गा वा, अभिसंधारेइ णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं आलिंगेज्ज वा विलिंगेज्ज वा चुंबेज्ज वा दंतेहिं वा णहेहिं वा अच्छिंदेज्ज वा। [९२२]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं सहिए समिए सदा जएज्जा सेयमिणं मण्णेज्जासित्ति बेमि. [९२३]

(णिसीहियासत्तिक्कयं समत्तं बिइयं)

जो त्यां बबे, त्रण त्रण, चार चार, के पांच पांच साधुओ तेवी स्वाध्याय भूमिमां जाय तो त्यां तेमणे एक बीजाना शरीरने आलिंगन के स्पर्श अथवा दंत के नखथी छेदन नहि करवुं. [९२२]

ए सघळी साधु तथा साध्वीना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे सर्व बाबतोमां सावधान रही हमेशा उद्यमवंत थइ रहेवुं. अने एज कल्याण कर्ता छे एम मानवुं. [९२३]

उच्चार–प्रश्रवणं नाम एकोनविंश मध्ययनम्

[एकोद्देशः]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवणकिरियाए उव्वाहिज्जमाणे सयस्स पायपुंच्छणस्स[1] असतीए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा । (९२४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा सअंडं सपाणं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९२५)

१ पादपुंच्छनं समाध्यादिकमिति.

अध्ययन ओगणीशमुं.

उच्चार प्रश्रवण.[1]

पहेलो उद्देश.

(स्थंडिल माटे केवी जग्या पसंद करवी?)

साधु अथवा साध्वीए खरचुपाणीनी पीडा थतां पोतानां मात्रकमां[2] ते करवां; पण जो पोतापासे मात्रक न होय तो पछी बीजा साधुना पासेथी मागी लइ तेमां करवां. [९२४]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्या जीव जतुंथी जणाय त्यां खरचुपाणी करवां नहि. [९२५]

१ खरचुपाणी—झाडो पेशाब, २ झाडो पेशाब करवा माटे राखेलुं भाजन-सरावलुं (Broom–Jacobi)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा अप्पपाणं अ–प्पवीयं जाव मक्कडासंताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९२६)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जाः–अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स, अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स, अस्सिंपाडियाए बहवे समणमाहण वणीमगा पगाणिय पगाणिय समुद्दिस्स पाणाइं (४) जाव उद्देसियं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं जाव बहिया णीहडं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा । (९२७)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा बहवे समण–माहण–किवण–वणीमग–अतिही समुद्दिस्स पाणाइं (४) जाव उद्देसि-

साधु अथवा साध्वीए जे जग्या निर्जीवने निर्बीज जणाय त्यां खरचुपाणी करवां. [९२६]

साधु अथवा साध्वीने जे जग्या एवी जणाय के आ जग्या एक अमुक साधुना माटे बनावेली छे या एक अमुक साध्वीना माटे बनावेली छे या घणी साध्वीओना माटे बनावेली छे अथवा घणा श्रमण ब्राह्मण के भीखारीओमांना दरेकना माटे पृथक् पृथक् ठेरावी ठेरावीने घणा जीव जंतुनी हिंसा पूर्वक बनावबामां आवी छे. ए रीते जे जग्या औदेशिकदोषदुष्ट[१] जणाय तेवी जग्या पुरुषांतरस्वीकृत अथवा अस्वीकृत छतां तेमां तेमणे खरचुपाणी करवां नहि. [९२७]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्या घणा श्रमण, ब्राह्मण, कृपण, भिखारी, तथा मुसाफरोना माटे सामान्यपणे करवामां आवेली जणाय, तेवी जग्या अपुरु-

१ आधा कर्मी दोषथी दुषित-साधु माटे नीपजावेल.

यं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि [1] थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। [९२८]

अह पुण एवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडं जाव बहियाणीहडं वा, अण्णयरंसि तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (९२९)

से भिक्खू वा [२] से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा अस्सिंपडिया-ए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चियं वा, छण्णं वा, घट्ठं वा, लित्तं वा, मट्ठं वा, सपधूवितं वा, अण्णयरंसि तहप्पगारंसि [2] थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा। (९३०)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा गाहावइ पुत्ता वा, कंदाणि वा मूलाणि वा जाव हरियाणि वा अंतातो बाहिं णीहरंति, बाहाओ वा अंतो साहरंति, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। [९३१]

---

१ यावंतिके २ उत्तरगुणाशुद्धे

पांतरकृत अथवा वगर वपराएल होतां तेमां खरचुपाणी करवां नहि. [९२८]

पण जो तेवी जग्या पुरुपांतरकृत अथवा वपरायेल जणाय तो तेमां खर-चुपाणी करवां. [९२९]

साधु अथवा साध्वीए, जे जग्या तेमना माटे ज करेली होय या करावेली होय, या भाडे राखेली होय, या छजावेली होय, या समरावेली होय, या लींपा-वेली होय, या टेकरी भांगी सरखी करावेली होय, या धुप आपीने सुगंधित क-रेली होय तेवी जग्यामां खरचुपाणी करवां नहि. [९३०]

साधु अथवा साध्वीने जे जग्या एवी जणाय के आ जग्यामां गृहस्थो के गृहस्थोना पुत्रो कंद मूळ बीज के लीलोतरी अंदरथी बाहेर लावे छे या बाहेर.. अंदर लावे छे, तेवी जग्यामां तेमणे खरचुपाणी करवां नहि. (९३१)

से भिक्खू वा (२) से ज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—खंधंसि वा पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि वा, पासायंसि वा,—अण्णयरंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणे वोसिरेज्जा। (१३२)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा अणंतरहियाए पुढवीए, ससणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियामक्कडाए, चित्तमंताए, सिलाए चितमंताए, लेलुए चित्तमंताए, कोलावासंसि[1] वा दारुयंसि वा, जीवपइट्ठियंसि वा, जाव मक्कडासंताणयंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (१३३)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्ता वा, कंदाणि वा जाव बीयाणि वा परिसाडेंसु वा परिसाडेंति वा परिसाडिस्संति वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणे वोसिरेज्जा। (१३४)

---

१ घुणवासे.

साधु अथवा साध्वीए थांभला, बाजोठ, मांचा, माळ, अगासी, प्रासाद के तेवी जातनी जग्याओपर खरचुपाणी करवां नहि. [१३२]

साधु अथवा आर्याए सचित्तमाटीवाळी जमीनमां, लीलीमाटीवाळी जमीनमा काची माटीवाळी जमीनमां, सचित्तशिलामां, सचित्तपत्थरमां, कीडावाळा लाकडापर अथवा एवी जातना जीव जंतुसहित स्थळमां खरचुपाणी नहि करवां. [१३३]

साधु अथवा साध्वीए जे जग्यामां गृहस्थ के गृहस्थपुत्रोए कंद, मूळ, के बीज भर्यां हतां या भरे छे या भरशे तेवी जातना स्थळमां खरचुपाणी नहि जवुं. [१३४]

से भिक्खू वा (२) सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—इहखलु गाहावइ गाहाहावइपुत्ता वा, सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, कुलत्थाणि, जवाणि वा, जवजवाणि वा, पतिरिंसु[1] वा पतिरिंति[2] वा पतिरिस्संति[3] वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (९३५)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—आमोयाणि[4] वा घसाणि[5] वा, भिलुयाणि[6] वा, विज्जुलाणि[7] वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि वा,[8] पगडाणि[9] वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि[10] वा, समाणि वा विसमाणि वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। [९३६]

---

१ उप्तवंतः २ वपंति ३ वप्स्यंति. ४ आमोकानि कचवरपुंजाः ५ घसा बृहत्योभूमिराजयः ६ श्लक्ष्णाभूमिराजयः ७ पिच्छलानि ८ इक्षुयोतिकादिदंडकः ९ प्रगर्त्ता महागर्त्ता १० कुड्यप्राकारादीनि.

साधु अथवा साध्वीए जे स्थळमां गृहस्थ या गृहस्थपुत्रोए भात, जव, मग, अडद, कुलत्थी[1], जव, तथा जवजव वाव्या होय वावता होय के वाववाना होय तेवा स्थळे खरचुपाणी नहि करवां. [९३५]

साधु अथवा साध्वीए, कचराना ढगलामां, बहु फाटेली जमीनमां, थोडी फाटेली जमीनमां, कादवमां, ज्यां थांभलाओ होय त्यां, ज्यां सेलडी के जारना सांठा पड्या होय त्यां गर्त्ताओमां,[2] गुफाओमां, अथवा कोटकिल्लामां तेओ सपाट या खरबचडा छतां त्यां खरचुपाणी नहि करवां. [९३६]

---

१ कळथी कठोळनी जात २ खाडावाळी जगाओ.

पंकायपणेसु वा उग्घाययणेसु वा सेयणवहांमि वा—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (९४३)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु गवाइणीसु वा, खणीसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (९४४)

से भिक्खू वा सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जाः—डागवच्चांसि[1] वा, सागवच्चांसि वा, मूलगवच्चांसि वा, हत्थंकरवच्चंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। (९४५)

से भिक्खू वा [२] सेज्जंपुण थंडिलं जाणेज्जा—असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायईवणंसि वा, केयईवणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि वा, पुण्णागवणंसि वा, चुण्णगवणंसि वा, अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा, णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा। [९४६]

१ डालप्रधानशाकं तद्वति.

वंशपरंपराथी चालता आवेला पूजनीय स्थळोमां, के पाणी सींचवानी नीक विगेरे स्थळोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४७]

साधु अथवा साध्वीए माटीनी नवी खाणोमां, गायोने चरवाना नवा गौचर स्थळोमां, के खाणोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४४]

साधु अथवा साध्वीए दाळवाळा स्थळोमां, शाकवाळा स्थळोमां, के मूळादि कंदवाळा स्थळोमां खरचु पाणी नहि करवां [९४५]

साधु अथवा साध्वीए बीयांना वनमां, सणना वनमां, धावडाना वनमां, केतकीना वनमां, आंबाना वनमां, अशोकना वनमां, नागना वनमां, पुन्नागना वनमां, चूर्णकना वनमां, अथवा एवी जातना बीजां पत्र पुष्प फळ बीज तथा लीलोतरी सहित स्थळामां खरचु पाणी नहि करवां [९४६]

से भिक्खू वा (२) सयपाययं वा परपाययं वा गहाय सेत्तमायाए एगंत मवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोइयंसि अप्पपाणंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा उवस्सयंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा; वोसिरित्ता सेत्तमादाय एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा ज्झामथंडिलंसि वा अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि ततो संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा। (९४७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जएज्जासि त्ति बेमि। (९४८)

उच्चारपासवणसत्तिक्कयं समत्तं तइयं

साधु अथवा साध्वीए पोतानुं अथवा बीजानुं पात्र लइ एकांत स्थळमां ज्यां कोइ आवे नहि तथा ज्यां कोइ देखे नहि तेवा निर्जीव स्थळमां खरचुपाणी करवां—करीने ते पात्र लइ आराम के बळेला स्थळमां अथवा एवी जातना अन्य अचित्त स्थळमां यतना पूर्वक परठववा. [९४७]

आ बधुं साधु अथवा साध्वीना आचारनुं संपूर्णपणुं छे के तेमणे सर्व बाबतोमां सावधानपणाथी वर्त्तवुं. [९४८]

शब्दनामकं विंशतितम मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मुइंगसद्दाणि वा, नंदीमुइंग सद्दाणि वा, ज्झल्लरिसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि विततांइं सद्दाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए । (९४९)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, वीणा सद्दाणि वा, विपंचिसद्दाणि वा, वच्चीसगसद्दाणि वा, तुणयसद्दाणि वा, पणयसद्दाणि वा, तुंबवीणियसद्दाणि वा, दुकुलसद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाणि सद्दाणि तताइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसं-

अध्ययन वीशमुं.

शब्द.

पहेलो उद्देश.

(मुनिए शब्दमां मोहित न थवुं.)

साधु अथवा साध्वीए मृदंग, नांदीमृदंग, तथा झालर विगेरेना वितत[1] शब्दो सांभळवा जवुं नहि. [९४९]

साधु अथवा साध्वीए वीणा, विपंची, वद्धींशक, तुनक, पणव, तुंबवीणा,

[1] आ कलमथी ९५२ सुधीमां चार जातनां वाजींत्रो गणावेला छे. वितत-विशेष विस्तारना अवाजवाळां

धारेज्जा गमणाए। (९५०)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, तालसद्दाणि वा, कंसतालसद्दाणि वा, लत्तिय[1] सद्दाणि वा, गोहिय[2] सद्दाणि वा, किरिकिरिय[3] सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं तालसदाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। [९५१]

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, संखसद्दाणि वा, वेणुसद्दाणि वा, वंससद्दाणि वा, खरमुहीसद्दाणि वा, पिरिपिरियसद्दाणिं वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं झुसिराइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। [९५२]

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, जाव सराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरस्सरपंति-

१ लत्तिका कंशिका. २ गोहिका भांडानांकक्षा. ३ किरिकिरिया वंशादिकंबिका.

दुकुल विगेरेना तत[1] शब्दो सांभळवा जवुं नहि. [९५०]

साधु अथवा साध्वीए ताल, कंसताल, कंशिका, किरिकिरिका विगेरेना ताल,[2] शब्दो सांभळवा जवुं नहि. [९५१]

साधु अथवा साध्वीए शंख, वेणु, वंश, खरमुखी, पिरपिरिका विगेरेना शुषिर[3] शब्दो सांभळवा जवुं नहि. [९५२]

साधु अथवा साध्वीए, खेतरोना क्यारडा, खाइ, तळाव, विगेरे स्थळोमां

१ सामान्य विस्तारना अवाजवाळां २ ताल पडता अवाजवाळा. ३ पोकळ अवाजवाळां

याणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। (९५३)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। (९५४)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणिओ वा, आसमपट्टणसंणिवेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। [९५५]

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं णो अभिसं–

थता शब्दो सांभळवा त्यां नहि जवुं.[१] [९५३]

साधु अथवा साध्वीए, जळबहुल प्रदेश, वनस्पतिनी घटा, घीच झाडी, वन, वनदुर्ग, पर्वत, पर्वतदुर्ग इत्यादि स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा त्यां नहि जवुं. [९५४]

साधु अथवा साध्वीए गाम, नगर, निगम, राजधानी, आश्रम, पाटण, के सन्निवेश विगेरे स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९५५]

साधु अथवा साध्वीए, आराम, उद्यान, वन, वनखंड, देवळ, सभा, पा,

१ (मूळ पक्षमां एम छे के क्यारडा, खाइ, तळाव, विगेरे शब्दो सांभळवा नहि जवुं. एम अगाउ पण जाणवुं)

धारेज्जा गमणाए। (९५६)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। (९५७)

से भिक्खू वा (२) अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं णो अभिसंधारेज्जा गमणाए। (९५८)

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, महिसट्ठाणकरणाणि वा, वसभट्ठाणकरणाणि वा, अस्सट्ठाणकरणाणि वा, हत्थिट्ठाणकरणाणि वा, जाव, कविंजलट्ठाणकरणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं सद्दाइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९५९)

नीयशाळा,[1] विगेरे स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९५६]

साधु अथवा साध्वीए, अगासी, भमती,[2] दरवाजा, के गोपुर[3] विगेरे स्थळोमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं [९५७]

साधु अथवा साध्वीए, त्रिक (त्रिखुण), चोक, चोवाटुं, के चोमुख विगेरे स्थळे थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९५८]

साधु अथवा साध्वीए, महिषस्थान, वृषभस्थान, अश्वशाळा, हाथीस्थान, तथा कपिंजळ विगेरे पक्षीओना स्थानमां थता शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९५९]

१ पाणीनां परब मुळमां पवाणि वा शब्द छे तेनुं संस्कृत प्रपा थाय छे तेपरथी पानीयशाळा अर्थ कर्यो छे (Wells Jacobi) २ फरती चालीओ pathways ३ शहेरना दरवाजा towngates.

से भिक्खू वा [२] अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा, महिसजुद्धाणि वा, वसभजुद्धाणि वा, अस्सजुद्धाणि, वा, हत्थिजुद्धाणि वा, जाव कविंजलजुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं, णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। [९६०]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणे ति तंजहा,-पुव्वट्ठाणाणि वा,[1] हयजूहियट्ठाणाणि वा, गयजूहियट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। [९६१]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव सुणेति, तंजहा,—अक्खाइयट्ठाणाणि वा[2], माणुम्माणियट्ठाणाणि वा, महयाहयणट्ट गीय—वाइय—तंति—तल—ताल—तुडिय—पडुप्प वाइयट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। [९६२]

---

१ पूर्वमिति द्वंद्वं वधूवरादिकं तत्स्थानं वेदिकादि तत्र श्राव्यगेयादिशब्दश्रवणप्रतिज्ञया न गच्छेत्। २ आख्यायिकास्थानानि वा।

साधु अथवा साध्वीए पाडा, बळद, घोडा, हाथी, के कपिंजल पक्षि विगेरेना युद्ध थता सांभळी त्यां सांभळवा नहि जवुं. [९६०]

साधु अथवा साध्वीए वर कन्यानी चोरीना स्थाने, अथवा हाथी के घोडाओ ज्यां रहेता होय ते स्थाने शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६१]

साधु अथवा साध्वीए, वार्त्ताओ थती होय तेवा स्थळे, तोल माप थता होय तेवा स्थळे, तथा ज्यां मोटां नाच गीत के वीणा—ताल मृदंगादिकना वादित्र थता होय ते स्थाने शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६२]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव सुणेति, तंजहा,—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९६३)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जाव सद्दाइं सुणेति खुड्डियं दारियं परिभुयं[1] मंडियालंकिय—निवुसमाणियं[2] पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाण पेहाए अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९६४)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं[3] एवं जाणेज्जा, तंजहा, बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहु पच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९६५)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा, इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झि-

१ परिवृतां. २ नीयमानां अश्वादिना. ३ महाश्रवस्थानानि

स्थणे अथवा ज्यां बे राज्य के विरुद्ध राज्य होय तेवा स्थळे शब्दो सांभळवा नहि जवुं. [९६३]

साधु अथवा साध्वीए सारी रीते शणगारेल नानी छोकरीने घणा जणोए वींटायली अने घोडापर चडावीने लइ जवाती जोइ, अथवा कोइ पुरुषने वध करवा लइ जवातो जोइ त्यां सांभळवा नहि जवुं. [९६४]

साधु अथवा साध्वीए अनेक प्रकारना महा आश्रवना स्थान, जेओमां घणां गाडां, घणा रथ, घणा म्लेच्छ, के घणा आजुबाजुना लोक एकठां थयां होय तेवा स्थानोमां कानथी शब्द सांभळवाने नहि जवुं. [९६५]

साधु अथवा साध्वीए अनेक प्रकारना महोत्सवो के जेमां स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बाळ, तथा जुवानो शणगार सजी गाता होय, वजावता होय, नाचता होय,

माणि वा, आभरणविभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विपुलं असणपाणखाइमसाइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डयमाणाणि वा, विग्गोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोयपडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९६६)

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो परलोइएहिं[1] सद्देहिं, णो सुतेहिं सद्देहिं, णो असुतेहिं सद्देहिं, णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहिं, णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा। (९६७)

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं जाव जएज्जासि त्ति बेमि। (९६८)

सद्दसत्तिक्कयं चउत्थं.

१ पारापतादिकृतैः

हसता होय, रमता होय, मोह पामता होय, तथा घणुं अशनपान खादिमस्वादिमरुप आहार जमता होय, अरसपरस देता लेता होय, छांडता होय, के साचवी राखता होय तेवा महोत्सवोना स्थळे शब्द सांभळवा नहि जवुं. (९६६)

साधु अथवा साध्वीए स्वजातिना शब्दोवडे अथवा विजातीयना शब्दोवडे, सांभळेला शब्दोवडे अथवा वगर सांभळेला शब्दोवडे, तेमज दीठेला शब्दोवडे अथवा अणदीठेला शब्दोवडे, आसक्त, रक्त, गृद्ध मोहित, के तन्मय न थवुं. (९६७)

एज ते साधु अथवा साध्वीनो परिपूर्ण आचार छे के तमणे बधी बाबतोमां सदा यत्नवंत रहेवुं. (९६८)

रुपाख्य मेकविंशतितम मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा (२) अहावेगयाइं रूवाई पासइ, तंजहा, गंथिमाणि[1] वा, वेढिमाणि[2] वा, पूरिमाणि[3] वा, संघाइमाणि[4] वा, कट्ठकम्माणि वा[5], पोत्थकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, दंतकम्माणि वा, मालकम्माणि वा, पत्तच्छेज्जाकम्माणि वा, विविधाणि वा वेढिमाइं, अण्णयराइं तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं चक्खुदंसणपडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए। (९६९)

१ ग्रथितपुष्पादिनिर्मितस्वस्तिकादीनि २ वस्त्रादिनिर्वर्त्तितपुत्तालिकादीनि. ३ यान्यंतः पुरुषाद्याकृतीनि. ४ चोलकादीनि ५ रथादीनि.

अध्ययन एकवीसमुं.

रुप

पहेलो उद्देश.

(रुप जोइ मोहित न थवुं.)

साधु अथवा साध्वीए फूलथी रचेल स्वास्तिकादिक,[1] वस्त्रवडे रचेल पुतळीओ, पुतळांओ, कपडांओ, लाकडकाम, पुस्तको, चित्रकाम, मणिकाम, दांतकाम, माळाओ, कोतरकाम, विगेरे अनेक कगवना कामो आंखथी जोवाना इरादे नहि जवुं. [९६९]

१ साथीआना आकारमां गुंथेला फूलोना गोटा–तोरा.

एवं होयव्वं जहासद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडियावि। [१७०]

[रूवसत्तिक्कयं पंचमं]

ए प्रमाणे शब्दाध्ययननी माफकज रुपाध्ययननी विना जाणी लेवी. [१७०]

पराक्रियाख्यं द्वाविंश मध्ययनम्

[एकोद्देशं]

परकिरियं अज्झत्थिअं[1] संसेसियं[2] णो तं सातिए,[3] णो तं नियमे[4]। (९७१)

से[5] से[6] परो पाए आमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पायाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं

१ आध्यात्मिकीं आत्मनि क्रियमाणां २ संश्लैषिकीं ३ स्वादयेत् अभिलषेत् ४ नियमयेत्—कारयेत् वाचा कायेनच. ५ तस्य ६ स परः

अध्ययन बावीशमुं.

परक्रिया.

पहेलो उद्देश

बीजानी क्रियामां मुनीए केम वर्त्तवुं.

मुनिना शरीरने कोइ गृहस्थ कर्मबंधजनक क्रिया करे तो ते मुनिए इच्छवुं नहि अने नियमवुं[1] पण नहि. [९७१]

[दाखला तरीके] कोइ ग्रहस्थ[2] मुनिना पग साफ करे चांपे, दाबे, अडके, रंगे, तेल, घी, के चरबीथी मसळे के चोपडे, लोदर क्षार लोट के भूकावडे

१ इहां टीकाकार तथा बाळावबोधकर्त्ता " नियमवुं " ए पदनो अर्थ एवो करे छे के इच्छवुं नहि ते मनवडे चहावुं नहि अने नियमवुं नहि ते वचन तथा कायावडे करावવું नहि. परंतु इंग्रेजी भाषांतर कर्त्ता एम अर्थ करे छे के इच्छवुं नहि अने " नियमवुं " एटले अटकाववुं पण नहि, check २ धर्मश्रद्धाथी [टीका].

नियमे। से से परो पादाइं फुसेज्ज वा, रएज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाइं लोद्देण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वन्नेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उवलिवेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाइं, सीतोदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाइं अण्णयरेण विलेवणजातेण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो पादाइं अण्णयरेण धूवजाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाओ खाणुं वा कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो पादाओ पूयं वा सोणियं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। (९७२)

से से परो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो कायं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो

ऊंवरे[1] के लींपे,[2] ठंडा के गरम पाणीथी छांटे के धुवे, गमे ते जातना विलेपनवडे लींपे, गमे ते जातना धूपथी धूपित करे, अथवा पगमांथी खीली के कांटो कहाडी चोखुं करे अथवा परु के लोही कहाडी चोखुं करे तो तेने इच्छवुं पण नहि अने नियमवुं पण नहि. [९७२]

एज रीते मुनिना शरीर, शरीरमां रहेला व्रण (चाठां), गड गूमडां, अर्श,

१ घसे rubs २ लेपकरे shampoos.

कायं लोद्देण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। सें से परो कायं सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पहोएज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो कायं अण्णयरेणं विलेवणजातेणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायं अण्णयरेणं धूवणजातेण धूवेज्ज वा, पधूव्वेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। (९७३)

से से परो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायंसि वणं तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलंगेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायंसि वणं लोद्देण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोडेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। से से परो कायंसि वणं सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थजातेणं अच्छिदेज्ज वा विच्छिदेज्ज वा णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो अण्णयरेणं सत्थजातेणं अच्छिदित्ता, पूयं वा सोणियं वा, णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे। (९७४)

से से परो कायंसि गंडं वा, अरतियं वा, पुलयं वा, भगंदलं वा, आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए, णो तं नियमे। से से परो का-

वाळां तथा भगंदर विषे पण प्रत्येक बाबतमां समजी लेवुं. (९७३–९७४–९७५)

यंसि गंडं वा, अरतियं वा, पुलयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगंदलं वा तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगंदलं वा लोद्देण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोडेज्ज वा उव्वलेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगंदलं वा, सीतोदगवियडेण वा उसिणोदगावियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोवेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । से से परो कायंसि गंडं वा जाव भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थजाएणं अच्छिदेज्ज विच्छिदेज्ज वा, से से परो अण्णयरेण सत्थजाएणं अच्छिदित्ता वा पूयं वा सेणियं वा णीहरेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे (९७५)

से से परो कायाओ सेयं वा जल्लं वा णीहरेज्ज वा विसोधेज्ज वा, णो तं सातिए णो तं नियमे । (९७६)

से से परो अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, णहमलं वा, णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा णो तं सातिए ० (९७७)

से से परो दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं दीहाइं वत्थिरोमाइं, कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा, णो तं सातिए ० [९७८]

वळी कोइ गृहस्थ मुनिना शरीरनो मळ उतारे के तेने साफ करे के आंखमळ१ कर्णमळ अथवा नखमळ उतारे के साफ करे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि. (९७६–९७७)

वळी कोइ मुनिना वाळ, रोम, भवां, कांखना रोम, तथा गुह्य प्रदेशना रोम लांबां देखी कापे के सुधारे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि. [९७८]

---

१ आंखना चीपडा विगेरे

से से परो सीसाओ लिक्खं वा जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो तं सातिए ० [९७९]

से से परो अंकंसि पलियंकंसि वा तुयट्टावेज्जा, पादाइं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा—एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो । से से परो अंकंसि वा पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा, आविंधेज्ज वा, पिणिंधेज्ज वा णो तं सातिए ० [९८०]

से से परो आरामंसि वा उज्जाणंसि वा णीहरित्ता वा विसोहित्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, णो तं सातिए ० [९८१]

एवं णेतव्वा अण्णमण्णकिरियावि । [९८२]

से से परो सुद्धेणं वतिबलेणं[1] तेइच्छं[2] आउट्टे, से से परो असुद्धेणं वतिबलेणं तेइच्छं आउट्टे, से से परो गिलाणस्स सचित्ताइं कंदाणि

1 वाग्बलेन—मंत्रादिसामर्थ्येन 2 चिकित्सां.

वळी कोइ मुनिना माथामांथी लीख के जू काढे के शोधे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि. [९७९]

वळी कोइ मुनिने खोळामां के पलंग पर सुवाडी पग विगेरेनी पूर्वोक्त क्रिया करे अथवा हार, अर्धहार, उरस्थ[1] आभरण, ग्रैवाभरण[2], मुगट, प्रलंब [माळा] के सुवर्ण सूत्र (सोनानो दोरो) पहेरावे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि [९८०]

एज रीते कोइ मुनिने आराम के उद्यानमां लइ जइ पग विगेरेनी पूर्वोक्त क्रिया करे तो त्यां पण तेमज समजवुं. [९८१]

आज रीते अन्योन्य क्रिया (मुनिओमां एकबीजा तरफथी करेली क्रिया) बाबत पण समजी लेवुं. [९८२]

कोइ गृहस्थ शुद्ध के अशुद्ध वचनबळ (मंत्र) थी, अथवा कंद, मुळ, छाल,

1 छातीए लटकतां 2 गळामां पहेरवानां आभरण.

वा मूलाणि वा तयाणि वा हरियाणि वा, खणेण वा कट्टेण वा कट्टावेण वा, तेइच्छं आउट्टेज्जा, णो तं सातिए । [९८३]

कट्टु वेयणा,[१] पाणभूतजीवसत्ता वेयणं वेदेंति । (९८४]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठे-हिं सहिते समिते सदाजए, सेय मिणं मण्णेज्जासि त्ति बेमि. [९८५]

(परकिरियासत्तिक्कयं समत्तं छट्ठं)

---

१ कृत्वा वेदनाः (परेषां.)

के लीलोतरी कहाडी के कढावी लावी मांदा मुनिनी चिकित्सा करे तो ते पण इच्छवुं के नियमवुं नहि. [९८३]

कारण के दरेक प्राण–भूत–जीव–सत्व [पूर्वे] बीजाने उपजावेल वेदनो हमणा पोते भोगवे छे. (एम विचारवुं) [९८४]

एज खरेखर साधु तथा साध्वीना आचारनी सपूर्णता छे के तेमणे सर्व बावतोमां यत्नवंत रहेवुं, अने एज श्रेय मानवुं, एम हुं कहुं छुं. [९८५]

अन्योन्यक्रियाख्यं त्रयोविंशातितम मध्ययनम्.

[एकोद्देशं]

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णमण्णकिरियं अब्भत्थियं[1] संसेइयं[2], नो तं सातिए, नो तं नियमे। (९८६)

से से अण्णमण्णो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा णो तं सातिए, णो तं नियमे। [९८७]

सेसं तं चेव. [९८८]

एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं। [९८९]

(अन्नुन्नकिरियासत्तिक्कयं समत्तं सत्तमं)

आध्यात्मिकीं २ सांश्लेषिकीं.

अध्ययम त्रेवीशमु

अन्योन्य क्रिया

उदेश पहेलो.

(मुनिओए अरसपरस थती क्रियामां केम वर्त्तवुं?)

साधु अथवा साध्वीए पोतामां कराती अन्योन्य कर्मबंधजनक क्रिया पेटे इच्छवुं के नियमवुं नहि. [९८६]

इहां पण परक्रियामां वर्णवेला पग विगेरेना दरेक आलापक लागु पाडवा [९८७–९८८]

ए सर्व मुनि तथा आर्याना आचारनी संपूर्णता छे के तेमणे सघी बाबतोमां यत्नवंत थइ वर्त्तवुं. [९८९]

तृतीया चूला.

भावनाख्यं चतुर्विंशातितम मध्ययनम्.

तेणं कालेण तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे [१] यावि होत्थाः–हत्थुत्तराहिं चुए–चइत्ता गब्भं वक्कंते; हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए; हत्थुत्तराहिं जाए; हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए; हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे। साइणा भगवं परिनिव्वुए। [९९०]

१ हस्त उत्तरो यासा मुत्तरफाल्गुनीनां ता हस्तोत्तराः ताश्च पंचसु स्थानेषु संवृत्ता यस्य स पंचहस्तोत्तरः

त्रीजी चूलिका

अध्ययन चोवीसमुं

भावना

(महावीर चरित्र तथा पांच महाव्रतोनी भावनाओ.)

ते काळे ते समये श्रमण भगवान् महावीरना संबंधे पांचवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र आव्युं; ते एम के उत्तराफाल्गुनीमां गर्भथी गर्भांतरमां संहराया, उत्तराफाल्गुनीमां जन्म्या, उत्तराफाल्गुनीमां सर्व (वस्तु) थी सर्वरीते (अलगा थइ) मुंडपणुं धरी घरवास छोडी अणगार थया, अने उत्तराफाल्गुनीमांज संपूर्ण प्रतिपूर्ण व्याघातरहित आवरणरहित अनंत उत्कृष्ट केवळज्ञानदर्शन पाम्या, मात्र भगवानुं निर्वाण स्वातिनक्षत्रमां थयुं. [९९०]

समणे भगवं महावीरे, इमाए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहुवीतिक्कंताए, पण्णत्तरीए वासेहिं, मासेहिय अद्धणवयसेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमें पक्खे आसाढसुद्धे—तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं, महाविजय—सिद्धत्थ—पुप्फुत्तर—पवरपुंडरीय—दिसासोवत्थिय—वद्धमाणाओ महाविमाणाओ, वीसं सागरोवमाइं आउयं पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं ठितिक्खएणं चुए; चइत्ता इहखलु जंबुदीवे दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे, दाहिण—माहणकुंडपुरसंणिवेसंसि, उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स, देवाणंदाए माहणीए जालंधरायणसगोत्ताए सीहब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिसि गब्भं वक्कंते। (१९१)

समणे भगवं महावीरे तिणाणोवगए यावि होत्था। चइस्सामित्ति जाणइ; चुए मित्ति जाणइ, चयमाणे ण जाणइ; सुहुमे णं से काले पण्णत्ते। (१९२)

श्रमण भगवान् महावीर आ अवसर्पिणीना सुषमसुषमा, सुषमा, अने सुषमदुःषमा, ए त्रण आरा व्यतीत थतां अने चोथा दुःषमसुषमाना पण मात्र पंचोतेर वर्ष अने साडानव मास बाकी रहेतां उनाळाना चोथा मासे आठमा पक्षे अषाढ सुदी ६ नी रात्रे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे पुष्पोत्तर महाविमान के जेने महाविजय, सिद्धार्थ, प्रवरपुंडरीक, तथा दिशास्वस्तिक पण कहे छे त्यांथी वीस सागरोपम आयु पूर्ण करी आयु, भव, तथा स्थितिनो क्षय थतां चवीने इहां जंबूद्वीपमां भरतक्षेत्रना दक्षिणार्धमां ब्राह्मणकुंडपुरस्थाने कोडालगोत्री ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या जालंधरायण गोत्रनी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे सिंहना बच्चानी माफक अवतर्या. [१९१]

श्रमण भगवान् महावीर आ वेळाए त्रण ज्ञान सहित हता. तेथी हुं चवीश एवुं जाणता; चव्यो छुं ए पण जाणता; पण चवती वेळा नहि जाणता. कारण ए वखतनो काळ घणो सूक्ष्म कहेल छे. [१९२]

तओणं समणे भगवं महावीरे अणुकंपंतेणं देवेणं "जीय मेयं" ति कट्टु, जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे आसोयबहुले, तस्सणं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, बासीतीहिं रातिंदिएहिं वीतिक्कंतेहिं तेसितिमस्स रातिंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिण–माहणकुंडपुरसंणिवेसाओ उत्तर–खत्तियकुंडपुरसंणिवेसंसि, णाया णं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोतस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठसगोत्ताए असुभाणं पोग्गलाणं अवहारं करेत्ता सुभाणं पोग्गलाणं पक्खेवं करेत्ता कुच्छिसि गब्भं साहरिए। जे विय तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे, तंपिय दाहिण–माहणकुंडपुरसंणिवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायणसगोत्ताए कुच्छिसि गब्भं साहरिए। [९९३]

समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्थाः–साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ; साहरिज्जमाणे वि जाणइ समणाउसो। [९९४]

त्यारबाद श्रमण भगवान महावीरने अनुकंपावान एटले भक्तिवाळा देवताए पोताना जीत एटले हमेशना आचारने अनुसरी वर्षाऋतुना त्रीजा मासे पांचमा पक्षे आसो वदि १३ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे ब्यासी दिन वीत्या केडे त्यासीमा दिने दक्षिण ब्राह्मणकुंडपुर स्थानथी उत्तरमां आवेला क्षत्रियकुंडपुरस्थानमां ज्ञातवंशी काश्यपगोत्रीय सिद्धार्थ क्षत्रियना घरे वाशिष्ठगोत्रवाळी त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखे अशुभ पुद्गलो अपहरी शुभ पुद्गलोनो प्रक्षेप करी गर्भमां दाखल कर्या (९९३)

आ वेळाए पण श्रमण भगवान महावीर त्रणज्ञानवंत होवाथी हे आयुष्मन् श्रमणो, गर्भांतरमां मारुं संहरण थशे, थयुं, तथा थाय छे, ए त्रणे काळ जाणता. (९९४)

तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी, अह अन्नया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं जोगोवगतेणं, समणं भगवं महावीरं आरोयारोयं पसूया। (९९५)

जंणं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं आरोयरोयं पसूया, तं णं राइं भवणवइ–वाणमंतर–जोइसिय–विमाणवासि–देवेहि य देवीहि य उवयंतेहिय उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देवसण्णिवाते देवकहकहे उप्पिंजलगभूतेयावि होत्था॥ (९९६)

जं णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं आरोयारोयं पसूया, तं णं रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, चुण्णवासं च, पुप्फवासं च, हिरण्णवासं च, रयणवासं च, वासिंसु। (९९७)

ते काळे ते समये त्रिशला क्षत्रियाणीए नवमास पूरा थया बाद साडा सात दिन वीते छते उनाळाना पेला मासे बीजे पक्षे चैत्र सूदि १३ ना दिने उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे श्रमण भगवान महावीरने क्षेमकुशले जन्म आप्यो. [९९५]

जे राते त्रिसला क्षत्रियाणीए भगवानने जन्म आप्यो ते राते भुवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषिक, तथा विमानवासि देवदेवीओना उतरवा तथा चपडवाथी एक महान दिव्य देवोनो उद्योत, देवोनो मेळावडो, देवोनी कथंकथा (वातचीत) तथा प्रकाश थइ रह्यो हतो. [९९६]

वळी ते राते घणा देवदेवीओए एक महोटी अमृतनी वृष्टी, गंधनी वृष्टी चूर्णनी वृष्टी, फूलनी वृष्टी, सोनारूपानी वृष्टी तथा रत्नोनी वृष्टी वर्षावी. [९९७]

जंणं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं आरोयारोयं पसूया, तंणं रयणिं भवणवइ—वाणमंतर—जोतिसिय-विमाणवासिणो देवाय देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोतुगभूतिकम्माइं तित्थयराभिसेयं च करिंसु। [१९८]

जतोणंपमिति भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भं आहुए, ततोणं पभिति तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संखसिलप्पवालेणं अतीव परिवड्ढइ। ततोणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणित्ता, णिव्वत्तदसाहंसि वोकंतंसि सुविभूतंसि विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेंति; विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता मित्तणातिसयणसंबंधिवग्गं उवणिमंतेंति; उवणिमंतेत्ता बहवे समणमाहणकिवणवणिमगाभिच्छंडगपंडगारंतीण विच्छड्डेंति विग्गोवेंति विस्साणेंति दातारेसु णं दायं पज्जाभाएंति; विच्छडित्ता विग्गोवित्ता विस्साणित्ता दायारेसु णं दायं पज्जाभाइत्ता मितणाइसयणसंबंधिवग्गं भुंज्जावेंति; मित्तणाइसयणसंबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्तणाइसयणसंबंधिवग्गेण इमेयारूवं णामधेज्जं करेंति; जओणं पभिइं इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे आहूए, ततोणं पभिइ

अने एज राते चारे जातना देवदेवीओए मळी भगवान महावीरनुं कौतुककर्म, भूतिकर्म, तथा तीर्थकराभिषेक कर्यो. [१९८]

ज्यारथी भगवान महावीर त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखे आव्या त्यारथी तेमनुं कुळ घणा सोनारुपा, धनधान्य, माणेक, मोती, तथा (उत्तम जातना) शंख पत्थर अने परवाळाथी बहु बहु वधवा मांडयुं तेथी भगवानना मावापे ए अर्थ जाणीने दश दिवस व्यतिक्रांत थतां चोखाइ अने पवित्रता थतां घणुं असनपान खादिमस्वादिमरुप आहार तैयार कराव्यो, मित्र, ज्ञाति, स्वजन तथा संबंधि वर्गने नोतरी घणा श्रमण ब्राह्मण कृपण भिखारी आंधळा पांगळा अने दर्दीओने आहार

इमं कुलं, विपुलेणं हिरण्णेणं, सुवण्णेणं, धण्णेणं, धणेणं, माणिक्केणं, मोत्तिए णं, संखसिलप्पवालेणं, अतीव अतीव परिवड्ढइ—तं होउणं कुमारे "वद्ध-माणे" । (९९९)

तओणं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे—तंजहा; खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेल्लावणधाईए, अंकधाईए—अंकाओ अंकं साहारिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले, गिरिकंदरसमल्लीणे व चंपयपायवे, अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ । (१०००)

तओणं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये विणियत्तबालभावे अप्पुस्सुयाइ, उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं परियारेमाणे ओमं वाति विहरति । (१००१)

आथी तेमज पोतानी न्यातमां वेंची करीने पछी (नोतरेला) मित्र ज्ञाति स्वजन संबंधिओने जमाडी करीने तेमनी रुबरुमां कुळनी थती वृद्धि जणावीने कुमारनुं "वर्द्धमान" एवुं नाम आप्युं. [९९९]

हवे श्रमण भगवान् महावीरना माटे पांच धात्री (दाइओ) राखवामां आवी, जेवी के दूध धवाडनार धात्री, स्नान करावनार धात्री, शणगार करावनार धात्री, खेलावनार धात्री, अने खोळामां संभाळनार धात्री. ए पांच धात्रीओ परिवर्या थका अने एकना खोळामांथी बीजाना खोळामां जता थका रम्य रत्नतळवाळा मकानमां रही गिरिगुफामां (पवनथी) बची रहेला चंपकवृक्षनी माफक अनुक्रमे वधवा लाग्या. [१०००]

त्यारबाद श्रमण भगवान् महावीरे विशेषज्ञान अने अनुभववाळा थइ बाल्यावस्था टळतां अनुत्सुकपणे उत्तम प्रकारना मनुष्य संबंधी शब्द—स्पर्श—रस—रूप—गंध ए पांच प्रकारना कामभोग भोगवतां थकां काळ व्यतिक्रम कर्यो. [१००१]

समणे भगवं महावीरे कासावगोत्ते; तस्सणं इमे तिण्णि णामधेउजा एव माहिज्जंति:–अमापिउसंतिए " वद्धमाणे; " सहसमुदिए " समणे; " भीमभयभेरवं उरालं अचेलयं परीसहं सहइ त्ति कट्टु देवेहिं से णामं कयं " समणे भगवं महावीरे " । [१००२]

समणस्स भगवओ महावीरस्स पिता कासवगोत्तेणं; तस्सणं तिण्णि णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा–सिद्धत्थेति वा, सेज्जंसेति वा, जसंसेति वा । [१००३]

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठसगोत्ता; तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—तिसला ति वा, विदेहदिण्णा ति वा, पियकारिणी ति वा । [१००४]

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए सुपासे कासवगोत्तेणं। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया णंदिवद्धणे कासवगोत्तेणं । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा भइणी सुदंसणा कासवगोत्तेणं।

भगवान् काश्यपगोत्रीय हता. तेमना आ त्रण नाम बोलाय छे मावापे वर्द्धमान एवुं नाम पाड्युं; सहजगुणोथी श्रमण नाम पड्युं, अने भयंकर महान् अचेल परीषह सहन करतां देवोए "श्रमण भगवान् महावीर" एवुं नाम कर्युं. (१००२)

भगवानना पिता काश्यप गोत्रीय; तेमना त्रण नाम छे:–सिद्धार्थ, श्रेयांस, यशस्वी. (१००३)

भगवाननी माता वाशिष्ट गोत्रनी; तेमना त्रण नाम छे:–त्रिशला, विदेहदिन्ना, प्रियकारिणी. (१००४)

भगवानना काका सुपार्श्व, मोटा भाइ नंदिवर्धन, मोटी बेहेन सुदर्शना, ए बधा काश्यपगोत्रीय हता. भगवाननी भार्या यशोदा कौंडिन्य गोत्रनी हती. भग.

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा जसोया गोत्तेण कोडिण्णा । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं; तीसे णं दो णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—अणोज्जा ति वा, पियदंसणा ति वा । समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं; तीसे णं दो णामधेज्जा एव माहिज्जंति, तंजहा—सेसवई ति वा, जसवती ति वा । [१००५]

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था; तेणं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालयित्ता छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता अहारिहं उत्तरगुणपायच्छित्तं पडिवज्जित्ता कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति; भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए सरीरसंलेहणाए सुसियसरीरा कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अ-

भगवान्नी पुत्री काश्यपगोत्रीनी तेना बे नाम छेः—अनवद्या, प्रियदर्शना. भगवान्नी दोहित्री कौशिक गोत्रनी तेना बे नामः—शेषवती, यशोमती. [१००५]

भगवान्ना मावाप पार्श्व संतानिय[१] श्रमणोनां उपासक हता. तेओ घणा वर्ष श्रमणोपासकपणुं पाळी छकायना जीवनी रक्षार्थे [पापनी] आलोचना [२] करी निंदी गर्ही पडिकमी यथायोग्य प्रायश्चित लइ दर्भसंस्तारक उपर बेशी भक्त प्रत्याख्यान[३] करी छेली मरणपर्यंतनी शरीर—संलेखना[४] वडे शरीर शोषी काळसमये काळ करी ते शरीर छोडी अच्युत कल्पमां[५] देवपणे उत्पन्न थयां. त्यांथी आयुक्षय थतां

१ पार्श्वनाथनी परंपराना २ याददगिरी ३ आहारनो त्याग रूप अणसण ४ शरीर—शोषणा. ५ बारमा देवलोकमां. (आवश्यक निर्युक्तिमां चोथा देवलोकमां गया एम कह्युं छे.)

च्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा; तओणं आउक्खएणं ठिइक्खएण चुए, चवित्ता महाविदेहे वासे चरिमेणं ऊसासेणं सिज्झिस्संति, बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिणिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति । [१००६]

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाये णायपुत्ते णायकुलणिव्वत्ते विदेहे[१] विदेहदिण्णे[२] विदेहजच्चे[३] विदेहसुमाले[४], तीसं वासाइं विदेहत्ति[५] कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिउहिं कालगएहिं देवलोग मणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे, चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धणधण्णकणयरयणसंतसारसावदेज्जं[६], विच्छड्डेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसुणं दायं पज्जाभातित्ता, संवच्छरं दाणं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवतेणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था । [१००७]

---

१ विशिष्टदेहः २ विदेहदिन्ना त्रिशल्या तस्या अपत्यं ३ विदेहजायाः जाता अर्चा शरीरं यस्य सः यद्वा विदेहः कंदर्पः यात्यो यस्य सः ४ विदेहे गृहवासे सुकुमालः ५ विदेहे गृहवासे ६ स्वापतेयं द्रव्यं.

चवीने महाविदेह क्षेत्रमां छेल्ले उसासे सिद्धबुद्ध मुक्त थइ निर्वाण पामी सर्व दुःखनुं अंत करशे. [१००६]

ते काले ते समये जगत्ख्यात, ज्ञात (सिद्धार्थ) पुत्र, ज्ञानवंशोत्पन्न, विशिष्टदेहधारी, विदेहा (त्रिशला) पुत्र ,कंदर्पजेता, गृहवासथी उदास एवा श्रमण भगवान् महावीरे त्रीश वर्ष घरवासमां वसी, मावाप कालगत थइ देवलोक पहोचतां पोतानी प्रतिज्ञा समाप्त थइ जाणी, सोनुं रुपुं, सेना वाहन, धन धान्य, कनकरत्न, तथा दरेक कीमती द्रव्य छोडी [दानार्थे] पाधरुं करी, दान दइ, सीआळाना पेला पक्षे मागसर वदि १० ना दिने उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रना योगे दीक्षा लेवानो अभिप्राय कर्यो. [१००७]

संवच्छरेण होहिंति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदाणं;
तो अत्थि संपदाणं, पव्वत्ती पुव्वसूराओ । १ (१००८)
एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा;
सूरोदयमादीयं, दिज्जइ जा पायरासोत्ति । २ (१००९)
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिंच होंति कोडीओ,
असियं च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं । ३ (१०१०)
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया
बोहिंति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्मभूमीसु. । ४ (१०११)
बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे
लोगंतिया विमाणा, अट्ठसुवत्था असंखेज्जा । ५ (१०१२)
एते देवणिकाया, भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं
सव्वजगज्जीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि । ६ (१०१३)

[दोहरा.]

वर्षांते लेनार छे, दीक्षा जिनवरराय
तेथी सूरज ऊगतां, दान प्रवृति कराय. १ (१००८)
प्रतिदिन सूर्योदय थकी, पहोर एक ज्यां थाय
एक क्रोडने आठ लाख, सोना म्होर अपाय. २ (१००९)
वर्ष एकमां त्रणशो, अने अठ्याशी क्रोड
एंशी लाख महोरनी, संख्या पूरी जोड. ३ (१०१०)
कुंडळधारी वैश्रमण, वळी लोकांतिक देव.
कर्मभूमि पंदर विषे, प्रतिबोधे जिनदेव. ४ (१०११)
ब्रह्म कल्प सुरलोकमां, कृष्णराजीना मांहि
असंख्यात लोकांतिको—तणा विमान कहाय. ५ (१०१२)
ए देवो जिन वीरने, समजावे ए वात
सर्व जगहित तीर्थ तुं, प्रवर्त्तावि साक्षात्. ६ (१०१३)

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवाय देवीओ य सएहिं सएहिं रूवेहिं, सएहिं सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए, सव्वजुत्तीए, सव्वबलसमुदएणं, सयाइं सयाइं जाण-विमाणाइं दुरुहंति; सयाइं सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडित्ता अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगइए अहेणं उवयमाणा उवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा वीतिक्कममाणा, जेणेव जंबूदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखतियकुंडपुरसंणिवेसे तेणेव उवागच्छिता जेणेव उत्तरखतियकुंडपुरसंणिवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तेणेव झत्ति वेगेण उवट्ठिया । [१०१४]

तओणं सक्के देविंदे देवराया सणियं सणियं जाणविमाणं ठवेति, सणिय सणियं विमाणं ठवेत्ता सणियं जाणविमाणाओ पच्चोतरति. सणियं सणीयं

ते पछी भगवान्नो निष्क्रमणाभिप्राय जाणीने चारे निकायना देवो पोत पोताना रुप, वेश, तथा चिन्हो धारण करी सघळी ऋद्धि, द्युति, तथा बळ साथे पोतपोताना विमानोपर चडी बादर पुद्गलो पल्टावी सूक्ष्म पुद्गलोमां परीणमावी ऊंचे ऊपडी अत्यंत शीघ्रता अने चपळतावाळी दिव्य देवगतिथी नीचे ऊतरता तिर्यक लोकमां असंख्याता द्वीपसमुद्र उल्लंघीने ज्यां जंबूद्वीप छे त्यां आवी क्षत्रियकुंड नगरना इशान कोणमां ऊतावळा आवी पहोंच्या. [१०१४]

त्यारबाद शक्र नामे देवना इंद्रे धीमे धीमे विमानने त्यां थापी, धीमे धीमे तेमांथी ऊतरी, एकांते जइ मोहोटो विक्रिय समुद्घात करी एक महान् मणि-

सणियं जाणविमाणाओ पच्चोतरित्ता एगंत मवक्कमेति, एगंत मवक्कमेत्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएण समोहणति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति; तस्सणं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं सीहासणं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति; तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ; समणं भगवं महावीरं तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति; वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए, तेणेव उवागच्छति; उवागच्छिता सणियं सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ; सणियं सणियं पुरत्थाभिमुहं णिसीयावेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति; अब्भंगेत्ता गंधकासाइ-

सुवर्ण-तथा रत्नजडीत, शुभ, मनोहर रूपवाळुं देवच्छंदक विकुर्व्युं (बनाव्युं) ते देवच्छंदकनी[१] वच्चोवच्च मध्यभागे एक तेजुंज रमणीय पादपीठिकासहित एक महान् सिंहासन विकुर्व्युं. पछी ज्यां भगवान हता त्यां आवीने भगवानने त्रणवार प्रदक्षिणा करी वांदी नमी भगवानने लइ ज्यां देवच्छंदक हतुं त्यां आवी धीमे धीमे पूर्वदिशासमे भगवानने सिंहासनमां बेसाडया. पछी शतपाक[२] अने सहस्रपाक[३] तेलोवडे मर्दन करी गंधकाषायिक[४] वस्त्रवडे लुंछीने पवित्र पाणीथी नवरावी लक्षमूल्यवाळुं थंडुं रक्तगोशीर्षचंदन घसी तैयार करी तेना वडे लेपन कर्युं. त्यार बाद निश्वासना लगारेकवायुथी चलायमान थनारां, वखणायला नगर के पाटणमां बनेलां, चतुरजनोमां वखणाएलां, घोडानी फीण जेवां मनहर, चतुर कारीगरोए सोनाथी खंचेला हंस समान स्वच्छ बे वस्त्रो पहेराव्यां. पछी हार, अर्धहार, उरस्थ, एका-

[१] क्रमानुसार घुमटवाळुं दिव्य आसनस्थान Divine pavillion. [२-३]-शो तथा हजार औषधीओना पाकथी थएल. [४] सुगंधवासित अने पीळारंगना.

इहिं उल्लोलेति; उल्लोलित्ता सुद्धोदएणं मज्जावेइ; मज्जावित्ता जस्स य मुल्लं सयसहस्सेहिं ति पडोलभितए पसाहिएणंण सीतएणं गोसीसरतचंदणेणं अणुलिंपति; अणुलिंपित्ता इसि णिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गतं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं हंसलक्खणं पट्टजुयलं णियंसावेइ; णियंसावेत्ता हारं अद्धहारं उरत्थं एगावलिं पालंब–सुतपट्ट–मउड–रयणमालाइ आविंधावेति; आविंधावेत्ता गंठिम–वेढिम–पूरिम–संघातिमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति; समालंकेत्ता दोच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ; समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइः–तंजहा, ईहामिय–उसभ–तुरग–णर–मकर–विहग–वाणर–कुंजर–रुरु–सरभ चमर–सद्दूल–सींह–वणलय–विचित्तविज्जाहरमिहुणजुगल–जंतजोग–जुतं अच्चीसहस्समालिणीयं सुणिरूवितमिसिमिसिंतरूवगसहस्सकलियं इसिंमिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं मुता-

चाळि, प्रालंब,[१] सूत्रपट्ट[२] मुकुट, तथा रत्नमाळादि आभरणो पहेराव्यां. पछी जूदी जूदी जातनी फूलनी माळाओथी पुष्पतरुना माफक सणगार्या. पछी इंद्रे पाछां बीजीवार वैक्रियसमुद्घात करी हजार जण उपाडी शके एवी एक महान् चंद्रप्रभा नामे शिबिका[३] विकुर्वी. ए शिविकानुं वर्णन आ प्रमाणे छेः–ए शिबिका इहामृग,[४] बळद, घोडा, नर, मगर, पक्षी, वानर, हाथी, रुरु,[५] सरभ, चमरीगाय, वाघ, सींह, वननी लताओ, तथा अनेक विद्याधरयुग्मना यंत्रयोगे करी युक्त हती तथा हजारो तेजराशिओथी भरपुर हती, रमणीय अने झगझगायमान हजारो चित्रागणाथी भरपुर अने देदीप्यमान अने आंखथी सामे जोइ न शकाय तेवी हती, अनेक मोतीओथी विराजित सुवर्णमय प्रतरवाळी हती, तथा झुलती मोतीओनी माळा, हार, अर्द्धहार, विगेरे भूषणोथी शोभती हती, अतिशय देखवा लायक हती, पत्र-

---

१ लंबायमान माळा २ कंदोरुं. ३ पालखी. ४ शाहामृग. ५ अष्टापद.

हडं मुतजालंतरोधियतवणियपयरलंबूणं पलंबंतमुतदामं हारद्धहारभूसणसमोणयं अहियपेच्छणिज्जं पउमकयभतिचित्तं णाणालयभतिविरइयं सुभं चारुकंतरुवं णाणामणिपंचवण्ण घंटापडायपरिमंडियग्गसिहरं पासादीयं दरिसणीयं सुरूवं। (१०१५)

सीया उवणीया जिण, वरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स
उवसंतमल्लदामा, जलथलयं दिव्वकुसुमेहिं १
सिवियाइ मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवतियं
सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स। २
आलइयमालमउडे, भासुरबोंदी वराभरणधारी
खोमयवत्थणियत्थो, जस्सय मोल्लं सयसहस्सं। ३

लता, अशोकलतो, विगेरे अनेक लताओथी चित्रित हती, शुभ तथा मनोहरआकारवाळी हती, अनेक प्रकारनी पंचवर्णी मणिओवाळी घंटा तथा पताकावडे शोभिता अग्रभागवाळी हती, तथा मनोहर, देखवालायक अने सुंदरआकारवाळी हति. [१०१५]

[आर्या छंद]

जरमरणमुक्त जिनवर-माटे शिविका तिहां भळी आवी;
जळथळज दिव्य पुप्पनी, माळाओ झूलती ठावी. १
शिविकाना वचगाळे, थाप्युं छे रत्नरुप झळहळतुं;
सिंहासन बहु कीमती, पदपीठसहित जिनवरनुं. २
माळा मुकुट विगेरे, उत्तम भूषण धरी प्रकाशित थइ;
लाख मूल्यना उत्तम क्षौमिक[१] वस्त्रो पेहेरी करी. ३

१ मसलीन-मलमलनां वस्त्रो.

छट्टेणउ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण जिणो
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहई उत्तमं सीयं । ४
सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणाय दोहि पासेहिं
वीयंति चामराहिं मणिरयणविचित्तदंडाहिं । ५
पुव्विं उक्खिता माणुस्सेहिं सा हट्ठरोमपुलएहिं
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरा गरुलणागिंदा । ६
पुरओ सुरावहंती, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे । ७
वणसंडं वहुकुसुमिय, पउमसरो वा जहा सरयकाले
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं । ८
सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपयवणं वा
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गगणतलं सुरगणेहिं । ९

बे उपवास करीने, पवित्र परिणाम साथ जिनदेव,
शुभ लेश्याए चडता, शिबिका उपर चडे देव. ४
सिंहासन पर बेसे, बे पडखे शक्रने इशान रहि
मणिरत्नदंडवाळा चामर ढोळे स्वहाथ ग्रही. ५
पेलां ते शिबिकाने, उपाडे माणसो सहर्ष थइ,
ते पछी सुर असुर गरुड, नाग उपाडे सुसज्ज रही. ६
पूर्व दिशाए देवो, दक्षिणमां असुर ऊंचके शिबिका
पश्चिम बाजू गरुडो, नाग रहे उत्तरे धरता. ७
गगन बिराजे देवथी, शोभे फूल्युं जेम वनखंड
अथवा शरद ऋतुमां, पद्माकार पद्म विकसंत. ८
गगन बीराजे देवथी, शोभे सरसवनुं जेम वनखंड
कणियर के चंपकनुं, वन शोभे पुष्प विकसंत. ९

वरपडह—भेरि—झल्लरि—संख—सयसहस्सिएहि तूरेहिं
गगणतले धरणितले, तुरियणिणाओ परमरम्मो । १०
ततवितयं घणसुसिरं आउज्जं चउविहं बहुविहीयं
वायंति तत्थ देवा बहुहिं आणट्टगसएहिं ११ [१०१६]

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे मग्गासिरबहुले, तस्सणं मग्गासिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराणक्खत्तेणं जोगोवगतेणं पाईणगामिणीए छायाए वियचाए पोरिसीए छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं एगसाडग मायाए चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए सदेवमणुयासुरापरिसाए समन्निज्जमाणे समन्निज्जमाणे उत्तरखत्तियकुंडपुरसंणिवेसस्स मज्झंमज्झेणं णिगच्छिता जेणेव णायसंडे उज्झाणे तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता ईसिरयणिप्पमाणं अच्छोप्पेणं भूमिभागेणं सणियं सणियं चंदप्पभं सिवियं

पडह भेरीने झालर शंखादिक लाख वाजियां वाजां
गगनतळ धरणितळमां, अवाज पसर्यो अति झाझा. १०
तत वितत घन शुषिर ए, चारे जातितणा बहु वाजां
नाटक साथे देवो, वजाडवा वळगिया झाझा ११ [१०१६]

ते काले ते समये शीयाळाना प्रथममासे प्रथमपक्षे मागसर वदि १०ना सुव्रतनामना दिने विजयमुहुर्ते उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनो योग आवतां पूर्वमां छाया वळतां छेल्लां पहोरमां पाणी वगरना बे अपवासे एक पोतनुं वस्त्र धारी सहस्रवासीनी चंद्रप्रभा नामनी शिबिका उपर चडी देव मनुष्य तथा असुरोनी पर्षदाओ साथे चालता चालता क्षत्रियकुंडपुर संनिवेशना मध्यमां थइने ज्यां ज्ञातखंड नामे उद्यान हतुं त्यां भगवान आव्या, आवीने धीमे धीमे भूमिथी एक हाथ ऊंची शिबि-

स हस्सवाहिणिं ठवेइ; ठवेता सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ; पच्चोयरित्ता सणियं सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयेइ; आभरणालंकारं उमुयइ; तओणं वेसमणे देवे जंतुवायपडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं आभरणालंकारं पडिच्छइ; तओणं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं, वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ; तओणं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जंतुवायपडिये वयरामयेणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ; पडिच्छित्ता "अणुजाणेसि भंते" त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ तओणं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं, वामेण वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाण णमोक्कारं करेइ; करेत्ता "सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं" ति कट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चारित्तं पडिवज्जेता देवपरिसं च मणुयपरिसं च आलेक्खचित्तभूय मिव ट्ठवेइ । [१०१७]

दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण
खिप्पामेव णिलुक्को जाहे पडिवज्जइ चारित्तं १

का स्वामी धीमे धीमे तेमांथी उतर्या. उतरीने धीमे धीमे पूर्वाभिमुख सिंहासन पर बेशी आभरण–अलंकार उतारवा लाग्या. त्यारे वैश्रवण देवे गोढोहासने रही सफेद वस्त्रमां भगवानना ते आभरणालंकार ग्रहण कर्या. पछी भगवाने जमणा हाथथी जमणा अने डाबा हाथथी डाबा केशनो पंचमुष्टिथी लोच कर्यो त्यारे शक्र देवेंद्रे गोदोहासने रही भगवानना ते वाळ हीराना थालमां ग्रहण करीने भगवानने जणावीने क्षीरसमुद्रमां पहोंचाड्या. ए प्रमाणे भगवाने लोच कर्या पछी सिद्धोने नमस्कार करी "मारे कंइ पण पाप नहि करवुं" एम ठराव करी सामायिकचारित्र स्वीकार्युं ए वेळा देवो तथा मनुष्योनी पर्षदाओ चित्रामणनी माफक (गडबड रहितपणे स्तब्ध) बनी रही [१०१७]

जिनवर चारित्र लेतां, इंद्र वचनथी ततक्षणे सघळा
देव मनुष्य अवाजो, तेमज वाजित्र बंध रह्या. १

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहितं
साहट्ठु लोमपुलया पयया देवा निसामेंति. २ [१०१८]

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने; अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं, दोहिय समुद्देहिं सण्णीणं पचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं मणोगयाइं भावाइं जाणेइ ; [१०१९]

तओणं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्तणाइसयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जित्ता तओणं इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ "बारसवासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा;–दिव्वा वा, माणुस्सा वा, तेरिच्छिया वा,–ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइस्सामि।" [१०२०]

जिनवर चारित्र लेतां, हमेश सौ प्राण भूत हित कर्त्ता;
हर्षित पुलकित थइने, सावध थइ देवता सुणता. २ [१०१८]

ए रीते भगवाने क्षायोपशमिक सामायिकचारित्र लीधापछी तेमने मनपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं; तेथी अढी द्वीप तथा बे समुद्रना पर्याप्त अने व्यक्तमनवाळा संज्ञि पंचेद्रियोना मनोगत भाव जाणवा लाग्या. [१०१९]

पछी प्रव्रजित थएला भगवाने मित्र, ज्ञाति, सगा, तथा संबंधिओने विसर्जित करी एवो अभिग्रह लीधो के "बार वर्ष लगी हुं कायानी सार संभाळ नहि करतां जे कंइ देव मनुष्य के तिर्यंचोतरफथी उपसर्गो थशे, ते बधा रुडी रीते सहीश, खमीश अने अहियासीश[१] [१०२०]

१ खमीश (suffer)

तओणं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिहित्ता वोसट्टकाए चत्तदेहे दिवसे मुहुत्तसेसे कुम्मारगामं समणुपत्ते । [१०२१]

तओणं समणे भगवं महावीरे वोसट्टचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, एवं संजमेण, पग्गहेणं, संवरेणं, तवेणं, बम्भचेरवासेणं खंतीए, मोत्तीए, तुट्ठीए, समितीए, गुत्तीए, ठाणेणं, कम्मेणं, सुचारियफलणेव्वाणसुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । [१०२२]

एवं वा विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुप्पज्जिसु–दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे, अणाइले, अव्वहिते, अदीणमाणसे तिविह मणवयणकायगुत्ते सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ । (१०२३)

तओणं समणस्स भगवओ महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वितिक्कंता; तेरसमस्स वासस्स परियाए वट्टमाणस्स, जे से

आवो अभिग्रह लइ शरीरनी ममताथी रहित थया थका एक मुहूर्त्त जेटलो दिवस होतां कुम्मार गामे आवी पहोच्यां. [१०२१]

पछी भगवान उत्कृष्ट आलय, उत्कृष्ट विहार, तेमज तेवाज संयम, नियम, संवर, तप. ब्रह्मचर्य, क्षांति, त्याग, संतोष, समिति, गुप्ति, स्थान, कर्म, तथा रुडा फळवाळा निर्वाण मार्गवडे पोताने भावता थका विचरवा लाग्या. [१०२२]

एम विचरतां जे कांइ देव मनुष्य तथा तिर्यंचोतरफथी उपसर्ग थया ते सर्वे भगवाने स्वच्छ भावमां रही अणपीडातां अदीनमन धरी मनवचनकायाए गुप्त रही सम्यक् रीते सह्या खम्या तथा अहियास्या. [१०२३]

आवी रीते विचरतां भगवानने बार वर्ष व्यतिक्रम्या. हवे तेरमा वर्षनी अंदर उनाळाना बीजा मासे बीजे पक्षे वैशाख सुदि १० ना सुव्रत नामना विजयमुहूर्ते उत्तराफाल्गुनीना योगे पूर्वदिशाए छाया वळतां छेल्ले पहोरे जंभिकगाम-

गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे—तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जंभियगामस्स णगरस्स वहिया, णदीए उज्जुवालियाए उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयवत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं उड्ढंजाणु—अहोसिरस्स ज्झाणकोट्ठोवगयस्स सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स निव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे। (१०२४)

से भयवं अरहा जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, तंजहा;—आगतिं, गतिं, ठितिं, चवणं, उववायं, भुत्तं, पीयं, कडं, पडिसेवियं, आवीकम्मं, रहोकम्मं, लवियं, कहियं, मणोमाणसियं, सव्वलोए सव्वजीवाणं, सव्वभावाइं

नगरनी बाहेर ऋजुवालिका नदीना उत्तर किनारे श्यामाक गाथापतिना कर्षण स्थळमां व्यावृत नामना चैत्यना इशानकोणमां शाळवृक्षनी पासे अर्थो उभा रही गोदोहिका आसने आतापना करतां थकां तथा पाणीवगरना बे उपवासे जंघाओ उंची राखी माथुं नीचे घाली ध्यानकोष्टमां रहेतां थकां शुक्लध्यानमां वर्त्ततां छेवटनुं संपूर्ण प्रतिपूर्ण अव्याहत निरावरण अनंत उत्कृष्ट केवळज्ञान तथा केवळदर्शन उपज्युं. [१०२४]

हवे भगवान अर्हन् जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी, थइ देव मनुष्य, तथा असुर प्रधान (आखा) लोकना पर्याय जाणवा लाग्या एटले तेनी आगति-गति, स्थिति-च्यवन, उपपात, खाधुंपीधुं, करेलुं करावेलुं, प्रगटकाम, छानांकाम, बोलेलुं, कहेलुं, एम आखा लोकमां सर्व जीवोना सर्वभाव जाणता देखता

जाणमाणे पासमाणे एवंवाए विहरइ । (१०२५)

जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णेव्वाणे कसिणे जाव समुप्पण्णे, तण्णं दिवसं भवणवइ–वाणमंतर–जोइसिय–विमाणवासि–देवेहि य देवीहि य उवयंतहि य जाव उप्पिंजलगभूएयावि होत्था । (१०२६)

तओणं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्म माइक्खति; तओ पच्छा मणुस्साणं (१०२७)

तओणं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं णिग्गंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ, भासइ, परूवेइ; तंजहाः- पुढविकाए जाव तसकाए । (१०२८)

पढमं भंते महव्वयं, पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं; से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, णेव सयं पाणाइवायं करेज्जा [३]

थका विचरवा लाग्या.. [१०२५]

जे दीने भगवानने केवलज्ञान दर्शन उपन्यां ते दिने भवनपत्यादि चारे जातना देवदेवीओ आवतां जतां आकाश देवमय तथा धोळुं थइ रह्युं. [१०२६]

ए रीते उपजेलां ज्ञानदर्शनने धरनार भगवाने पोताने तथा लोकने संपूर्णपणे जोइने पहेलां देवोने धर्म कही संभळाव्यो अने पछी मनुष्योने. [१०२७]

पछी उपजेला ज्ञानदर्शनना धरनार श्रमण भगवान महावीरे गौतमादिक श्रमण निर्ग्रंथोने भावना सहित पांच महाव्रत तथा पृथिवीकाय विगेरे छ जीवनीकाय कही जणाव्या. (१०२८)

(पांच पांच भावना सहित पांच महाव्रत)

पहेलु महाव्रतः–हे भगवान हुं सर्व प्राणातिपात त्याग करुं छुं:–ते ए रीते

जावज्जीवाए तिविहंतिविहेणं मणसा वयसा कायसा । तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि । (१०२९)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति:–(१०३०)

तत्थिमा पढमा भावणाः–इरियासमिए से णिग्गंथे, णो अणइरियासमिए त्ति; केवली बूया–अणइरियासमिते णिग्गंथे पाणाइं [४] अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए त्ति पढमा भावणा । (१०३१)

अहावरा दोच्चा भावणाः–मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे; जय मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे अधिकरणिए पाउसिए पारितावितै पाणातिवादिते भूतोवघातिए, तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा ।

के सुक्ष्म के बादर, त्रस के स्थावर जीवनो यावज्जीवपर्यंत मनवचनकायाए करी त्रिविधे पोते घात न करीश, बीजा पासे न करावीश अने करताने रुडुं न मानीश तथा ते जीवघातने पडिकमुं छुं, निंदुं छुं, गरहुं छुं अने तेवा स्वभावने वोसरावुं छुं. (१०२९)

तेनी आ पांच भावनाओ छेः–(१०३०)

त्यां पेली भावना ए के मुनिए इर्यासमिति सहित थइ वर्त्तवुं पण रहित थइ न वर्त्तवुं. कारण के केवळज्ञानी कहे छे के इर्यासमिति रहित होय ते मुनि प्राणादिकनो घात विगेरे करतो रहे छे. माटे निर्ग्रंथे इर्यासमितियी वर्त्तवुं ए पेली भावना. [१०३१]

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथ मुनिए मन ओळखवुं. एटले के जे मन पाप भरेलुं, सदोष, (भूंडी) क्रिया सहित, कर्म बंधकारि. छेद करनार भेद करनार, कलहकारक, मद्वेष भरेलुं, परितप्त, तथा जीव–भूतनुं उपघातक होय–तेवा मनने

मणं परिजाणाति से णिग्गंथे; जेय मणे अपावते ति दोच्चा भावणा। (१०३२)

अहावरा तच्चा भावणा:—वतिं परिजाणाति से णिग्गंथे; जाय वती पाविया सावज्जा सकिरिया जाव भूतोवघाइया तहप्पगारं वइं णो उच्चरिज्जा। वइं परिजाणाइ से णिग्गंथे; जाय वइ अपाविय त्ति तच्चा भावणा। (१०३३)

अहावरा चउत्था भावणा:—आयाणभंडणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो अणायाणभंडणिक्खेवणासमिए णिग्गंथे; केवली बूया—आयाणभंडणिक्खेवणाअसमिए णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज वा। आयाणभंडणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडणिक्खेवणाअसमिए त्ति चउत्था भावणा। (१०३४)

अहावरा पंचमा भावणा:—आलोइयपाणभोई से णिग्गंथे, णो

नहि धारवुं एम मन जाणीने पापरहित मन धारवुं ए बीजी भावना. (१०३२)

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे वचन ओलखवुं एटले के जे वचन पाप भरेलुं सदोष, (भूंडी) क्रियावाळुं, यावत् भूतोपघातक होय —तेवुं वचन नहि उच्चरवुं. एम वचन जाणीने पापरहित वचन उचरवुं. ए त्रीजी भावना. (१०३३)

चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे भंडोपकरण लेतां राखतां समिति सहित थइ वर्त्तवुं पण रहितपणे न वर्त्तवुं. केमके केवली कहे छे के आदानभांडनिक्षेपणासमिति—रहित निर्ग्रंथ प्राणादिकनो घात विगेरे करतो रहे छे. माटे निर्ग्रंथे समितिसहित थइ वर्त्तवुं ए चोथी भावना. [१०३४]

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे आहारपाणी जोइने वापरवा, वगर जोए न

अणालोइयपाणभोई; केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पाणाइं अभिहण्णेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज वा । तम्हा आलोइयपाणभोयण भोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाणभोई त्ति पंचमा भावणा । [१०३५]

एत्तावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिते अवट्ठिते आणाए आराहिए यावि भवति । [१०३६]

पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं । [१०३७]

अहावरं दोच्चं महव्वयं;—पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वातिदोसं से कोहावा, लोहावा, भयावा, हासावा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, नेवन्नेणं मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा, तीविहं तिविहेणं, मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते पडिक्कमामि जाव वोसिरामि । [१०३८]

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंतिः—[१०३९]

वापरवा. केमके केवळी कहेछे के वगर जोए आहारपाणी वापरनार निर्ग्रंथ प्राणादिकनो घात विगेरे करे. माटे निर्ग्रंथे आहारपाणी जोइने वापरवा, नहि के वगर जोइने, ए पांचमी भावना. [१०३५]

ए भावनाओथी महाव्रत रुडी रीते कायाए स्पर्शित, पालित, पार पमाडेलुं कीर्तित, अवस्थित अने आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. [१०३६]

ए पेहेलुं प्राणातिपात विरमण रुप महाव्रत छे. [१०३७]

बीजुं महाव्रतः—"हमेशुं मृषावादरुप वचनदोष त्याग करुं छुं एटले के क्रोध, लोभ, भय, के हास्यथी यावज्जीव पर्यंत त्रिविधे त्रिविधे एटले मनवचनकाए करीने मृषाभाषण करुं नहि कराउं नहि अने करताने अनुमोदुं नहि; तथा ते मृषाभाषणने निंदुछुं अने तेवा स्वभावने वोसराउंछुं." [१०३८]

तेनी आ पांच भावनाओ छेः—[१०३९]

तत्थिमा पढमा भावणाः–अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी; केवली बूया–अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा मोसं वयणाए। अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी त्ति पढमा भावणा। [१०४०]

अहावरा दोच्चा भावणा.–कोहं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया; केवली बूया कोहप्पत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए। कोहं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णय कोहणे सियत्ति दोच्चा भावणा। [१०४१]

अहावरा तच्चा भवणाः–लोभं परिजाणाइ से णिग्गंथे, णो य लोभणे सिया; केवली बूया–लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए। लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सियत्ति तच्चा भावणा। [१०४२]

त्यां पेली भावना आः–निर्ग्रंथे विमासीने[१] बोलवुं, वगरविचारेथी न बोलवुं केमके केवळी कहे छे के वगर विमासे बोलनार निर्ग्रंथ मृषा वचन बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे विमासीने बोलवुं, नहि के वगर विमासे. ए पेली भावना [१०४०]

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथे क्रोधनुं स्वरुप जाणी क्रोधी न थवुं. केमके केवळी कहे छे के क्रोध पामेल क्रोधी जीव मृषा बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे क्रोधनुं स्वरुप जाणी क्रोधी न थवुं. ए बीजी भावना. [१०४१]

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे लोभनुं स्वरुप जाणी लोभी न थवुं. केमके केवळी कहे छे के लोभी जीव मृषा बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे लोभी न थवुं ए त्रीजी भावना. [१०४२]

१ विचार पूर्वक (with deliberation)

अहावरा चउत्था भावणाः—भयं परिजाणइ से निग्गंथे, णो भय- भीरुए सिया; केवली बूया—भयपत्ते भीरू समावदेज्जा मोसं वयणाए। भयं परिजाणइ से निग्गंथे, णो भयभीरुए सिया; चउत्था भावणा [१०४३]

अहावरा पंचमा भावणाः—हासं परिजाणइ से निग्गंथे, णो य हासणए सिया; केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए। हासं परिजाणइ से निग्गंथे, णो य हासणिए सिय ति पंचमा भावणा। (१०४४)

एत्तावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए जाव आणाए आराहिते या वि भवति। दोच्चं भंते महव्वयं (१०४५)

अहावरं तच्चं महव्वयं:—पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं; से गामे वा णगरे वा अरण्णे वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चि-

चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे भयनुं स्वरूप जाणी भयभीरु न थवुं केमके केवली कहे छे के भीरु पुरुष मृषा बोली जाय. माटे भीरु न थवुं ए चोथी भावना. [१०४३]

पांचमी भावना ए के हास्यनुं स्वरूप जाणी निर्ग्रंथे हास्य करनार न थवुं केमके केवली कहे छे के हास्य करनार पुरुष मृषा बोली जाय. माटे निर्ग्रंथे हास्य करनार न थवुं ए पांचमी भावना. [१०४४]

ए भावनाओथी महाव्रत रुडी रीते स्पर्शाए करी रक्षित अने यावत् आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. ए बीजुं महाव्रत. [१०४५]

त्रीजुं महाव्रत:—"सर्व अदत्तादान तजुंछुं. पछी ते गाम नगर के अरण्यमां रहेलुं, थोडुं के घणुं, नानुं के मोटुं. सचित्त के अचित्त अणदीधेलुं (वस्तु) हुं

त्तमंतं वा अचित्तमंतं वा णेव सयं अदिण्णं गिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गिण्हंतं ण समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए, जाव वोसिरामि। (१०४६)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति:-(१०४७)

तत्थिमा पढमा भावणा अणुवीइ मिउग्गहजाती से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिउग्गहजाई से णिग्गंथे; केवली बूया-अणणुवीइमि उग्गहजाती से णिग्गंथे अदिण्णं गिण्हेज्जा। अणुवीइ मिउग्गहजाती से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमितोग्गहजाइ त्ति पढमा भावणा। (१०४८)

अहावरा दोच्चा भावणा:-अणुण्णवियपाणभोयणभोती से णिग्गंथे णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई; केवली बूया-अणणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा। तम्हा अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोती त्ति दोच्चा भावणा। (१०४९)

यावज्जीव त्रिविधे एटले मन-वचन-कायाए करी लउं नहि, लेवरावुं नहि, लेनारने अनुमत करुं नहि तथा अदत्तादानने पडिकमुंछुं यावत् तेवा स्वभावने वोसरावुंछुं." [१०४६]

तेनी आ पांच भावनाओ छे:- [१०४७]

त्यां पेहेली भावना आ के निर्ग्रंथे विचारीने परिमित अवग्रह मागवो, पण वगर विचारे अपरिमित अवग्रह न मागवो. केमके केवळी कहे छे के वगर विचारे अपरिमित अवग्रह मागनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे विचारीने परिमित अवग्रह मागवो. ए पेहेली भावना. [१०४८]

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथे रजा मेळवीने आहारपाणी वापरवां, पण रजा मेळव्या वगर न वापरवां. केमके केवळी कहे छे के वगर रजा मेळवे आहारपाणी वापरनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ पडे माटे रजा मेळवीने[१] आहारपाणी वापरवां ए बीजी भावना. [१०४९]

१ गुरु अगर वडेरानी.

अहावरा तच्चा भावणा:—णिग्गंथे णं उग्गहंसि उग्गहितंसि एत्तावताव उग्गहणसीलए सिया; केवली बूया—णिग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहितंसि एत्तावताव अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा। णिग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहितंसि एत्तावताव उग्गहणसीलए सिय त्ति तच्चा भावणा। (१०५०)

अहावरा चउत्था भावणा:—णिग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं [२] उग्गहणसीलए सिया; केवली बूया—णिग्गंथेणं उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं [२] अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा। णिग्गंथे उग्गहंसि उग्गहियंसि अभिक्खणं [२] उग्गहणसीलए सिय त्ति चउत्था भावणा। (१०५१)

अहावरा पंचमा भावणा:—अणुवीइमितोग्गहजाती से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिउग्गहजाती; केवली बूया—अणणुवीइमिग्गहजाती से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं उगिण्हेज्जा। अणुवीइमितोग्गहजाती-

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे अवग्रह मागतां प्रमाण सहित (काळक्षेत्रनी हद बांधी) अवग्रह लेवो. केमके केवळी कहे छे के प्रमाण विना अवग्रह लेनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय; माटे प्रमाण सहित अवग्रह लेवो. ए त्रीजी भावना [१०५०]

चोथी भावना ए के निर्ग्रंथे अवग्रह मागतां वारंवार हद बांधनार थवुं. केमके केवळी कहे छे के वारंवार हद नहि बांधनार पुरुष अदत्त लेनार थइ जाय. माटे वारंवार हद बांधनार थवुं. ए चोथी भावना. [१०५१]

पांचमी भावना ए के विचारीने पोताना साधर्मिक पासेथी पण परिमित अवग्रह मागवो. केमके केवळी कहेछे के तेम न करनार निर्ग्रंथ अदत्त लेनार थइ जाय. माटे साधर्मिक पासेथी पण विचारीने परिमित अवग्रह मागवो, नहि के वगर विचारे

ग्गहजाती से णिग्गंथ साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमितोग्गहजाती । पंचमा भावणा । (१०५२)

एत्तावताव महव्वए सम्मं जाव आणाए आराहिते आवि भवति, तच्चं भंते महव्वयं । (१०५३)

अहावरं चउत्थं महव्वयं;–पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं;–से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छे, तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि । (१०५४)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति:–(१०५५)

तत्थिमा पढमा भावणा:–णो णिग्गंथे अभिक्खणं [२] इत्थीणं कहं कहइत्तए सिया; केवली बूया–णिग्गंथे णं अभिक्खणं [२] इत्थीणं कहं कहमाणे संतिभेदा,[1] संतिविभंगा, संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ

१ शांतिभेदात्

अपरिमित, ए पांचमी भावना. [१०५२]

ए भावनाओथी महाव्रत रुडी रीते यावत् आज्ञा प्रमाणे आराधित थाय छे. ए त्रीजुं महाव्रत. [१०५३]

चोथुं महाव्रत:–"सर्व मैथुन तजुं छुं एटले के देव मनुष्य तथा तिर्यंचसंबंधी मैथुन हुं यावज्जीव त्रिविधे त्रिविधे करुं नहि." इत्यादि अदत्तादान माफक बोलवुं. [१०५४]

तेनी आ पांच भावनाओ छे:–(१०५५)

त्यां पेहेली भावना ए के निर्ग्रंथ वारंवार स्त्रीनी कथा कथा करवी नहि केमके केवळी कहे छे के वारंवार स्त्रीकथा करतां शांतीना भंग थवाथी निर्ग्रंथ शां-

भंसेज्जा। णो णिग्गंथे अभिक्खणं [२] इत्थीणं कहं कहए सिय त्ति पढमा भावणा। (१०५६)

अहावरा दोच्चा भावणाः—णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया; केवली बूया—णिग्गंथे णं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे संतिभेगा संतिविभंगा जाव धम्माओ भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय त्ति दोच्चा भावणा। (१०५७)

अहावरा तच्चा भावणाः—णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सुमरित्तए सिया; केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे संतिभेया जाव भंसेज्जा। णो णिग्गंथे पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सिय त्ति तच्चा भावणा। (१०५८)

तिथी तथा केवळिभाषित धर्मथी भ्रष्ट थाय. माटे निर्ग्रंथे वारंवार स्त्रीकथाकारक न थवुं ए पेली भावना. (१०५६)

बीजी भावना ए के निर्ग्रंथे स्त्रीओनी मनोहर इंद्रियो[१] जोवी चिंतववी नहि केमके केवळी कहे छे के तेम करतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय. माटे निर्ग्रंथे स्त्रीओनी मनोहर इंद्रियो जोवी तपासवी नहि ए बीजी भावना. (१०५७)

त्रीजी भावना ए के निर्ग्रंथे स्त्रीओ साथे पूर्वे रमेली रमतक्रीडाओ याद न करवी. केमके केवळी कहे छे के ते याद करतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय. माटे निर्ग्रंथे स्त्रीओ साथे रमेली रमतागमतो संभारवी नहि ए त्रीजी भावना (१०५८)

---

१ स्त्रीओनुं सुंदर रूप. (forms)

अहावरा चउत्था भावणाः—णातिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई; केवली बूया—अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोयणभोई य त्ति संतिभेदा जाव भंसेज्जा। णो तिमत्त-पाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोइ त्ति चउत्था भावणा। (१०५९)

अहावरा पंचमा भावणाः—णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविचए सिया; केवली बूया—णिग्गंथेणं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाण संतिभेया जाव भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेविचए सिय त्ति पंचमा भावणा। (१०६०)

एत्तावयाव महव्वए सम्मं काएण जाव आराहिते या विभावति चउत्थं भंते महव्वयं। (१०६१)

अहावरं पंचमं भंते महव्वयंः—सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि; से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा णेव रायं

चोथी भावना ए के निग्रंथे अधिकखानपान न वापरवुं, तथा झरता रस-वाळुं खानपान न वापरवुं. केमके केवळी कहे छे के अधिक तथा झरता रसवाळुं खानपान भोगवतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय. माटे अधिक आहार के झरता रसवाळो आहार निर्ग्रंथे न करवो ए चोथी भावना. [१०५९]

पांचमी भावना ए के निर्ग्रंथे स्त्री, पशु, तथा नपुंसकथी घेरायल शय्या तथा आसन न सेववां. केमके केवळी कहेछे के तेवा शय्या—आसन सेवतां शांति भंग थवाथी निर्ग्रंथ धर्मभ्रष्ट थाय. माटे निर्ग्रंथे स्त्री पशुपंडकथी घेरायल शय्या आसन न सेववां. ए पांचमी भावना. [१०६०]

ए रीते महाव्रत रुडी रीते कायाए करी स्पर्शित तथा यावत् आराधित थाय छे. ए चोथुं महाव्रत (१०६१)

पांचमुं महाव्रतः—"सर्व परिग्रह तजुं छुं; एटले के थोडुं के घणुं, नानुं के

परिग्गहं गिण्हज्जा, णवण्णेण परिग्गहं गिण्हविज्जा, अण्णंपि परिग्गहं गिण्हंतं ण समणुजाणेज्जा जाव वोसिरामि। (१०६२)

तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंतिः—(१०६३)

तत्थिमा पढमा भावणाः—सोतत्तेणं जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ, मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावदेज्जा; केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणेसंतिभेयासंतितिभंगासंति—केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। [१०६४]

ण सक्का ण सोउं सदा, सोयविसय मागता;
रागदोसाउ जे तत्थ, तं भिक्खू परिवज्जए १ [१०६५]

मोई, सचित्त, के अचित्त, हुं पोते लउं नहि, बीजाने लेवरावुं नहि अने लेताने अनुमत करुं नहि. यावत् तेवा स्वभावने वोसरावुं छुं. [१०६२]

तेनी आ पांच भावनाओ छे. [१०६३]

त्यां पेली भावना ए के कानथी जीवे भला भुंडा शब्द सांभळतां तेमां आसक्त, रक्त, गृद्ध, मोहित, तल्लीन के विवेक भ्रष्ट न थवुं केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी शांति तथा केवळि भाषित धर्मथी भ्रष्ट थवाय छे. [१०६४]

काने शब्द पडतां तो, अटकावाय ना कदि;
किंतु त्यां राग द्वेषोने, परिहार करे यति. १ [१०६५]

सोयंओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेति ० पढमा। [१०६६]

अहावरा दोच्चा भावणाः—चक्खूओ जीवो मणण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ, मणूण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा णो रज्जेज्जा जाव णोविणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूयामणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेया संतिविभंगा जाव भंसेज्जा। [१०६७]

ण सक्का रूव मदट्ठुं, चक्खुविसय मागयं;
रागदोसा उ जे तत्थ, तं भिक्खू परिवज्जए. १ [१०६८]

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासति ० दोच्चा भावणा। [१०६९]

अहावरा तच्चा भावणाः—घाणतो जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधा-

एम कानथी जीवे भला भूंडा शब्द सांभळी राग द्वेष न करवो, ए पेली भावना [१०६६]

बीजी भावना ए के चक्षुथी जीवे भला भूंडा रूप देखतां तेमां आसक्त के यावत् विवेक भ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी यावत् धर्म भ्रष्ट थवाय छे. [१०६७]

आंखे रूप पडता तो, अटकावाय ना कदि.
किंतु त्यां राग द्वेषोने, परिहार करे यति. १ [१०६८]

एम चक्षुथी जीवे भला भूंडा रूप देखी राग द्वेष न करवो. ए बीजी भावना. [१०६९]

त्रीजी भावना ए के नाकथी जीवे भली भुंडी गंध सूंघतां तेमां आसक्त

इं अग्घायइ; मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, जाव णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूया–मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं. सज्जमाणे रज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा संतिविभंगा जाव भंसेज्जा। (१०७०)

णो सक्का गंध मग्घाउं, णासाविसय मागयं;
रागदोसो उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए. १ (१०७१)

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति० तच्चा भावणा। (१०७२)

अहावरा चउत्था भावणा:–जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति, मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो रज्जेज्जा, जाव णो विणिग्घाय मावज्जेजा; केवली बूया–णिग्गंथेणं मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा जाव भंसेज्जा। (१०७३)

के यावत् विवेक भ्रष्ट न थवुं. केमके केवली कहे छे के तेम थतां शांति भंग थवाथी यावत् धर्म भ्रष्ट थनाय छे. [१०७०]

नाके गंध पडतां तो, अटकावाय ना कदि;
किंतु त्यां राग द्वेषोने, परिहार करे यति. १ [१०७१]

एम नाकथी जीवे भलाभूंडा गंध सूघी रागद्वेष न करवो ए त्रीजी भावना [१०७२]

चोथी भावना एके जीभथी जीवे भलाभूंडा रस चाखतां तेना आसक्त के विवेकभ्रष्ट न थवुं, केमके केवली कहे छे के तेम थतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय छे. [१०७३]

णो सक्कं रस मणासातुं, जीहाविसय मागयं;
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए. १ (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति. चउत्था भावणा। (१०७५)

अहावरा पंचमा भावणाः—मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति, मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूया–णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा संति विभंगा, संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। (१०७६)

णो सक्का फासं ण वेदेतुं, फासं विसय मागयं
रागदोसाउ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए. १ (१०७७)

जीभे रस चढतां तो, अटकावाय ना कदि;
किंतु त्यां रागद्वेष, परिहार करे यति १ [१०७४]

एम जीभथी जीवे भला भूंडा रस चाखी राग द्वेष न करवो. ए चोथी भावना. [१०७५]

पांचमी भावना ए के भलाभूंडा स्पर्श अनुभवतां तेमां आसक्त के विवेक भ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय छे. [१०७६]

स्पर्शेंद्रिये स्पर्श आवे, अटकावाय ना कदि;
किंतु त्यां रागद्वेषोने, परिहार करे यति. [१०७७]

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति० पंचमा भावणा । [१०७८]

एत्तावयाव महव्वते सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अहिट्ठिते आणाए आराहिये यावि भवति । पंचमं भंते महव्वयं । [१०७९]

इच्चेतेसिं महव्वतेसिं पणवीसाहिं य भावणाहिं संपण्णे अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता पालित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए आराहियावि भवति । [१०८०]

(भावना समाप्ता)

एम स्पर्शथी जीवे भलाभूंडा स्पर्श अनुभवी रागद्वेष न करवो ए पांचमी भावना. (१०७८)

ए रीते महाव्रत रुडी रीते कायाथी स्पर्शित, पाळीत, पारपहोंचाडेल, कीर्त्तित, अवस्थित, अने आज्ञाथी आराधित पण थाय. ए पांचमुं महाव्रत. [१०७९]

ए महाव्रतोनी पचीश भावना वडे संपन्न अणगार सूत्र, कल्प, तथा मार्गने यथार्थपणे रुडी रीते कायाथी स्पर्शी, पाळी, पारपहोंचाडी, कीर्त्तित करी आज्ञानो आराधक पण थाय छे. [१०८०]

णो सक्कं रस मणासातुं, जीहाविसय मागयं;
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए. १ (१०७४)

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेति. चउत्था भावणा। (१०७५)

अहावरा पंचमा भावणाः—मणुण्णामणुण्णाई फासाइं पडिसंवेदेति, मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोवज्जेज्जा, णो विणिग्घाय मावज्जेज्जा; केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे जाव विणिग्घाय मावज्जमाणे संतिभेदा संति विभंगा, संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। (१०७६)

णो सक्का फासं ण वेदेतुं, फासं विसय मागयं
रागदोसाउ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए. १ (१०७७)

जीभे रस चढतां तो, अटकावाय ना कदि;
किंतु त्यां रागद्वेष, परिहार करे यति १ [१०७४]

एम जीभथी जीवे भला भूंडा रस चाखी राग द्वेष न करवो. ए चोथी भावना. [१०७५]

पांचमी भावना ए के भलाभूंडा स्पर्श अनुभवतां तेमां आसक्त के विवेक भ्रष्ट न थवुं. केमके केवळी कहे छे के तेम थतां शांतिभंग थवाथी धर्मभ्रष्ट थवाय छे. [१०७६]

स्पर्शेंद्रिये स्पर्श आवे, अटकावाय ना कदि;
किन्तु त्यां रागद्वेषोने, परिहार करे यति. [१०७७]

तुदंति बायाहिं अभिद्दवं[1] णरा
सरेहि संगामगयं व कुंजरं २ (१०८२)
तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,
स्सद्दफासा फरुसा उदीरिया
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेतसा,
गिरिव्व वातेण ण संपवेवए. ३ (१०८३)
(रूप्यदृष्टाताधिकार) उवेहमाणे कुसलेहिं[2] संवसे,
अकंत[3] दुक्खा तस थावरा दुही
अलूसए सव्वसहे महामुणी।
तहाहि से सुस्समणे समाहिए[4] ४ (१०८४)

---

१ अभिद्रवंति लेष्टुप्रहारादिभिः २ गीतार्थैः सह ३ अक्रांतदुःखा अनभिप्रेतदुःखाः ४ समाख्यातः

तेने नरो वाणी तथा प्रहारे
संग्रामना हाथीपरे ज मारे. २ [१०८२]
तेवा जनो जो अपकीर्त्ति बोले,
कठोर शब्दादिकथी उखोले
ज्ञानी अदुष्टाशयथी सहे ते,
धुने नहि पर्वत जेम वाते. ३ [१०८३]
रुप्याधिकार मध्यस्थभावे रहि विज्ञसाथे
हणे न दुःखी त्रस थावरा जे,
दुःखोथी बीता गणि, ते महामुनि
क्षमानिधि उत्तम साधु भाख्यो. ४ [१०८४]

चतुर्थी चूला

विमुक्ति नामकं पंचविंश मध्ययनम्.

(अनित्यत्वाधिकारः) अणिच्च मावास मुवेंति जंतुणो,
पलोयए[1] सुच्च[2] मिदं अणुत्तरं[3];
विऊसिरे[4] विन्नु[5] अगार बंधणं
अभीरु आरंभपरिग्गहं चए १ (१०८१)
(पर्वताधिकारः) तहागहं भिक्खु मणंत[6] संजयं
अणेलिसं विन्नु[7] चरंत भेसणं

१ प्रलोकयेत् २ श्रुत्वा ३ प्रवचनं ४ व्युत्सृजेत् ५ विज्ञः ६ अनंतेषु एकेंद्रियादिपुसंयतं ७ विज्ञं

अध्ययन पच्चीशमुं.

विमुक्ति.

(उपजाति छंद)

अनित्यत्वा० अनित्य आवास[1] फरेज जंतुओ
सिद्धांत ए सांभळीने विचारो;
अगारनुं[2] बंधन छोडी विज्ञो,
परिग्रहारंभ (सदा) निवारो. १ [१०८१]
पर्वताधिकार खरा अने जीवदयाळु भिक्षुओ
उत्कृष्ट ने विज्ञ फरे नपार्गी;

१ अनित्य एकेंद्रियादि गतिओमां. २ घर. (family)

तुदंति वायाहिं अभिद्दवं[1] णरा
सरेहि संगामगयं व कुंजरं २ (१०८२)

तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,
स्सद्दफासा फरुसा उदीरिया
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेतसा,
गिरिव्व वातेण ण संपवेवए. ३ (१०८३)

(रूप्यदृष्टाताधिकार) उवेहमाणे कुसलेहिं[2] संवसे,
अकंत[3] दुक्खा तस थावरा दुही
अलूसए सव्वसहे महामुणी।
तहाहि से सुस्समणे समाहिए[4] ४ (१०८४)

१ अभिद्रवंति लेष्टुप्रहारादिभिः २ गीतार्थैः सह ३ अक्रांतदुःखा अनभिप्रेतदुःखाः ४ समाख्यातः

तेने नरो वाणी तथा प्रहारे
संग्रामना हाथीपरे ज मारे. २ [१०८२]
तेवा जनो जो अपकीर्त्ति बोले,
कठोर शब्दादिकथी उखोले
ज्ञानी अदुष्टाशयथी सहे ते,
धुजे नहि पर्वत जेम वाते. ३ [१०८३]

रुप्याधिकार मध्यस्थभावे रहि विज्ञसाथे
हणे न दुःखी त्रस थावरा जे,
दुःखोथी वीता गणि, ते महामुनि
क्षमानिधि उत्तम साधु भाख्यो. ४ [१०८४]

विदू[1] णते[2] धम्मपयं अणुत्तरं
विणीयतहण्हस्स मुणिस्स ज्झायओ
समाहियस्स ग्गिसिहा व तेयसा
तवो य पण्णा य जसो य वड्ढति ५ (१०८५

दिसोदिसि णंतजिणे ण ताइणा
महव्वया खेमपदा पवेदिता
महागुरू णिस्सयरा[3] उदीरिता
तमं व तेऊ तिदिसं पगासया ६ (१०८६)

सितेहिं भिक्खू असितो परिव्वए,
असज्जा मित्थीसु चएज्ज पूअणं

१ विद्वान् २ नतः ३ निःस्वकराः—कर्मोपनयनकराः

विद्वान ने धर्मपदानुचारी
तृष्णा तजी निर्मळ ध्यानधारी
समाधिवाळा मुनिना तपादि[1]
अग्निशिखा जेम वधे प्रकाशी. ५ [१०९५]

त्राता अनंता जिनदेव भांखे
महाव्रतो क्षेम करे प्रधाने;
महागुरु कर्म हरू प्रकाशे,
यथा वधे[2] तेजथी आंध्य[3] नासे. ६ [१०८६]

बद्धो[4] विषे भिक्षु अबद्ध चाले
स्त्रीमां असंगी रही मान वाले;

१ तप, प्रज्ञा, अने यश. २ बधी दिशाओमां. ३ अंधारुं. ४ घरवासमां बंधाय.

अणिस्सिओ लोग मिणं तहा परं
ण मज्जाती कामगुणेहिं पंडिए ७ (१०८७)

तिहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो
धितीमतो दुक्खखमस्स भिक्खुणो
विसुज्झए जं सि मलं पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं, व जोइणा[1] ८ (१०८८)

(भुजगत्वाधिकार) से हु प्परिण्णासमयंमि वट्टइ
णिराससे उवरयमेहुणे चरे;
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे
विमुच्चती से दुहसेज्ज माहणे. ९ (१०८९)

---

१ ज्योतिषा—अग्निना.

निश्रा निवारी इह अन्य लोकनी,
न स्वीकरे[1] कामगुणो (ज) ज्ञानी. ७ [१०८७]

धरी परिज्ञा[2] त्रिविधे विमुक्त
दुःखो सहे छे यति धैर्ययुक्त
तेना टळे कर्म मळो करेल
अग्निथी रूपातणुं जेम मेल. ८ [१०८८]

भुजगाधि ते तो परिज्ञाक्रमयांज चाले
आशंस[3] ने मैथुन दूर टाले;
भुजंग मेले जिम जीर्ण कांचली
तथा मुनि दूर करे दुःखावळी ९ [१०८९]

---

१ कबुल करे. २ शुद्ध समज. ३ आशंसा.

(समुद्राधिकार:) ज माहु ओहं सलिलं अपारगं[1]
महासमुद्दं वं भुयाहिं दुत्तरं
अहेवणं परिजाणाहि पंडिए
से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ. १० [१०९०]
जहाहि बद्धं इह माणवेहिं,
जहाय तेसिं तु विमोक्ख आहिओ,
अहातहाबंधविमोक्ख जे विऊ.
से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ११ [१०९१]
इमंमि लोए परते य दोसुवि
ण विज्जइ बंधणं जस्स किंचिवि

१ अपारसलिलं

समुद्राधिकार अपारपानीयप्रवाहयोगे१
दुस्तार महासागर२ जेम लागे
तेवोज संसार विचारी एह
खरे मुनि अंत करेज तेह. १० [१०९०]
यथा इहां मानव बद्ध थाय,
यथा वळी बंध थकी मुकाय;
खरे खरा बंध विमोक्ष एह.
जे ओलखे अंत करेज तेह. ११ [१०९१]
आ लोकमांने परलोक मांहे
जेने नहि बंधन होय कांइ

१ घणा पाणीना लीधे २ महासागर.

से हु णिरालंबणे अप्पतिट्ठे
कलंकली भावपहं[1] विमुच्चइ. १२
त्ति बेमि । [१०९२]

इत्याचारसूत्रं नाम प्रथमांगं समाप्तं.

[ग्रंथाग्रं. २५००]

१ संसारपर्यटनात्.

निराश ने अप्रतिबद्ध जेह
संसार मार्गे भटके न तेह. १२ [१०९२]

(आचारांग सूत्रनुं भाषान्तर समाप्त.)

मूल पाठस्य शुद्धि पत्रम्

[प्रथम श्रुत स्कंध]

कलम	पंक्ति	अशुद्धं	शुद्ध
१५	३	अप्पगे	अप्पेगे
,,	,,	ऊरू	उरु
२२	४	शे	से
३०	१	वीरे हिं	वीरेहिं
३२	१	लज्जमाणा	लज्जमाणा
३५	२	कयबर	कयवर
४१	१	एग	एगे
५२	६	मत्ति	मेत्ति
५८	३	लाए	लोए
६९	१	सपेहाए	संपेहाए
७४	१	जाणि—तु	जाणित्तु
८५	३	खूज्जतं	खुज्जतं
९०	१	परिण्णाय	परिण्णाय,
९६	१	कुराइं	कूराइं
९८	१	अ ोहतरा	अणोहतरा
,,	,,	तीं	तीरं
१०१	२	परियदट्टति	परियट्टइत्ति
१०४	१	जाणि—तु	जाणित्तु
१२०	१	थोधं	थोवं

१२३	१	आरिए०	आरिए आरियप०णे
१२६	२	विणयण्णे	विणयण्णे
१२९	१	वहुंपी	बहुंपि
,,	,,	लध्धुं	लद्धुं
१३२	१	विपन्सी	विपस्सी
१४३	३	१४६	१४३
१४४	१	मुणी	मुणी,
,,	,,	जस्स,	जस्स
१६१	१	जे	जं
१९२	२	लध्धुं	लद्धुं
१९४	१	१९४	१९४[३]
१९५	१	[३]जमिणं	जमिणं
१९७	१	खुद्दिएइं	खुद्दिएहिं
१९८	२	छिज्जइ	छिज्जइ,
२०८	२	उवरयसत्थस्स[२]	उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स
,,	,,	२०४	२०८
२१२	१	वीर	वीरा
२१८	१	माणंच.	माणंच,
,,	२	'मरण चं	मरणंच
,,	३	सत्यस्क	सत्थस्स
२२१	१	भगवंतो	अरहंता भगवंतो
२२२	२-३	सोत्राहिएसु[१]	सोत्राहिएसु
२२४	१	आइ—तु	आइ्तु
२३०	१	वहिया	वहियापास
२३४	१	अग्वाति	अग्घाति
२४३	१	विन्नु	वि

२४१	१	णिरूद्धाउयं	णिरुद्धाउयं
२५०	२	त्रिप्फंदमाणी	विप्फंदमाणं
२५९	२	दारूणं	दारुणं
२६०	१	पलिछिदिय	पलिछिंदिय
२६१	१	सफलत	सफलत्तं
२६२	१	संघडंदसिणो	संघडदंसिणो
२६३	३	विज्जति	विज्जति
२६६	२	माहेणं	मोहेण
२८२	१	परिग्गाहावंति	परिग्गहावंति
२९०	१	अरिएहिं	आरिएहिं
२९१	२	तारितए	तारिसए
३०३	२	वियाहित्त	वियाहिते
३०६	१	तनीवेसणे	[illegible]ल्लीवेसणे
,,	२	पलिबाहिर	पलिबाहिरे
,,	३	पडिक्कमाणे	पडिक्कममाणे
३०७	१	कायस्रं	कायसंफास
,,	३	किद्दंति	किद्दति
३१२	३	आरंभोवयार	आरंभोवरया
३२०	२	वेयव्वाति	वेयव्वंति
३२१	१	ए	जे
३२८	१	एत्थ्य	एत्थ
३२९	१	विणे-तुं	विणेत्तं
६३१	२	किन्हे	णकिन्हे
३३१	१	३६१	३३१
३३२	१	उयमा	उवमा
३५०	२	उच्चावए	उच्चावए
३५२	१	लाए	लोए

३४७	३	अणुपुव्वेणं	अणुपुव्वेण
३४८	३	माणि	मुणी
,,	७	त	तं
३७१	७	अग्घायं	अग्घायं
,,	२	असंभवेंत्ता	असंभवेता
,,	३	फरूस	फरुसं
३७७	२	उवहइ	उवेहइ
३८१	१	णममाणेहि	णममाणेहिं
३८५	२	लाघ।वियं	लाघवियं
३९४	२	पहिग्गहं	पडिग्गहं
३९५	१.	पापपुंछणं	पायपुंछणं
,,	२	वियत्तुणवि	वियत्तुणवि
३९९	१	णेण	णेव
४००	१	इसे	इमे
४०२	१	सव्वंतो	सव्वतो
४०५	१	दंडंसी	दंडेमी
४०६	२	रूक्खमलंसि	रुक्खमूलंसि
,,	६	भुताइं	भूताइं
,,	,,	समारम्भ	समारम्भ
४०८	४	भिक्खू	भिक्खु
४१५	२	परिग्गहा०	परिग्गहा०
,,	३	खेय	खेयन्न
४१८	१	मायाण्णे	मायण्णे
,,	२	कालगु०	कालेणु०
४१९	१	भिक्खु	भिक्खुं
,,	५	उज्जालतए	उज्जालेत्तए
४२४	१	तस्सण	तस्सणं

,,	,,	णा	णो
४२८	६	तरस	तस्स
४२९	२	वत्थ	वत्थं
,,	४	लाघवियं	लाघवियं
४३०	४	असि०	अभि०
४३१	१	इत्तारियं	इत्तिरियं
४३५	२	दलइस्समि	दलइस्सामि
,,	४	जरसण	जस्सणं
,,	९	अघा०	अधा०
४३७	३	भेरख	भेरव
,,	४	६	
४४२	१	बक्कमे	वक्कमे
४५६	१	डत्तमे	उत्तमे
,,	२	विहे चिट्ट	विहरेचिट्ठ
४५९	१	बहुतरसु	बहुतरेसु
४९१	२	एगाति या	एगातिया
४९५	६	दुक्खं	दुक्खं
५०९	१	चएंति	चाएति
५२१	१	संद्दरूवेसु	सद्दरूवेसु
५२२	४	रियंतित्ति	रियंतिते
५२६	१	भिक्खूणि	भिक्खुणि
५२७	१	ज्ज	ज्जं
५२८	४	गाहेञ्जा	गाहेज्जा
५३६	४	जव०	अव०
५३८	१	पविसित्तु कमो	पविसितुकामे
५४२	१	भोग०	भोग०
५५६	१	पविसित्तुकामे	पविसिउकामे

५६१	३	हीरमाणं	हरिमाणं
५६२	४	णिक्ख	णिक्ख
५६३	१	ण	पुण
५६५	४	पुवामेव	पुव्वामेव
५६९	३	पितेणवा	पित्तेणवा
,,	९	सक्कर	सक्करं
५७०	३	वग्धं	वग्घं
५७३	३	केवळी	केवली
५७४	१	दलएज्ज	दलएज्जा
,,	२	पव्वावा०	पुव्वाव०
५७५	११	वज्णे	ववण्णे
५७६	१	परिमा०	पारिभा०
५७९	३	अग्गापडासिं	अग्गापिंडंसि
५८०	१०	णा	णो
५८२	२	असंण	असणं
,,	३	तहप्पगरेण	तहप्पगारेण
५८३	१	भिक्खु	भिक्खू
,,	,,	सज्जं	सेज्जं
,,	२	यित्तमंताए	चित्तमंताए
,,	३	कोट्टिति	कोट्टिंति
,,	४	चाउलप०	चाउपल०
,,	,,	५८१	५८२
५८६	१	एवं	एयं
५९९	७	आहट्टु	आहट्टु
६००	३	सराभिगधाणि	सुरभिगंधाणि
६०२	२	पिप्पलि०	पिप्पलिं०
६०६	४	त्रोय	वीयं

६०९	२	विभंग	विभंगं
६१२	१	जाणेजा	जाणेज्जा
,,	२	चोय	चोयं
६१७	७	रो	परो
६२७	२	बिवन्नं	विवन्नं
६२८	२	व	वा
६३०	३	अट्टि०	अट्ठि०
६३७	०	६३३	६३७
,,	२	चाउपलंयं	चाउपलंबं
६४७	३	सजयामेव	संजयामेव
६५०	२	कड्डिए	कट्टिए
६५१	२	पडियए	पडियाए
६६०	२	सुण्हाओ	सुण्हाओ
,,	४	भंवति	भवंति
६६२	२	पडिलोमे	पडिंलोभे
६६६	१	भिक्खूणि	भिक्खुणि
६६९	२	मुज्जो	भुज्जो
६७१	१	दाहिण	दाहिणं
६७३	८	णिग्घोसं	णिग्घोसं
६८५	२	गंतु	गंतुं
६८९	१	पण	पुण
,,	४	पणस्स	पण्णस्स
६९०	३	विण०	विण्ण०
६९६	२	अप्पडं	अप्पंडं
,,	३	सते	संते
७०१	१	अहा	अहासं
६	२	जाणज्जा	जाएज्जा

७०५	१	भि खुणि	भिक्खुणि
७१८	३	दद्दट्ठु	उद्दट्ठु
७१९	३	उज्जुय	उज्जुयं
७३८	४	ससिणि०	ससिणि०
७४५	२	विकुज्जि	विकुज्जियं
७४७	२	लया	लयाओ
७४९	२	आगसाह	आगसह
७६२	१	भिक्खणी	भिक्खुणि
७६३	२	वियाल	वियालं
७७१	१	चतारि	चत्तारि
७७४	३	साकिरिय	सकिरियं
७७५	१	आमंतमाणे	आमंतेमाणे
७७६	४	घातियं	घातियं
७८०	१	अतीलक्खे	अंतलिक्खे
७८३	५	एयप्पगाराहि	एयप्पगाराहिं
,,	६	मा णवा	माणवा
७८६	१	असण	असणं
७९४	१	भिक्खुणि	भिक्खुणि वा
७९७	२	रूडा	रूढा
७९८	१	वखू	भिक्खू
८०७	२	भिक्खू०	भिक्खु०
,,	,,	घट्ठं	घट्ठं
८०९	५	वग्घा	वग्घा
८२३	१	अप्पंड	अप्पंडं
८६८	२	भोगी	भोगा
८८०	४	उ गह०	उग्गह०
८८५	१	उवागाछि०	उवागच्छि०

८८६	२	संसताण	ससंताणं
९०४	३	पढिमा	पडिमा
९३२	२	अण्णथरंसिं	अण्णयरंसि
९३६	१	भिक्खु	भिक्खू
९३९	३	थंडिलंसिं	थंडिलंसि
९४२	१	डहेसु	डाहेसु
९४४	१	थंडिलं	थंडिलं
९४६	२	बणांसि	वणंसि
९५१	४	सदाइं	सद्दाइं
९५६	३	अण्णयरइं	अण्णयराइं
९६४	३	णिणिज्जमाण	णिणिज्जमाणे
,,	,,	अभिस०	अभिसं०
९६७	२	सदेहिं	सद्देहिं
९७२	१०	व	वा
९७३	४	अब्भंगे ज	अब्भंगेज्ज
९७५	५	घा	वा
,,	१२	अण्णयरेण	अण्णयरेणं
९८०	२	पमज्जज्ज	पमज्जेज्जा
९९९	७	वणमिग	वणीमग
१०००	४	पुव्वीएं	पुव्वीए
१००२	२	वद्धमाणे	वद्धमाणे
१०१५	१६	गोसीसरत०	गोसिसरत्त०
१०१६	८	लेपाहि	लेसाहि
१०१६	११	मेरी	भेरी
१०१८	३	मूत	भूत
,,	४	लोम	लोभ
१०२२	२	संजमेण	संजमेणं

१०४२	१	भ वणा	भावणा
१०४५	१	आ ए	आणाए
१०४६	२	थूल	थूलं
१०४८	१	जाती	जाई
१०६२	३	गिण्हज्जा	गिण्हेज्जा
१०६८	२	राम	गग

न्याम शुद्धिपत्रम्

(फुटनोट)

(प्र० श्रु०)

पृष्ट	न्यासनं	अशुद्धं	शुद्धं
६	१	अभिंद्यात्	आभद्यात्
१०	३	इत्युकत्वा	इत्युक्त्वा
३७	१	शांतिर्मरणं	शांतिमरणं
७७	२	जिनमते.	
७९	६	अवग्रहा-द्	अवग्रहाद्
८२	३	बद्ध	बद्धा
९५	६	प्रतिकलान	प्रतिकूलान
१०१	२	विद्वासो	विद्वांसो
१०४	४	अनतिक्रास्य	अनतिक्रम्य
११६	४	सयमस्य	संयमस्य
१२९	५	कुया	कुर्याः
१४०	५	पाकस्थामं	पाकस्थानं
१४२	५	तद	तदधः

(द्वि० श्रु०)

पृष्ट	न्यासनं	अशुद्धं	शुद्धं
१७८	१	लोभटर्क	लोभटकं
१९३	४	कंदल्यदि	कंदल्यादि
,,	५	आद्रक	आर्द्रकं
२१६	१	कायेत्सर्ग	कायोत्सर्ग
२१८	२	काण्ठादिभिः	काष्टादिभिः
२४०	२	चित्राक	चित्राकीर्ण
२६७	४	व्यतरा०	व्यंतरा०
२९६	१	आहरवैत्	आहरस्वैतत्

भाषांतरनुं शुद्धि पत्र.

श्रुत स्कंध पहेलो.

कलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	कलम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	५	छ	छे	३२४	२	जिनप्रमाद	जिनप्रवाद
१४	२	तार्थंकर	तीर्थंकर	३३६	१	रहेता	रहेतो
७३	३	तेमने	तमने	३३९	६	श्लीपदेराग	श्लीपदरोग
९६	१	क्रुर	क्रूर	”	९	थरण	मरण
१८६	२	करवा	करवा	३४८	२	वत्तनारा	वर्तनारा
१९७	१	सगळा	सघळा	३५८	२	निदाप	निर्दोष
२००	२	आचारवा-णा	आचारवा-ळा	३९५	४	घ	घर
२०१	२	आसंयम	असंयम	४०१	१	नि त	निट्टत
२३८	२	केवाळी	केवळी	४१५	२	धारत	धारता
२३९	१	वकवावे	वकवाद	४२२	७	हितपणामां	रहितपणामां
२४४	१	त्पाग	त्याग	४२७	५	तेत्रा	तेवा
२५६	१	दंद्रियो	इंद्रियो	४२८	४	हाये	होय
२५९	२	मा	माटे	४३१	११	म्खु	करवुं
२६२	१	सत्म	सत्य	४३५	८	प्रतिमा	प्रतिज्ञा
२६४	१	निष्पजन	निष्प्रयोजन	४४०	१	गटावी	घटावी
२८९	२	वजन	वचन	४४४	४	आर्तव्यान	आर्तध्यान
२९०	३	मुमुक्षाओ	मुमुक्षुओ	४७२	२	भावना	भावना
२९१	२	शाक्ता	शाक्या	४७३	२	सजवि	सजीव
३०२	१	मायावा	मायावी	५०९	१	रागा	रोगो
३०५	१	सूत्राथमां	सूत्रार्थमां				
३२०	१	कटलाएक	केटलाएक				

(द्वि० श्रु०)

५३०	१	अन्यतार्थिक	अन्यतीर्थिक
५३३	३	राख्या	राख्यो
५३५	३	वहोग्तुं	वहोरवुं
५५२	२	त्या	त्यां
५६१	५	क	के
५६२	४	होथ	होय
५६७	२	चड ावना	चडाववा
५७४	३	वूर्वे	पूर्वे
५७६	१	श्रमणं	श्रमण
५७९	१	भिर्क्षे	भिक्षार्थे जतां
,,	,,	राथ	रस
,,	,,	जातसेलर्टुपा	लोलुपी
५८७	१	ज	जे
५९०	२	फरवो	करवो
६२३	२	माडे	मांडे
६२९	२	वनपाति	वनस्पति
६३१	२	वीड	वींड
,,	१०	हाय	होय
६३३	६	छु	छे
६३५	२	ओ	ए
६५५	२	तथ	तथा
६५६	१	मकांन	मकान
६५९	४	वितिक	वितर्क
६६४	१	गृह थो	गृहस्थो
६७०	१	तवो	तेवा
७०८	१	प्रमाजा	प्रमार्जी
७१८	३	र तो	रस्तो
७१९	१	रस्ताम	रस्तामां
,,	२	आपवी	आवी
७२०	४	केवण	केवळ
७२३	३	यमी	संयमी

७४१	९	जंघा	जंघा
७५७	१	आयाए	आर्याए
७५९	१	वटमागु	वटेमार्गु
७९२	३	घना	घरना
,,	,,	अगला	अर्गला
८०८	३	वक्करी	बकरी
८२२	२	व	वरनु
८२८	१	पाषणो	पाषाणो
८३२		संवधी	संबंधी
,,	३	वस्त्राधारी	वस्त्रधारी
८३३	३	जणाय	जणायतो
८३९	२	आयुष्मन्	आयुष्मन्
८४६	१	चामड	चामडा
८४७	३	पत्र	पात्र
८५१	२	उत्कष	उत्कर्ष
८५३	२	चरवी	चरवी
८५८	३	वावतो	वावतो
८८९	१	आवा	आंवा
८९०	१	कटवा	कटका
९००	१	वाद	वाद
९११	१	वावतम	वावतमां
९१२	२	जणाथ	जणाय
९२६	१	निर्वाजि	निर्वीज
९३६	३	गुफाआमा	गुफाओमां
९४६	४	स्थेळामां	स्थळोमां
,,	,,	पाणि	पाणी
९५३	९	तळाव	तळाव
९८५	१	सपूर्णता	संपूर्णता
१०००	३	धात्रीओ	धात्रीओथी
१०१७	१०	शकु	शक्र
१०२०	१	संवंधी	संबंधि
१०२४	३	न रोगे	नायोगे
१०२९	३	त्रिविर्धे	त्रिविधे
१०७१	२	द्देशो	द्वेशो